

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



४२४२

क्रम संख्या

२२९

काल नं०

पचास

खण्ड

सम्प्रत्यक्ष

प्रद्युम्न-चरित

(आदि कालिक हिन्दी काव्य)

रचयिता:—कवि सधारु

प्राक्कथन लेखक

डा० माताप्रसाद मुख्पा, एम० ए०, बी० लिट्०

रीडर, हिन्दी विभाग,

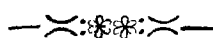
इलाहाबाद विश्वविद्यालय



सम्पादक

पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

कस्तूरचंद कासलीवाल शास्त्री एम० ए०,



प्रकाशक

केशरलाल बख्शी

मंत्री प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, सराई मानसिंह हाईवे

जयपुर

प्राप्ति स्थान:—
जैन साहित्य शोध संस्थान
मंत्री कार्यालय
महावीर भवन सवाई मानसिंह हवाई
जयपुर

प्रथम संस्करण : जनवरी १९६०
मूल्य ४)

मुद्रक:—
अजन्ता प्रिन्टर्स,
जयपुर

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४-५ वर्ष पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र की प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित वि० जैन ग्र० क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध-संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वाथ सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकों जिनका अभी ५-७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध-संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की संख्या को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रशस्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञात एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। ये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनायें हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३-१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रहूँ कवि कृत जिनदत्त चौपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इससे इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भंडार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यज्ञ के इस सुलभ कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानी सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५-७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेम में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

अन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूँ। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्राक्कथन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो कष्ट किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

जयपुर

केशरलाल बख्शी

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंड़ या पुण्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्व श्रेष्ठ कवि पुष्पदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुण्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्पदन्त था। किन्तु पिछले ५०-६० वर्षों की खोज में पुष्पदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से पृथक् स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुड़ना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जिन विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई हैं, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिन्दी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशेषताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती हैं। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों की मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि बोलचाल की भाषाएं एकदम नहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे-धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रक्खा जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मान लें कि अपभ्रंश-

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह संधिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्व श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित संपत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्त्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची बद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुतः साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न मात्राओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मङ्कलेहचरित' (मृगांकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है* जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की श्रुति में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इससे उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक अनुराग सूचित होता है; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किंतु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की जड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारों से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि युग में साहित्य-रचना अनेक जनेतर कवियों ने

* इस ग्रंथ के संपादक श्री कस्तूरचंद कासलीवाल की कृपा से प्राप्त।

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'पंगल'* में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छन्द जनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जैन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत+ छंदों में भी एक बड़ी संख्या जनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। बौद्ध सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिकधिक की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जैन भंडारों में प्रवेश असंभव—सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर ली है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा प्रारंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जैन भण्डारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, संधिकालीन हिंदी तथा प्रादिकालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोज्ज्वल रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्ज्वल और मूल्यवान रत्न सधाए, कृत प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११, १४११ और १५११ में हुई है, किन्तु गणना के अनुसार सं० १४११ की तिथि ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना तिथि है। इस समय के आस-पास की निश्चित तिथियों की रचनाएं इनी-गिनी हैं, और जो हैं भी, इतने अधिक निश्चित रूप और पाठ की और भी कम हैं। आकार में यह रचना चउपई छंदों की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित ओ वृद्धि हुई है। यह बड़े हर्ष की बात है कि श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् को अतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चैनसुखदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

* सम्पादक—चन्द्रमोहन घोष, प्रकाशक—एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता ।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुत्तुङ्ग का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिजिन विजय द्वारा सम्पादित—पुरातन प्रबन्ध संग्रह ।

जिनकी सहायता से इस रचना का पाठ निर्धारण पाठानुसंधान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों का सन्तोषजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोषों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सगर' में ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी खेद का विषय है। ऐसी दशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से बधाई देता हूँ। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नव-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने संकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अन्यथा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग

माताप्रसाद गुप्त

३१-६-५६.

प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायबहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्व रिपोर्ट' सन् १९२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख वीर सेवा मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अग्रचन्द नाहटा बीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १९४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :—

“उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारण साधारु था। वे अग्ररोवह से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महाराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूची कर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगवर सन्त पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र व शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर वसन्त होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्बत् १४११ की इतनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है।”

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १६४४ में जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अवसर पर उसी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम जब पूरा हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कासलीवाल और श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामां (भरतपुर) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्वत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खंडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्वत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वहीं के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर (जैन) आगरा निवासी सम्वत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०९ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का वही नाम देख कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुशीलन' वर्ष ६ अङ्क १-४ में 'सम्वत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित्र का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गईं। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंधी ओरिएण्टल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्राहलय की है। इन चारों प्रतियों का संचित् परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री बधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में ३४ पत्र हैं। पत्रों का आकार ११½ × ५½ इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्वत् १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६८० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के पश्चात् प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो वे बढ़ गईं, शेष ७ छंदों की संख्या लिखने में गलती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६८० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

(२) दूसरी प्रति ('क' प्रति)

यह प्रति कामां (भरतपुर) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार १० × ४½ इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के पश्चात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवतः १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २८ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

(३) तीसरी प्रति ('ख' प्रति)

यह प्रति देहली के सेठ के कूचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवी ला० पन्नालाल अग्रवाल को कृपा से नाइटजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ है जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह सम्बत् १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रह्लाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इसकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साह-जहा राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे प्रह्लाद । शुभमस्तु ।

(४) चौथी प्रति ('ग' प्रति)

यह प्रति सिंधिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल संवत् १६३४ आसोज बुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय विनयसुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नवरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से (ख प्रति में ७ वें पद्य से) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिषभ अजित संभौ जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी ।
अभिनंदनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥
पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिंद करहि तुम्ह सेव ।
चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिंद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥
नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुपु मुकति भयो भासु ।
सीतल नाथ श्रेयांस जिगांदु, जिण पूजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥
वासपूज्य जिणधर्म सुजाण, भवियण कमल देव तुम्ह भाणु ।
चक्र भवनु साई संसारु, स्वर नरकउ सुं उलंघण हारु ॥ ४ ॥
विमलनाथ जउ निर्म्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि ।
सो जिण अनंतु बारंबार, अष्ट कम्म तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥
जउ रे धम्म धम्मधुरवीर, पंच सुमति वर साहस धीर ।
जैरे सति तजी जिणि रीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कंथु अरह चक्कवइ नरिद, निज्जंर कम्म भयो सिव इन्द ।
 जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरो लेवि अवतारु ॥ ७ ॥
 मल्लिनाथ पंचेन्दी मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल ।
 जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिनंद ॥ ८ ॥
 जउरे नामि गुण ग्यांन गंभीर, तीन गुपति वर साहसधोर ।
 निलोपल लंछन जिनराज, भवियण बहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥
 सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु ।
 जाउरे जिणवर नेमि जिणंद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंदु ॥ १० ॥
 आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर ।
 जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥ ११ ॥
 मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ ।
 कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणोसर वीर ॥ १२ ॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् ५८ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहटाजी जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रद्युम्न-चरित' की एक और प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा संवत् १६६६ भावण बुदी ६ आदित्यवार की लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा उनका $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{१}{२}$ इञ्च का आकार है। इसमें पद्य सख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विसृष्ट स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वासु, कासमीरि पुरियउ निवासु ।
 हंसि चडी करि वीणा लेइ, कवि सधार सरसै पणवेइ ॥ १ ॥
 पणमावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चक्केसरि देइ ।
 अंवाइणि रोहण जो सारु, सासण देवि नवइ साधारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमासणि लीण, करहि आलवणि बाजहि वीण ।
 आगमु जाणि देइ बहुमती, पुणु परावौ देवी सुरस्वती ॥ ३ ॥
 जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथि लकुटि ले आगै होइ ।
 भवियहु दुरिय हरइ असरालु, आगिवाणि परावउ खितपालु ॥ ४ ॥
 संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए ।
 भादव सुदि पंचमि जो सारु, स्वाति नक्षत्रु सनीश्चरु वारु ॥ ५ ॥
 वस्तुबंधः—

एगिनि जिणवर सुद्ध सुपवित्तु

नेमीसरू गुणनिलउ, स्याम वरुणु सिवएवि नंदणु ।
 चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकणी घण मारण मद्दणु ।
 हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवणासु ।
 सासइ सुह पावहं हरणु, केवलणाराण पसु ? ॥ ६ ॥

विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायेंः—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुण्य पुरुषों में से एक हैं। इनकी गणना चौबीस कामदेवों (अतिशय रूपवान) में की गई है। यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे। यह चरमशरीरी (उसी जन्म से मोक्ष जाने वाले) थे। इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आकर्षणों से भरा पड़ा है। मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्बलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही खूबी से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र सर्व प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है। फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयम्भू कृत रिट्टणेमिचरिउ (८ वीं शताब्दी) में, पुष्पदन्त के महापुराण (६-१० वीं शताब्दी) में तथा धवल के हरिवंश पुराण (१० वीं शताब्दी) में बहू प्राप्त होता है। इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनायें मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

क्र० सं०	रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	रचना काल
१.	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	११वीं शताब्दी
२.	पञ्जुणकहा	सिंह अथवा सिद्ध	अपभ्रंश	१३वीं शताब्दी
३.	प्रद्युम्नचरित	कवि सधारु	हिन्दी	सं० १४११
४.	प्रद्युम्नचरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१५वीं शताब्दी
५.	प्रद्युम्नचरित्र	रङ्गू	अपभ्रंश	१५वीं शताब्दी
६.	प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	सं० १५३०
७.	प्रद्युम्न चौपई	कमलकेशर	हिन्दी	सं० १६२६
८.	प्रद्युम्नरासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	सं० १६२८
९.	प्रद्युम्नचरित्र	रविसागर	संस्कृत	सं० १६४५
१०.	शाम्बुप्रद्युम्न रास	समयसुन्दर	राजस्थानी	सं० १६५६
११.	प्रद्युम्नचरित्र	शुभचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१२.	प्रद्युम्नचरित्र	रतनचन्द्र	संस्कृत	सं० १६७१
१३.	प्रद्युम्नचरित्र	मल्लिभूषण	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१४.	प्रद्युम्नचरित्र	वादिचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१५.	शाम्बुप्रद्युम्न रास	ज्ञानसागर	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१६.	शाम्बुप्रद्युम्न चौपई	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१७.	प्रद्युम्नचरित्र	भोगकीर्ति	संस्कृत	—
१८.	प्रद्युम्नचरित्र	जिनेश्वर सूरि	संस्कृत	—
१९.	प्रद्युम्नचरित्र	यशोधर	संस्कृत	—
२०.	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	—	हिन्दी गद्य	—
२१.	प्रद्युम्नप्रबन्ध	देवेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	सं० १७२२
२२.	प्रद्युम्नरास	मायाराम	हिन्दी	सं० १८१८
२३.	शाम्बुप्रद्युम्न रास	हर्षविजय	हिन्दी	सं० १८४२
२४.	प्रद्युम्नप्रकाश	शिवचन्द्र	हिन्दी	सं० १८७६
२५.	प्रद्युम्नचरित	बस्तावरसिंह	हिन्दी गद्य	सं० १९१४

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य (११ वीं शताब्दी) के संस्कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पञ्जुणकहा (१३ वीं शताब्दी) के पश्चात् हिन्दी में

सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सवारु को है। इसी रचना के पश्चात् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गईं। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता लगता है।

प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें बिदा कर दिया, पर जब वे सत्यभामा का कुशल-चेष्टा पूछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अपमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहाँ से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में बिठाने के पश्चात् उन्होंने रुक्मिणी को छुड़ाने के लिये सभी प्रतिपक्षी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सम्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूब उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से भेंट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र की माता के बालों का अपने पुत्र के विवाह के समय मुण्डन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की ६ठी रात्रि को ही धूमकेतु नामक असुर हरण कर ले गया और पूर्व भय के बैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्याधरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ बिमान द्वारा उधर से जा रहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उसके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

उधर रुक्मिणी पुत्र वियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहाँ आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायब होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुःख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने त्रिदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहाँ से पता लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहाँ प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पांच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा प्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहस्थ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहस्थ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहस्थ पर चढ़ाई कर दी। पहिले तो राजा सिंहस्थ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहस्थ को बांध कर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे युवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण सब कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन सब कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे वन-क्रीड़ा के बहाने वन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहाँ उसने फुंकार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस डरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूंछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यत्न रू। में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और वीर प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दी। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहां के रत्नक कालासुर दैत्य को हरा कर वहां से चंवर छत्र प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, वीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रत्नक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर मकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहां भी गये वहां से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रहीं इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे उनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उम पर बड़ा खुश हुआ। इम अवसर पर वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले ली। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के जिन जाने पर स्त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिणी विद्या द्वारा अपने भाइयों के हरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बांधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं ठहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के साथ द्वारका नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहां दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिषेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की मांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुँच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को उचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बीस योद्धा भी उमे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे उठाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की बाड़ी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार बाड़ी में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे बाड़ी से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई कुछ स्त्रियां मिलीं, जो मंगल गीत गा रही थीं। उनको भी उसने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की बावड़ी पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूँड लिये। जल सोखिणी दिया द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उड़ेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मेंढा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहाँ से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषवारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का जिनना भी सामान जीमन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब वमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के सभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की याचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के खा सकने योग्य लड्डू उम ब्रह्मचारी को परोस दिये। उन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डूओं को उसे खाते देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियाँ जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आईं तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी धिक्कृत कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े कुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे लोट गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनाता से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने सिंह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

अखाड़े में डाल दिया। फिर उसने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहाँ नारद और उद्धि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की बांह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सामर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलबली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ बैठे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नींद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि वह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी वार करते उसे प्रद्युम्न अविलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहाँ आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिर चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और सारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बांधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसंवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह बड़े ठाठ बाट से किया गया। सत्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंभुकुमार का जीव अन्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम द्वार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह द्वार देंगे उसी की कूँस से उसका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह द्वार सत्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप सत्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोखे में डाल दिया और वह द्वार उसके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और सत्यभामा दोनों के क्रमशः शंभुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे बड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शंबुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली ।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द के पास कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार को अपने कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की । रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई । प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया । प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया तथा युद्ध में रूपचन्द को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया । अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द ने अपनी पुत्रियाँ दोनों कुमारों को भेंट कर दी ।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों को भोगा । एक दिन वह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा । वहाँ केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई । माता-पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन दीक्षा ले ली । तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया ।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूपः—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यतः दो आधार हैं—एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण । आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारयें विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं । प्रद्युम्न चरित की कथा जिनसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है । यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबंध में हरिवंश पुराण में दी हुई है । उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है । दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है । हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने वरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं ।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण (महापुराण का उत्तरार्द्ध) में प्रद्युम्न चरित की कथा संक्षेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

की सभा में आगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल वध, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे प्रह्लापि नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य पञ्जुणकहा (१३ वीं शताब्दी) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पञ्जुणकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रद्युम्न के पूर्वजों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पञ्जुणकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधार कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित है। पञ्जुणकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिपट्टिशलाकापुरुषचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई है उसमें और सधार कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यों के लिये ही नहीं किन्तु जैनतर साहित्यों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

❀ आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में इसकी हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।

हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। इसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्बरासुर ने हर लिया और उसे लवण समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मछेरों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फाँस लिया और शम्बर को भेंट कर दिया। जब शम्बर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो वह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहाँ नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे सब प्रकार की माया सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्बरासुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों पश्चात् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

- साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना ।
 (२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण ।
 (३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझाना ।
 (४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह ।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्बरासुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहाँ उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्बरासुर को मार कर मायावती से विवाह करना ।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है ।

बौद्ध साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके ।

कवि का परिचय

रचना के प्रारम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'सधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर 'सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। कवि ने अपने जन्म में अग्रवाल जाति को विभूषित किया था। इनकी माता का नाम सुधन था जो गुण वाली थी। पिता का नाम साहू महाराज था, अन्य प्रतियों में साहू महाराज एवं समहराह भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक जान पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी जैन सन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

अपना परिचय देने के पश्चात् कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को पढ़ेगा वही मरने के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा उसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि प्रद्युम्न का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

+ महसामी कउ कीयउ बलाणु, तुम पञ्जुन पायउ निरवाणु ।
 अग्रवाल की मेरी जात, पुर अग्रोए मुहि उतपाति ॥
 सुबणु जणणी गुणवह उर धारउ, सा महाराज घरह अवतरिउ ।
 एरछ नगर बंसते जानि, सुणिउ चरित मह रचिउ पुराणु ॥
 सावयल्लोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धम्म कराइ ।
 इस रिस मानइ दुतिया मेउ, भावहि चितह जियेसक देउ ॥

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही पण्डित वर्ग से वह क्षमा याचना करता है ।

रचना काल :—

अब तक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं उन सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है । इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्बत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं । यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्बत्तों में कौनसा सही सम्बत् है । विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है :—

(१) अमवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला की प्रतियों में सम्बत् १३११ लिखा हुआ है ।

(२) बधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और वाराणसी वाली प्रतियों में रचना सम्बत् १४११ दिया हुआ है ।

(३) सिंधिया और एंटल इन्स्टीट्यूट उज्जैन वाली प्रति में सम्बत् १५११ दिया हुआ है ।

सम्बत् १३११ वाले रचना काल के सम्बन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है :—

संवत् तेरहसै हुई गये ऊपर अधिक इग्यारा भये ।

भादौ सुदि पंचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार ।

उक्त पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्बत् १३११ भादवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था ।

सम्बत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है :—

सरसकथा रसु उपजइ घणउ, निसुगहु चरितु पञ्जसह तरणउ ।

संवत् चौदहसै हुई गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए ।

भावव दिन पंचइ सो सार, स्वाति नक्षत्र सनोश्चर वार ॥ १२ ॥

जयपुर वाली प्रात

सरसकथा रस उपजइ घणउ, निसुणउ चरित पज्जउवनतणउ ।
 संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।
 भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।
 देवलोक आणोत्तर सार, हरिवंश आव्याउ वंश सधार ॥१२॥
 खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर कामां

उक्त पद्यों में जयपुर वाली प्रति में सम्बत् १४११ भाद्रपद मास पंचमी शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्बत् १४११ भाद्रपद सुदी ६ शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है । दोनों प्रतियों में तिथियों के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं ।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि भरु तह भया ।
 भादव वदि पंचमि तिथि सार, स्वाति नक्षत्र सनीचरवार ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्बत् १५११ भाद्रपद बुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी ।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है । इसलिये यह तो निश्चित है कि प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एवं शनिवार के दिन हुई थी । किन्तु रचना सम्बत् कौनसा है, यह हमें देखना है । तीनों रचना सम्बत्ओं में सम्बत् १५११ वाला रचना काल तो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो यह सम्बत् अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है । इसके अतिरिक्त 'पंचसइ' पाठ स्वयं भी गलत है इससे पन्द्रह सौ का अर्थ नहीं निकलता इसलिये सम्बत् १५११ वाले पाठ को सही मानना युक्ति संगत नहीं है । सम्बत् १३११ वाला पाठ जो अभी तक ३ प्रतियों में मिला है, उसके सम्बन्ध में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक किसी विद्वान् ने सम्बत् चौदहसै के स्थान पर तेरहसइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुण्डि चरित मह रचिउ पुराण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने के लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो बखान' पाठ बदल दिया । इसके अतिरिक्त इस कवियशः प्रार्थी ने आरम्भ के जिन पद्यों में स्वयं का नाम था उनके स्थान पर नये ही मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये हैं ।

अब रहा सम्वत् १४११ का रचना काल । इस रचना सम्वत् के सम्बन्ध में सभी विद्वान् एक मत हैं । श्री नाहटाजी ने प्रधुम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है ^१ कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि बुदी पंचमी, सुदी पंचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वाति नक्षत्र नहीं पड़ता । डा० माताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार है । सर्च रिपोर्ट के निरीक्षक रायब्राह्मदुर स्व० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट ^२ में लिखा है कि संवत् १४११ भाद्रवा बुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है । लेकिन उनका भी बुदी का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नहीं बैठता है । इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है । प्रधुम्न चरित में जो 'भाद्रव दिन पंचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मूल पाठ 'भाद्रव सुदी पंचमी सो सारु' यही होना चाहिये ।

प्रधुम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल ने दसवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है । शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी हैं । इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हम्मीर रासो (३) कीर्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीसलदेवरासो (७) प्रवीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रासो (११) खुशरो की पहेलियाँ और (१२) विद्यापति पदावलि । उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरूपण और नामकरण हो सकता है । इनमें से अन्तिम दो तथा 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं । अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है ।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अंक १-४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन बारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है 'कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भू के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काज ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें हैं।

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पउमचरिय', 'रिट्टोमिचरिउ' तथा 'स्वयम्भू छन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरिउ' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट भाषा शास्त्री थे। इनके काव्यों में घटना बाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एवं पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ६३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्बत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे, इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'साययधम्म दोहा' उन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्बत् ६६० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', 'जसहरचरिउ' एवं 'गणायकुमारचरिउ' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एवं शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविष्यत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धवकड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संधियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आकर्षक ढङ्ग से हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाहचरित' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में धीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरित' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरित' वीर एवं शृङ्गार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंसण चरित' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंसणचरित' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। बाण एवं सुबन्धु ने जिस क्लिष्ट एवं अलंकृत पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इस पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ५५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें संस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरित' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसका भाषा उदात्त भावों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले धाहिल का 'पडमसिरचरित' एवं अब्दुल रहमान का 'सन्देशरासक' भी उल्लेखनीय काव्य है।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द्र, हरिभद्र, सोमप्रभ, विनयचन्द्र आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दानुशासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में पं० लाखू ने 'जिणायत्त चरित' जयमित्रहल ने 'वङ्गमाणकव्य' कवि सिंह ने 'पञ्जुहण चरित' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मसूरि का 'जम्बूस्वामीरास', रलह का 'जिणदत्त चउई' (संवत् १३५४) घेलह का 'चउत्रीसी गीत' (संवत् १३५१) भी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी की रचना

जिएदत्त चउपई है जिसे रत्न कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५५० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किस तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत् १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—“इस युग के साहित्य सर्जन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है। परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नींव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७) पल्ल (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिभद्रसूरि (सं० १२४१), नैमिचन्द्र भण्डारी (सं० १२४६), आसगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह रथग और भत्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८९), सुमतिगणि (१२९०), जिनेश्वरसूरि (१२७८-१३३१), अभयतिलक (सं० १३०७), लक्ष्मीतिलक (सं० १३११-१७), सोममूर्ति (सं० १२६०-१३३१), जिनपथसूरि (सं० १३०९-२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५-५३), जगडु (सं० १३३१), संग्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०-६२), प्रज्ञातिलकसूरि (सं० १३६३), वस्तिग (सं० १३६८), गुणाकर-सूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेरु (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), सारमूर्ति (१३९०), जिनप्रभसूरि (१३६०-९०), सोलण (१४ वीं शताब्दी), राज-शेखरसूरि (सं० १४०५), जयानंदसूरि (सं० १४१०), तरणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (१४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द (सं० १४२६), जिनरत्नसूरि (सं० १४३०), मेहनन्दन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १४४०), साधुहंस (सं० १४४५)।

जैन विद्वानों की लोक भाषायें लिखने में रुचि होने के कारण उन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया ।

प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर (सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है । उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अवश्य किया गया है । इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शार्ङ्गधर आते हैं । किन्तु उनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य— गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं । हां, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं । शार्ङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है । एक पद्य देखिये—

पिंधउ दिढ सराह वाह उप्पर पक्खर दइ ।

बंधु समदि रण धसउ हम्मीर वअण लइ ॥

उड्डलणह पह भमउ खग्गा रिउ सोसहि डारउ ।

पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पव्वअ अण्फालउ ॥

हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहाणल मुहमह जणउ ।

सुलताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेदर दिअ चलउ ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरसूरि (१४०५), जयानंदसूरि (१४१०), तरुणप्रव्रसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं० १४१२), जिनोदय सूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं । किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ इन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है । विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

नयरो वयरा कर चरणि जिण वि पंकज जलि पाडिय ।
तेजिहि तारा चंद सूर आकासि भयाडिय ॥

इसलिये यह कहा जा सकता है कि सधार कवि अपने समय के अकेले हिन्दी कवि हैं; जिन्होंने इस प्रकार का प्रबन्ध काव्य लिखने का प्रयास किया था ।

हिन्दी साहित्य में प्रद्युम्न चरित का स्थान :

‘प्रद्युम्न चरित’ हिन्दी भाषा में अपने ढंग का अकेला काव्य है । यह पुरानी हिन्दी एवं नवीन हिन्दी काव्यों की मध्य की कड़ी को जोड़ने वाला एक श्रेष्ठ काव्य कहा जा सकता है । चउपई, एवं वस्तुबंध-छन्द में लिखा जाने वाला यह यद्यपि पहिला काव्य नहीं है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो इसे प्रथम स्थान मिलना चाहिये । आगे चलकर जिन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में चौपई छन्द को मुख्य स्थान दिया है उन पर अधिकांश रूप से जैन रचनाओं का प्रभाव है । चउपई छन्द क्या कवि और क्या पाठक दोनों के लिये ही प्रिय सिद्ध हुआ है ।

प्रद्युम्न चरित को काव्य की दृष्टि से किस श्रेणी में रखा जा सकता है यह विचारने की वस्तु है । काव्य के साधारणतः दो भेद किये जाते हैं प्रथम ‘प्रबन्ध-काव्य’ दूसरा ‘मुक्तक काव्य’ । प्रबन्ध-काव्य के फिर तीन भेद हैं : महाकाव्य, खंड काव्य एवं चंपू काव्य । इसमें से प्रद्युम्न चरित मुक्तक काव्य तो हो नहीं सकता इसलिये यह अवश्य ही प्रबन्ध काव्य है । डा० रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली पृष्ठ ६६ प्रबन्ध काव्य का जो लक्षण दिया है वह निम्न प्रकार है—

“प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है । उसमें घटनाओं की संबद्ध श्रृंखला और स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले, उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिये । इति वृत्त मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता । उसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिम्बित चित्रण होना चाहिये जो श्रोता के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में समर्थ हो । अतः काव्य में घटना का कहीं तो संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार है ।”

प्रद्युम्न चरित में डा० रामचन्द्र शुक्ल का प्रबन्ध-काव्य वाला लक्ष्य ठीक बैठता है। इसमें घटनाओं का शृंखलाबद्ध क्रम है, नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश है। इन सबके अतिरिक्त यह काव्य के श्रोताओं के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में भी समर्थ है। इसलिये प्रद्युम्नचरित को निश्चित रूप से प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है।

प्रद्युम्नचरित ६ सर्गों में विभक्त है उसमें विरह, मिलन, युद्ध वर्णन, नगर वर्णन, प्रकृति-वर्णन एवं इन सबके अतिरिक्त मायावी विद्याओं का वर्णन मिलता है। उसका नायक १६६ पुण्य पुरुषों में से एक है। वह अतिशय पुण्यवान् एवं कलाओं का धारी है। वह धीरोदात्त प्रकृति का नायक है।

काव्य के प्रवाह को स्थिर एवं प्रभावोत्पादक रखने के लिये अवान्तर कथाओं का होना भी प्रबन्ध काव्य के लिये आवश्यक है। अवान्तर कथाओं से पात्रों का चरित निखर जाता है और वे पाठकों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर लेती हैं। प्रस्तुत काव्य में रुक्मिणी-हरण तथा नारद के विदेह क्षेत्र में जाने की घटना, सिंहस्थ युद्ध वर्णन, उदधिकुमारी का अपहरण, भानुकुमार के विवाह का वर्णन, सुभानु तथा शंभुकुमार का द्यूत-वर्णन आदि कथायें आयी हैं। इनसे 'प्रद्युम्न चरित' के काव्यत्व की उत्कृष्टता में वृद्धि हुई है।

पूरे काव्य में घात-प्रतिघात खूब चला है। पाठकों का ध्यान किञ्चित् भी दूसरी ओर न बँट सके; इसलिये कवि ने अपने काव्य में ऐसे प्रसंगों को पर्याप्त स्थान दिया है। स्वयं नायक के जीवन में ही आश्चर्यकारी घटनाओं का बाहुल्य है। धूमकेतु असुर द्वारा उसको शिला के नीचे दबाया जाना, फिर कालसंवर द्वारा उसका बचाया जाना, उसे गुफाओं के दिखाने के बहाने अनेक विपत्तियों में फँसाना, किन्तु उसका अनेक विद्याओं के लाभ के साथ वापिस सुरक्षित निकल आना, सिंहस्थ के साथ युद्ध में विजय-श्री का प्राप्त होना, स्वयं कालसंवर एवं फिर द्वारका में श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध होना एवं उसमें भी विजय लक्ष्मी का मिलना आदि कितने ही प्रसंग उपस्थित होते हैं। जब पाठकों को नायक को विपत्ति में फँसा हुआ देखकर पूर्ण सहानुभूति होती है और जब वह वहाँ से विजय के साथ निरापद लौटता है तो पाठक प्रसन्नता से भर जाते हैं।

‘प्रद्युम्न चरित’ एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के पश्चात् जिन दीक्षा धारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सामान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, भानु कुमार, नारद, कालसंवर सिंहरथ, रूपचंद आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्ज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु ‘प्रद्युम्न चरित’ में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होती। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानु कुमार, सिंहरथ, रूपचंद, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहरथ एवं रूपचंद से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानु कुमार बचते हैं; किन्तु भानु कुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रूप में प्रकट होने के पाँहले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानु कुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानु कुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानु कुमार के साथ सौमनस्य नहीं था। भानु कुमार की मांग-उद्धिकुमारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उसने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानु कुमार को खलनायक सिद्ध नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में कैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौशल दिखलाने के लिये श्रीकृष्ण

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य बिना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

‘प्रद्युम्न चरित’ वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। वैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है ; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण-जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न-सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न-कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण-युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द-युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध-वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक खण्ड में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। “रहिवर साजहु, गयवर गुहहु, सजहु सुहहु, आज रण भिडउ” के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को बालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरांचित जवाब है :—

बालउ सूरु आगासह होइ, तिन को जूझ सकइ धर कोइ ।
बाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमणि मंतु न आइ ॥१६८॥
सीहिणि सीहु जयै जो बालु, हस्ती जूह तणो बे कालु ।
जूह छाड़ि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

इसी प्रकार जब श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उसके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, बर्छी, बाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० बाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निबाण जलबाण, वायुबाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु बाण और जलबाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन विद्याओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है इसलिए इसका मुख्य रस वीर होने पर भी वह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस भी जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिणि दिठा परदवरु ।

सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कं लायउ ।
अब मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥
दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत ।
वाला तुणह न दिठ मइ, यह पछित्तावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तणे वयणु निमुरेइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
खण इकुमाह विरधि सोकयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहउ ॥४३०॥
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाई ।
खण खण जेत्वणु मागइ सोइ, बहुवु मोह उपजावइ सोइ ॥४३१॥

इसी प्रकार वीभत्स रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है।
भी कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लड़ाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा
काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।
ठाठा रहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥
मीधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार ।
वेशि चलहु सापडी रसोइ, असइ आइ जिम तिपत होइ ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छठी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की
दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव
में हर एक के लिए हृदय द्रावक था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रहने लगी कि उसका शरीर कुश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही । करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहि सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ ।
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरू रोवइ वयण, आसू वहत न थाके नयण ।
पूब जन्म मैं काहुउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥
की मइ पुरिष विछोही नारि, की दम्ब घाली वणह मभारि ।
की मैं लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयउ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ़ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है । ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई सदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती है ।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया । ८४ हांडियों में तैयार किये हुए व्यंजनों को तो वह बात की बात में चट कर गया । यही नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के वदरस्थ हो गया । फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसास्वादन करें:—

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि ।
माडे कडे परोसे तासु, सवु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी बैठि आइ ।
जेतउ घालइ सवु संघरइ, बडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है । वैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्तः अपहृति अर्थात्-रन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं । काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है । कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी वहु सादु समुदु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुदु ॥५५७॥

वह मूर्च्छित सेना इस प्रकार उठी मानों सातों समुद्र ही उलट कर चले हों ।

२. वरसहि बाण सरे असराल, जाणौ घण गाजइ मेघ अकाल ।

बाणों की निरन्तर वर्षा इस प्रकार होने लगी मानों अकाल के मेघ गाज रहे हों ।

३. निसुगि वयण नरवइ परजलीउ, जाणौ घीउ अधिकु हुतासगु परिउ ।

वचनों को सुनकर राजा इस प्रकार प्रज्वलित हो उठा मानों अग्नि में खूब धो डाल दिया हो जिससे वह और भी प्रज्वलित हो गया हो ।

इस काव्य में चउपई छन्द का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है । इस छन्द के अधिक प्रयोग होने के कारण ही किसी किसी लिपिकार ने तो 'प्रद्युम्न चउपई' ही ग्रंथ का नाम रख दिया है । चउपई छन्द के अतिरिक्त काव्य में वस्तुबन्ध, ध्रुवक, दोहा, सोरठा छन्दों का भी प्रयोग हुआ है । इस काव्य में प्रयुक्त वस्तुबन्ध तथा अन्य रचनाओं में प्रयुक्त वस्तुबन्ध छन्द में कुछ अन्तर है क्योंकि अन्य रचनाओं में प्रयुक्त छन्द की प्रथम पंक्ति को दो बार बोला जाता है और इस काव्य में प्रथम पंक्ति का एक बार ही प्रयोग करके छोड़ दिया है । चौपई छन्द के अन्त में वस्तुबन्ध का उपयोग किया है और इसके पश्चात् भी चौपई छन्द का प्रयोग हुआ है ।

भाषा की दृष्टि से अध्ययन—

भाषा की दृष्टि से प्रद्युम्न चरित ब्रज भाषा का काव्य है । ब्रज भाषा के सर्व मान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में पूर्ण रूप से मिलते हैं । डा० शिवप्रसादसिंह ने 'सूर पूर्व ब्रज भाषा और उसका साहित्य' नामक पुस्तक में प्रद्युम्न चरित को ब्रज भाषा के अद्यावधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन काव्य माना है । और उस पर अपनी पुस्तक में विस्तृत विवेचन किया है । ब्रज भाषा वनाम खड़ी बोली नामक पुस्तक में डा० कपिलदेव सिंह ने ब्रज भाषा के जो सर्व मान्य लक्षण बतलाये हैं वे निम्न प्रकार हैं—

१. ब्रज भाषा में एक ही कार्य को सूचित करने वाले संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि में अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है ।
२. ब्रज भाषा की क्रियाओं में 'लाघव' है जो काव्य रचना के लिये बहुत ही उपयुक्त होता है ।

३. ब्रजभाषा का यह सर्वमान्य नियम है कि 'गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार'
४. ब्रज भाषा में कारक चिह्नों का लोप क्षम्य है।
५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु कवियों ने दोनों प्रकार के प्रयोगों की छूट ली है।
६. ब्रज भाषा में तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग होना भी उसकी एक बड़ी विशेषता है —

अब हमें यह देखना है कि ये उक्त सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में कहाँ तक मिलते हैं।

१. • प्रद्युम्न चरित में एक ही अर्थ को सूचित करने वाले संज्ञा सर्वनाम क्रिया अव्यय आदि में कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे

संज्ञा—

कृष्ण—	कन्ह	(५०, ५७२)
	कान्ह	(६०, ६६)
	किसन	(४४२)

प्रद्युम्न—

परदमणु	(४१३)
प्रदवणु	(४२२) प्रदुवनु (१३६)

सर्वनाम—	तुभ	(२८) तुम्हि (१०८) तुहि (४७०)
	तुम्हि	(२४८) तुम्ही (४७२)

अव्यय—	इतु	(३८३) इह (२८, ३६) इहि
		(४०, ४७) उह (८१, ३१२)

क्रिया—	कंपइ, कंपत	(३७८) कंपिउ (६७) (५०२)
	दीठउ	(६२) दीठि (४०) दीठी (२७)
	दीठे	(३७)

दीण्ड (६४८) दीनड (२६) दीनी (४७)
 दीने (३५०)

२. ब्रज भाषा की दूसरी विशेषता—क्रियाओं को लाघव रूप बना कर प्रयुक्त करने की रही है । प्रद्युम्न चरित में भी यही विशेषता अन्तुण रूप से दिखाई देती है यथा—

सुन करके— निसुणि (२४,४२)

बुला करके— बुलाइ (१८७)

देख करके— निरखि (१०६) देखि (३२,४३)

पढ़ता है— पढ़इ (३१८)

दौड़ा करके— दौड़ाइ (३३०)

लिख पढ़ करके—लिखितु पढ़ितु— १३७

३. ब्रज भाषा के सर्व मान्य नियम—“गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार” का भी कवि सधारु ने अपने प्रद्युम्न चरित की भाषा में पालन किया है—जैसे—

क. सति भामा हरि दीठड नयणा, रुदनु करइ अरु बोलइ वयणा (६६)

ख. बाहुडि राउ विमाणा गयउ (१३३)

ग. जिन रुपणि हीयरा बिलखाइ (१५६)

४. प्रद्युम्न चरित में कारक चिह्नों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है । अधिकांश स्थलों पर शब्द बिना कारक चिह्नों के ही प्रयुक्त हुये हैं—

कर्त्ता कारक— सारंग पाणि धनुष लौ हाथि
 काल संबर तब बीडा देइ (१७२)
 नारद बात मयणस्थो कही (२४७)
 मुनि जंपइ मुहि नाही खोडी (२४८)

कर्म कारक— सेख पाल पठड जमपंथि
 फुणिर नेम जिन केवल भयउ (६६४)

सम्बन्ध कारक— सिध जुध जो जाणे भेउ । (१६५)
 उवसंत मनि भयउ उछाहु (२२३)
 तीनि खंड जो पुहमि नरेसु (३०६)

अधिकरण— इह वण चरण न पाव कोइ (३३६)

५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु प्रद्युम्न चरित में दोनों ही प्रकार के प्रयोग हुये हैं—

संयुक्ताक्षर— ज्योति (६६०) ज्योनार (६५३)
 नक्षत्र (११) धर्म (५६२)
 प्रदवण (५४६)

असंयुक्ताक्षर— जालामुखी (५) चकेसरी (५)
 जादमराउ (४७५) कान्ह (४०)
 सनमधु (६८६) वांभण (३२५)

६. ब्रज भाषा के अन्य काव्यों की तरह प्रद्युम्न चरित में तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे—

सतिभामा (६३) वरम्हंड (५३६) मोसिहु (१६०, हीयरा (१६०)
 सकति (२६८) विरख (८४) पुहमि (८१)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रजभाषा के सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में मिलते हैं ।

भाषा की अन्य विशेषतायें

प्रद्युम्न चरित में आद्य या अन्त के अक्षर में कभी कभी अ का इ रूप भी कर दिया गया है—

जैसे तिसु (२) किमाइ (१६) तिपत (५०१) हाथि (७७)
 विवाहि (२२७)

अ+उ या अ+इ का औ या ऐ उद्बृत्त स्वर से संध्यक्षर रूप में परिवर्तन करने की प्रथा प्राचीन ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी मिलती है यथा—

चउवारे, चउक (५६२) चउत्थउ, चउतीसह (१२) किन्तु उद्वृत्त स्वरों के साथ २ संध्यक्षरों के प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में अन्य ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं— यथा चोपास (३१४) चोपटु (३४२) चत्थोउ (३३) पौरिप (४५३) सैन (२८८) रम्यो (२७०)

स्वर संकोच—प्रद्युम्नचरित में स्वर संकोच कितनी ही प्रकार से हुआ है जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

जादौराउ (यादवरात्र) ठाउ (स्थान) पूत्र (पुण्य)

व्यञ्जन—प्रद्युम्नचरित में न और ण के विभेद को बनाये रखने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई नहीं देती जैसे—

मुनि के लिये मुणि

मानस ,, माणस

मदन ,, मयण

भानइ ,, भाणइ

किन्तु कहीं कहीं न के स्थान पर 'न' का ही प्रयोग हुआ है यथा— भानकुमार, मन, भामिनी आदि ।

काव्य में ड और र की ध्वनियां भी कितने ही स्थानों पर आपस में मिल सी गयी है यथा—

पकडि तथा पकरि, लडइ और लरइ, वाहुडि तथा बाहुरि मुंदडी एवं मुंदरी तथा भिडे एवं भिरे ।

प्रद्युम्नचरित में न्ह, म्ह एवं म्व का प्रयोग स्वीकृत किया गया है यथा पम्बाण (४१६) न्हाइ (५०६) तुम्ह (१२७) तिन्हि (५२६) जेम्बणु (३६१) तिन्हि (१)

इसी तरह 'त्त' का छ बनाकर शब्दों को अधिक मधुर बनाने की चेष्टा की गयी है यथा—नछत्र (नक्षत्र) जच्छ (यत्त) छण (क्षण) छत्री (क्षत्री)

सर्वनाम

प्रद्युम्नचरित में सर्वनामों के तीन ही भेदों का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि शब्दों में समानता नहीं है फिर भी काव्य में उनका विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है यथा—

उत्तम पुरुष—	एक वचन	बहु वचन
	हउं (१) मैं (१४१)	हमि (२७) हमइ (६५०)
	हौ (१४७)	हमारी (११३) हमारे
	मेरो (५४२) मेरी (३०१) मे (६०३)	
मध्यम पुरुष—तू, तुमि (१०६)		तुम्हारउ (२६) तुम्हि (२४५)
	तु, तुम्ह (१२७)	तुमहि (४७०)
अन्य पुरुष—वह (७६) सो (१)		ते (६३२) आदि।

अनिश्चय वाचक एवं प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिये—कोउ (२) कांके (५५) किमइ (४४०) किम (४०५) आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यद्यपि काव्य में कारक चिह्नों का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु फिर भी रचना में कितने ही स्थलों पर उनका प्रयोग कर भी दिया गया है। इन कारकों में कर्मकारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक एवं अधिकरण कारक मुख्य हैं। यथा—

कर्म कारक—घाइ कम्मु को किउ विणासु

संख्या वाचक विशेषण—प्रद्युम्नचरित में संख्या वाचक विशेषणों का निम्न प्रकार से वर्णन हुआ है—

१. इकु (३४) इक (३७) एकु (२३७) एक (३०३) एकइ (५३६)
२. दुइ (३३) दूजी (१६७) दोइ (१८१)
३. तीजी (२००) तीजे (२०३) तीनि
४. चारघो, चारि (३२४) च्यारि (२०) चउत्थउ (८)
५. पांच (१३६) पंचति (४५६) पंचम (५६६)

६. छह (८६) छठि (१२२)
 ७. सात (५१)
 ८. अठ (३) आठमउ (८)
 ९. नवउ (९)
 १०. दसह (४६६) दस (४)
 ११. ग्यारह (११)
 १२. द्वादस (३७४)
 १३. तेरह (६८६)
 १४. पंद्रह (५४८)
 १५. सोलह (८०) सोलहउ (६)
 १६. सतरह (१०)
 १७. अठारह (२०) अठार (१७६)
 १८. एगुणसीवार (१०)

क्रिया पद

ब्रजभाषा में संयुक्त क्रिया का बहुत प्रयोग होता है प्रद्युम्नचरित में भी ऐसे प्रयोग खूब देखने को मिलते हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया दोनों के ही पदों का प्रयोग देखने को मिलता है। सहायक क्रिया मुख्य रूप से भू धातु से बनी है और उसके प्रद्युम्नचरित में निम्न रूप प्राप्त होते हैं—

वर्तमान काल—होइ (१) कवितु न होइ
 होहि (७४) रहि रूपिणी वामा काहरि होहि
 हुइ (११) संवतु चौदहसै हुई गये

भूतकाल—(१) दाठउ भयउ (२६)
 (२) उपर अधिक ग्यारह भए (११)
 (३) आज पवित्तु भयो इह ठाउ (२८)
 (४) निसुणि वयण कोप्यो परदवणु (१७८)

मुख्यक्रिया पदों का प्रयोग भी प्रद्युम्नचरित में ब्रजभाषा के अन्य अन्य काव्यों के समान ही हुआ है।

सामान्य वर्तमान—सामान्य वर्तमान काल में सभी क्रिया पदों को इकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है—यथा—

१. सो सधार पणमइ सरसुति । (१)
२. तिस कउ अंतु न कोउ लइइ । (२)
३. करइ गर्ज मेदनी विलसंतु । (२१)
४. रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ (६८६)
५. फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि (५२४)

आज्ञार्थ—वर्तमान आज्ञार्थ के रूप कभी भी शुद्ध रूप में प्राप्त नहीं होते । इसकी रचना अंशतः प्राचीन विधि (Potential) अंशतः प्राचीन आज्ञार्थ और अंशतः प्राचीन निश्चयार्थ से होती है (पुरानी राजस्थानी पृष्ठ ११६) । प्रद्युम्नचरित में आज्ञार्थ क्रिया पदों के निम्न रूप सं प्रयोग मिलते हैं—

- | | |
|--------------------------------|-------|
| (१) रथ साजिउ सारथि वयसारि | (५८) |
| (२) रहिवर साजहु गयवर गुरहु | (७०) |
| (३) उदधिमाल तुमि मो कहु देहु | (३०५) |
| (४) हीण अधिक जण लावहु खोडि | (७०१) |
| (५) घर वेगे सामहणी करहु | (२८६) |

विध्यर्थ—

- | | |
|-------------------------------|-------|
| (१) कछुस मोल आइ तुम्हि लेहु | (३४०) |
| (२) दुइ घोड़े ए चरहु अघाइ | (३४१) |
| (३) नयर मंगल किजइ | (५६६) |

भूत काल—वर्तमान काल में इकारान्त क्रिया पदों के समान भूत काल की क्रिया भी उकारान्त बनाकर प्रयोग की गयी है यथा—

- (१) तिहि कुरखेत महाइउ भयउ (६६१)
- (२) सतिभामा महिलउ पठयउ (४३३)
- (३) रहवरु मोडि नयर महगयउ (२६२)
- (४) कठिया जाइ संदेसउ कहिउ (३६८)

भविष्यत्काल--भविष्यत्काल में अधिकांश 'ह' वाले रूप ही मिलते हैं
ग वाले रूप बहुत थोड़े तथा कहीं २ ही मिलते हैं ।

(१) सो काहो जेम्बहिगे आइ (३६२)

(२) किम रण जीतहुगे महमहण (७३)

अन्य भाषाओं का प्रभाव—

ब्रज भाषा के अतिरिक्त प्रशुम्नचरित की भाषा पर मुख्य रूप से अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ा है । वास्तव में १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश भाषा के प्रभाव रहित किसी भाषा का काव्य लिखना भी दुष्कर कार्य रहा होगा । कवि ने यद्यपि अपभ्रंश के शब्दों का कम से कम प्रयोग करने का प्रयास किया है और पूरे काव्य में अपभ्रंश की एक गाथा उद्धृत की है, जिसके सम्बन्ध में अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह स्वयं कवि द्वारा निबद्ध है अथवा किसी अन्य रचना में से उद्धृत की है, किन्तु फिर भी रचना में अपभ्रंश शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता । यहां अपभ्रंश के कुछ शब्द रचना में से उद्धृत किये जा रहे हैं—

अवलौइ (५४२) असराल (२८२) उच्छाह (५८६) तिजयणाहु
(१२) गिन्वाणा (२३२) वीण (४) जइउ (४२६) अपमाण (४८३) अवरइ
(३८१) उम्माइ (१७०) कुकडाहि (६१०) कोह (२८७) खेमु (६५४) खग
(२१३) लोयपमाणु (६६०) लोयणु (५०७) वण (५६) विविह (१०७) सवेहु
(५८८) सयल (२५८) सरसइ (३) नयर (१४) दुज्जण (६८६)

ब्रजभाषा के अतिरिक्त राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी कहीं कहीं प्रयोग स्वतः ही हो गया है जैसे—आगि (४७८) आपणी (६३१) दूखो (६३०) न्हानी (२३६) आदि ।

प्रशुम्न चरित की अन्य विशेषतायें—

प्रशुम्न चरित यद्यपि अधिक बड़ा काव्य नहीं है । डा० माताप्रसादजी गुप्त के शब्दों में हम उसे सतसई कह सकते हैं क्योंकि पूरे काव्य में ७०१ पद्य हैं । प्रशुम्न चरित में वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओं का भी अच्छा वर्णन किया गया है जिन में से कुछ का यहां संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है :—

१. सामाजिक सम्बन्ध, कृत्य उत्सव आदि--
सन्तानोदय, विवाह, स्त्री समाज
२. सेना के अस्त्र शस्त्र
३. नगर वर्णन
४. प्रकृति वर्णन

१:—सामाजिक सम्बन्ध कृत्य उत्सव आदि :—

(अ) सन्तानोदय—समाज में पुत्र होने पर खूब उत्सव मनाये जाते थे ।
प्रद्युम्न के जन्म पर द्वारका में खूब उत्सव मनाये गये ।
प्रत्येक घर में बधावा गाये गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने
मंगल गीत गाये :—

दूहु नारि घर नंदण भए, घर घर नयारि वधावा गए ।
सूहो गावइ मंगलचार, वंभण वेद पढ़इ भुणकार ॥१२०॥
वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार ।
घरि घरि कूं कूं थापे देह, मंगल गावहि कामिनि गेह ॥१२१॥

(ब) विवाह—विवाह बड़ी धूमधाम से किये जाते थे प्रद्युम्न के विवाह के
अवसर पर देश विदेश के राजा महाराजा सम्मिलित हुए
थे । नगर को सजाया गया, बाजे बजाये गये तथा विवाह
विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया था । ऐसे शुभ अवसरों पर
ब्राह्मण लोग मंत्रोच्चारण करते थे एवं सौभाग्यवती स्त्रियां
मांगलीक गीत गाती थी । प्रद्युम्न के विवाह का वृत्तान्त
पढ़िये :—

संख सवुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावरिण ताल ॥५८०॥
विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।
बहु कलियरु नयारि उछलिउ, जन मयरद्धु विवाहरण चलिउ ॥५८१॥

(स) कवि और स्त्री समाज—

कवि ने प्रद्युम्न चरित में एक प्रसंग पर स्त्री समाज पर खूब
आक्रमण किया है । तुलसीदासजी ने तो अपनी रामायण में स्त्री को 'ताड़न

का अधिकारी' कह कर ही सन्तोष कर लिया था, किन्तु सधार कवि उनसे भी ४ कदम आगे चलते हैं। स्त्री समाज की निन्दा करते हुये कवि कहता है कि वह असत्य बोलती है और असत्य कार्य करती है तथा अपने पति को छोड़ कर अन्य के साथ रमती है। कवि ने अपनी बात की पुष्टि के लिये कुछ ऐसे उदाहरण भी दिये हैं जिन अवसरों पर स्त्रियों ने पुरुषों को धोखा दिया था।

तिरिय चरितु निसराउ भरिभाउ,

विलख वदन भउ खगवइराउ ।

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ,

निउ पिउ छोड़इ अवरु भोगवइ ॥२६६॥

तिरियहि साहस दूणो होइ,

तिरिय चरित जिग फुलइ कोइ ।

नीची बुधि तिम्वइ मनि रहइ,

उतिमु छोड़ि नीच संगइ ॥२६७॥

पयडी नीच देइ सो पाउ,

एसो तिवइ तराउ सहाउ ॥२६८॥

२—सेना प्रयाण :—

१. सेना के अस्त्र शस्त्र—

राजाओं के पास नियमित सेना होती थी जो संकेत मात्र से युद्ध के लिये तैय्यार हो जाती थी। शिशुपाल, कालसंवर श्रीकृष्ण एवं रूपचंद की सेना युद्ध के लिये संकेत मिलते ही तैय्यार हो गयी थी तथा अपने २ शस्त्रों को संभाल लिया था। गज, अश्व एवं पदाती सेना होती थी। शस्त्रों में कौतु, तलवार, सेल, कटारी, छुरी, धनुष बाण आदि शस्त्र प्रयोग में लाये जाते थे। इन शस्त्रों के अतिरिक्त विद्याबल से भी युद्ध लड़ा जाता था।

२. विद्याओं के बल पर युद्ध करने की परम्परा—

प्रद्युम्नचरित में सभी अवसरों पर विद्याओं के बल पर युद्ध करवाये गये हैं। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण आदि कितने ही प्रकारों के बाणों का प्रयोग होना, प्रद्युम्न का कितनी ही विद्याओं में प्रवीण होना तथा उनके आधार पर सिंहदत्त, काल संवर एवं श्रीकृष्ण की सेनाओं को मूर्छित करके हरा देना; कनकमाला से तीन विद्याओं की प्राप्ति एवं उनके बल पर कालसंवर

को हारना आदि घटनाएं प्रद्युम्न की लोकोत्तर शक्ति का परिचय देती हैं कि उस समय के युद्ध इस प्रकार की आश्चर्यकारी विद्याओं के द्वारा भी लड़े जाते थे ।

कवि को अलौकिक विद्याओं पर खूब विश्वास था । प्रद्युम्न जहां भी गया वहीं उसे विद्याएं प्राप्त हुईं । कवि ने जिन १६ विद्याओं के नाम गिनाये हैं वे सभी अलौकिक विद्याएं हैं । यदि प्रद्युम्न को वे विद्याएं प्राप्त नहीं होती तो वह कभी किसी युद्ध में नहीं जीत सकता था क्योंकि सिंहरथ, कालसंवर एवं श्रीकृष्ण सभी उससे बल पौरुष में बढ़ कर थे । इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी प्रत्येक सफलता का कारण उसकी अलौकिक विद्याएं थी ।

३. नगर वर्णन—

प्रद्युम्नचरित में द्वारका का वर्णन किया गया है । यद्यपि वर्णन विस्तृत नहीं है किन्तु थोड़े से शब्दों में ही कवि ने नगर का काफी अच्छा वर्णन किया है । नगर में ऊँचे २ महल थे जिन पर विभिन्न प्रकार की पताकायें फहराती थीं । प्रद्युम्न जब नारद के साथ विमान द्वारा द्वारका पहुँचा तो नारद ने नगर के प्रमुख महलों का वर्णन करके उसे परिचित कराया था ।

४. प्रकृति-वर्णन (वृक्ष एवं पुष्पलताओं का वर्णन)

सधारु कवि को प्रकृति-वर्णन भी प्रिय था । सत्यभामा के बाग का वर्णन करते हुये उसमें २५ से भी अधिक वृक्षों, पुष्पों एवं लताओं का वर्णन किया है । इस प्रकार का वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन अपभ्रंश साहित्य में भी खूब हुआ है और उसी का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है । प्रद्युम्नचरित में जिन वृक्षों एवं पौधों का वर्णन किया गया है वह निम्न प्रकार है—

जाइ जुही पाडल कचनारु, ववलसिन्नि वेलु तिहि सारु ।

कूँजउ महकइ अरु कणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुंढं टगरु मंदारु, सिंदूरु, जहि बंधे महइ सरीरु ।
 दम्बणा मरूवा केलि अणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥
 भ्रामं जंभीर सदाफल घरणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब तरणे ।
 केला दाख विजउरे चारु, नारिग करण खीप अपार ॥३४७॥
 नीवू पिंडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।
 नारिकेर फोफल बहुफले, वेल कइथ घरणे आवले ॥३४८॥

उपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के प्राचीन चरित काव्यों में प्रशुम्न चरित एक उत्तम रचना है और इसका हिन्दी साहित्य में भाषा और वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थान है । इसे ब्रज भाषा का आदि काव्य होने के कारण भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये आधार भूमि भी माना जा सकता है । ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी के अवलोकन से पता चलेगा कि कवि ने शब्दों के प्रयोग में कोई निश्चित लक्ष्य नहीं रखा किन्तु एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया है । इससे कवि की भाषा विषयक विद्वत्ता एवं तत्कालीन प्रचलित भाषा के विभिन्न प्रयोगों का भी पता चलता है । कवि ने कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो हमें हिन्दी के अनेकानेक शब्दकोशों में नहीं मिलते हैं इसलिये इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी शब्दकोश में भी अभिवृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है ।

इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी भाषा के आदि कालिक काव्यों की संख्या में एक और की अभिवृद्धि ही नहीं होगी किन्तु विद्वानों को प्राचीन काव्यों की परम्परा जानने में भी सहायता मिलेगी । हिन्दी भाषा के अन्वेषण प्रिय विद्वानों को इस काव्य से एक दिशा निर्देश प्राप्त होगा और खोज के लिये अधिकाधिक प्रेरणा मिलेगी । प्राचीन हिन्दी साहित्य की अबतक पूरी खोज नहीं हुई है, नहीं कह सकते सधारु जैसे महान् कवियों की कितनी अमूल्य रचनाएँ ग्रंथ भण्डारों के गहनांधकार में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं और हिन्दी सेवकों को कह रही हैं कि यदि अब भी तुमने ध्यान नहीं दिया तो हम सदा के लिए महाकाल के मुँह में विलीन हो जायेंगी ।

ग्रन्थ का सम्पादन—

इस ग्रंथ का सम्पादन कैसा हुआ है और उसमें किस सीमा तक सफलता मिली है इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। हमें इस बात का संतोष है कि हमसे इस ग्रंथ का उद्धार हो सका और इस बहाने हम हिन्दी की यह सेवा पा सके। ग्रन्थ संपादन में मूल प्रति के अतिरिक्त तीनों प्रतियों के पाठ में यदि थोड़ा भी असाम्य ज्ञात हुआ तो उसे पाठ भेद में दे दिया गया है। यद्यपि मूल प्रति अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुन्दरता से लिपि की हुई है फिर भी कुछ पाठ अशुद्ध लिखे होने के कारण उनके स्थान पर अन्य प्रतियों के शुद्ध पाठ को ही देना अधिक उपयोगी समझा गया है। इसके अतिरिक्त मूलपाठ में कोई संशोधन अथवा संवर्द्धन नहीं किया गया है। शब्दानुक्रमिका काफी विस्तृत होगई है किन्तु कवि द्वारा एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किये जाने के कारण उन सभी शब्दों को देना आवश्यक समझा गया, यही इसके विस्तृत होने का कारण है। हमें मूल ग्रंथ का हिन्दी अर्थ लिखने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ा; क्योंकि प्रद्युम्नचरित के बहुत से शब्द तो ऐसे हैं जो हिन्दी कोशों में खोजने पर भी नहीं मिले; तो भी जहां तक हो सका है शब्दों का ठीक अर्थ देने का ही प्रयत्न किया गया है।

गच्छतः स्वलनं वपापि, भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

धन्यवाद समर्पण—

अन्त में हम क्षेत्र कमेटी एवं विशेषतः कमेटी के मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को क्षेत्र द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित कराकर प्राचीन हिन्दी-ग्रन्थों को प्रकाश में लाने में सहयोग दिया है। श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ एवं श्री सुगनचन्दजी जैन के हम विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने प्रद्युम्नचरित के पाठ भेदों, शब्दानुक्रमणी एवं प्रूफ रीडिंग में हमें पूरा सहयोग दिया है। श्री भंवरलालजी पोल्याका जैनदर्शनाचार्य के

भी हम आभारी हैं जिनसे हमें ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी तैयार करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके अतिरिक्त डा० माताप्रसादजी गुप्त के भी हम बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे अनुरोध पर भूमिका लिखने एवं शब्दार्थ के निर्णय में भी सहायता दी है। श्री अगरचन्दजी नाहटा के प्रति भी हम आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने प्रद्युम्न चरित की प्रतियां उपलब्ध करने में अपेक्षित सहयोग दिया है। खण्डेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर कामां (भरतपुर) एवं बधीचन्दजी दि० जैन मन्दिर जयपुर के व्यवस्थापकों के भी हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने भण्डार की हस्तलिखित प्रतियां सम्पादनार्थ दी हैं।

चैनसुखदास

कस्तूरचन्द कासलीवाल

दिनांक १-१-६०

प्रद्युम्न चरित

स्तुति खण्ड

चौपई

सारद विणु मति कवितु न होइ, सरू आखरू एवि वृभइ कोइ ।

सो सधार पणमइ सरसुति, तिन्हि कहुं बुधि होइ कतहुती ॥१॥

सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोउ लहइ ।

जिणवर मुखह जु गिगाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥

अठदल कमल सरोवरू वासु, काममीरपुर लियो निकासु ।

हंस चढी कर लेखणि देइ, कवि सधार सरसइ पभणोइ ॥३॥

सेत वस्त्र पदमवतीण, करहं अनावणि वाजहि वीण ।

आगम जाणि देहु बहुमती, पुगु दुइजे पणवइ सरसुती ॥४॥

(१) १. सार (क) सार (ग) २. अखिर (क) अखरू (ख) अक्षर (ग) ३. नवि (क) नउ (ख) कहइ सभु (ग) ४. वृभं (ल) ५. जोइ सधारि जणणि सरसति (क) जो सधार पणवइ सरसुती (ख) जउ सधार पनमइ सरसती (ग) ६. ननमइ तिह नइ बुधि न हरती (क) तिन्ह कहु बुद्धि होइ मति (ग)

(२) १. सह (क) २. कहइ (ख) ३. को (क) ताकउ (ग) ४. कोइ (क, ख) ५. मुखि सो निश्चं जाणि (क) जउ मुख हति विद्या खणी (ग) ६. पणवउ परमाणि (क) सारद पनव बहुविधिघणी (ग)

(३) १. अठदल (क, ख, ग) २. कमल (ग) ३. मुखमंडरावासु (क) पुरलिउनिवास (ख) पुरी लियो निवासु (ग) ४. हंस चढि करि पुस्तकि लेइ (ग) (क) प्रति में तीसरा और चौथा पद्य निम्न प्रकार है—

जोइ सधारि पणवउं पणमेवि, सेत वस्त्र पदमावति देवि ॥३॥

करहि कला करि वीणा अति, आगम जाण देहु बहुमती ।

हंसासणि लेहुइ बुख अति, दोइ कर जोइ पणमउं सरसती ॥४॥

५. साधार (ग) सधार (ख)

(४) १. श्वेत (ख) २. पदमासण (ग) पदमावतीलीण ३. आगमु (ख, ग) ४. निमउ (ग) ५. पुणि (ग) ६. वृभं (ग) ७. पणमउ (ग) पणवउं (ख) ८. बहु सरसुती (ग)

पदमावती दंड^१ कर लेइ, जालामुखी चकैसरी^२ देइ^३ ।
 अंवमाइ^४ रोहिणि जो सारू, सासण^५ देवी नवइ सधारू ॥५॥
 जिण सासण^१ जो विघन^२ हरेइ, हाथ^३ लकुटि लै उभौ होइ ।
 भविह^४ दुरिउ^५ हरइ असरालु, अगिवाणीउ^६ पणउ^७ खिन्नपालु ॥६॥
 चउवीस^१उ स्वामी^२ दुह^३ हरण, चउवीसउ^४ मुक्के जर मरण ।
 जिण^५ चउवीस नमउ^६ धरि भाउ, करउ^७ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥
 रिषभु^१ अजितु संभउ^२ तहि भयउ, अभिनंदगु^३ चउत्थउ^४ वन्नंयउ ।
 सुमति^५ पदमुप्रभु^६ अवह^७ सुपासु, चंदप्पउ^८ आठमउ^९ निकासु ॥८॥
 सुविधु^१ नवउ^२ सीतलु दस भयउ, अरु^३ श्रेयंसु^४ ग्यारह जयउ ।
 वासुपूजु^५ अरु विमलु अनंतु^६, धम्म^७ संति सोलहउं^८ पहूपहंत ॥९॥

(५) १. भुरि करि लेइ (क) दंडु (ख, ग) २. सकेसरी (ग) चकैसरि (क)
 ३. देवि (क) ४. अंवाइ रोहिणि जे सार (क) अंवउ हीनउ खंडि जौ सार (ग)
 ५. सा सा प्रणमो नोइ सधार (क) सासण देवि कथइ साधार (ख)

(६) १. जिन शाशनि (क) सासणि (ग) २. रहाइ (ग) ३. हाथि लकुटि सो
 उभउ होइ (क) हाथ लकुटि टाढा लिउ लाइ (ग) ४. भवियण (क) ५. दुरी (क) दुरतु
 (ग) ६. असराल (क) ७. खेत्रपाल (क) खेत्रपालु (ख)

(७) १. चउवीसइ (क) २. सामी (क) ३. जे चउवीसइ मुक्का (क) चउवीसइ
 मुक्के ४. चउवीस नम नमो धरि भाव (क) जिण चउवीस नमउ धरि भाउ ५. करो
 (क) ६. जे (क)

नोट—७ वां पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(८) १. रिषभ अजित संभव तह भयउ (क) २. तहि ययउ (क) हरि युयउ
 (ख) ३. पद्म (क, ख) ४. यह (ख) ५. पासु (ख) ६. चन्द्रप्रभु (क) चंदप्पहु (ख)
 ७. आठमउ सुभासु (क) अठमु ससिभासु (ख)

(९) १. सुविधि (क) सुविहि (ख) २. शीतल तह बसमउ भयउ (क) सु
 नवउ शीतलु बसमउ (ख) ३. जिण श्रीअंशइ ग्यारमो थयउ (क) जिण सेंयमु
 ग्यारहमउ जयउ ४. धम्म संति सोलमउ जिणइ (क) धम्म संति सोलहमु निरुत्तु (ख)

कुंथु^१ सतारह^२ अर सु अत्थार, मल्लिनाथु^३ एगुणसी वार ।
 मुणिसुव्रतु^४ नमि नेमि^५ वावीस, पासु^६ वीरु महु देहि असीस ॥१०॥
 सरस कथा^१ रसु^२ उपजइ घणउ, निसुणहु^३ चरितु^४ पजूसह तणउ ।
 संवतु^५ चौदहसै हुई गए, उपर अधिक^६ ग्यारह^७ भए ॥
 भादव दिन^८ पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र^९ सनीश्चरवारु ॥११॥
 वस्तु बंध छन्द—

रागिवि^१ जिणवरु^२ सुट्टु^३ सुपवित्तु^४ ।
 नेमिसरु^५ गुण गिलउ^६ सामि^७ वपु^८ सिवदेवि^९ नंदणु ।
 चउनीसह^{१०} अइसइ सहिउ^{११} कम्मवारा^{१२} घण मान महणु ॥
 हरिवंसर^{१३} रुहइ मणि^{१४} तिजयणाहु^{१५} भय सासु ।
 समयमुहं^{१६} पंचज^{१७} गाराणु^{१८} केवलगाणा^{१९} पयासु ॥१२॥

(१०) १. कुंथु सतारह अर अठार (क) कुंथु भतारह अर अठार (ख)
 २. मल्लिनाथ उगणीस कुमार (क) मल्लिनाहु उगवीसमउ कुमार (ख) ३. मुणिसुव्वउ
 (क, ख) ४. निमि (ख) ५. पास वीर ए इम चौवीस (ख) पासु वीरु अन्तिम चौवीस ।

(११) १. रस (क) २. उपइ (ख) ३. निसुण (क) ४. पजउवन (क) पजुअह
 (ख) ५. चउदसइ इग्यार (क) चउदहसइइसु (ख) ६. अधिकइ (ख) ७. भईए ग्यार
 (क) संवत पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अर तह भया (ग) ८. भाद्रवसु दिनस
 बीजे सार (क) भादव सुदी पंचमी सो सार (ख) भादव वदि पंचमि तिथि सार (ग)
 ९. नक्षत्र (क) नखित्र (ख) १०. सनीचरवार (क)

(१२) १. नमिय (क) नखिवि (ख) २. जिणवर (क) ३. सुट्टु (ख) सतु (ग)
 ४. सुपवित्तु (क) ५. सोमवण्णु (क) सामवण्णु (ख) स्यामवण्णु (ग) ६. एवि (ख)
 ७. वावीसमउ जिणोसह (क) वावीसमु दयसहिउ (ख) ८. मव मोह खंजणु (क)
 मयमोहखंडणु (ख) ९. हरिवंसह तसु कमल रवि (क) हरिवंसह तह कमल रवि (ख)
 १०. तिजइ गणाहु पयासु (क) तिजय नाहु हय पासु (ख) ११. चउयइ संघह तसु हरइ
 (क) चउविह संघह तसु हरइ (ख) १२. केवल ज्ञान प्रकासि (क) केवलनारा पयासु
 (ख) केवलज्ञान प्रगास (ग) • मूलपाठ “चउवीसहं हय बय सहिउ”

चौपई

पढमच्च पच परम गुरु नवणी, वीय जिणवर पय सरण
गुरु रणीगंधु नउं धरि भाउ, करउं कवितु जउ होउ पसाउ ॥१३॥

द्वारिका नगरी वर्णन

जंबूदेशु मुदंसगु मेरू, लवणवुहि वेढियउ मु फेरू ।
भरहखेत दाहिण दिसि अहइ, सोरठ देसु माहि तिही वसइ ॥१४॥
वसइ गाम्ब'ते नयर समान, नयर विसेषइ देव समाण ।
यह मंदिर धवल हर उत्तंग, कणइ कलस भलकंति सुचंग ॥१५॥

(१) परणवि परणमो जिनवर वारिण, जामइ सुध वच्च गुण खारिण ।

करउ बबित जे करउ पसाउ, मोहिय जन तरा भनि भाइ (क)

पढम पंच परमेष्ठि एवेवि, वीरणाहु भत्तिय परणवेवि ।

जामु तित्थि मइ जिणवर धम्म, पाविवि सहलु कियउ नर जम्म । (ख)

पुणु पुणु परणवि जिणवर वारिण जामइ सहअच्छ मणि खारिण ।

करइ कवित्तु जइ करइ पसाउ । महु पजुष करणे अणुराउ ॥

नोट—ग प्रति मे प्रथम २ पंक्ति पीछे निम्न पाठ है—

दया धम्मं दिनु रयणि, करइ स्तुति चउवीस वंदनु ।

संभम भारु बहुविधि सहिउ, केवल ज्ञान प्रगास ॥

मुकत गउ खिइं कम्मकरि, बुहियण वदह तासु ॥

चौपई

पहिलइ माइ पिता गुरु सरण, बीतराय जिणवर पाइ सरण ।

गुरु निरगंधु नवउ धरि भाउ, हुइ इक चित्ति मुभु करी पसाउ ॥

(१४) २. वीप (क) वीउ (ख) द्वीप (ग) १. मुदंसरा (क, ख, ग) ३. लवणोदधि (क, ग) ४. वेढियउ जहु फेर (क) वेढिउ चउ फेर (ख) वेढयो चउ फेर (ग) ५. भरत (क, ग) ६. घेत्र (क, ग) क्षेत्र (ख) ७. तिह दाहिण दिसइ (क) तहो दाहिणा दिसइ (ख) दाहिणी दिसा (ग) ८. वेसु (ख) वेश (ग) ९. माभि सो वसइ (क) माभि तहो वसइ (ख) माहि तिसु वसा (ग)

(१५) १. वसहि (ख, ग) २. गाम (क, ख) गांव (ग) ३. तिह नगर समान (क) ते नयर समाण (ख) तहि नगर समाण (ग) ४. नयर सेवही (क) नयर विसेषहि (ख) नगर विसेषहि (ग) ५. विमाणु (क) विमाण (ख, ग) ६. मड (क, ख) गड (ग)

सायर माहि^१ द्वारिकापुरी, धराय^२ जक्ष जो रचि करि धरी ॥
 वारह^३ जोजण कै विस्तार, कंचण कलस ति दीसइ वार ॥१६॥
 छाए^१ चउवारे बहुभंति, सुद्ध फटिक दीसह ससि^२ कंति ।
 मार्गज मणि जाणौ जडे किमाड, सोहहि मोती वंदनमाल ॥१७॥
 इकु सोवन^१ धवलहर^२ अवास, मढ मंदिर देवल^३ चउपास ।
 चौरासी^४ चौहटे अपार, बहुत^५ भाति दीसह सुविचार ॥१८॥
 चहु^१ दिस राइर गहिर गंभीर^२, चहु^३ दिस लहरि भुकोलइ नीर ।
 सो वारवइ पयण जाणिए, कोडिध्वज निवसहि^४ वाणिये ॥१९॥

७. धवल हर उतुंग (ख) देवल उत्तंग (ग) ८. कणइ कलस भुलकंति सुचंग
 (क) काणय कलस धय मंडिय तुंग (ख) विविह भंति दीसहि अति चंग (ग)

(१६) १. मझिभ (क) माहि सो (ख) २. धराय जख सु रचिकरि धरी (क)
 धराय जक्ष सो रचि करि धरी (ख) धनयर जख बहुत विधि करी (ग) ३. जोयण
 कइ विस्तारि (क) जोयण कै विथारि (ख) जोजन कइ विस्तारि (ग) ४. शाहति
 भुलकहि वारि (क) सोहत दीसहि वारि (ख) कलसज दीपहि वार (ग)

(१७) १. छाजे (क, ग) छजे (ख) २. ससि उदौ करंति (ग) ३. मरकत
 मणि बहु जड़े किवाड़ (क) मरगज मणि बहु जड़िय किवाड़ (ख) मरगज भाणिक
 जडे किवाड़ (ग) ४. मोतिय (ख) ५. बन्दरवाल (क, ख, ग)

(१८) १. एक सुवन (क) इक सोवन (ख) इक सोवन्न (ग) २. आवास
 (क, ग) ३. देउल (क, ग) ४. चउरासी (क, ख, ग) ५. चउहटे (क, ख, ग) ६. बहुत भंति
 (क) विविह भंति (ग) ७. सविसार (क)

(१९) १. चउ (ख) २. विसु (ख) विसि (ग) ३. सायर (क) सायर (ख)
 साइर (ग) ४. गहिर (ख) गहर (ग) ५. गंभीर (ख, ग) ६. पवन (ग) ७. नीर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पक्ति श्रीर है—

चहुं विसि नाना वर्ण सिंगार, चहुं विसि हाट अनुपम अपार ।

८. चौबारे चौहटे जाणिया (क) सा द्वारवइ पयण जाणियइ (ख) धन धान सहित
 जाणीया (ग) ९. कोटीधुज (क) कोडीधुज (ख) कोडिधजी (ग) १०. बसहि (ग)

^१धर्म नेम को जागहि ^२गम्बगि, ^३अरू ^४तहि वसइ अट्टारह पवणि,
^६ब्राह्मण खत्री वसहि ^७तियवर, ^८वैस ^{९०}सूद ^{९१}तहि निमसहि अवर ।
^{१२}कुली छत्तीस त ^{१३}सूअइ ठाइ, ^{१४}तिहि पुरि सामिउ जादउ राउ ॥२०॥
 दल दल साहण ^१गगत अनंत, करइ ^३गर्ज ^४मेदनी विलसंतु ।
 तीनखंड चक्केसरी राउ, अरियणदल ^६भानइ ^७भरिवाउ ॥ २१॥
 तिहि वलिभद्र सहोदरू ^३अवरू, तिहि ^६सम पवरीष दीसह अवरू ।
 कोडि छपन जादउ अनिवार, करहि ^४राज ते सब परिवार ॥२२॥
 सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल सइन न ^१सूभइ ठाउ ।
 अंगर ^२सुगंध वास परिमलइ, कनक ^३दंड मिर चामरि ढलइ ॥२३॥
 पंच सबदु तहि वाजइ घरो, बहुत भाति ^१पावल पेखरो ।
 भरिहि भाइ नाचगि ^२पउ ^३धरइ, ताल विनांद कला ^४अगुसरइ ॥२४॥

(२०) १. धम्म (ख) २. जाणइ (क) ३. गमणि (क), गयणि (ग) ४. अवरू
 (ग) अर (क) ५. अठार (ख) छत्तीसइ (ग) ६. वांभण (ख,ग) ७. वैस (क) ८. अपार
 (ग) ९. वसहि (क) वइस (ख) विस (ग) १०. सुद्र (क) ११. को जाणइ सार (ग)
 १२. कुलिय (ख) (१३) छत्तीसइ निवसइ ठाउ (क) छत्तीसउ सूअइठाउ (ख) छत्तीस
 इन सूभइ टाउ (ग) १४. तिन पुरि निवसइ जादम राउ

(२१) १. वाहण (ख) तह साहण (ग) २. गिणत न अन्त (क) गरिणउ न
 अन्तु (ख) संयुत (ग) ३. राज (क ख ग) ४. मेइण (ख) ५. बहुत (ग) ६. भंजइ
 (ग) ७. भडिवाउ (क,ख,ग)

(२२) १. बलिभद्र वीरू महाई तास (ग) २. सहोयरू (ख) ३. जेय (क)
 जेटठु (ख) ४. नीलंबर मूसल उक्किट्ट (क) नीलंबर हलु मूसल उक्किट्ट (ख) रणि
 अजीत सो सन्न विनासु (ग) ५. वर वीर (क) (यह पंक्ति ग प्रति में नहीं है ।)

(२३) १. जिह सामंतन सूभइ ठाउ (क) जिह सामंत चक्कवइ राउ (ख)
 चउरंग वल नाहिन सूभइ ठाउ (ग) २. गंध वास परिमल मह महइ (क) सबहि भवर
 परिमलइ (ख) ३. कणइ (क) कनकति (ग)

(२४) १. पाय पेखणा (क) परबल पेखणो (ख) भरहि सिभाउ अघिकु
 पेखणा (ग) २. नाचहि (क) ३. बहुभाति (क) (तसिरा चरण ग प्रति में नहीं है)
 ४. गुणसंति (क) ऊसारहि (ग)

नारद ऋषि का आगमन

छत्रो हाथ कमंडल धरहि, मूंडे मूड चूटी फरहरइ ।
 चढिउ विमाण मन विहसंतु, नानारिषि तहां आइ पहुंत ॥२५॥
 नमस्कार करि सारंग-पाणि, करण्य सिंघासण दीनउ आणि ।
 रहस भाइ पूछइ नारायणु, कहा तुम्हारउ भो आगमणु ॥२६॥
 हमि आकासत करि उपण, मंत लोग वंदे जिगभूवण ।
 द्वारिका दीठी उपनउ भाउ, तउ तू भेटिउ जादउराउ ॥२७॥
 तउ नारायण विनवइ सेव, भलउ भयउ जो आयउ देव ।
 नानारिषि तुम कीयउ पसाउ, आज पवित्तु भयो इह ठाउ ॥२८॥
 निसुणि वयण रिषि मन विहसाइ, कुसल वात पूछि सतभाइ ।
 दइ असीस सो ठाढउ भयउ, फुनि नारद रणवासह गयउ ॥२९॥
 जहि सिंगार सतभामा करइ, नयण रेख कजल संचरइ ।
 तिलकु लिलाट ठवइ ससिभाइ, षण नानारिषि गो तिहि ठाइ ॥३०॥

(२५) १. करहइ (क) करहि (ग) २. चोटी (ख) उचले अणुसरइ (क)
 ४. नारद (क) नारदु (ख)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

काल रूपि कलि देखी जहा, राउ नरायणु बइठा तिहा ।

(दूसरा तथा तीसरा चरण नहीं है)

(२६) १. अर्घ (क) २. बोधउ (क) ३. कुसल (ग) ४. महमहणु (ग) ५. भयो (क) भउ (ख) भईया (ग)

(२७) १. भए उत पवणु (क) ते कियउ आगमणु (ख) ते कीया गमणु (ख)
 २. मातलोकि (क, ख, ग) ३. देखि द्वारिका (ग) ४. भेटियउ वलिभद्र याबव राउ (क)
 बलिभद भेटयउ नारउ राउ (ख) तउ तुम्ह उलटे जावमराउ (ग)

(२८) प्रथम दो चरण ग प्रति में नहीं है ।

(२९) १. 'रहसिभाइ पूछइ हरिराउ, तउ नाना रिषि उपना भाउ' प्रथम दो चरण के स्थान पर ग प्रति में है । २. तब (ग)

(३०) १. रेह (ख ग) २. कालु (ख) ३. सचरइ (ख)

नारद हाथ कमंडल धरइ, काल रूप कलि देखत फिरइ ।
 सो सतभामा पाछइ ठियउ, दर्पण मारु विरूप देखियउ ॥३१॥
 विपरित रूप रिषि दिठउ जाम, मन विसमादी सुंदरि ताम ।
 देखि कूडीया कीयउ कुतालु, साति करत आयउ वेतालु ॥३२॥

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

वडी वार रिषि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न वरिसरण कहिउ ।
 उपनो कोपु न सक्यउ सहारि, तउ नानारिषि चलयोउ पचारि ॥३३॥
 विणहुं तूर जु नाचण चलइ, ताकहुं तूर आगि जउ मिलइ ।
 इक स्याली अरु वीछी खाइ, डकु नारदु अरु चलीउ रिसाइ ॥३४॥
 नानारिषि रग चलयो रिसाइ, श्रींगी पर्वत वइठो जाइ ।
 मनमा वइठउ चितइ सोइ, कइसइ मान भंग-या होइ ॥३५॥

नोट—(ग) प्रति में प्रथम दो चरण निम्न प्रकार है—

सो नानारिषि आया तहाँ, सत्यभामा का मन्दिर जहाँ

४. निलाउ (ग) ५. तिह ठाइ (ग) ६. पहुतो (क ग) गउ (ग)

(३१) १. करइ (ग) २. आगे (क) ३. ठयउ (क ख) गया (ग) ४. माहि (क ख ग) ५. रूप (क ग) ६. देखिया (ग)

(३२) १. विप्रत (ख) विपरोत (क) विप्र (ग) २. कूडए (क) ३. संति (कखग)

(३३) १. वेर (क) २. न वेशण दियो (क) न वइसरण कहिउ (ख) न वइसरण खया (ग) ३. रोष (ग) ४. सक्यो (क) सक्या (ग) सकिउ (ख)

(३४) १. विना (क) २. कहइ (क) ३. तिन्हइ तूर जब अइवि मिलइ (क) ताकहु तूर आइ जहि मिलइ (ख) ४. वानर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

बाहु तूरि जो नाचण कुलिउ, तिसहि तूरुप आवतउ मिलउ (ग)

(३५) १. सींगी (क ख ग) २. माहि (ख) ३. चितवइ (क ख ग) ४. एह (क) इहि (ख) मानभंग किउ इसका होइ (ग)

ताम चितइत वइ मुनिराइ

कोवानल पजलइ सचभामु अंवमान खंडउ ।

कहि काहुस्यउ हहडउ अहव सिला तत्तपि चंपि छडउ ॥

तउ पछिताउ हरि करइ मन तह एम्ब विचारि ।

इह पह रूप जु आगली सो परगणउ गारि ॥ ३६॥

चोपई

गाउ गाउ तिहि फिरे असेसु, नयर सयलु फिरि दीठे देस ।

सउजु दहोतरू खग वइ पुरी, म नारद भरण इक फिरि ॥ ३७॥

नारद का कुंडलपुरी में आगमन

फिरत देस मन चितइ सोइ, कुवरि सरूप न देखइ कोइ ।

फुरि नानारिषि आयो तहां, कुंडलपुरि विजाहर जहां ॥ ३८॥

भीमुराउ आहि तिस तराउ, धरम नेम जागइ ते घणउ ।

अतिसरूप बहु लक्षण सारू, बेटा बेटी रूप कुम्वारू ॥ ३९॥

दीठि पसारि कहइ मुनि जाइ, इहि उगहारि कुम्वरि जो होइ ।

विहि पासाइ जइ घटइ संजोगु तउनि जु होइ नरायणु जोगु ॥ ४०॥

(३६) १. चितवइ (ग) २. मनहि (ख) मनहि फर भाउ (ग) ३. कोहानलु (ख) कोपानल (क) कोपि होइ (ग) ४. परजलइ (क) पज्जिलइ (ख) पज्जिलिउ (ग) ५. कहइ तथा पए हणउ (क) कहि कहइ हीया हरउ (ग) ६. तलि एह चंपउ (क) तालि चांप छंडउ (ख) ७. पछितावो (क) पछिताउ (ख) पछितावा (ग) ८. महि (क ख ग) ९. तहि (ख) इस ते (ग) एह थइ (क)

(३७) १. गाम गाम (क ख ग) २. सब जगु होता गावापुरि (ग) ३. तिहि नारद रिषि खिरि महि फिरि (क) ते सब नारद खिणु इकु फिरि (ख ग)

(३८) १. कुमरी (क ख) २. फिरि (ख)

(३९) १. भीषमु (क ख ग) २. आधि (ग) ३. तिहि (ख) ४. बहु (क) सो (ख) ५. बेटा रुपचंदु सुकुमारू (ख) बेटा वीक्षा रूपि अपारू (ग)

(४०) १. दृष्टि पसारि (क ग) २. सोइ (क ख ग) ३. बणइ (क) कुणइ (ग)

मन माँ डम नारद चितवइ, दइ असीस रगवासह गयउ ।
दीठी सुरमुंदरि तंक्षिणी, अरु तिहि छोलि कुम्बरि रुक्मिणी ॥४१॥

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

अति सरूप बहु लक्खवणवंत, चन्द्रवयणि समि उदउ करंत ।
हंसगमिणि मनु मोहइ सोइ, तिहि ममु तिरिय न पूजइ कोइ ॥४२॥
नारदु आवत जवु देखियउ, नमस्कार सुरमुंदरि कीयउ ।
देखि रुक्मिणी बोलइ सोइ, पाटघरणि नारायणि होइ ॥४३॥
भगइ सहोदरि भीषमु तणी, सेसपाल दीनी रुक्मिणी ।
इहि वर नयरी बहुत उछाहु, धरी लगन ठयउ विवाहु ॥४४॥
सुरथुंदरि बोलइ सनभाउ, नाहिन बोल निहारउ ठाउ ।
जो अरिराउ मानषइ कालु, सवंपरिमह आयो सुसपालु ॥४५॥

(४१) १. महि (क ख ग) २. अनतइ छोडि कुमरी रुक्मिणि (क) अरु तिहि छोलि कुमरि रुक्मिणि (ख) आयत बोलि तव रुक्मिणि (ग)

(४२) १. चन्द्रवदनि मसि सोह करंति (क) चन्द्रवदना नयणभलकंति २. मोहइ (क ख ग) ३. तिहि सरि तियंग न पूजइ कोइ (ख)

(४३) १. देखिया (ग) २. कियो (क) किया (ग) ३. कामिणी (ग) ४. बोलो (ग) ५. पटराणी (क) पटघरणी (ग)

(४४) १. सहोदरि (ख) सोइरि (ग) २. भणी (क) ३. सिसुपाल (क) सिसपाल (ख) सीसपालि (ग) यह मांगी मिसपालह धणी (ख) प्रति में यह पाठ है। ४. बीबी (क) ५. तराउ न दीउ बाह (क) ६. वरी (क ख) धन्य (ग) ७. लगनु (क ख ग) ८. थापउ (क) हइ ठयउ (ख) हो ठयो (ग)

(४५) १. नानारिष तब बोल पसाउ (क) नाही इन बोलह का ठाउ (ख) नही इव बोलण का ठाउ (ग) २. मनावे (ख) जे सिरि राउ मनहि खइ कालु (ग) ३. तब (ख) डिब (ग) ४. परिगह (ख) पुरगिह (ग) ५. आवे (ख) आया (ग)

नोट—तीसरा व चौथा चरण (क) प्रति में नहीं है !

निसुणि^१ वयण^२ नारदरिषि^३ चवइ, तिनि खंड मह जो चकवइ ।
 छपन कोडि जादउ^४ मुहवंतु^५, अइसइ छाड़ि विवाहहि अ^६नु ॥४६॥
 पूर्व रचित न मेटइ कोइ, जिहि कीहु रची^७ विवाहइ सोइ ।
 घालहु छोड़ि वात आपणी, नारायण परणइ रुकिमिणी ॥४७॥
 तउ सुरसुंदरि मनमा^८ रली, मुणिवर वात कहि सो मिली ।
 नारद निसुणि कहउ सतिभाउ, कहहु जुगति किम होइ विवाहु ॥४८॥
 रिषि जंपइ तुम अइसउ करहु, पूजा करण देहुरइ चलहु ।
 नंदणवण की करहु सहेट, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥४९॥
 तव जपइ रूपिणि सुरतारि, को पहिचाणइ कन्ह मुरारि ।
 तउ नारदरिषि कहइ सुजागु, तउ तुहि कहइ ताहि सहनागु ॥५०॥

(४६) १. वचन (ख) २. रिषि नारदु (ख) नाना रिद्धि (ग) ३. कहइ (ख)
 ४. जादव (क) जादौ (ख) ५. महमंत (क) मुहकंतु (ख) ६. तेसम (क) अइसउ
 ७. अत (क)

नोट—(ग) प्रति में ३-४ चरण मे निम्न पाठ है—

छपन कोडि माहि जिसकी आण, अइसा पुरुष न अउर सयाण ।

२. मूल प्रति में “करउ कवित जउ बइ” दूसरे और तीसरे चरण के ये शब्द और हैं ।

(४७) १. लिखनु (क ग) २. कि भूंटउ होइ (ख) ३. जेह कउं (क) जिह
 कहु (ख) जिस कहु (ग) ४. घडी (क) ५. वाल्लभ (क) छांडउ (ग) ६. सहल
 आपणी (ग) ७. व्याहइ (क)

(४८) १. तब (ग) २. स्वंदरि (क) ३. माहि (क ग) मह (ख) ४. सा
 भिली (क) तउ भजी (ग) ५. नानारिषि तुम्हि सांची कहाउ (ग)

(४९) १. एसी (क) ऐसा (ग) २. पूजा कारण (ग) ३. ठाउ (क)
 ठाइ (ख) ट्ठाइ (ग)

(५०) १. तउ (क) तौ (ख) इम (ग) २. जंपइ (ख) बोलइसा (ग)
 ३. रुकिमिणि (क ख ग) ४. नारि (ख) सुनारि (ग) ५. पिछाणउ (क) पिछाणइ (ग)

नोट—२ रा चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

६. नानारिषि (ग) ७. हो तुभ (क) हौ तुहि (ख, तउस्थउ (ग) ८. कहउ
 (क ग) ९. तास (ग) १०. सुहनाणि (क) सहनाणि (ख) सहनाण (ग)

संख चक्र गजापहरण जासु, अरु बलिभद्र सहोदर तासु ।
 सात ताल जो बाणनि हणइ, सो नारायण नारद भणइ ॥५१॥
 आपी ताहि वज्र मुंदड़ी, सोहइ रतन पदारथ जड़ी ।
 कोमलि हाथ करइ चकचूरु, सो नारायण गुण परिपूनु ॥५२॥

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

खड़ी बात करि नारदु गयउ, पटु लिखाइ रूपीणि को लियउ ।
 चहि विमाण मुनि आयउ तहा, सभा नारायणु वयठउ तहां ॥५३॥
 पुणु पुडु छोड़ि दिखालिउ जाम, मन अकुलाणउ नरवइ ताम ।
 काम बाण तसु हयउ सरीर, भउ विहलंघण जाउउ वीरु ॥५४॥
 कीयह आछर की वणदेइ, कै मोहणी तिलोत्तम कोइ ।
 की विजाहरि रूप सुतारि, काके रूप लिखो यह नारि ॥५५॥

(५१) १. गजापहरण (क) गज पहिरण (ख) गज पहरण (ग) २. जो बाणइ (म) जो बाणहि (ख) इकवारिहि (ग)

(५२) १. आपी तासु (क) आफियहि (ख) आपीताह (ग) २. सोमलि (ख) ३. चकचूरु (ख ग) ४. उनपूर (क) संपुनु (ख) परपुनु (ग)

(५३) १. खरी (क ख ग) २. पट (क) पडहु (ख) पाटु (ग) ३. रुक्मिणी (क) तासु (ग) ४. चडि (क ख ग) ५. रिपि (क) सो (ग) ६. आया (ख) पहुंता (ग) ७. बेठो (क) बेंठु (ख) बइठा (ग)

(५४) १. पुणि (क) फणि (ग) २. पट (क) पटु (ख) पटु (ग) ३. खोलि (ख ग) ४. विखालिय (क) विखालउ (ख) विखाया (ग) ५. अकुलानो (क) अकुलाणो (ख) अकुलाणि (ग) ६. नरवं (ख) सुन्दर (ग) ७. हुआ (ग) ८. भयउ (क) भय (ग) ९. विहलंघल (क) विहलंघलु (ख) विहलंघलि (ग)

(५५) १. कइ (क) कीइह (ख) केइ (ग) २. अपछरा (क ग) अछव (ख) ३. वणवेवि (क ख) वणवेव (ग) ४. तिलातिम (ख) कि लोचन (ग) ५. एह (क) केव (ख) एव (ग) ६. विज्जाहरि (क) विज्जहरि (ख) विद्याधर (ग) ७. संसारि (ग) ८. काकइ (क) काक (ख) कवण (ग) कवणतिया किसही उरणहारि ग प्रति का अंतिम चरण

नानारिषि वोल्इ सतिभाउ, आथि नयरु कुंडलपुर ठाउ ।

भीषमुराउ दीठ तंषीणी, रूपिणी कुवरि आहि तसु तंणी ॥५६॥

सोमइ तो कहु मागी देव, परणउ जाइ म लावहु खेड ।

मयण कामदेहुरे सहेट, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥५७॥

श्रीकृष्ण और हलधर का कुंडलपुर के लिये प्रस्थान

तउ तूठाउ महमहणुरिदु, मन में विहसि कीयउ आणन्दु ।

रथ साजिउ सारथि वयसारि, गोहिण हलहर लियो हकारि ॥५८॥

तउ सारथि षण रथ साजियउ, पवण वेग कुंडलपुर गयउ ।

वण उद्यान देहुरउ जहां, हलहरु कान्हु पहुते तहां ॥५९॥

ठयो मंनु नहु लाइ वार, पण दूत जणाइ सार ।

कहि जाइ तिहि सारउ वयणु, नंदगवणु आयो महमहणु ॥६०॥

निमुगि वयण रूपिणि विहसेइ, मोती माणिक थालु भरेइ ।

गोहिण मिली बहूत सहिलडी, पूजा करण देहुरे चली ॥६१॥

(५६) १. अतिथि नयर (क) आथि नयरु (ख) अथि नयर (ग) २. विट्ठउ (क) विट्ठ (ख) अथि (ग) ३. तिहतिरणी (क) ४. तिते (क)

नो — तिसुकी कुवरि नाम रूपिमणी (ग) प्रति का अंतिम चरण ।

(५७) १. स्वामी (ग) २. तुम्ह (ग) ३. न लावहु (क) म लावहि (ख) करहु सत (ग) मइ देहुरे इस करी सहेट, तहां करावउ तुम्ह कहु भेट ॥ (ग) प्रति के अंतिम दो चरण !

(५८) १. तूठउ (क ख) ऊठयो २. महमहणुरिदु (क) मह महणुरिदु (ख ग) ३. महि (क ख ग) ४. कीयो (क) कीया (ग) ५. आनन्द (क ग) आनंदु (ख) ६. सजिउ (क) सजोय (ग) ७. वसारि (क ख) वइसालि (ग) ८. मुर तेतीस लिये संभालि (ग)

(५९) १. तब सारथि सरथ पेलिया (ग) २. वलभद्र (ग) ३. कन्ह (कखग)

(६०) १. उट्टिउ मित्र (क) किया वंत्र (ग) २. पूछनि दूति (क) ३. करी जुगति जउ साच वण ४. मारिउ (क)

(६१) १. सुणी वचन रूपणि विगसाइ २. नारदु (क) ३. मिलिय गोहिण (क) सखी सहेली बहुतो लेइ (ग) ४. गयो (ग)

श्रीकृष्ण और रूक्मिणी का प्रथम मिलन

भेटिउ जाइ तहा हरिराउ, तउ चंपइ रूपिणि सतिभाउ ।
 रादउराइ वयण मुहु गुणहु, सात ताल तुम वाणनि हणउ ॥६२॥
 वज्र मुंदरी आपी आणि, तउ कर मसकी सारगपणि ।
 फुटि चून भइ मुंदड़ी, जनकु कणिक गरहट तल पड़ी ॥६३॥
 तउ कोवंडु नरायणु लेइ, हलउ आइ अगूठा देइ ।
 सल कैसे सति सूधे भए, सातउ ताल वेधि सर गये ॥६४॥
 नर रूपिणि मन भयो सनेहु, जाणिउ निज नारायणु एहु ।
 रथ चढाइ तिन्हि करी पुकारी, भीषमराइ जगाइ सारी ॥६५॥

वनपाल द्वारा रूक्मिणी हरण की सूचना

पाछइ गरव करइ जिन कोइ, चोरी गए रूक्मिणी लेइ ।
 तव वगवाल पुकारिउ आइ जहि वलु आइ मु लेहु छिड़ाइ ॥६६॥

(६२) १. रूक्मिणी (क) २. मुहि (क) हम (ग) ३. मुणहु (क ख ग)
 ४. तुम्हे वाणउ (क) तुम्हि वाणहि (ख)

(६३) १. जव (क) २. मुंदड़ी (क ख ग) ३. ति आपी आणि (क) आपी
 आणी (ग) ४. तंकरि (क) तउ करि (ख) करी समकरी (ग) ५. फूटी (क ख ग)
 ६. जाइ रूक्मिणी देखइ मणि पड़ी (क) जाण्यो साकरा हट ते पड़ी (ग)

(६४) १. हलहर (क ख) हलधर (ग) २. अगुठुउ (क) अगूठा (ग) ३. सल
 कियसे सत पूया भयउ (क) साल येरा सति सूधा भयउ (ख) सल केये सति उभे भये
 (ग) ४. बीधी (क) बिधे (ख)

(६५) १. तब (क ग) तउ (ख) २. रूक्मिणी (क) ३. सनेहु (क ख) तब को
 मन गया सनेहु (ग) —पूरा चरण ४. देउ (क) ५. तिणि (क ख ग) ६. जगावहु (ग)

(६६) १. करी (क) २. ले गयो (क) पीछइ गरबु म करिज्यो कोइ, चोरी
 गया ते रूक्मिणि लेइ (ग) ३. पुकारिउ (क ख ग) ४. जाइ (ख) ५. आहि (ख) होय
 इमु लेउ छुड़ाइ (ग)

वस्तु बंध—लइय रूपिणि रथहं चडाइ ।

पंचायगु तहि पूरियो, सारु सुर लोइउ संकिउ ।

महिमंडलु तहि थरहरिउ, टलिउ मेरु गामेसु कंपिउ ॥

महले जाइ पुकारियउ, पुहमिराय अवधारि ।

उभी रूपिणि देवलहि, हडिलइ गयउ मुरारि ॥६७॥
चोपाई

तउ मन कोपिउ भीषमु राउ, ठा ठा भए निसाणा घाउ ।

तुरीय पलागहु गैयर गुडहु, काल रूप हुड राम्वत चढहु ॥६८॥

सेसपाल राजा सुधि भइ, रूपिणि कुवारि चांगी हरोलइ ।

तवइ कोपि वोलियउ नरेस, तुरिय पलागहु वेगि असेस ॥६९॥

रहिवर साजहु गयवर गुरहु, सजहु सुहड आजु रगव भिडहु ।

रावत कर साजहु करवाल, धागुक करहु धगुह टंकार ॥७०॥

सेसपाल अरु भीषमु राउ, दुइ दल सूइन न सुभट ठाउ ।

घोडउ खुर लइ उछली घेह, जनु गाजहि भादौ के मेह ॥७१॥

(६७) १. बेसाइ (क) २. जब (क) ग प्रति में नहीं है । ३. सबद (क) सद् (ख) सबदु (ग) ४. सब लोक आइय (क) सुरलोक कंयो (ग) ५. दल वलउ (क) ६. हरयो (ग) ७. चत्यो (ग) ८. तब सेस (क) गिरिसेस (ग) ९. महिला जाइ पुकारि करि (क) १०. बेहरइ (क) ११. हरिलइ (ग)

(६८) १. थाडउ (क) ठाडा (ख) वेगे (ग) २. निसाहण (क) ख ग ३. पल्याणा (क) गयवर (क) ख ४. गुड्या (क) ५. साम्ह चड्या (क) सबहि चढहु (ख) ग प्रति में निम्न पाठ हैं—रूपिमणी कुमारी चोरी हडिलेइ, कहहु वेव यह कहसी भई

(६९) ६९ की चौपाई ग प्रति में नहीं है ।

१. अराह रयण च करहि टंकार (क)

(७१) १. बटवल सेनन (क) दुइवल सेनन (ख) दुइदल २. मिले लेह (क) ख ग ३. जिम (क) जाणो (ग) ४. गरजइ भावव घण मेहु (क) गज्जइ भावों के मेहु (ख) भावव गज्जइ मेह (ग)

निन्ह च१भर दीमड चमर२ंत, जा३गौ दावानल करलेहि निमजंत ।
 चतुरंग५ दलु भयो मंजुत, पव६ण वेग रंग आइ पहुँत ॥७२॥
 आवन दलु दीठउ अपवा१लु, उड़ी खेह लोपी मसिभा३णु ।
 अह३ डरि रपिगी लागी कहण, किम रंग जीतहुगे महमह६ण ॥७३॥
 रहि र१पीगी वामा काहरि होहि, पव२रिषु आज दिखाउ तोहि ।
 सेसपाल६ भानउ भरिवाउ, बा४धि न आ५गौ भीषमराउ ॥७४॥
 वात कहत दलु आइ पहुँत, सेसपाल बोलइ प्रजलंतु ।
 रावत निमजि लेहु करवा३लु, पडिउ भेट जि५न जाइ गुवा६लु ॥७५॥

(७२) १. ब्रह्मदिस (क) चौर (ग) २. चंबर (ग) ३. फरकति (क)
 करहरंत (ख) प्रहरंतु (ग) ४. ध्वजा पवण को जाएँ अंभु (ग) ५. कमलिनि जुन (क)
 ६. जरद सनाहु भाय मारंत (क) चमर छत्र दल मिलिया मंजुत (ग) ७. दल (क)

(७३) १. असमान (क) अयवाणु (ख) परवाणु (ग) २. मुहंकियो
 (क) लोप्या (ग) लोपिउ (ख) ३. अति (क) ४. महमहण (क) महमहिण (ख)

(७४) १. धीरी रुकमिणी मुकंद लहोह (ग) २. म कायिर (क) मत
 कातिर (ख) ३. दिखालउ (क ख) दिखावउ (ग) ४. भडि (क ख) भड (ग) ५.
 बंधी करि आणउ (क) बांधि जु आणेउ (ख) आणउ बंधिव (ग)

(७५) १. वलिबंतु (क) मयमंतु (ख) २. निजु (क) निवजि (ख)
 माजि (ग) ३. न्हासि जिति मरइ गुवाल (क) अब भागा कित जाहि गोवालु
 (ग) ४. किम (ख)

मूल प्रति एवं ग प्रति में निम्न छन्द नहीं है—

जब ससपाल जनमु तहि भयउ, बहु तुव वंड गभु संभयउ ।

तब तिहि माता बोले वयण, सउ अघगुण मइ बोले सहण ।

तरा कारणि हउ समुहु बिरुत्त, फुरिण मुहि रपिणि बेखहि

अन्तु ॥ ७७ ॥ (ख)

वस्तु बंध—सेसपाल विठु हरिराउ ।

जउ वैसंदर घत ढल्यउ, धनुष बाण कर ले अफालिउ ।

अव समरंगिणि जाणिउ, पुव वयण नियमण सभालिउ ॥

चोरी रूपीणि हरिलइ, इह तइ कीयउ उपाउ ।

कहा जाइ दिठि परचउ, अव भानउ भरिवाउ ॥७६॥
चोपई

दुष्ट वयण सठ पूरे जाम, कोपारूढ विष्णु भौ ताम ।

सारंगमणि धनुष लौ हाथि, सेसपाल पठउ जमपंथि ॥७७॥

श्री कृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

हाकि पचारि भिडइ दुइ वीर, वरसइ वाण सघण जाणौ नीरू ।

तव वलिभद्र हलावभु लेइ, रह चूरइ मइगल पहरैइ ॥७८॥

(७६) १. भिडइ (क) हमउ (ख) २. जणु (क) जनु (ख) ३. घीउ (ख)—पूरा चरण — कोपि होइ प्रज्जलिउ (ग)

निम्न पाठ—(ख) प्रति तथा (ग) प्रति में और है—

धणुह बाण करह लइ आफिउ, अवसमरंगणि जाणि जाणियउ (ख)

धनुष वाणि हथियार लिए, रे गवार संभार संभलि (ग)

४. पूरव वरते (क) पुष्प बहुरू (ख) किउ उपाइ क्यों रहहि जीव (ग) ५. नियमणह (ख) ६. हडिलेइ जालिउ (क) हड चलउ (ख) ले चल्थो (ग) ७. एतइ (क) यहु ते (ग) ८. माहउ किम जाइस (क) कहा जाहि तू (ग) ९. पडियउ (क) पडिउ (ख ग) १०. हिव (क) इव (ग)

(७७) १. सब (ख) सुणु (ग) २. नामु (ग) ३. भयो (क) भउ (ख) कोपवंतु भय कन्हहुताम (ग) ४. पाणि (क ख ग) ५. खड्यु (ग) ६. ले (क ग) लियो (ख) ७. पठयो (क) पठवउ (ख) पडवउ (ग)

(७८) १. एक बार (क) २. पचारि (ख ग) ३. उठहि (क) ४. घणा (ग) ५. जिम (क ग) ! जिउ (ख) ६. हलायुध (क) हलाउधु (ख) हलवधु (ग) ७. रथमइ गगते चूरइ लेइ (क) रह चूरइ मयगल पहरैइ (ख)

(७८) का अन्तिम चरण ग प्रति में नहीं है ।

सेसपाल कर धन^१हर लेइ, वार^२ पचास वा^३ण तो देइ ।
 नाराइगु सउ करइ संधारु^४गु, वह^५ दू^६इ सइ मेल्हइ सपरा^७गु ॥७६॥
 वह^१ सइ च्यारि वाण पहरैइ, वह^२ सैइ आठ संधाण करैइ ।
 वह सोलह धरि मेलइ चाउ, वह^३ बत्तीस न सूभइ ठाउ ॥८०॥
 दोउ वीर खरे सपरा^२ण, दूगो दूगो करइ संधाण ।
 बाढी राडी न उहरण^४ जाइ, वाणनि पुहिमि रहि धरछाइ ॥८१॥

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

तव नारायणु करइ उपाय, नाहि धनुष बाण को ठाउ ।
 फेरहु चक्र हाथि करि लियो, छिनि सीसु ससिपालह गयो ॥८२॥
 सेसपाल भानिउ भरिवाउ, विलख वदन भौ भीषमराउ ।
 भीष्म मारि रण सहन न जाइ, चवरंगु दलु चत्यो पलाइ ॥८३॥

(७६) १. धणहणु (क) धणहर (ख) प्रथम चरण ग प्रति में नहीं है ।
 २. वाण (क ख) ३. संधाणु करेहु (ग) ४. करउ (क) वेइ (ग) ५. संधाण (क)
 संधारु (ख) संधाण (ग) ६. वह (क) उहु (ख ग) ७. पराण (क) शिशुपाल (ख)
 परवाण (ग)

(८०) १. उसा चारि (क) उहु सय (ख) २. ए छत्तीस न चूकइ टाउ (क)
 उहु बत्तीस न सूभइ नाउ (ख) रथ चूरे मइगल पुहरेइ, सीसपाल का
 धुरणहणु लेइ (ग)

(८१) १. दोइ (क) दोहिमि (ख) २. सपराण (ख) ३. छई सेननउ उठिउ
 जाहि (क) ४. हटण (ख) ५. बाणउ (क) ६. पहुवि (क) ७. सब (क)

ग प्रति—बधी सुराउ न हदनउ जाइ. बाणिहि पुहवी रहि धर छाइ

(८२) १. करे उपाव (क) करइ उपाउ (ख) २. बाणनी (क) ३. फिरि
 बापु (क) फेरि चक्रु (ख) फेरि चक (ग) ४. हाथ हिलउ (ग) ५. छेद (ग)

(८३) १. बयो (क) २. विषम (क ग) ३. चउरंगु (ख) चावरंग (क)
 चउरंग (क) ४. बसु (ख) ख प्रति में तीसरा चरण नहीं है ।

तव रूपिणि बोलइ सतभाउ, राखि रूपचंद्र भीष्मराउ ।
 करइ साथ मन छाडइ वयरू, बहुडि आपि कुंडलपुर नयरू ॥८४॥
 तउ नारायणु करइ पसाउ, बाधिउ छोडउ भीषमुराउ ।
 रूपचन्द कहु आफहु भरइ, पुणि गिय गायर बहुडि हरि चलइ ॥८५॥

श्री कृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

बाहुडि हलहरू चलै मुरारि, दीठउ मंडपु वणह मंभारि ।
 विरख असोग तरा छइ जिहा, तिनी जगो सपते तहा ॥८६॥
 तव तिनके मन भयो उछाहु, आजु लग्न हइ करइ विवाहु ।
 महवर भुणि जगु मंगलचार, सूवा पढइ वेद भुण कार ॥८७॥
 वसासइ तिनि मंडपु कीयो, दे भावरि हथलेवो कियो ।
 पाणि—ग्रहण करिपरणी नारि, फुणि घर चाले कन्ह मुरारि ॥८८॥

(८४) १. थापउ (क) बंधहु (ख) २. कराउ (क) अर राउ (ख ग) ३. संति (क ख) सांत (ग)

ग—करहु सांत तुम कडुल जाउ, चालहु कुंडलपुर हरिराउ (ग)

(८५) १. को आगे करइ (क) कहु आंकउ भरइ (ख) कहु अंक भरिउ (ग) २. बाहुडि नृप नयर कहु चलइ (क) फिरि गिय नयरि बहुडि हर चलइ (ख) पुणि तिहि नयरि बहुडि चालिबउ (ग)

(८६) १. विरखु (ख) वृष्य (ग) २. तराउ (ख) तरा (ग) ३ है (ख) हइ (क) ४. तोन्यो (ग) ५. पढते तहां (ग) सुपढते तहां (ख)

८६ वां छन्द क प्रति में नहीं है

(८७) १. ठया (ग) है करहु (ख) २. महवर भुणि जगु मंगलचार (ख) मधुर धुनिहि होइ मंगलचार (ग) ३. मूल पाठ महु में चरित्र सु जाणौ मंगलचार सुवर (ख) सोइ (ग)

(८८) १. वणह माहि (क) वणसइ महि (ख) हरइ वंसका मंडप थया (ग) २. थयउ (क) ठयउ (ख) ३. देवि समरि (क)

श्रीकृष्ण का रूपिमणी के साथ द्वारिका आगमन

जव वाइस नारायणु गयो, छपन कोड़ी मिलि उछव कीयउ ।
 गूडी उछली घर घर वार, उंभे तोरण वंदनमाल ॥८६॥
 इक रूपिणि अरु कान्ह मुरारि, विहसत पैठा नयर मंभारि ।
 ठाठा लोग रहाए घरो, उइ पइ पठे मंदिर आपरो ॥८७॥
 गये विवस बहु भोग करंत, सतभामा की छोड़ी चित ।
 नित नित सुख विलखो खरी, सबतिसाल बहु परिहस भरी ॥८८॥

सत्यभामा के दूत का निवेदन

महलउ राणी पठयो तहा, बलिभद्र कुवर वइठे जहा ।
 सीस नाइ तिहि विनइ सेव, सतीभामा हौ पठयो देव ॥८९॥
 हाथ जोड़ि महले बीनयो, सतिभामा हइ अइसउ कहउ ।
 कवगु दोसु मो कहहु विचारि, वात न पूछइ कन्ह मुरारि ॥९०॥
 निसुणि वयगु हलहलु गऊ तहा, राउ नरायणु वइठउ जहा ।
 विहसि वात तिहि विनइ घणी, करइ सार सतिभामा तरणी ॥९१॥

(८६) द्वारावइ (क) जव सौ नयरी (ख) २. जाय (ग) ३. सहुछउ (ख)

आनन्व कराइ (ग) ४. बांधे (ख) रोपी (ग) ५. बंदरवाल (क ख ग)

(८७) १. विगसत (ग) २. सवि (क) अइ (ख) बुइ (ग)

(८८) १. एक (क) २. नारि (क) रोबइ (ख) भुरवइ (ग) ३. सोउ
 किशाल (क) ४. दुखह भरी (क ग)

(८९) महिला (ग) २. जहाँ (क) ३. कुमर (क) कुमरू (ख) कन्ह (ग)
 ४. हमि (क) हउ (ख ग) ५. पठए (क) पठयउ (ख) पठई तू (ग)

(९०) १. हिव (क) तुम्ह (ग) २. अइसा चवइ (ग) ३. कवखु (क ख ग)
 ४. सोहि (क) मुहि (ख) हम (ग) ५. जु बात (ग)

(९१) सुरी बात (ग) हलहर (क ख ग) ३. गयो (क) गयो (ग) ४. तवइ
 (ग) तिह (क) ५. बीनबी (क) विनबं (ग) ६. करउ (ग)

तउ नारायणु करइ कुतालु, जूठउ रूपिणि तणउ उगालु ।
 गांठि वाधि संपतउ तहा, सतिभामा कइ मन्दिर जहा ॥६५॥
 सतिभामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरू वोलइ वयणा ।
 कहइ वात बहु परिहस भरी, कवण दोस स्वामी परहरी ॥६६॥
 तउ हसि वोलइ कन्ह मुरारि, मधुर वयण समझाइ नारि ।
 कपट रूप सो निद्रा करइ, गांठी भुलाइ खाट तर धरइ ॥६७॥
 गांठी भूलति जव दीठी जाम, उठि सतभामा छोरी ताम ।
 परीमलु महकइ खरी सुगंध, देखी सुगंध लगाइ अंग ॥६८॥
 अंगु मलति जव दीठी राइ, जागि कन्ह वोलइ विसधाइ ।
 तेरउ जाण गयउ सबु आलु, इह तउ रूपिणि तणउ उगालु ॥६९॥

(६५) १. गंठि (क ख) २. बंध (ग) ३. संपतो (क) संपता(ग) ४. कउ' (क ख) का (ग)

(६६) १. दीठा (ग) २. जाम (क) ३. बोलो इक माम (क) ४. रोसह (क)
 ५. दोसि (क ख) दोसे (ग)

(६७) १. समझावइ (क ख ग) २. तलि (क ख ग)

(६८) गंठडी भुलकत बेखी (ग)

नोट—दूसरा चरण क प्रति में नहीं है

२. छोड़ी (ख) बीठी (ग) ३. वहइ धरिय (ख) बीठा गंध सुचंग (ग) ४.
 बोडि (क) ५. लावइ (ख ग)

(६९) १. नारि (ग) २. जागु कन्ह बोलीया विचारि (क) ३. बिहसाइ (ख)
 ४. तेरा (ग) ५. सिंगारु गयउ सबु अहल (ख) अवनगु गया सबु आलु (ग) ६. ऐहु
 (क) इहु है (ख)

निम्न छन्द मूल प्रति तथा क और ख प्रति में नहीं है—

बिलबेते क्यौ घृत टलि जाइ, अणभावता न रुषा लाइ ।

कहा नाराइणु भंलहि आलु, इहु मुहु बहरिण तणा उगालु ॥

सत्यभामा का रूक्मिणि से मिलने का प्रस्ताव

सतिभामा बोलइ सतिभाउ, मो कहु रूपिणी आरिण भिटाउ ।
 तव हसि बोलइ कान्ह मुरारि, भेट कराउ वराह मभारि ॥१००॥
 उठि नारायण गयो अवास, वैठउ जाइ रूक्मिणी पास ।
 वहु फुलवाडि वसइ वरा माहि, चलहु आजि जह जेवण जाहि ॥१०१॥
 रूपिणि सरिस नारायण भये, चढे सुवासण वाडि गये ।
 विरख अमोग वावरी जहा, लइ रूक्मिणि उतारो तहा ॥१०२॥
 सेत वस्त्र उज्जल आभरण, करकंकण सोहइ आभरण ।
 देवी रूप अला वइसारि, जपइ जाप तहा गयउ मुरारि ॥१०३॥

सत्यभामा और रूक्मिणी का मिलन

पुणि सतिभामा पठइ जाइ, हउ रूपिणि कहुं लेउ वुलाइ ।
 जाइ वावरी ठाढी होइ, जिम रूक्मिणी भिटाउ तोहि ॥१०४॥

(१००) मिलाइ (ग) करावहुं (ग)

(१०१) १. विहुठउ (क) बइठा (ग) २. फल आवि (क) फुलवाडि (ख)
 फुलवावि (ग) ३. अछइ (क) अछं (ख) अछहि (ग) ४. तुम भेटण जाहु (क) तहं
 भेटण जाहि (ख) तिन्ह देखण जाहि (ग)

(१०२) १. भयउ (क) गये (ख) भया (ग) २. वृक्ष असोक (ग) ४.
 बाघडी (क ख ग)

(१०३) १. श्वेत (ग) २. सोहइ अनियर काजल नयण (क) कर कंकण
 सोह तडिबयण (ख) कर कंकण पहरे मन हरण (ग) ३. अवल वइसारि (क)
 आल वंसारि (ख) ४. जपे (क) जपहि (ख) जपियऊ (ग) ५. कहि (क ख ग)

(१०४) १. फिणि (क) फुणि (ख) फुनि (ग) २. पहिती (क) पठई (ख) पठरां
 (ग) ३. कहे दात नरवइ सतिभाउ (क) ४. अडाइ (ग) ५. क प्रति में निम्न पाठ है—

चालि गेहिणी तू बलि होइ, वन रूक्मिणि भेटाउ तोहि ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

६. भेटाउ (क) भिटायउ (ख) मिलावहु (ग)

गोहिरा मिली^१ बहुत सहिलड़ी, वाडी गइ जहा वावडी ।
 नयरा निरखि जद देखइ सोइ, वरा देवी वह वैठी कोइ ॥१०५॥
 पय ससि चेली जल मह हाइ, पुगि देवी के लागइ पाइ ।
 सामिगि मुहिकहु देहु पसाउ, जिम मुहि मानइ जादउराउ ॥१०६॥
 अरव वह देवी मनावहि सोइ, जिमि रुकिमिगि दुहागिगी होइ ।
 विविह पयार पयासइ सोउ, आगइ आइ हंसइ हरिदेउ ॥१०७॥
 सतभामा तुमि लागी वाइ. वार वार कत लागइ पाइ ।
 काहो भगति पयासहु घणी. यह आलइ वयठी रुकिमिगी ॥१०८॥
 सतिभामा बोलइ तिहि ठाड़, कहा भयो जइ लाइ पाइ ।
 कूडी बूधी करइ तू घणी, यह मो वहिगी होइ रुकिमिगी ॥१०९॥

(१०५) १. बहुत सहेली मिली (ग) २. गयी जिहां बाडी वावडी (क) वाडी मांहि देखहि एकली (ग) ३. जो नयरा बिलाइ (क) जिव देखइ साइ (ख) जे (ग) ४. देखा (ग) ५. कइ लागइ पाइ (क ख) यह (क)

(१०६) १. परहसि बोलि वगमहि जाइ (ख) २. लागी (ग) लागै (ख) ३. पाय (ख ग) ४. मोकहु (क ख) हमको (ग) ५. करहु (क) ६. जउ हउ मारौ जादमराय (ग)

(१०७) १. इम (क ख) जउ (ग) २. ऊहु (ख) ३. तउ (ग) ४. सेव (क ख) ५. आगलि (क) ६. हसै ।

नीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१०८) कितू लागइ पाइ (क) तुम्हि लागी पाइ (ख) तुम्ह कहउ सभाउ (ग) २. क्या (ग) ३. भाइ (ग) ४. काहु भगति करहि बहु घणी (क) काहु भगति पयासहु घणी (ख) कहा जाति बोलहि आपणी (ग) ५. अलाइ (ग) यह तो वहिगि आहि रुकिमिगी (क)

(१०९) १. हुआ (ग) २. कूड बुद्धि (क ख) कूडी बुद्धि (ख) इतनी बुद्धि (ग) ३. बूझी तुम्ह तरणी (ग) ४. मोहि (क) मुह (ख) तउ (ग)

राति दिवस तू करिहि कुतालु। वंस सहाउ न जाइ गुवालु ।
 फुगि रूपिणी सह करह सभाइ। चालइ वहिण अवसइ जाइ ॥११०॥
 चढि याण ते गइ अवास, सव सुख भूजहि करहि विलास ।
 राजु करत दिन कछुक गये, राणी दुहु गर्भ संभये ॥१११॥
 तव सतिभामा चवइ निरुत, जाके पहिलइ जामइ पूत ।
 सो हारइ जाहि पाछइ होइ, तिहि सिहु मूंडि विकाहइ सोइ ॥११२॥
 सतिभामा अरू रूपिणि तराँ, वलिभद्र आई भयउ लागणउ ।
 तुम जिण करहु हमारी काणि, जे हारहि तिहि मूडहु आणि ॥११३॥
 एतह कुरवइ पठयउ इत, नारयण पह जाइ पहुत ।
 तुम घर जेठउ नंदन होइ, ता दूतह करावहु सोइ ॥११४॥

(११०) १. कोताल (क) डमाल (ग) २. वश वजाहें नही गोवाल (क)
 मुभ कहु कहा भोलवहि गोवाल (ग) ३. स्यो कहे सुभाइ (क) सह कहइ सुभाइ
 (ख) बोलत सतभाउ (ग) ४. चालि (क ख) चलहि (ग) ५. बहणि (क) बहण (ख)
 बहुण (ग) ६. अपणे घरि जाहि (क) आवासहि जाहि (ख) आवासहि जाइ (ग)

(१११) १. चकडोल (क) विमणि (ख ग) २. गए (क) चली (ग) ३.
 आवास (क) आवासि (ग) ४. भोग (ग) करत केलि दिन केतक गये (ख) ५. बहुत
 (क ग) ६. विहुकर (क) बुहु कहु (ख) दुन्ह (ग) ७. ज भए (क) न. गभ (ख)

(११२) १. जिहि घरि पहिला जन्मे पूत (ग) २. जिह (क) जिसु (ख)
 जिहि (ग) ३. पीछे (ग) ४. सिर (क) सिस (ख ग) ५. विवाहइ (क ख)
 विवाहै (ग)

(११३) १. भणउ (क) तरणउ (ख) तराण (ग) २. कुमार (क ग) ३. भयो
 (क) सयउ (ख) हुवा (ग) ४. लागणा (ग) ५. मत (क ग) ६. तिह (क) तिस (ग)

(११४) १. एतइ (क) तिहि (ग) २. कइरविहि (ग) ३. तह (ग) ४. आई
 (क ख) तिह को निय धुब व्याहइ सोइ (क) कुरवइ धीय विवाहइ सोइ (ख ग)

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

एतह^१ आइ^२ बहुत^३ दिन^४ गये, दुहु^५ नारि^६ कह^७ नंदन^८ भये ।
लक्षणवंत^९ कला^{१०} समजुत, ऐसे^{११} भये^{१२} दुहु^{१३} घर^{१४} पूत ॥११५॥

सतिभामा तणउ^१ वधावउ^२ गयउ, जाइउ^३ सेसे^४ ठाढउ^५ भयउ ।
रूपिणि तणउ^६ वधावउ^७ जाइ, पाइत^८ सो^९ पुण^{१०} वयठउ^{११} जाइ ॥११६॥

जागि^१ नरायणु^२ वइठो^३ होइ, रूपिणि^४ दूत^५ वधावउ^६ देइ ।
हाथ^७ जोडि^८ वोल्इ^९ विहसंतु, रूपिणि^{१०} घरह^{११} उपनउ^{१२} पूत ॥११७॥
दूजउ^१ दूत^२ वधावउ^३ देइ, नारायण^४ सिह^५ विनवइ^६ सोइ ।
हउ^७ स्वामी^८ तुम^९ पह^{१०} पठयउ, सतिभामा^{११} पुणि^{१२} नन्दण^{१३} भयउ ॥११८॥

(११५) १. एतउ कहि दूत तव गये (क) २. भये (ग) ३. वेउ (क) बुन्हु
(ग) ४. घरि (क) ५. लखिण (क ख) ६. वत्तीस (ग) ७. संयुक्त (क ग) संजुक्त
(ख) ८. जइसे (ग) अइसे (ख) ९. बिहु (क) १० के (ग)

(११६) १. जाइउ (क ख) जाइअ (ग) २. सीसउ (क) सीसे (ख) सीसा
(ग) ३. ठाडउ (क) ठाउ (ख) ठाडा (ग) ४. आइ (क) देइ (ग) ५. तालि से
(क)—सो पुणि पाइवि लडा रहेइ (ग)

(११७) १. होइ (क)

ग प्रति का तीसरा चौथा चरण—

रुकमिणि पूतु जण्यो छइ आज, देवउ वधावा ता हरे काजि ।

(११८) १. बीजा तिहां (ग) (२) वधावा (ग) ३. स्यो (क ग) सहु (ख)
४. विनवे (क) विनवे (ख) विनउ (ग) ५. करेइ (ग) ६. हो (क) ७. पासि (ग)
८. पठाविउ (क) पाठयउ (ख) पाठियौ (ग) ९. घरि (ग)

तउ हरि हलहर लेइ हकारि, कहइ वात जा वलि वयसारि ।
 भूँठउ वोलि टलै जिन कम्बगु, जेठउ पूत भयउ परदवगु ॥११६॥
 दूहु नारि घर नंदरा भए, घर घर नयारि वधावा गए ।
 सूहो गावइ मंगलचार, वंभरा वेद पढइ भुगंकार ॥१२०॥
 बाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार ।
 घरि घरि कूँ कूँ थापे देह, मंगलगावहि कामिरा मेह ॥१२१॥

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

छठि निसि जागरण करंतु, धूमकेतु तहा आइ पहुंत ।
 घोमि विम्बारा रचिनु छरा जाम, धूमकेतु मनि चितित ताम ॥१२२॥
 उतरि विमारा दिट्ठु परदवगु, भराइ जक्षु यहु खत्री कवगु ।
 वयर सम्हालि कहइ तंखीणी, इणी हरी नारी मुहि तरणी ॥१२३॥

(११६) १. तिहि (ग) २. लोयउ हकारि (क) लीया बुलाय (ग) ३. वउसा विचारि (क) वलिबइ साइ (ग) ४. भूँठी बात कहइ पर कवगु (ग) ५. जेठा (ग) ६. पुत्र (क ग) ७. परदवगु (क ख)

(१२०) १. दूये (ग) २. महउ गमिउ मंगलचार (क) सूहउ करहिगु मंगलघाव (ख) अहि जो गावइ मंगलचार (ग) ३. जयकार (क) भरांकार (ग)

(१२१) १. सविचार (क) २. शब्द बहुताल (ग) ३. अनेचार (ख) ४. कुंकम रोला (क) ५. मंगल चारुवर कामिरा करेह (ख) धरि धरि कामिरा गीत करेह (क) मूलपाठ—यह चरण मूल प्रति में न होने कारण 'घ' प्रति से लिया गया है ।

(१२२) १. छट्टा दिवसि निसि गीत चबौति (ग) २. थामि (क) लोबि (ख ग) ३. रहइ (क) रहउ (ख) रहया (ग) ४. गरिा (क) खरिा (ख) तिसु (ग)

(१२३) १. उठिउ (क) २. देव (क) जखिय (ग) ३. बइर (क) वयर (ख) बइरू (ग) ४. एरिा (क) वयरू हडो (ख) यह हइ हारि नारि (ग)

हुइ प्रछन्न उठावइ सोइ, जैसे नयर न जाणइ कोइ ।
 घालि विमारी चलिउ ले तहा, वनखंड माझ सिला हति जहा ॥१२४॥
 धूमकेतु तौ काहौ करइ, घालउ समुद्र त वेलउ मरइ ।
 वामन हाथ सिला सो पेखि, इहि तल धरउ मरउ दुख देखि ॥१२५॥
 पूर्व रचित न मेटण कवणु, करम बंध भूजइ परदवणु ।
 चापि सिलातल सो घर जाइ, तव रूपिणी जागइ तिहि ठाइ ॥१२६॥
 वस्तु बंध—छठि रयणि हरिउ परदवणु
 तह रूपिणि कारणु करइ, अरे पाहरू तुम्ह वेगि जागहु ।
 नारायण हर निमुणि, तुम बलिवंत पुकार लागहु ॥
 सतिभामा आनंद भयउ, कलयर करइ बहूनु ।
 सो रूपिणि कारणु करइ जिहि रहस्यउ निसि पूत ॥१२७॥

(१२४) १. परछन्नि (क) परछन्नु (ख) प्रछन्नु (ग) २. उठाउ (क) तव उठियो (ग) ३. गयउ (क) चल्या (ग) ४. सो (ग) ५. वनखंड राडि (क) वणिखंड राडि सिला थी जहा (ख) वणुखंड राडि सिला हइ जहा (ग)

(१२५) १. तह (क) तउ (ख) तुव (ग) २. काहउ (क) कहा (ग) ३. पामउ (क) ४. बेगिउ (क) बेगउ (ख) वेगि (ग) ५. वावन (क ख ग) ६. धरो (क) घालउ (ख) धरइ (ग)

(१२६) १. पूर्व क्रम सु मेटइ कवण, तउ ए बुख बेखे परवमण (क)
 पूर्व वरु न मेटइ कोणु, करम बंध भुं चं परवौणु (ख)
 पूर्व विभुन मेटइ कोइ, करम लिखा सो निश्चइ होइ (ग)

२. चंपि (क ग) ३. रयि (क) ४. जाणइ (क) जगाई (ग) धूमकेतु चंपि विगसाइ (ख)

(१२७) १. निसहि हडउ परदवणु, (ग) २. हो (ग) ३. पहववावे (ख)
 ४. हलहर (क ख) हरवर (ग) ५. मिलहु (ग) ६. कुमार (क) ७. बलवंड (ग)
 ८. मनि (ग) ९. कलियल (क) करजल (ग) १०. हडियो पूत (क) हाडलियउ निसि पूत (ख) जिहि का हडिया तिस पुत (ग)

चौपई

नयर^१ माहि^२ भयउ^३ कहलाउ^४, सोवत जागिउ^५ जादवराउ ।
छपन कोटि मिल चले पुकार, फुरिण^६ तिस तणी न पाइ सार ॥१२८॥

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिये प्रस्थान

एतइ^१ मेघकूट^२ जहि^३ ठाउ, जमसंवर तहि^४ निमसै^५ राउ ।
वारहसइ^६ विद्या जा^७ पासु, कंचणमाला^८ गेहिण^९ तामु ॥१२९॥
वहिकौ^१ मन वनक्रीडा^२ रल्यउ, चढि विम्बाराण^३ सकलत्तउ^४ चलिउ ।
सोवण^५ माभ^६ पहुतउ जाइ, वीरू परदम्बराणु^७ चाप्पोहौ^८ जहा ॥१३०॥
देखी^१ सिला माभ^२ वरण^३ धरी, वाम्बन हाथ^४ जु उची खरी ।
खरा उचसहौ^५ खरा तलही होइ, उतरि विम्बाराणहु^६ देखइ सोइ ॥१३१॥

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

विद्या^१ के बल सिला^२ उठाइ, तउ^३ नरिद देखइ निकुताइ ।
लषण^४ वत्तीस कनकमय^५ अंगु, जमसंवर देखयउ^६ अरांगु ॥१३२॥

(१२८) १. नयरि (ख ग) २. मांभ (ग) ३. हुआ (ग) ४. कलिहाउ (क)
(क) कलिहाइउ (ग) ५. जाग्या (ग) ६. तसु (क) तिनि (ग)

(१२९) १. तहि (ग) २. मेघकुटिलपावइ (ग) ३. जिह (क) जिस (ख)
४. गोई अवासि (ग)

(१३०) १. उपवन (क) उनका (ग) २. क्रीडा (क) कोला (ख) ३. ऊपरि
भया (ग) उछक भयो (क) ४. वेइठि (क) ५. गयउ (क) गया (ग) ६. धरिउ (क)
चापिउ (ख) चापी (ग)

(१३१) १. बीठी (क) २. सो (क ख) जो (ग) ३. कर (ग)

(१३२) १. बिहि संजोग (ग) २. सिललाई उट्टाइ (ग) ३. कनक मइ अंगु
(ग) उरांगु (ग) मूलपाठ—हचरेतसु अंगु

कुम्बरू उठाइ उछंगह लयउ, वाहुडी राउ विमाराण गयउ ।
 पाट महा दे राणो जाणि, कंचणमालाहि आपिउ आणि ॥१३३॥
 कंचणमाला लयउ कुम्बरू, अति सरूपु बहु लक्षण सारू ।
 तिसके रूप न देखइ कोइ, राजा धर्मपूत सो होइ ॥१३४॥
 चढि विमाराणु सो गयउ तुरंतु, पम्बण वेग सो जाइ पहुँत ।
 नयरि उछाउ करै सवु कवराणु, कणायमाल हुवो परदवराणु ॥१३५॥
 भो प्रदुवनु कुवर सुपियारू, अति सरूप गुण लक्षण सार ।
 दुइज चंद जिमि त्रिधि कराइ, वरस पांच दस को भो आइ ॥१३६॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

फुणि सो पढण उभावलि गयउ, लिखितु पढितु सवु बुझि वि लियउ ।
 लक्षण छंदु तर्कु बहु सुणिउ, नाटक राउ भरथ सवु मुणिउ ॥१३७॥

(१३३) १. कर उचाइ (क) २. चडेइ (ग) ३. आफिउ (क) दोन्ही (ग)

(१३४) १. तिहि के (क) तिहिकइ (ग) तिसकइ (ख) २. पूजाइ (ग) ३. राजाहि (ख) राणा (ग) ४. मो होइ (ग)

(१३५) १. विमाराण (क, ख, ग,) २. तुरंत (ग) ३. गया (ग) ४. आनंदु ५. (ग) करइ(ख,ग) ६. भणइ (ग) ७. घरहि(ग)

(१३६) १. भो (क) तव (ख) सो (ग) २. करे (क) कुमार (ख) खरा (ग) ३. सुखसार (क) ४. बहु (क ख ग) ५. दोइज (क) बीज (ग) ६. विरधि (क ख ग) ७. वरस पंचनउ हुवो जाम (क) बरिस पांच दस का भउ राउ (ख) दस वरस को भयो तिह टाह (ग)

(१३७) १. पठणउ (ख) २. परसाउ (ग) उभावहि (क) भावरि (ख) भाउरि (ग) ३. गुण (क) बुझिहि (ख) बुझि (ग) ४. लयो (ग) ५. बहुत सो (क) कथितु बहु (ख) ६. राव (क) राज (ग) मूल पाठ तकु

नोट—तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं हैं ।

धनुष वाण^१को बूझि^२उ जाणु, सिंघ जूझ^३कौ जाणिउ जाण^४ ।
लडणु पडणु^५ निकासु^६ पइसारु, सवु जाण प्रदुवनु कुम्हारु ॥१३८॥
एसी वीर भयउ परदवणु, तहि^१ सरिसु न बूझइ कवण ।
कालसंवर घर वृद्धि कराइ, वाहुरि^३ कथा द्वारिका जाइ ॥१३९॥

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

जहि सो रूपिणि कारणु करइ, पूत संतापु हिय गह्वरइ ।
नित नित छोजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरु रोवइ वयण, आसू वहत न थाके नयण ।
पूव्व जन्म मै काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥
कीमइ पूरिष विछोही नारि, की दम्ब घाली वराह मभारि ।
की मै लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संतापु कवण गुण पर्यउ ॥१४२॥

(१३८) १. कउ (क ख) का (ग) २. विभविउ (क) बूझइ (ग) ३. भूझकउ
(क) बुझावउ (ख) जूझ का (ग) ठारण (क) वाणु (ख) द्ठारणु (ग) ५. भिडणु (ग)
६. निकसन पे (क) निकासु (ख) निकलु (ग)

(१३९) १. ताकी सुधि न जाणइ कवणु (क) तहि सम सरिसु न बूझं कवणु
(ख) २. अइसा वीर भया तिह द्वार (ग ख) इहु कथा द्वारिका जाइ (ग)

(१४०) १. ते तउ नारी (क) २. सुसो इव (ग)

(१४१) १. धूजइ (क) छोजइ (ख) २. इकु (ख) पर पूरइ वयण (ग) ३.
दलि (ग) ४. भइरसी (ग) ५. पाप मइ किया (ग)

(१४२) १. कइ मइ (क, ग) २. को (क) कइ (ग) ३. बववीधी (क)
बवलाई (ख) बवलाई (ग) ४. बुल पड्या (ग)

इम सो रूपिणि मन विलखाइ, तौ हरि हलहरू वड्ठइ जाइ ।
 मत तू सुंदरि विसमउ धरइ, अनजानत हमि काहौ करहि ॥१४३॥
 सरलि पयालि कहइ सुधि कम्बगु, तौ हमि चाहि लेहि परदम्बरा ।
 पलि एस्यो हमि करइ पराण, मारि उठावइ गीध मसाणु ॥१४४॥
 इम समझाइ रहाइ जाम, तौ मन परिहस विसर्यो ताम ।
 आइसे भुरत वरिसुहु गयउ, तौ नानारिषि द्वारिका गयउ ॥१४५॥

रूक्मिणी के पास नारद का आगमन

मंडे मुंड चुटी फर हरै, छत्री हाथ कमंडल धरै ।
 तौ नानारिषि आयो तहा, विलिख वदन भइ रूपिणि तहा ॥१४६॥
 जब तह नारद दीठउ नयण, गहवरि रूपिणि लागी कहण ।
 पद्मपूत हौ स्वामी भयउ, जाणउ नही कवण हरि लयउ ॥१४७॥

(१४३) १. छिण छिण विलखी जाइ (क) २. तब (ग) ३. बड्ठा तिह आइ (ग) ४. मत (क ख ग) ५. विषवाइ (क) विसनउ (ख) विसमाहु (ग) ६. अनजानते हम कहा करेहि (ग)

(१४४) १. सुरग (क) सुरगि (ख) सुरगं (ग) २. सो मुधि—(क) सोधि कवणु (ग) ३. तउ वेगइ आणउ वल बुधि (क) ४. वलितिह संहणन को पूरनु (क) वलि गसिउ हमि करहि पराणु ५. गोरघ (ग)

(१४५) १. हलधर (क) हरि गउ घरि (ख) २. मन परिहस विसारि जाम (क) ३. वन (ख)

नोट—प्रथम २ चरण (ग) प्रति में नहीं है ।

(१४६) १. चले (क) चोटो (ख) २. रूक्मिणि जहां (क ख) रूपिणि हइ जिहां (ग)

(१४७) १. बोलइ वयण (ग) २. एक पुत्त मुहि सामी भया (क) एक पुत्त, मो स्वामी भयउ (ख) एक पुत्त स्वामी हम भया (ग)

तु^१हि पसाइ मुहि अंसौ भयउ, पे^२ट दाहु^३ दे^४ नंदरा^५ गयउ ।
 हाथ जोडि बोलै रुकिमिणी, स्वामी सुधि करहु तसु^६ तरणी ॥१४८॥
 तव^१ हसि नारद बोलइ वयगु, सुद्धि^२ लेरा चाल्यो परदवगु ।
 सुर्ग^३ पयालि पुहमि अह नहइ, चालि लेहु इम नारद कहइ ॥१४९॥

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

कही वात नारद समुभाइ, पूरव विदेह सपत्तउ जाइ ।
 जहि खेमंधर^२ सामि पहागु, तहि उपनू केवलज्ञानु ॥१५०॥
 समवसरण नानारिषि गयउ, तह चकवइ अचंभउ^१ भयउ ।
 चक्कवंति^३ मुणि^४ पूछिउ तहा, ऐसे माणस उपजइ कहा ॥१५१॥

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

तउ जिनवर^१ बोलइ सतिभाउ, जम्बूदीप आहि सो ठाउ ।
 भरहखेत^४ तहां सोरठ देसु, जयन धर्म^६ तहि चलइ असेसु ॥१५२॥

(१४८) १. तउ सामी किम जाइ कहियउ (क) २. बेटउ (क) ३. दुख (क)
 ४. ऐसे बे (क) ५. सुत (क)

(१४९) १. विहसि (क) २. सुधि करी लेस्यो परदवगु (क) सुधि करि
 चाहि लेउ परदवगु (ख) सुद्ध करि चलहि लेहि परदवगु (ग) ३. पुहविहे जहा (क),
 पुहमि जइ रहइ (ख) पुहवि जे अइहै (ग)

(१५०) १. पुण्व (क) २. पुणि पूर्वविसि पहुता जाइ (ग) ३. सीमंधर (क ख)
 जमषूत (ग)

(१५१) १. अचंभो (क) २. सभापेसि पुणि पूछस लिय (ग) ३. तउ छत्री
 (क) ४. जिन (क) नाना रिषि तउ पूछइ तिहां (ग) ५. निपजहि (ग)

(१५२) १. जिनवर (क) २. उपबेसइ (क) ३. भाउ (क) तिह ठाइ (ग)
 ४. सुगु नानारिषि कहउ सभाइ (ग) ५. भरत क्षेत्र (क) ६. जइन (क,ख) जैन (ग)

सायर मा^१भ द्वारिका पुरी, जगु^२ सो इंद्रलोक तै^३ पडी ।
 राउ^४ नारायणु निमसइ जहा, एसै^५ माणस उपजइ तहा ॥१५३॥
 ताकी घरणि आहि^१ रुक्मीणी, धरम^२ वात सो जाणइ धरणी ।
 ता^३कौ पूत प्रदवणु भयो^४, धूमकेतु ता हडि ले गयो ॥१५४॥
 वावण हाथ सिला ही जहा, वीर परदवणु चाप्पौ^३ तहां ।
 पूरव^४ जनम वैरू हौ घणौ^५, धूमकेत सारिउ आपणउ ॥१५५॥
 मेघकूट^१ जे पवहि^२ ठाउ, तहि निवसइ वीजाहरराउ ।
 काल संवर आयो^४ तिहि ठाउ, देखि कुवरू लैगय उठाइ ॥१५६॥
 तहिंठा विरधि करइ परदवणु, तिसकी सुधि न जाणइ कवणु ।
 वारह^१ वरिस रहइतिहि^२ ठाइ, फुणि^३ सो कुवर द्वारिका जाइ ॥१५७॥
 निसुणि वयण मनि नारद^२ रल्यउ, नमस्कार करि वाहुडी चलिउ ।
 चढि विवाण मुनि आयो तहा, मेहकूटि^४ मयरद्धु^५ तहा ॥१५८॥

(१५३) १. मझि (क) माहि (ख,ग) २. जाणे (क) जाणौ (ग) ३. अगतारी (क) उतरो (ग) ४. तउ (ग) ५. निपजइ (क,ग)

(१५४) १. अछइ (ग) २. धर्म तणी मति जाणइ धरणी (क) ३. तहु कहु (ग) ४. जनयउ(ख)

(१५५) १. हइ (क) थो (ख) (ग) २. लेइ कुंवर (ग) ३. चापियउ (क) चापियउ (ख) चापासो (ग) ४. पुठव (ख) पूर्व (ग) ५. बहू (क) हउ (ख) हइ (ग) ६. साधउ (क) सान्या (ग)

(१५६) १. जो (क) जब (ख) हइ (ग) २. परवत (क) पावइ (ख) विषडा (ग) ३. विद्याधर (क) विज्जाहर (ख) विद्याहर (ग) ४. आविउ तह (क) आयउ तहि (ख) आयतिउ (ग) ५. उट्टाइ (क) उचाइ (ग)

(१५७) १. सोरह (ख) २. जाहि (ग) ३. बाहुडि कथा (क) पुन सो कुमर (ख) ४. कुवारिका (ख)

(१५८) १. रिबि (क) सो (ग) २. रलियउ (क) चलिउ (ख) रलिउ (ग) ३. बिण बंदी बिणि (क) ४. मेघकूट (क,ख,ग) ५. मइ राधा (ग)

देखि कुवरू^१रिषि^२ मन विहसाइ^३. फुणि^४ वारमइ^५ सपतउ जाइ ।
 भेटी जाइ तेरा^४ रुकिमीणी^५. कही सार तसु^५ नंदरा^५ तरणी ॥१५६॥
 जिन^१ रूपिणि^२ हीयरा^३ विलखाइ, बरिस^३ वारहै^४ मिलिइ^५ आइ ।
 मो^५ सिहु^५ कहियउ केवली^५ वयरा^५, निश्चे^५ आइ मिले^५ परदवरा^५ ॥१६०॥

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

उकठे^१ आंव^२ फलइ^३ सैहार^३, कंचरा^३ कलसइ^४ दीपइ^५ वारि ।
 कूवा^५ वारि जे सूके^५ खरे, दिसइ^५ निम्पल^५ पाणी भरे ॥१६१॥
 खीर^१ विरख^२ सव दीसहि^३ फले, अरू^३ आंचलइ^४ होइ^५ हहि^५ पियरे ।
 थरा^५ हर जुवल^५ वहै^५ जव^५ खीरू^५, तव^५ सो आवइ^५ साहस^५ धीरू^५ ॥१६२॥
 कहि सहनारा^१ गयो मुनि^१ जाम, रूपिणि^१ मन संतोषो^१ ताम ।
 पाख^२ मास^२ दिन वरिस^३ गराइ^३, बाहुरि^३ कथा^३ वीर^३ पहजाइ ॥१६३॥

(१५६) मनइं (क) मनमहि (ग) २. विगसाइ (ग) ३. खिणि बारवती
 पटुतो (क) फुणि बारबइ सपतउ (ख) फुनि सो नयरी द्वारिका (ग) ४ तिहा (क)
 तहां (ख) तवते (ग) ५. ते (क) तिसु (ग)

(१६०) १. मन (ग) २. हियइइ (क,ख) हियइ (ग) ३. बारमइ (क) सोरह
 (ख) ४. मिलसी (क) में मिलइइ (ख) मिलइगी (ग) ५. मोहिसउ (क) मुहिसहु (ख)
 मोस्यो (ग) ६. श्री जिनवर (क)

(१६१) १. सूके (क) उकठे (ग) २. अंव (क ग) ३. सैवार (क) सइहार
 (ख) सहिसउ बार (ग) ४. दीसहि (क) ५. कूवाबाविजे (क) कूव बाइजे (ख)
 सूहइओ बाइडि (ग) ६. निरमल (क,ख,ग)

(१६२) १. ऋषि (ग) २. सभि (ग) ३. आंचल (क ग) आंचल (ख) ४.
 दीसइ (क) होसहि (ख) दीसहि (ग) ५. पीयले (क,ख,ग) ६. युयल (क) कुगलि (ग)
 ७. बटु (क) ८. ते (क) परि (ग)

(१६३) १. सु गयउ (ख)

नोट—(ग) प्रति का प्रथम चरण निम्न प्रकार है—

काहसि बिन पूगे सब जान तउ २. नइ (क) ३. बाहुडि (क ख) बाहुडि (ग)

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

तहि^१ निमसै^२ सिंघरहु^३ नरेसु, तिहिसिहु^४ विगहु^५ चलिउ असेस ।
 जवसंवर^६ जव^७ करइ^८ उपाउ, को^९ भाणइ^{१०} इहि^{११} को भरिवाउ ॥१६४॥
 कुवर^{१२} पांचसौ^{१३} लए^{१४} हकारि, रण^{१५} जीतहु^{१६} संघरहु^{१७} पचारि ।
 सिंघ^{१८} जुध^{१९} जो जाणै^{२०} भेउ, वेगि^{२१} आइ^{२२} सौ^{२३} वीरा^{२४} लेउ ॥१६५॥
 कुवरन^{२५} नियरौ^{२६} आवै^{२७} कोइ, तव^{२८} विहसि^{२९} करी^{३०} बीबो^{३१} लेइ ।
 मोकहु^{३२} सामी^{३३} करहु^{३४} पसाउ, हउ^{३५} रण^{३६} जिणामु^{३७} सिंघरहु^{३८} राउ ॥१६६॥
 तउ^{३९} नरवै^{४०} वोल्इ^{४१} सतिभाउ, वाले^{४२} कुवर^{४३} न तेरउ^{४४} ठाउ ।
 जुभ^{४५} तणउ^{४६} नहि^{४७} जाणइ^{४८} भेउ, तिम^{४९} करि^{५०} तुहिकहु^{५१} आइस^{५२} देइ ॥१६७॥

(१६४) १. निवसइ (क ख ग) २. सिंघरथ (क) सिंघरहु (ख) सिंघराय (ग) ३. तह सो विग्रहते (क) ताहि सहु विगाहु चलिउ (ख) तिसस्यो विग्रह चल्या (ग) ४. जम (क) ५. तव (क ख ग) ६. पसाउ (क) ७. किम भानउ एह नउ भडिवाउ (क) किम भानइ इहि कउ भडिवाउ (ख) कोइ भानौ इसु का भडिवाउ (ग)

(१६५) १. पांचसइ (क ख) पंचसइ (ग) २. बुलाइ (ख, ग) ३. सिंघराउ रण जीतहु जाइ (ग) ४. जुभ (क) जुउभ (ग) ५. तवहि विहसि तव बीडा लेइ (क) तउतुहि घसिरि बीडा लेहु (ख) वेगि आइ सो बाडी लेइ (ग)

(१६६) १. वेउउ (ख) नियइउ (ग) नेडा (ग) २. कवय्यु (ग) ३. बीडा मागइ सोइ (क) करिवीर बोलेइ (ख) बोल्यो परववय्यु (ग) ४. जीतस्यो (क) रण जीतउ (ख ग)

(१६७) १. कुवरन (क ग) कुमरन (ख) २. तेरा (ग) ३. नहु (क) नउ (ख) ४. जिम (क) किम (ख) किमइ (ग) ५. किरि (क) ६. ताफे तोहि (क)

^१वालउ ^२सूर आगासह ^३होइ, ^४तिनको जूभ सकइ धर कोइ ।
^५वाल वभंगु ^६डसइ सउ आइ, ताके ^७विसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥
^१सीहिणि सीहु ^२जगै जो वालु, ^३हस्ती जूह ^४तरागे पै कालु ।
^५जूह छाडि गए वरा ठाउ, ताकह ^६कोरा कहै भरिवाउ ॥१६९॥
^१वालउ जै ^२वयसंदरु ^३सोइ, ^४तिहि ^५सुधि न जाणइ कोइ ।
^६रउदव्वाल हुइ जै ^७परजलइ, ^८पुहमि उभाइ ^९भासमु सो करइ ॥१७०॥
^१तिम हौ ^२वालै ^३राकौ पूत, ^४मोहि आइस देहु ^५तुरंतु ।
^६अरियण दलु भानउ भरिवाउ, ^७जौ भाजउ तो लाजइ राउ ॥१७१॥

(१६८) १. बाला (ग) २. अगासह (क ख) आयसिहि (ग) ३. ताको तेज न सहिहइ कोइ (क) ताको तेज न वरने कोइ (ख) तिसुका तेज न सहई न कोइ (ग) ४. बालउ (क) बालइ (ग) ५. सप्य (क) भुयंगु (ख) भुयंगि (ग) ६. डसइ जो आवि (क) डसइ जइ कोइ (ख) डस्या जो कोइ (ग) ७. तिहके (क) ताके (ख) तिसुकइ (ग) ८. होइ (ख, ग) विनि कोइ नाहि उपाव (क)

(१६९) १. सीह (क) सीहु (ख) सिधु (ग) २. हाथी (क) हसती (ख) ३. जूथ (क) यूथ (ग)

४. जबहि पडहि तव गिघइ भाउ । भाजि जूथ जाहि पलाइ (क)

जबहि पडइ तहि कउ गंध वाउ । भाजहि जूह छोडि वरा ठाउ (ख)

जे उम्ह ताहि पडइ गंध वाउ । भाजहि यूथ छोडि वन ठाउ (ग)

(१७०) १. बाले (ग) २. जे (क ग) ३. बेगंदर (क) वइसावरु (ख) वइसानरु (ग) ४. होइ (क ख ग) ५. तिहकी (क) तहकी (ख) तिसुकी (ग) ६. बुद्धि (ग) ७. दब बाभइ लुह जग पडुले (क) सइभाल जे हुइ परजलइ (ग) ८. पजलइ (ख) ९. पुहवि (ग) १०. इभाइ (क ख) बाभावइ (ग) ११. भसम सो (क ख) भसमी (ग)

(१७१) १. तिमहो (क) तिवहउ (ग) २. बालउ (क) बालु (ख) बाला (ग) नाइनो पुत्र (क) रायकउ पूतु (ख) राइका पुत्र (ग) ४. मोहक (क) मुहिकहु (ख) मोकहु (ग) ५. जं जं भाजउ तउ लीजइ राउ (ग)

निसुरिण वयण^१ मन तूठउ राउ, मयण कुवर कहु करहु पसाउ ।
कालसंवर तव^२ वीडा देइ, हाथ पसारि मयणु^३ तव लेइ ॥१७२॥

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिये प्रस्थान

वस्तुबंध—भयउ आयसु चलयउ परदवणु ।
चउरंग दलु साजिउ, पडहु तूर वहु भेरि वजइ ।
तहि कलियलु वहु उछलयउ, जाणौ अकाल घण मेघ गर्जइ ॥
रह सज्जेह गैयर गुडे तुरिहय पडियउ पलाणु ।
हुइ सनधु चलिउ मयणु गयणि न सूझइ भाणु ॥१७३॥

चोपई

मयण चरितु निसुराहु धरि भाउ, जहि रण जिणिवि सिंघरह राउ
..... १७४॥

(१७२) १. मन हरषिउ (क) ग प्रगति में—सुरिण करि वात अभेषउ राउ, मयण कुवर कहु भया पसाउ (ग) २. जब (ख) ते तव (ग) ३. प. दमणु (क) परदमणु (ग)

(१७३) १. चलिउ (क) २. चाउरंगु (क ख) ३. वलु (ख) ४. सज्जियउ (ख) ५. काइ (क) ६. वज्जहि (ख) वाजहि (क) ७. तउ तिह (क) ८. जिसउ (क) जणु (ख) ९. अंवरह (क) १०. गाजइ (क) गज्जहि (ख) ११. साजे (क) सज्जे (ख) १२. तुरीयण (क) १३. इसी सनिधि (क) सणद्ध (ख)

(१७४) १. जिणउ (क) जीतिउ (ख) २. सिंघरयु (क)

ग प्रति में १७३ और १७४ वां छन्द निरन रूप से है—

भया प्रहसु २ ताम परदवणु,

चतुरंगी सेन सज्जिय । पडहु भेरि बहुतु बज्जहि ॥

तह कलियरु बहु उछलिउ । जणु आकाश ते मेहु गज्जइ ॥

सर पाइक अरु बहुतु बल । तुरियह पडे बलाण कियो ॥

पयाणउ मयणि भइ । गयणभ सूझइ भाणु ॥

ध्रुवक

कुवर पलाणउ सब जगु जरिणउ, गर्याणहि उछली खेह ।
 रहिवर साजहि वाजे वाजहि, जारौ भादों के मेह ॥
 जे अरिदल भंजइ परीवल गंजहि, सुहड चले अप्रमाणु ।
 ते भणइ सभूते जाइ पहुते, सवल वीर समराण ॥१७५॥

चोपई

आवतु देखि कुमर परदवगु, भणौ सिधु यौ वालो कोरु ।
 वालो रण कि पठावइ कोइ, इहिसउ भीडत लाज मो होइ ॥१७६॥
 फुगि फुगि वाहरी जंपइ राउ, किम करि वालेहि घालै घाउ ।
 देखि मया चित उपनी ताहि, बाल कुवर वाहुडि घर जाहि ॥१७७॥

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

निमुणि वयण कोप्यो परदवगु, हीण बोलु तै बोल्यो कवगु ।
 बालउ कहत न लाभइ ठाउ, अब भानउ तेरउ भरिवाउ ॥१७८॥

(१७५) जणिणउ (क) जालिउ (ख) २. तव राजकुमर पलाणइ (ग)
 ३. सह (क) सह (ग) ४. उडी (क) ५. जिम (क) जाण (ख) जाणउ (ग) ६. जब
 (क) ७. अरियण (ग) ८. सघायह (क) ९. रण सामि (क) ले आण (ग) १०. भये
 (ख) ११. रथ-जूते (ग) १२. घाइ (ख)

(१७६) १. देखिउ (क) देखा (ग) २. तिहि (ग) इहु (ख ग) ४. बालहु
 (ख) बालकु (ग) कवगु (ख ग) क—प्रति—कहे सिघरथ छत्री कवण ६. बालउ
 (क ख) बाला (ग) ७। ररिमहि (क) ररिहि (ग) ८. एह सो (क) इहु सिहु
 (ख) इहु स्यों (ग) ९. भरत (क) तिडत (ख) १०. न (क) मुहि (ख) में (ग)

(१७७) १. बाला देखि जंपियो राउ (ग) २. बया (ख) ३. मनि (ग)
 क प्रति—तो देखत भोहि मनु विगसाइ, उठि कुमर बाहुडि घरि जाहि (क)

(१७८) १. सुणे (ग) २. वचन (ग) ३. कहि (ग) ४. किब (ग) लाज नहि
 ठाउ (क) ५. इब (ग)

तव रावत काढइ करवाल, वरिसहि वाण मेघ असराल ।
 भिडइ सुहड करि असिवर लेइ, रह चूरइ मइगल पहरेइ ॥१७६॥
 मैगल सिहु मैगल आ भिडइ, हैवर स्यौ हैवर आ भिडइ ।
 पंचावथु जूभू तहि भयउ, गीध मसाण तहा उठीयउ ॥१८०॥
 सैन जूभि परीधर जाम, दोउ वीर भीरे रण ताम ।
 दोइ वीर खरे सपराण, दोइ करइ सिध जिमू ठाण ॥१८१॥
 मलु जूभते दोउ भीडइ, दोउ वीर अखाडो करहि ।
 हारिउ सिंह गयउ भरिवाउ, बांधिउ मयण गलै दे पाउ ॥१८२॥
 वस्तुबंध—जवहि जित्यउ कुवर परददगु

सुर देखइ ऊपर भए, बांधि स्यंघरहु कुमर चल्लिउ ।

मयण सुगुण सधेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणंदियउ ॥

देखि राउ आणंदियउ, तू सिवि कीयउ पसाउ ।

महु रांदरा जे पंच—सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चोपई

मयण चरितु निसुणि सवु कोइ, सोला लाभ परापति होइ ।

(१७६) १. करि ले (ग) २. असराल (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर चूरमइ गल बिहरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं हैं ।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क) ४. सिउ (ख) ५. संचडिउ (ख) तुलि चढे (ग) ६. हयवर सेती हयवर सार (क) पञ्चावथु (ख) पंचवरसु (ग) ७. जव (ख) ८. गिड्ड (ख) गर्ध (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि करि गयउ (ग) (क) इणि जूभ करत बडबार (क)

(१८१) १. सेना (क ख) संन्या (ग) २. रणि (ग) ३. बहरी (ग)

(१८२) १. मारन (क) माल (ख, ग) २. राउ (ग) ३. बांधि (ग) ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. अचिरज (क) ग प्रति—जइ कीयो तव सूरि तहि ३. बांधि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. इहु (ख)

(१८४) १. सोलह (क ख ग) २. देवा पड घण सो वन जयउ हयोह चडि सिघरउ बरि गयउ (यह पाठ क प्रति में हैं) ग प्रति में इस छन्द का पूरा पाठ नहीं है ।

विजाहर तव करइ पसाउ, बांध्यो छोडि स्यंघरउ राउ ।

देइ^२ पटु पुणि आकउ लयउ, समदिउ स्यंघराउ घर गयउ ॥१८४॥

तव^१ कुम्बरन्हि^२ मन^३ विसमउ^४ भयउ, जियत^५ वुआल^६ हमारउ भयउ ।

इतडो^७ राइ न राखियउ^८ मान, पालकु^९ आणि कीयउ परधानु ॥१८५॥

तवहि^१ कुवर^२ मिल^३ कीयउ उपाउ, अर^४ भानउ इनकौ भरिवाउ ।

सोला गुफा^५ दिखालइ आजु, जैसे होइ निकंटकु^६ राजु ॥१८६॥

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना

एह^१ मंत्र जिण^२ भेटइ^३ कवरगु, लियउ^४ बुलाइ^५ कुमार परदमगु ।

कियो मंतु^६ सब कुमार मिले, खेलण^७ मिसि वण क्रीडा चले ॥१८७॥

भरणहि^१ कुवर^२ निसुणहि^३ परदवरगु, विजयागिरि^४ उपर जिण भवरगु ।

जो^५ नर पूज करइ नर सोइ, तिहि^६ कहु^७ पुत्र परापति होइ ॥१८८॥

(१८५) १. सव्व (ग) २. कुमार (क) कुमारहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विशमो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) देखुषु (ग) ६. आलु (क) अहलु (ख) हालु (ग) ७. गयउ (ख) थयउ (क) कीया (ग) ८. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ९. राखिय (क) राखिउ (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तव (क) २. कुमार (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इव भागा (ग) इव भनि हिया कउ भडिवाउ (ख) ५. बिलावहि (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरहु (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. भेटउ (क) भेटइ (ख) भोटइ (ग) ३. कवरण (क) कउण (ग) ४. चालहु जाहि लेण (ग) ५. भाई सवि (क) ते खिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति में निम्न पाठ है—

जाइ जो लेण मुचति कीडा को चले !

(१८८) १. भाजहु (ग) २. देखउ (ग) ३. तिह (क) तह (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क, ख, ग) ५. तिह को (क) तिसको (ग) ६. पुनि (क) पुन्न (ख, ग)

निसुणि वयण^१ हरष्यो^२ परदवरणु, चढि^३ गिरवरि^४ जोव^५इ जिणभवणु ।
 चढी^६ जो देखइ^७ वीर पगारू^८, विषमु^९ नागु^{१०} करि^{११} मिल्यउ^{१२} फुकारू^{१३} ॥१८६॥
 हाकि^{१४} मयणु^{१५} विसहरस्यो^{१६} भीडइ^{१७}, पकडि^{१८} पूछ^{१९} तहि^{२०} तलसीउ^{२१} करइ ।
 देखि^{२२} वीरू^{२३} मन चिभिउ^{२४} सोइ, जाख^{२५} रूप^{२६} होइ^{२७} ठाढो^{२८} होइ ॥१८७॥
 दुइ^{२९} कर जोडि^{३०} करइ^{३१} सतिभाउ^{३२}, पूवहुँ^{३३} हं^{३४} तु^{३५} कणखउ^{३६}राउ ।
 राजु^{३७} छाडि^{३८} गयउ^{३९} तप^{४०} करण^{४१}, सोलह^{४२} विद्या^{४३} आपी^{४४} धरण ॥१८८॥
 हरि^{४५} घर ताह^{४६} होइ^{४७} अवतरणु^{४८}, तुहि^{४९} निरखि^{५०} लेइ^{५१} परदवरणु^{५२} ।
 यह^{५३} थोणी^{५४} तसु^{५५} राजा^{५६} तरणी^{५७}, लेइ^{५८} सम्हालि^{५९} वस्त^{६०} आपणो ॥१८९॥

(१८६) १. हरषिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चढि गिरि (क) चढिबि
 सिखर (ख) चढि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चढियउ (क) चढियउ जो (ख)
 चढिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीर पगार (ख) वीर पगारि (ग)
 ७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख ग)

(१८७) १. सिहु (ख) सउ (ग) २. भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि
 (ग) ४. शिर कियउ (क) सिर करिउ (ख) सिर करया (ग) ५. मइ (क) मनि
 (ख,ग) ६. विशनइ होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जलि (क) जक्ख (ख) जक्ष (ग)
 ८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. रुठउ कोइ (क) वइठा होइ (ग)

(१८८) १. कहइ (क,ग) २. पुवइ हं (क) पूवइ (ग) ३. हं तउ (क)
 हित (ग) ४. कणखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहचल्या
 (ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आपी (क) आपो (ग)

(१८९) १. हरियर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवतरणि (क)
 अवतरणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न राखि (क) ६. लिहि परदमणु (क) बिद्या
 आपणी (ख) ७. हइ छोड (क) थवरणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वसत (क) वसलु (ग)

१६ विद्याओं के नाम

हिय—आलोक अरू मोहणी, जल—सोखणी रयण—दरसणी ।
 गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ—दरिसणी सुधा—कारणी ॥१६३॥
 अग्नि—थंभ विद्या—तारणी, बहु—रूपणि पाणी—बंधणी ।
 गुटिकासिधि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१६४॥
 धारा—बंधणी बंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
 रयणह जडित अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि आफउ आणि ॥१६५॥
 आफि मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि बीरू तहा आगइ चलउ ।
 सो मयरद्धु सपत्तउ तहा, हरिसय पंच सहोयर जहा ॥१६६॥
 कुमरन्हि पासि मयगु जव गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।
 उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी गुफा दिखालइ आणि ॥१६७॥

(१६३) १. गेहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम चरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूडा (ख) एक सुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडिउ (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग)
 ३. दोना (क) सो (ग)

(१६६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. आगलि (क) प्रगहा (ग)
 ४. सरिउ (ग) ५. मइरघउ (क) सइराधा (ग) ६. पटुतो (क) आयो (ग) ७. हिब
 पंचसह (क) हहिसयपंच (ख, ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. बीजी (क) २. जाइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु, कालासुर दैयतु तहि ठाउ ।
 पूरव चरितु न भेटइ कवगु, तिहि सिहु जाइ भिरइ परदवगु ॥१६८॥
 हाकि कुवर धर पाडिउ सोइ, हाथ जोडी फुणि ठाढो होइ ।
 पवरिषु देखि हियइ अहि डरइ, छत्र चवर ले आगइ धरइ ॥१६९॥
 वसुगंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किकर फुणि लागइ पाइ ।
 फुणि सो मयगु अगुहडो चलइ, तीजी गुफा आई पइसरइ ॥२००॥
 नाग गुफा दीठी वर वीर, अति निहालिउ साहस धीरू ।
 विषमु नागु घणघोर करंत, सो तिहि आई भिडिउ मयमंतु ॥२०१॥
 तव मयगु मन करइ उपाउ, गहि विसहर भान्यउ भरिवाउ ।
 देखि अतुल बल संक्यो सोइ, हाथ जोडि फुणि उभो होइ ॥२०२॥

(१६८) १. सुहनारिण (क) तिहु नांव (ख) २. काल सरोबग (क) कालु
 संभु (ग) ३. देखो (क) वीन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) टाउ (ग) ५. रचित (क) विसु
 (ग) ६. तिहु ठा (क) तिहि सहु (ख) तिन्हस्यो (ग) ७. भिडइ (क) भिडिउ
 (ख) लडपा (ग)

(१६९) १. होक्या (ग) २. सो (क) पछा (ग) ३. पाडइ (क) पडया (ग)
 ४. छिणि (क) सो (ग) ५. पौरिष (क) पउरिषु (ख) पउरपु (ग) ६. अति डरइ
 (क) गहवरइ (ग) ७. छनू (ग) छलू (ख)

(२००) १. लागा (ग) २. ते (क) सु (ग) ३. आगउ चलइ (क) ती
 अगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संचरइ (क)

(२०१) १. वेढी (क) जवदीठी (ख) २. वीरि (ख) ३. घूत (क) बइतु
 (ख) रूप (ग) ४. निकलउ (क) निहाली (ग) ५. घुरवरंत (क)

(२०२) १. तबही (क ग) २. करइ (क) बहुकिया (ग) ३. अब (क)
 तहि (ख) ४. भानो (क) भानउ (ख, ग) ५. अतिबर (ग) ६. संकिउ (क ख) संक्यां
 ७. लोइ (ग) ८. करिविनचं सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयण कुवर बलिवंतउ जाणि, चंद्र सिधासणु आप्पउ आणि ।
 नागसेज वोणा पावडी, विद्या तीनि आणिसो धरी ॥२०३॥
 सेनाकरी गेह-कारणी, नागपासि विद्या-तारणी ।
 इनडौ लाभ तिहा तिह भयो, फुणि सो नाण सरोवर गयो ॥२०४॥
 न्हात देखि धाए रखवाल, कवण पुरिषु तू चाहिउ काल ।
 जो सुर राखि सरोवरु रहिउ, तिहि जल न्हाइ कवण तू कइउ ॥२०५॥
 तवइ वीर वोलेइ प्रजलेइ, आवत वज्र भेलि को लेइ ।
 जे विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु जुभणह समत्थ ॥२०६॥
 तव रखवाले मिलइ साण, विषमु वीरु यह नाही मान ।
 उपरा उपरु करइ मुह चाहि, मयरधउ वरु अप्पहि आणि ॥२०७॥

(२०३) १. विय (ग) २. वीधउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पासि (क)
 ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एवडउ (क) चडतु (ख)
 इतना (ग) ३. थो (क) ते (ग) ४. न्हाण (क ख, ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चत्यो (ग)
 ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाण
 (क ख) ८. तुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति में ३-४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पगलेइ (ख) इतने सूरणत मयण परजलेइउ (ग)
 २. आवत तुभु भाडिव करि लेहु (क) अवतु वजु भलिय को लेहु (ख) आवतु बालि
 भकोलवि चाहयो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि
 भूँभ करण (क) ६. मूलपाठ हाथ ओर समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अवशाणि (क) मिलवहिसपनु (ख)
 बोलण ३. हम (क) इहु (ख ग) ४. जाणइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. रूपु (ख)
 ६. कहहि (क, ख) करइ (ग) ७. मयरधा (क) भयरछ (ख) भइराध्य (ग) ८. वर
 (क) बलु (ग) ९. आफहि आह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अमिनिकुण्ड^१ गउ^१ जव^१ वर^१ वीरू^१, करइ^१ आण^१ हिव^२ साहस^२ धीरू^२
 उठउ^३ सरवरू^४ चलयउ^५जाणि, अग्नि^६ कपड^७ तहि^८ आपिउ^९ आणि॥२०८॥
 लेतइ^१ वीरू^२ अगाडो^३ चलइ^४, विरख^५ आंव^६ तो दीठउ^७ फल्यउ^८ ।
 आउ^९ आंव^{१०} तोडी^{११} सो^{१२} खाइ^{१३}, वंदरूदेउ^{१४} पहुतउ^{१५} आइ ॥२०९॥
 कवरु^१ वीरू^२ तू^३ तोडहि^४ आम^५, मुहिसिहुं^६ आइ^७ भिडहि^८ संग्राम^९ ।
 कोपि^{१०} मयणु^{११} तव^{१२} तिहिपह^{१३} गयउ^{१४}, तिहुसहु^{१५} जुभु^{१६} महाहउ^{१७} कियउ^{१८}॥२१०॥
 मयण^१ पचारि^२ जिणिउ^३ सो^४ देउ^५, कर^६ जोडइ^७ अर^८ विगवइ^९ सेव^{१०} ।
 पहुममालु^१ दुइ^२ हाथह^३ लेइ^४, अर^५ पावडी^६ जुगलु^७ सो^८ देइ ॥२११॥
 तउ^१ लइ^२ मयण^३ कयथवण^४ गए^५, पयठइ^६ मयण^७ फुणि^८ उभे^९ भए^{१०} ।
 गयउ^१ वीर^२ जउ^३ वणह^४ मभारि^५, दूरू^६ गौरू^७ उठिउ^८ विचारि॥२१२॥

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जब गइयउ (ख) २. आण हिव (क)
 भंपता साइ (ख) भंपतह (ग) ३. तूठउ (क, ख) तूहा (ग) ४. सुरबर (क ख)
 ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपटु (ख) निपाटु (ग) ७. आयो जाणि (क)
 बीन्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ आणहिव के स्थान पर आपतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहडो
 (ख) अगहा (ग) ३. बलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. अंव
 (क) अशोक (ग) ६. को (क, ख) ७. फणिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग)
 ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंव (क) आंव (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोस्यो (ग) ४.
 केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिनि कियो (क) मालावभु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. बुइ कर जोडि सु विनवइ सोव (ग) ३. वहु
 (क ख) ४. पुहप (ख ग) पहुय (क) ५. युगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तव ले (ख ग) २. कयथ (ग) ३. गयउ (ग) ४. जहठइ (ख)
 पइठि (ग) ५. वीरू (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अभा भया (ग) ८. ले ले मयण
 गउ (क) ९. जे (ग) १०. बुद्धरू (ख) बुधर (क) रुधरू (ग) ११. चिकारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है ।

^१सा ^२गैरू ^३गरूवो मयमंतु, ^४हाथि ^५कुम्बरूस्यो ^६भिरउ ^७तुरंतु ।
^८मारि ^९दंतुसल ^{१०}तोडइ ^{११}सोइ, ^{१२}चडिवि ^{१३}कंधि ^{१४}करि ^{१५}अंकुस ^{१६}देइ ॥२१३॥
^{१७}पुणि ^{१८}वावी ^{१९}लइ ^{२०}गए ^{२१}कुम्वार, ^{२२}तइ ^{२३}विसहरू ^{२४}गिावसइ ^{२५}गांकालु ।
^{२६}जाइ ^{२७}वीरूतहां ^{२८}उपर ^{२९}चढइ, ^{३०}विसहर ^{३१}निकली ^{३२}मयगस्यो ^{३३}भिडइ ॥२१४॥
^{३४}तहि ^{३५}गहि ^{३६}पूछ ^{३७}फिरावइ ^{३८}सोइ, ^{३९}विलख ^{४०}वदनु ^{४१}तउ ^{४२}फुणवइ ^{४३}होइ ।
^{४४}फुणि ^{४५}तिहि ^{४६}विसहर ^{४७}सेवा ^{४८}करो, ^{४९}ममूं ^{५०}दरी ^{५१}आफी ^{५२}छुरी ॥२१५॥
^{५३}मलयागिरि ^{५४}पर ^{५५}जव ^{५६}गयउ, ^{५७}करि ^{५८}विसादु ^{५९}फुणि ^{६०}उभउ ^{६१}भयउ ।
^{६२}अमरदेव ^{६३}तहि ^{६४}आयउ ^{६५}घाइ, ^{६६}निजिणि ^{६७}कंद्रप ^{६८}धरीउ ^{६९}रहाइ ॥२१६॥
^{७०}हारयो ^{७१}देवभगति ^{७२}तिस ^{७३}करइ, ^{७४}कंकगु ^{७५}जुवलु ^{७६}आणि ^{७७}सो ^{७८}धरइ ।
^{७९}सिखरू ^{८०}मुकदू ^{८१}देइ ^{८२}अविचारू, ^{८३}आपिउ ^{८४}आणि ^{८५}वस्त ^{८६}उनिहारू ॥२१७॥

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय
 (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमार सो (क) कुमारसिंह (ख) कुवरू (ग)
 ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) चूरि (ग) ८. फुणि मानो
 सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. वावडी (क) बिबिभौ (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार
 (क, ख) कुवारू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि सूर इक
 करइ भंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. चढयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क, ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. आफो (क) अर
 आफो (ख) आपउ (ग)

(२१६) ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग)
 ३. विसइ (ख) विसमाहसु (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क)
 ६. कुंभर संघाति करइ लडाइ (क) रिगिजि रिगकंद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या
 सुकंद्रप रहया थाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिस करइहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग)
 २. युगल ते (क) युगल (ग) ३. धरहि (क) जि दीनउ आइ (ख)
 आणि सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिचारू (क)
 ६. आप्या (क) आफि (ख) ७. आपिउ (ख) ८. उरहारू (क ख) अरूहारू (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तह आयउ घाइ' पाठ है ।

वरहासेण गुफा ही जहा, कुवरन्हि मयण पठायो तहा ।
 तिहि ठा अमरदेउ हो कोइ, रूप वरह भयो खग सोइ ॥२१८॥
 सूवर रूप आइ सो भिडउ, मारिउ मयणि दंतसलि भिडउ ।
 पुष्प चापु दीनउ सुरदेउ, विजहसंखु आपिउ तहि खेउ ॥२१९॥
 तवहि मयणु वण वयठउ जाइ, दुष्ट जीउ निवसइ तह आइ ।
 वण मा मयण पहुँतउ तहा, वीरु मणोजो बांधिउ जहा ॥२२०॥
 बांधिउ वीर मनोजउ छोडी, फुणि ते वणमा गए बहोडी ।
 जहि विजाहरि एतउ कीयउ, सो वसंतु खग बंधिवि लयउ ॥२२१॥
 फुणि सु मनोजउ मनहविसाइ, कुम्बर मयण के लागइ पाइ ।
 हाथ जोडि सो कहा करेइ, इंदजालु विद्या दुइ देइ ॥२२२॥

(२१८) १. वारहसेण (क) वराहसेण (ख) वोरसेण (ग) २. हहि (क) जब गयउ (ख)
 थो जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क)
 हइ (ख.ग) ७. थकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख.ग) ३. बंतूसल भडइ (क)
 बंतूसलु भडिउ (ख) हेठि सो वीया (ग) ४. पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख)
 चापि (ग) ६. हनइ (क) दीना (ग) ७. सुरवेह (क) सुरवेवि (ख) ८. विजइ (क)
 विजय (ख) बाजि (ग) ९. आयो (क) आपिउ (ख ग) १०. तिणि जहां (क)
 उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपबणि (ग) २. पयट्टइ (क) वणि (ख) पडट्टा (ग) ३. बुट्ट
 (ख) ४. पुहोम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहलो (क)
 ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिणि (क) ४. विधावरि
 (क) विजजहारि (ख) ५. सोतिणि कुमरि वेधि छिणि लियउ (क)

(२२२) १. मनोजव (क) २. मनि विहसाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४.
 काहउ करइ (क) ले घरइ (क)

नोट:—ग प्रति में २२० से २२६ तक के छन्द नहीं हैं ।

उवसंत^१ मनि^२ भयउ^३ उछाहु, दीनी^४ कन्या^५ ठयहु^६ विवाहु ।
 बहु^१ भगति^२ वोल^३ सतिभाइ, फुगि^४ विजाहरू^५ लागइ^६ पाइ ॥२२३॥
 अरजुन^१ वगह^२ वीरु^३ जउ^४ जाइ, तिहि^५ वग^६ जरहु^७ पहुतउ^८ आइ ।
 तिहिसउ^१ जुभ^२ अपूरव^३ होइ, कुसमवाग^४ सर^५ आपइ^६ सोइ ॥२२४॥
 फुगि^१ सो वीरु^२ विउण^३ खग^४ गयउ, विलतरंग^५ सिरि^६ उभउ^७ भयउ
 विरखु^१ तमाल^२ तराउ^३ हइ^४ जहा, खग^५ मयरद्ध^६ सपतउ^७ तहां ॥२२५॥
 फटिक-सिला^१ वयठी^२ वर^३ नारि, जपइ^४ जाप^५ सो वगह^६ मभारि ।
 तउ^१ विजाहर^२ पुछइ^३ मयगु, वग^४ मा वसइ^५ गारि^६ यह^७ कुम्बरगु ॥२२६॥
 तउ^१ वसंत^२ मन^३ कहइ^४ विचारि, रतिनामा^५ यह^६ वूचइ^७ नारि ।
 अति^१ सरूप^२ सुहनाली^३ नयग^४, लेइ^५ विवाहि^६ कुम्बर^७ परदवगु ॥२२७॥
 तव^१ मयग^२ मन^३ भो^४ उछाहु, दीनी^५ कुवरि^६ आढए^७ विवाहु ।
 फुगि^१ सो मयग^२ सपतउ^३ तहा, हहि^४ सयपंच^५ सहोयर^६ जहा ॥२२८॥

(२२३) १. तव वसंत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीधी (क) ४. भिरि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अरजुन (क) २. वीरजव (क) जखि (क) ४. पहुतो (क) तिहसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफइ (ख)

(२२५) १. वलि खण (क) २. विरख लता (क ख) ३. उग (क) तल (ख) ४. विरख (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ख)

(२२६) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

(२२७) १. वलि वसंत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. बीजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयग (क ख)

(२२८) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. दीठी (क ख) ४. तराउ (क) आढयो (ख) ५. लइ जइ (क) जहि सइ (ख)

२२४—मूल प्रति में तिहिसउ जुभ के स्थान पर तिहिसउज

पभणइ कुवर मुहामुह चाहि, विषमु वीरु यह मानन आहि
 सोलह गुफा पठायो मयण, तह तह मिलहि वस्त्र आभरण ॥२२६॥
 मयणह पौरिशु देखि अपारु, तव कुम्बरन्हि छोडिउ अहंकार
 सबह मिलि सलहिउ तहि ठाइ, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥
 वस्तु बंध—पुन्नु वलियउ अहि संसार ।
 पुन्नु सेम्बहि सुर असुर, पुन्नु सफलु अरहंत जंपिउ ।
 कंत रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेतु ले सिला चंपिउ ॥
 जमसंवळु कंत ले गयउ, कनयमाल धरितह गयउ विरिद्धि ।
 सोलह लाभ महंतु फलु, पुण पगपति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि राज भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजइ सुरलोइ ।
 पुन्नहि अजर अमर मुगभणा, पुन्नहि जाइ जीव गिब्वाराणा ॥२३२॥

(२२६) १. चितइ (क) पभणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क) माणु न (ख) ४. बिलायो (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडियउ (क) छाडियउ (ख)

(२३१) १. गुरुवउ (क) २. आहि (क ख) ३. संसारि (क ख) ४. पुनि (क) ५. फलइ (क) ६. जाणिउ (ख) जंपइ (क) ७. कितु (क) ८. कित धूमकेत (क) ९. कित (क) लइ (ख) १०. सिला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कह (क) किसो पुनइ अविहउ रिधि—यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलता है । १३. नोट—मूल प्रति का पाठ 'घरि बंधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुल बडउ बु जगत महि होइ (ख)
 २. अजरामर (ख) ३. पद ठाण (क) अमर विमाण (ख) ४. निरबाणि (क)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लई अविचार, चम्बर छत्र सिर मुकट अपार ।
 नागसेज जो रयणी जरी, असीणी कपड वीणा पावडी ॥२३३॥
 विजयसंख कौसाद अपार, चंद्र संघासण सेखण हार ।
 सोहइ हाथ काममुंदरी, पट्टपचाप कर कडिहा छुरी ॥२३४॥
 कुसुमुवाण कर हाथह लेइ, कुंडल जुवल सम्बरण पहेरइ ।
 राजकुवरि दुइ परिणइ सोइ, चढि गैयर फुरिण ऊभौ होइ ॥२३५॥
 कंकण जुगल रयणि अनिवार, अर दइ लेइ पुष्प की माल ।
 न्हानी वस्त गंगौ तह कवण, इतनउ लेनि चलउ परदवण ॥२३६॥
 मयण कुवर घर चलयो तुरंत, मेघकूट खण जाइ पहुत ।
 जमसंवर भेटिउ तिहि ठाउ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३७॥
 भेटि राउ फुरिण उभो भयो, मयण कुवर रणवासह गयो ।
 कनकमाल खण भेटी जाइ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३८॥

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख)
 रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपट (ख)

(२३४) १. कौसाद (क) कउसबडु (ख) २. सेरवर (क) ३. संघासण (क)
 ३. भूँडडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. अवण (क) सबणह (ख)
 ३. जाइ (क) ४. गइयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पुहप (क ख) ३. वस्तु (क) वसतु (ख)
 ४. गिणइ (क) गणइ (ख) ५. इह (क ख) तिहि (ख) ६. एतौ (क) इतउ (ख)
 ७. ले (क) लइ (ख) ८. चालिउ (क) निकलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खणि (ख) खिणि (क) ३. आइ
 (क) ४. काल (ग) ५. जइ वइठउ आइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राव (क) २. पुरिण (क) तव (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग)
 ४. फुरिणि मयण (ग) ५. कणयमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क)
 लागी (ख) लग्या (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप मयण वर वीर, कामवाण तसु हयउ सरीर ।
फुणि सो अंचलु लागी धाइ, करि उतरवह चलयोउ छुडाइ ॥२३६॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुणि सो मयणु सपतउ तहा, वण उद्यान मुनिस्वरु जहा ।
नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो जुगतउ होइ ॥२४०॥
कणयमाल माता मुहुं तरणी, सो मोपेखि कामरस घणी ।
आंचल गहिउ छाडि तहि काणि, कारणु कहहु कवण मुहिं जाणी ॥२४१॥
तं मुणियर जंपइ तंखीणी, कहहु बात तुह जम्मह तरणी ।
सोरठ देस वारमइ ठाउ, तिहि पुरि निमसै जादमराउ ॥२४२॥
ताकी घरणि आहि रुकिमिणी, जह कीरती महमंडल घणी ।
तिहि सम तिरौ न पूजइ कोइ, कंद्रप जणणि तिहारी होइ ॥२४३॥

(२३६) १. मयण सुन्दर (ग) २. न सुहयउ (ख) हणियउ (क) तिसु हुआ
(ग) ३. अंचल (क ग) ४. कहि (ग) ५. उतर (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं हैं

(२४०) १. जे (क) जुगती (ग) २. जंन धर्म हइ निश्चय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३. मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग)
४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हम (ग) ६. देखि (क ग) ७. सरि हणी
(ग) हणी (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुणीतर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तव (ग) २. तंघिणि (ख) ३. जनमह (क) जम्मंतर
(ख) जनम्ह (ग) ४. द्वारिका (क) बारबै (ग) ५. स्वामी (क) निवसइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) तिसु की (ग) २. परिणी (ख)
३. प्रच्छइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहसरि (ग) ६. भीनवि (क) तिरिय न (ख)
तिया न (ग) ७. तुम्हारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेतु^१ हौ तू^१ हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि^३ गयो ।
 जमसंवर तोहि^३ पालिउ आरिण, सो परदवन आप तू जाणि ॥२४४॥
 करायमाल तुव^१, अंचल गहिउ, पूव जन्म तो सनम^२ध भयउ ।
 जइ वह तोसिहु पेमरस^५ भीनि, छलु करि लीजहि विद्या तीनि ॥२४५॥
 निसुणि वयण सो बाहुडि जाइ, कनकमाल पह वइठउ जाइ^३ ।
 विद्या तीनि मोहि जउ देहि, जुग^५तो पेसणु करिहो तोहि^५ ॥२४६॥
 रस की बात कुवर पह सुणी, पैम^२ लुवधि अकुलानी घरी ।
 जमसंवर की करीय न काणि, तीनिउ विद्या आपी आरिण ॥२४७॥
 पूरव दाउ कुम्बर मन रल्यउ, फुरिण विद्या लइ बाहु^५रि चलिउ ।
 हम्बु^९ तुम्हि पूनु जगणी तू मोहि, जगतउ होइ सु पेसणु देहि^{११ १२ १३} ॥२४८॥

(२४४) १. तिह थो हडिलियो (क) तउ तू हडिलिउ (ख) तुम्हि हडि ले गया (ग) २. उट्टियउ (क) उठि गयउ (ख) उट्टि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपूरव (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है ।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) मेहि (ग) ३. सनमध (ग) ४. जो बहु होइ (क) जइ हउ हतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरम (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. बाहुडिउ (ख) ३. घाइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५. जुगति (क, ख) जुगति (ग) ६. पलउ (क) बिसनुह (ग) ७. करिहु (क) होइ (ख) हउ करिस्यो (ग) ८. देहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुवध (क) प्रेम लुवध (ग) ३. तीनइ (क) तीन्हों (ग) ४. सउपी (ग)

(२४८) १. परियउ (क) कडिउ (ख) पूरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. छिरण (क) ले (ग) ४. सो (ग) ५. बाहुडि (क ख ग) ६. चलयो (क) भलिउ (ख) ७. हम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हुई (ग) ११. युगत (क) जुगति (ग) १२. पसाउ (क) १३. करिउ क्यो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणायमाल तव धसक्यो^१ हीयउ^२, मोसिहु^३ कूडकूडीया^४ कीयउ ।

इकु^५ तउ लाज भइ मत टल्यउ^६, अवरू हाथि लइ विद्या चलिउ ॥२४६॥

कणायमाल तउ विसमउ धरइ^१, सिर कूटइ^२ कुकुवारउ करइ ।

उर थणहर मह फारह सोइ, केस छोडी विहलंघन होइ ॥२५०॥

इक रोवइ अरु करह पुकार, कालसवर रा जागी सार ।

कुमर पांचसै^१ पहुते जाइ, कनकमाल पह वडै आइ ॥२५१॥

कालसंवर सउ कहउ सभाउ, इहि दिषि पालक कीयउ उपाउ ।

धरम पूत करि थापिउ सोइ, अव सो मोकहु गयो विगोइ ॥२५२॥

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

निसुरिण वयण नरवइ परजलीउ, जाणै^१ घौउ अधिकु हुतासणु^२ परिउ ।

कुवर पाचसह लिये हकारि, पवण वेगि^३ इहि आवहु मारि ॥२५३॥

(२४६) १. धसकैया (ग) धसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क) मुहि सिहु (ख) मोस्यो (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अव मोहि (क) इकु सहु (ख) इकुतो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टालिउ (ख) मनु टलिउ (ग) ८. ले विद्या हाथह ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३. पीटइ (ग) ४. कुकुवर (क) कुकु भारउ (ख) अरु कूकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नह (ख) करि (ग) ६. फाडइ (क ख) पीटइ (ग) ७. खोलि (ख ग) ८. विहलघल (क ख) विहलंखलि (ग)

(२५१) १. जणइ सार (क) राजा पासि जणावउ सार (ग) २. पंचसइ (क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्थो (क) सिउ (ख) तव बडहु आइ (ग) २. बिछु (ग) ३. बालक (क ग) पालागी (ख) ४. किउ एह उपाव (क) कीयउ उपगार (ख) कीया उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापी (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुरो (ग) २. जछु (ख) ३. धूत (क) धिरत (ग) ४. वसनर (क) हुवासए (ख) बेसंवर (ग) ५. भसिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६. चडिहु बेगिइ सु ७. सुम (क)

तव^१ कुवर^२ मन पूर^३उ दाउ^४। इहिकहु^५ भयउ^६ विरुद्धउ^७ राउ^८।

मिलि^१ सब कुवर^२ एकठा^३ भए^४, मयण^५ बुलाइ^६ कुवर^७ वण^८ गए ॥२५४॥

तवइ^१ अलोकगि^२ विद्या^३ कहुउ^४ मयण^५ अचंकित^६ काहे^७ भयउ^८।

एह^१ बात^२ हो^३ कहौ^४ सभाइ^५, ए^६ सब^७ मारण^८ पठए^९ राय^{१०} ॥२५५॥

तव^१ रिसाणौ^२ साहस^३ धीर^४, नागपासि^५ घाल्यो^६ वरवीर^७।

चारि^१ सौ^२ नानाणौ^३ आकउ^४ भरइ^५, बाधि^६ घालि^७ सिला^८ सिर^९ धरइ^{१०} २५६

एकु^१ कुम्बर^२ राखिउ^३ कमार^४, राजा^५ जाइ^६ जग्गाइ^७ सार^८।

तुहि^१ जउ^२ राय^३ भरोसउ^४ आहि^५, दगु^६ परिगह^७ आगणइ^८ पलगणइ^९ ॥२५७॥

जमसंदर^१ रा^२ वइठउ^३ जहा^४, भागिउ^५ कुवरु^६ पुकारिउ^७ तहा^८।

सयल^१ कुम्बर^२ बापी^३ मह^४ घालि^५, उपर^६ दीनी^७ वज्र^८ सिल^९ टाल^{१०} ॥२५८॥

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरउ (ग)
३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख)
५. सहि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. आलोकगि (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग)
३. मयण काइते ठीलउ कहइ (क) संभलु मयण कुवर मति कहइ (ग) निबितउ
(ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुभ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख)
रीसाणा (ग) ३. सहस सधीर (ग) ४. चारिसइ निनाणो (क) चारि निनाणो (ख)
खउसइ नंयाण (ग) ५. आगणइ धरइ (क) आको भरा (ख) अंको भरउ (ग)
६. बापि (ग) ७. सुहठ (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उबारि (ग) २. राजहि (क ख ग) ३. जग्गावहि (ख)
४. तुहि सइ (ख) जे तुभ (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परियण (क) ७. सब
खेहु (क) आगहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहुँता (ग) ४. महि (क ग)
मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. बीधी (क) ७. शिला अडाल (क) शिला टाल (ख)
हताल (ग)

जमसंवर और प्रद्य म्न के मध्य युद्ध

निसुणि^१वयण^२मन कोपि^३उ राउ, आजु मयण^४भानो भरिवा^५उ ।
 रहि^६वर साजे गैवर^७ गुडे, तुरिय^८ पलाणे पाखर परे ॥२५६॥
 धनु^९क पाइक अरु छुरी^{१०}कार, अतिव^{११}ल चलत न लागी वार ।
 आवत देखि मयण^{१२} कह करै, सैना^{१३}करि सयन रची धरै ॥२६०॥
 जाइ पहु^{१४}तउ दल अतिव^{१५}ंत, तहा हाकि भीडइ मयमंत ।
 रावत^{१६} स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥
 जमसंवर^{१७} कहु आइ^{१८} हारि, चउरंगु^{१९} दलु घालि^{२०}उ मारि ।
 विजाहरु^{२१} रा विलख^{२२}उ भयो, रहवरु^{२३} मोडिनयर मह गयउ ॥२६२॥

(२५६) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भडिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६. तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. धाणुक (क ख) धानुप (ग) २. कराहि (ग) ३. अविचल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हथियार सूभट ले जाहि (ग) ५. मवनु (ख) ६. क्या (ख) के (क) ७. निहरत्थो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि साम्हउ संचरइ (क) सयना कहब सयनु रचि धरहु (ख) माया रुप सयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहुता (क) पहुते (ख) २. वलवंत (क) मिलि आयो वलु जबहि अनन्तु (ग प्रति) ३. वेगइ आइ (क) तहं तहं गांकि भिडे मयमंत (ख) तब रथु हकि भिड्या मयमंतु ४. रहवर सिहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. दूटइ खडग पडइभुंइ ताम (क) दूटहि तुंड मुंड वर जाम (ख) दूटहि रुंड मुंड बह ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. वलु (ख) ४. चलिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तब (ग) ६. विलखा (ग) ७. मयण कुवर सह वलु मारिया (ग)

पुगि गिय मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव कहइ निरुत ।
 कनकमाल हउ आयउ तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥
 निसुगि वयग अकुलानी वाल, जागि सुहइ वज्र की ताल ।
 जिहिलगी सामी एतउ भयउ, मो पह छीनी कवर ले गयउ ॥२६४॥
 वस्तुबंध—एह नरवइ सुगिउ जव वयगु ।

विजाहर कारग करइ, तिय चरितु सुगि हियउ कंपिउ ।
 उरुषु रहडे फाडियउ मोहि सरिसु इगि अलिउ जंपिउ ॥
 पेम लुवधै कारगौ आपी विद्या तीनि ।
 अव मोस्यो परपंचु करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

(२६३) १. विणि (क) पुगि २. तह (क) ३. आपी आलउ (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवर तव बिलखा भया, बलु छोड्या घर कहु उहि गया ।

जहति जातह बोलें एहु, तीन्यो विद्या वेगी देहु ॥२५२॥

(२६४) १. नारि (ग) २. सिरि बजो पछताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी
 (ग) ४. एहबा (ग) ५. मुझ (क) मोहि बिगोइ छीनी ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. करुणा (ग) करणु (ख) ३. भिया (क) तिया (ग)
 ४. एस रुप मइ समझियउ (क) कंपइ उसुवा घर हरइ (ख) उरुबुरु होइ पूरहस्यो
 (ग) ५. आलु (क) आल (ग) ६. लुवधि (क ख) ७. परपंचु (क ख) ग प्रति—

बहु भूरइ तह राउ मनि, देल चरितु इहु तेणि ।

प्रेम लुवध कह कारणिहि, सउपी विद्या एणि ॥

चौपई

देखि चरित जव^१ बोलइ^२ राउ, अ^३व मों भयउ मरण को ठाउ ।
तिरियहं^४ तणउ^५ जु पतिगउ^६ करइ, सो माणस अणखुटइ^७ मरइ ॥
तिरिय^८ चरितु^९ निसणउ^{१०} भरिभाउ, विलख^{११} वदन भउ^{१२} खगवइराउ ॥२६६॥

ध्रुवक छन्द

स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ^१ बोलइ अलियउ^२ चलइ, निउ^३ पिउ छोडइ^४ अवह भोगवइ ।
तिरियहि^५ साहस द्रणो^६ होइ, तिरिय^७ चरित जिण^८ फुलइ^९ कोइ ॥२६७॥

चौपई

नीची^१ धुधि^२ तिम्वइ^३ मनि रहइ, उतिमु^४ छोडि नीच संगइ^५ ।
पयडी नीच^६ देइ^७ सो पाउ, एसो^८ तिवइ^९ तणउ सहाउ ॥२६८॥

(२६६) १. पुणि (क ख) तव (ग) २. सोभइ (क) ३. इव मोहि जुगतउ
मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) तिया (ग) ५. पतिगर (ख) पतिगह (क)
भरोसा (ग) ६. मूरिख (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखुंटी (क ख) ८. त्रिय (क)
तिरिय (ख) तिया (ब) मूल पाठ तिनिय ९. मुणहु (ग) १०. धरिभाउ (ग) ११.
थयउ (क) तह (ग) १२. तव राउ (क) बोलइ राउ (ग)

(२६७) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ख)
थाहगु (ग) मूल पाठ केवल पिउ है । ३. छोडि (क ख ग) ४. पौरिष (क) ५. द्रणउ
(ख) बुधणउ (क) ६. नवि (क) मनु (ग) ७. भूलइ (क) भूलउ (ख ग)

(२६८) १. नीच (ख) २. तियइ (क) ती (ख) तियह (ग) ३. मनि रहे
(क) मनु हरइ (ख) मनु धरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. संगहइ (क ख) भोगवहि (ग)
५. नीची (क ख ग) ६. बे सो पाव (क) देइ सो पाउ (ख) वह सिर पाउ (ग) ७.
त्रियह (क) ती मइ (ख) ती बइ (ग)

उजैणि नयरि^२ सो बूचइ^३ ठाउ, पुव्वह^४ हुतौ विवयह^५ राउ ।
 तिरिय^६ विसास^७ करइ जो घराउ, जिहि^८ जीउ सोप्यो राजा तराउ । २६६ ।
 दुइजे^९ राउ जसोधर भयउ, अमइ^{१०} महादे सोखइ लयउ ।
 विस लाइ दइ मारयो^{११} राउ, फुणि कुवडउ^{१२} रम्यो करि^{१३} भाउ । २७० ।
 फुणि तीजे^{१४} रिसुराह धरि^{१५} भाउ, आथि नयर^{१६} पाटरा पयठारु ।
 हया^{१७} सेठि निमसइ तिहि^{१८} काल, तीनि नारि ताकी^{१९} सुहिनाल । २७१ ।
 सोतउ^{२०} सेठि वणिज^{२१} उठि गयउ, जीभ लुवधि^{२२} तिहि काहउ कीयउ ।
 छाडी^{२३} हया^{२४} सेठी की काणि, धतु^{२५} एकु सिर थापिउ आणि ॥ २७२ ॥
 अदिणि^{२६} छोडि^{२७} नाहु सुपियारु, धतु^{२८} आणि ता^{२९} कीयउ भतारु ।
 तिहि^{३०} साहस कउ अंत न लहउ, तिहि^{३१} चरितु^{३२} हउ केतउ^{३३} कहउ । २७३ ।

(२६६) १. जउजैणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो ट्ठाउ (क)
 ऊचइ (ख) उत्तिम (ग) ४. पुरुष हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वहु हुतु वियर कछुराउ
 (ख) तिस पुर भंचउ विक्रमराउ (ग) ५. विशास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह
 घराणा (ग) ७. त्रिय (क) आपराणउ (क) (तीक्ष्ण चरण ख प्रति में नहीं है)

ते हिति जिउ प्राण राजा तराउ (ख) राजइ सउप्या जीव आपराणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो टलिउ (क)
 अमय महादे सो घर गयउ (ख) अमल-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख)
 मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउइ (ग) ७. धरि (ख ग)

(२७१) १. तेउ (क) तीय (ख) विजनाहरु तब बोलइ राउ (ग) २. अतिथ
 (क ग) ३. पहरणपुर (ग) ४. ट्ठाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. धरावइ (क) हाया (ख)
 हुवा (ग) ६. बसइ (क) ७. तिहके (क) तिस की (ग)

(२७२) १. सोबतउ (क) सो तहि (ख ग) २. वरणजहि (ग) ३. प्रेम लुवध
 तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडी (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) तराी
 (ग) ६. सब (ग) ७. वारिण (क) ८. धरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. परिग्रणउ (क) रणिउं (ख) २. छांडि (ख) ३. नारि (क)
 ४. तिह (क) तिन (ख) ५. भतारु (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।
 ६. इहु (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहइ (ग) ८. त्रिय (क) त्रिया
 (ख) तिया (ग) ९. कितना ले (ग) केता कहोइ (ग)

अभया राणी कीए विनाए, सुहदंसण^१ लगि गये परान ।
 जिहि^३ लगि जुभ^४ महाहो भयो, लइ तप चरणु सुदंसणु गयउ २७४
 रावण^१ राम जु वाढी^२ राडि, विग्रहु^३ भयउ सुपनखा लागि ।
 सीया हडह^४ लंका परजलइ, सब परियण^५ रावण संघरइ ॥२७५॥
 कौरों पांडो भारथ भयउ, तिहि^४ कुरुखेत महाहउ ठयउ ।
 अठार खोहणी दल संधारि, द्वै^५ दल वोलाइ दोवइ नारि ॥२७६॥
 कालसंवरू तउ कहइ वडोडी, कनकमाल^३ तो नाही खोडी ।
 पूरव रचित न भेटग^४ कवरणु, ए वीद्या लेहै परदवरणु ॥२७७॥
 अमुह^१ कम्मु नहु^२ भेटइ कोइ, मुरजनुहु^३ तउ सुवरीयउ होइ ।
 दोस न कनक तुहि^४ तणउ, इह लहणी^५ लाभइ आपणउ ॥२७८॥

(२७४) १. विवाण (ख) २. सुदंसण (क) सुभदंसण (ग) ३. तिहि स्थों मास भूभ इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. वाधी (क) बंधी (ग) ३. विघन मुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखी लाहि (ख) विग्रह चल्या सुपन भय ताडि (ग) ४. सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडणु (ख) हडो (ग) ६. परजलणु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रचउ परियर (ग) मूल पाठ स्यो पह्याल ८. संघरण (क) संघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कडरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. सयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अठारह (क ग) अठारह (ख) ८. बुइ (क ख ग) ९. दोपदी (क ग)

(२७७) १. बोला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३. तह लागी (क) न तुमय खोडि (ग) ४. कोइ (ख) तीसरा ओर चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

(२७८) १. कर्म (क) २. नवि (क) ३. सज्जन ते सुख वैरी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है । ३. कनकमाल (क ग) ५. लिखियउ (क) लहणा (ग)

गाथा

दग्ध^१ति गुणा विचल^२न्ति वल्लहा^३, सज्जनाहि विहड^४न्ति ।
विवसाय^५ एणाथि सिद्धी पुरिसस्स परंमुहादिम्बहा ॥

चौपई

छुटउ कमरा^१ काल की वहिरा^२, फुरिा ते बहुडी करी सामहरा^३ ।
चउरंगु वलु सवु समहाइ, करउ अभेडउ दुइजो जाइ ॥२७६॥
यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

बहुत रोस मन नरवइ भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लयउ ।
लयउ धनुषु टंकारिउ जाम, गिरि पवय जागौ डोले ताम ॥२८०॥
दोउ वीर आइ रगा भिडे, देवइ अमर विवाणहि चढे ।
वरसहि वाण सरे असराल, जागौ घरा गाजइ मेघ अकाल ॥२८१॥

गाथा

१. न संति (ख) निसंति (ग) २. विहा (ग) ३. सज्जणाइ (क)
सज्जनाय (ख) सयण सज्जन (ग) ४. विचलन्ति (ग) ५. सजन पासु डुयण
भया, जे मथिहु कम्म चलन्ति (ग)

(२७६) १. कवण (क ख) २. संमहरा (क) समहरा (ख) ३. करइ धुथ
तव बाहुडि आवि (क)

ग—काल संवर मन भया उदासु, छोड़्या कणायमाल का पासु ।

बल चउरंगु सहु लीया बुलाइ, करइ भूभु बाहुडि सो जाइ ॥

(२८०) १. दोसु (ख) २. चक्र (क) बाणु (ग) ३. तिहि लीया (ख) ले
(ग) ४. धनुष (ग) ५. टंकारा (ग) ६. पवास भइ कंपइ ताम (ग)

क—धनुष टंकार करइ ते जाम, तब गिर परबत ढालइ ताम

(२८१) १. बोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रति में दो चरण निम्न
रूप में अधिक हैं—

ढोऊ बीर खेर सपरण, दूरो दूरो करि संघारण

तव^१ परदमण^२ रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ ताम ।

सो दलु नागपासि दिठु^३ गह्वउ, राउ अकेलउ ठाठउ वह्वउ ॥२८२॥

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहउ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ॥२८३॥

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

भणइ मयणु रहायो मयणु, वापहि पूतहि गाउ कमणु ।

जिहि प्रतिपालिउ कियउ तु^३ राउ, तिहिकउ^४ किमि भानइ भरिभाउ २८४

नारद बात कहै समुभाइ, दू दल विगाह^२ धरइ रहाइ ।

कालसंवर तो^४ हो इन जूत, यह परदवण नरायण पूत ॥२८५॥

निसुणि वयण^१ मन उपनौ भाउ, भरि आयौ सिर उमइ राउ ।

इतडो परि पछितावो भयउ, चउरंग दलु संघरि लयउ ॥२८६॥

(२८२) १. सो (ग) २. छोड़इ तित्तु ठाम (ग) ३. बुइ (क) ४. रहो (क) रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ॥२८३॥

ग प्रति—

भणइ मयणु हो इसउ कराउ, इव भागउ इसका भडिवाउ ।

नानारिषि आया तिह ट्ठाइ, कही बात चलि जांवइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिषि जइ रहायउ मयण (क ख) बोलइ रिषि तू सुण परववणु (ग) २. विग्रह (क ख ग) ३. अंतराय (क) तू तहू राउ (ग) ४. तिनकउ (क) तिस का (ग) ५. सिबु (क) किउ (ग)

(२८५) १. बुइ (क, ख) बुहु (ग) २. बिघन (क) विग्रहउ (ग) विगाहु (ख) ३. हरइ धराइ (क) घराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहि (ख) तुम्ह (ग) ५. निघत (क) जुलु (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. आकइ (क) आकउ (ख) ग्रहि अकि (ग) ३. बुमइ (क) बूबइ (ख) बूवो (ग) ४. लडियउ (क) तानि व मारिण (ख) इलना (ग) ५. गयउ (क, ख) सह संघारिया (ग)

तव^१ मयण^२ मन छोडो^३ कोह, मोहणी जाइ उतारयो मोह ।
 नागपासि^३ जब^३ घाली छोरी, चउरंग बल उठो^३ वहोरी ॥२८७॥
 उठी^१ सैन^२ मन हरिष्यो^३ राउ, बहुत मयण को कीयो पसाउ ।
 नानारिषि^३ बोलइ तंविणी, घर अवेसि^३ तिहारी धणी ॥२८८॥
 वयण हमारे जउ मन धरहु, घर वेगे^३ सामहणी करहु ।
 पवण वेगि तुम द्वारिका जाहु, आज तिहारौ आहि विवाहु ॥२८९॥
 नारद बात कही तुम भली, मुही केवली कही सो मिली ।
 विहसि वात बोलइ परदवणु, हम कहु वेगि पराई कम्बणु ॥२९०॥
 नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

नारद खण विमाण रचि परइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।
 बहुडि विम्बाणु^३ धरइ^४ मुनि जोडि, खण मलयद्वउ^६ धारइ तोडि ॥ २९१॥
 विलख वदन भो नारद जाम, करइ उपाउ मयणु हसि ताम ।
 मणि मारिक मय उदउ करंतु, रचि विमाण खण धरइ तुरंतु ॥२९२॥

(२८७) १. तबही (क ख ग) २. तव (क) बन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठी (क) उठि (ख ग) २. सैन (क) सयण (ख) मयणु (ग)

३. आरति (क) अवसेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारी (ख) अथि तुम्ह (ग)
 ५. तणी (ग)

(२८९) १. चित्ति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु
 बेगि पयाणा करहु (ख) घर की वेगि साखती करहु (ग) ३. घर कहू जाहू (ग)

(२९०) १. मुनिवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिखि (ग) २. रिखि (क) ३. करइ (क) रिखि धरइ सु जोडि
 (ग) ४. करि (ग) ५. क्षण (ग) ६. मयद्वउ (क ख) ६. महराधा (ग) ७. घालइ
 (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. महरघउ (क) मयण खिणि ३.
 महरघउ (क) ४. बहु (ख) का (ग) ५. वण (ख) खिणि (ग)

विद्यावल^१ तह^२ रच्योउ, विमाराणु, जहि^३ उदोत^४ लोपि ससि भागु ।
 धुजा घंट^५ घाघरि सज्जतु, फुरिण तिह^६ चढयो नारायण पूत । २६३
 जमसंवरु^१ रामहिउ जाइ, बहुत भगति करि लागइ पाइ ।
 कुमरहि सरिमु^२ खिणतवु करइ, कंचणमाल^३ समदि घर चलइ ॥ २६४ ॥
 कुवर मयरा^१ अरु नारदु पास, चढि विमारा^२ उपए आकास ।
 गिरि पव्वय^३ बहु लंघे मयरा, बहुत ठाइ बंदे जिणभवरा ॥ २६५ ॥
 फुरिण^१ वरा माभ पहुते जाइ, उदधिमाल दीठी ता ठाइ ।
 बहुत वरा^३न कुवर स्यो मिलि, भानु^४ विवाहरा^५ द्वारिका चली ॥ २६६ ॥
 नारद वात मयरास्यो^१ कहौ, यह पहल^२ तुम ही कहु वरी ।
 तुम हडि धूमकेत ले जाइ, तउ^३ अब भानहि दीनी आइ ॥ २६७ ॥
 मुनि जंपइ मुहि^१ नाही खोडी, आहि^२ सकति तउ लेहि^३ अजोडि ।
 रिषि कौ वयरा^४ कुमरु मरा धरइ, आपरा भेस भील^५ कहु करइ ॥ २६८ ॥

(२६३) १. तिनि (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. चलिउ (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिहु (ग) करहि (ख) ५. वधारि (क) घावती (ख) क-कणय विमाखु मुहिर रसज्जत (ग) ६. चलि चढयो (ग)

(२६४) १. राजा समिभाइ (क) राजा समदि धरि जाइ (ख) आया तितु टाइ (ग) २. छमावरण करइ (क) लिउ तब करउ (ख) सबहि कुवर सों विनति करइ (ग) ३. माता जाइ धरि (क) चलण सरि धरइ (ग)

(२६५) १. अगासि (क) २. उपमे (क) उप्पवे (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२६६) १. वरा माहि (क ख ग) २. उदधिमाला रही तितु ठाइ (ग) ३. वात (क) बगति (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कसर कहु (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहरा (क ख ग) मूल प्रति वरा के स्थान-पर मरा

(२६७) १. ऋषि (ग) २. उच्चरी (ग) ३. तौ यह नारि भानु कहु ठया (ग)

(२६८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आत्थि (ग) करि अजोडि (ग) ४. बहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग—नारद वचनहि अइसा भया, आपरा भेस भील ठया (ग)

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

^१धणही ^२कांड ^३विसाले हाथ, ^४उतिरि मिल्यउ ^५तिनि के साथ ।
 पवण वेग सो आगय गयउ, देइ आखर ^६परि उभउ भयउ । २६६।
 हउ बटवाल नारायण तरणउ, देइ दारण मुहि लागइ घणउ ।
 चढी वस्तु ^१आपु मुहि ^२जोगु, ^३जइसे जाण देइ सवु लोगु ॥ ३००॥
 महलउ भणइ ^१निसुरिण ^२महु वयणु, ^३बडी वस्त तू माणइ कमूणु ।
 अर्थ ^४दवु ^५सोनो तू ^६लेहि, हम कहु जाण ^७अगहुडउ देइ ॥ ३०१॥
 भीलु ^१रिसाइ देइ तव ^२जाण, ^३आइसी परि किम्ब लाभइ जाण ।
 भली वस्त जा तुम पह ^४आइ, मो मुहि ^५आफि ^६अगहुडे जाहि । ३०२।
 तउ महलउ जपइ मुहि चाहि, एक कुम्बरि मोपह इह आहि ।
 हरिनंदरा कहु परणी ^३जोइ, अरे ^४सम्बर किम मांगइ सोइ । ३०३।

(२६६) १. धणही (क) धणही (ख) धनुष (ग) २. सजि करि सर ले हाथि (क) बाण विसाले हाथि (ख) कटागे विसाहल हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुरिण उठि मिल्या (ग) ५. ले आखत (क) बइ आखत (ख) देइ अविहु तब ऊभा भया (ग) ६. तव (क) फुरिण (ख)

(३००) १. वस्त (क) दारण (ख) वस्तु (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुणहि (क) ३. मो (क) ४. अरथ (क) अरथु (ख ग) ५. बरधु (ख ग) देखि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगुहई (ख) वेगि जाण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. बडी (ग) ५. आहि (क ख) अइहे (ग) ६. लागहु (क) अघउडउ (ख) सोह हम वेहु भिल्लु इम कहै (ग)

(३०३) १. चाहि (ख) २. जो मो पहि (क) इह मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सबर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'न' प्रति में नहीं है ।

भराइ वीर यह आफहि मोहि, जइ सइ वाट जाण द्यो तोहि ।

महलहु कोपि पयंपइ ताहि, अरे भिलु तोहि जुगत न आहि । ३०४।

निसुगाइ महल कहइ विचारु, हउ नारायण तराउ कुमार ।

इहखोल जिन करहु सदेहु, उदधिमाल तुमि मो कहु देहु ॥ ३०५॥

महलउ बोलइ रे अचगले, भूठउ बहुत कहइ अतिगले ।

तीनि खंड जो पुहमि नरेसु, तिहि के पूतहि आइसु वेसु ॥ ३०६॥

वाट छोडि तउ ऊवट चले, उहि पह भील कोडी दुइ मिले ।

भराइ संधारु नहि मुहि खोडि, वलु करि कन्या लइय अहोडी । ३०७।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बल पूर्वक छीन लेना

छीनि कुम्बरि तहि लइ पराण, फुगि सो वाहुडि चलयउ विम्बाराण ।

भीलु देखि सो मनु अहि डरइ, करण कलापु कुवरि सो करइ । ३०८।

(३०४) १. मुहि (क) इह (ख) यह (ग) २. भिलु (ग) ३. सउपहि मेहि (ग) ४. जेसे (क) ५. दो (क) विउ (ख) नातर जाणक वेऊ तोहि (ग) ६. भराइ (क) चंपइ (ख ग) ७. तुहि जुगतो न आहि (क ख)

ग प्रति में—हरि नंदन कहु परणी जोइ, अरे भिलु किउ मागहि सोइ ।

(३०५) १. सुगि (ग) २. महिले (क) माहतो (ख) महिला (ग) ३. एगि वयणि (क) दूसर बात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) तुहि मुहि कहु देहु (ख) हम कहु देउ (ग)

(३०६) १. अचगले (क) महिला कोपि सु तव परजली (ग) २. जुट्टि (क) ३. आगले (क ख) भूठा वचन कहवहि हो भिली (ग) ४. पुत्र (क) पूत कि (ख) पुतुन (ग) ५. कवखु इह वेसि (क) अइसउ भेसु (ख) अइसा वेसु (ग)

(३०७) १. उवरे २. (ग) चलइ (क) चले (ख) चलिउ मूत्रप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उठि (ख) तापहि (ग) ४. इक (क ग) ५. कुमार (क) संधारु (ख ग) मूल प्रति में 'सघर' ६. हम (ग) ७. वहोडि (क ख) अजोडि (ग)

(३०८) १. सो निते पराणि (क) सोज कुवर तिन्हि लई पराण (ग) २. चले (क) चडिउ (ख ग) ३. भरण (ख) करण (ग) मत ए रूप कुमार ए करिउ (ग)

पहलै मयरा कुवर कहु वरी, दुजे भानु विवाहरा चली ।
 नारद निसुणी हमारी बात, अब हौ परी भील के हाथ ॥३०६॥
 अब मोहि पंच परम गुण सरणा, लिउ सन्यास होइ किन मरणा ।
 तउ नारद मन भयो संदेहु, बुरी वयरा इनि आखिहु एहु ॥३१०॥
 तउ नारद जंपइ तंखिणी, कंदप कला करइ आपरणी ।
 लखरा वतीस करायमय अंगु, रूप आपरौ भयो अरांगु ॥३११॥
 उदधिमाल सुंदरि समभाइ, फुरि विमारा सो चलिउ सभाइ ।
 चलत विमारा न लागी वार, गये वारम्वइ के पइसार ॥३१२॥
 देखि नयर वोलइ परदवणु, दिपइ पदारथ मोती रयणु ।
 धनुक कंचरा दीसइ भरी, नारद वसइ कवरा उह पुरी ॥३१३॥

(३०६) १. कुवरी (क) २. वली (ग) ३. कजइ (क ग) बुझइ (ख)
 अबह (क) अबहउ (ख) इही (ग) ४. कइ (ख ग)

(३१०) १. ले चारित किम हो सहि मरणु (क) ले माता जसु होवइ मरण
 (ग) सील सथास सिउ हुइ किन मरणा (ग) २. पडिउ (क ख) पड्यो (ग) ३. बोरउ
 (क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. करायन (क) करायमइ (ग)

(३१२) १. तव (ग) चले विमारा वचन मनु लाइ (ग) २. गये नगर
 द्वारिका मभार (क) गए वारमइ किययइ सारू (ख) गया वरवइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन करण (क ख ग) २. ए (क) इह (ख) ग प्रति में यह
 पक्ष नहीं है ।

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भणइ नारद निसुरिण परदवण ।

यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माझ सायरहं रिच्चल ।

जमि भूमिय अथि तुव, सुद्ध फटिक मणि जणिगत उज्जल ॥

कुवा बाडिउ च वणवर बहु धवहर आवास ।

पहुपयाल जिणवर भुवण पउलि कोट चोपास ॥३१४॥

निसुरिण जपइ मयणु वरवीरु, मुझ वयणु नारद निसुरिण ।

कुंडउ कहहि राहु गुभु रखहि, देखि मयणु गिय चित्तु दइ ॥

जो जहि तरणउ अवासु ॥३१५॥

चोपई

माझ नयरि धवल हरु उत्तंगु, पंच वर्ण मणि जडिउ सुचंगु ।

गरइ धुजा सोहइ वह घणउ, वह अवास सु नारायण तरणउ ॥३१६॥

(३१४) १. एह वसइ (क) यह कहियइ (ख) यह ऊंची (ग) २. सखंगी (क) हनिहचल (ख) हवतुपरि (ग) ३. जम्म (क ख) जनम (ग) छइ तुमह (क) इह आथि तुव (ख ग) करइ राज इकु छति सो हरि (ग प्रति में यह चरण पल्ले के स्थान पर है) ४. सो बन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. बाडी वयण वर (क) बाडिउ वयण पवर (ख) बापी बाग वण (ग) ७. भवल (क ख ग) ८. वहु पयार (क) ९. पोवलि कोर चोपास (क) मझ वयण नारद निसुरिण भुवणिग किवणणइ तासु (ख) कंचन कलसिहि वीपतिहि वसइ भुवण चउपास (ग)

(३१५) १. पयंपइ (ग) २. मोहिं (ग) ३. कुंडउ मुझहि गुहय रखहि (क) कहहु साखा जिन गुज्झ राखहु (ग) ४. कवरण गेहि गुह तरणउ सयल चरित मोहिं सयल अखहि (क) कवखु गेहु महु कहु तरणउ सव्वु चवहि महु सरसु अक्खर (ख) कवखु गेह इहु किसण तरणी । सयल भेदु हम वेगि आखहु (ग)

(३१६) १. मझि (क ग) मझ (ख) २. जडिय (क) जडिउ (ख) जडे (ग) मूलपाठ बाडिउ ३. तव खिएणउ (क) बहु करण (ख) ४. एह (क) बहु (ग)

सि^१व धुजा डोलइ^२ चोपास, वह^३ जाणइ वलिभद्र अवास ।
 जहि^४ धुज^५ मेढे^६ दीसइ देव, वह^७ मंदिर जाणइ वसुदेव ॥३१७॥
 जिहि^८ धुजा विजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।
 जहि^९ कलियलु वह^{१०} सूभइ घराउ, वह^{११} अवासु सतिभामा तणउ ॥३१८॥
 कलकमाल जस^{१२} उदो करंत, जह^{१३} वह^{१४} धुजा दीसइ फहरंत ।
 मणिगज^{१५} मणि सहि चउपास, वह^{१६} तुहि^{१७} माता तणउ अवास ॥३१९॥
 निसुणि^{१८} वयण हरषिउ परदवण, तिहि^{१९} को चरितु न जाणै कवण ।
 उतरि विमाराति उभउ भयउ, फुणि^{२०} सोमयण नयर मा गयउ ॥३२०॥

प्रद्युम्न को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन संजुत, भानकुवर दीठउ आवंतु ।
 तव विद्या पूछइ परदम्बनु, यह कलयलुसिह आवइ कम्बनु ॥३२१॥

(३१७) १. सिध (क) २. लहकइ (क) डोलहि (ख) डोलै (ग) ३. ए आणइ (क) उ जाणइ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. धज्जु (क) धुजा (उ) ध्वजा (ग) ६. मोठा (क) मोढे (ख) मठ (ग) ७. उह (क ख ग) मूल प्रति में 'सिध'

(३१८) १. सूभइ (क) सुणियं (ग) सूभइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजइ वह (क) सुनि उवउ (ख) बहु उदो (ग) २. विपइ (क) ३. फरकति (क) ४. मरकति मणि दीसइ चुह पासि (क) जाहि बहु धुजा दीसहि खउपासि (ख) मगंज मणि दीसहि जिसु पास (ग) ५. उह (क) तुहि (ख) तुहु (ग)

(३२०) १. बोल्या (ग) २. तिसु का (ग) ३. मांहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. सेन (क) सइन (ग) २. भानू कुवर आवइ निरुत्तु (ग) ३. कलियल सु (क) कलियर स्यउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयण तुहि कहो विचार, यह हरि नंदनु भानु कुमार ।
 इहि ल^१गि नयरी बहुत उछाहु, यह जु कुवर^२ जइ तणउ विवाहु ॥३२२॥
 प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेर धारण करना
 तहा मयण मन करइ उपाउ, अ^३व इहकउ भानउ भरिवाउ ।
 वूढ वेस विप्र को करइ, चंचल^४ तुरिय मयायउ करइ ॥३२३॥
 चंचल तुरीयउ गहिरी हिंस, चार्यो पाय पखारे दीस ।
 चारि चारि आंगुल ताके कान, राग वाग पहचाणइ सान ॥३२४॥
 इक सोवन वाखर वाखरयउ, पकरी वाग आगैहुइ चलिउ ।
 भान कुवर देख्यो एकलउ, वाभण वूढउ घोरो भलउ ॥३२५॥
 घोरो देखि भान मन रलउ, पूछइ वात विप्र कहु चलिउ ।
 फुणि तहि वाभणु पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ जैहहि कहा ॥३२६॥

(३२२) १. एहि लगि (क) इह वर (ग) २. एह सु (क) इह सु (ख ग)
 ३. जिह (क) जहि (ख) जिस (ग)

(३२३) १. तबहि (क ग) २. बहु (ग) ३. इव (ख) ४. इसका (ग) इहि कर
 (ख) ५. वूढउ (क ख) वूढा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ख) ७. मायामई (ग)
 मायामउ (ख) मयण रचि धरई (ग)

(३२४) १. गुहोरी हासु (क) आगइ आरसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ख)
 पाव (ग) ३. परवालिय (क) परवाले (ख ग) ४. ए तासु (क ख) ५. चारइ (क)
 चारिसु (ख) ६. जिन्ह के (क) तिन्ह के (ख) जिसुके (ग) ७. पिछाणइ (क) यह
 आरइ (ख) ८. भानु (क ख)

(३२५) १. साक्षति सो वन अथ पाखरउ (क ग) २. पाखर पाखरियउ
 (क ख) ३. पकडि (क ख ग) ४. आघेरउ (क) आगइ (ख ग) ५. घोड़उ (क ख)
 घोवडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखत जन मनु चलिउ (ग) २. पूछण (क ख ग) ३. चले
 चार्यो किहा (ग) ४. जाइसि (क)

^१वाभणु ठवहुक घोडो हइ आपणउ, तजिउ ^३समुद बालुका तरणउ ।
 निसुणिउ भान कुम्बर को नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ ॥३२७॥
 भान कुवर ^१मन उपनो भाउ, बहुतु ^२विप्र कहु कियउ पसाउ ।
 निसुणि ^३विप्र हउ अखएहु, जो मागइ सो तोकहु देउ ॥३२८॥
 नवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर के ^१मनु न सुहाइ ।
 विलखउ ^३भानकुवर मन भयउ, मान भंगु इहि मेरउ कियउ ॥३२९॥
 भणइ विप्रु ^१हो आखउ तोहि, इतनउ जे न सकहि दइ मोहि ।
 मइ तो कहुदीनउ सतभाइ, परिहा जउ देखाहि दौडाइ ॥३३०॥

भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

निमुणि वयगु ^१कुवर मन रल्यउ, कोपारुहु ^२तुरंगउ चढिउ ।
 विषमु ^४तुरंगु न मकउ सहारि, घोड़े घाल्यो भानु अखारि ॥३३१॥

(३२७) १. वंभण चिरत कहइ आपणउ (क) वाभणु गवडु कहइ आपणउ
 (ख) वंभण नाउ कहइ आपणा (ग) २. तेजी एह (क ग) ते जिउ (ख) ३. रण समदह
 तरणउ (क) समुदह तरणा (ग)

(३२८) १. बहु (ग) २. बहुति (क) बहुतु (ग) ३. निसुण (ख) ४. इसउ
 करेउ (ग) अखो तोहि (क) आखउ तोहि (ख) ५. सो आयो (क) तुभ जोणी (ग)

(३२९) १. मनह (ख) २. सनाहि (ग) ३. वदन (क) ४. तव (ग) को, (क)

(३३०) १. हहु (क) कहउ (ग) २. आयो (ग) ३. मांगिउ सके न बइसी
 कोइ (क) इतनउ जे न सकहि वइ मोहि (ख) मांग्या वेइ न सकइ मोहि (ग)
 ४. बोलिउ सतिभाउ दीना पसाउ (ग) ५. परहुवाउ (क) जब जे इस कहुं
 लइ दउडाइ (ग) ६. दउडाइ (ख) मूल प्रति—मामिउ जइ सकइ दं मोहि

(३३१) १. कोप रूपि सु (ग) २. तुरंगस (क) लइ बलिउ (ख) ४. नवि
 सहो (क) ५. भानकुमार घालिउ अखारि (क) घोइइ दीनउ भानु बु राडि (ख)
 घोडे राइया भानुकुमार (ग)

पडिउ भानु यह^१ वडउ विजोगु, हासी करइ सभा को लोगु ।
 यह^२ नारायणुतनो कुमारु, या^३ समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥
 भणइ विप्र तुम काहे रले, इहि तरुणो पह^२ बूढे भले ।
 इरह^३ ते करि आयउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥
 हलहर भणइ विप्र जिएण डरहु, इन्ह^३ घोडे किन तुम ही चढउ ।
 हौ बूढउ चाहौ^४ टेकणौ, दिखलाउ^५ पवरिष आपणउ ॥३३४॥

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

जण दस बीस कुवर पाठए, विप्रह^२ तुरी चढावण गए ।
 तउ वाभण अति भारउ होइ, तिहिके कहै न सटकइ सोइ ॥३३५॥
 तुरीय चढावण आयो भाण, उलगारो को नाही मानु ।
 जण दस बीस कियउ भरिवाउ, चडिवि भान गलि दीनउ पाउ ॥३३६॥
 चढइ विप्र असवारिउ करइ, अंतरिख भो घोरो फिरइ ।
 दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उपइ^३ गयउ ॥३३७॥

(३३२) १. जइ हुवो (क) तब भया (ग) २. ए (क) इहु (ख ग) ३. समान
 (क) इहि समु (ख) इसु सरि (ग)

(३३३) १. हंसे (ख) २. हम (क) ते हम (ग) ३. दूर यकी (क)

(३३४) १. कहइ (क) २. मत अडहु (ग) ३. रणि को (क ख) इसु धोडइ
 तुम वेगहु चढिउ (ग) ४. चाहउ विकणिउ (क) चाहउ बेकणउ (ख) चालउ टेकणा
 (ग) ५. बिल्लावउ (ख) ६. बल पौरुष (क)

(३३५) १. बीषम (ख) २. तू चढावण भए (क) ३. तिह कइ कियइ न
 उट्टइ सोइ (क) तिन्ह कइ कहइ नइ चाडइ सोइ (ख) तिन के कहे न सकइ
 चढि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगार (क) उलगारो (ख) उलगण (ग) २. चढयो तुरंग दिया
 गलि पाउ (ग) मूलप्रति—उलमाणे कउमाथु न आहि

(३३७) १. हुइ (क ग) २. आगे (ब) ३. ऊपमि (क ग)

प्रद्युम्न का माशामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

फुण^१ि सो रूप खधा^२इ होइ, द्वौ घोड़े निपजावइ सोइ ।
 वन उद्यान रावलु^२हो जहा, घोड़े खा^३ची पहुतउ तहा ॥३३८॥
 वरा^१ह मयरा^२ पहुतउ जाइ, तउ रखवाले उठे रिसाइ ।
 इह वरा^१ चररा^३ न पाव कोइ, काटइ घास विगुचनि होइ ॥३३९॥
 कोपि मयरा^१ मन रहउ सहारि, रखवालेसहु^२ कहयउ हकारि^३ ।
 कछु^४स मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चररा^५ किन देहु ॥३४०॥
 तव^१इ भइ तिन्हु की मतु हारि, काम मूदरी देइ उतारि ।
 रखवाले वौल^२इ वइसाइ, दुइ घोड़े ए^३ चरहु अधाइ ॥३४१॥
 फिरि फिरि घोड़ो वरा^१ मा चरइ, तर की माटी उपर करइ ।
 तउ रखवाले कूट^२इ हीयउ, इ घोड़े वरा^३ चोपटु कीयउ ॥३४२॥
 दीनी तिनसु^४ काम मूदरी, बाहुरी हाथ मयरा^५ के चढी ।
 सो वर वीर पहुतउ तहा, सतिभामा की वाडी जहा ॥३४३॥

(३३८) १. खुधाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालउ (ख) सुरावल (ग)
 ३. रचि (क) खइचि (ख) खंची (ग)

(३३९) १. वरा महि (क ख ग) २. कावउ खास चरावइ जाइ (क) काटइ घास
 विगुचइ सोइ (ख) तीसरा चौथा चरण—क प्रति—तब रखवाला बोलइ एम घास
 रावलउ काटइ केम (क) ३. कापइ तासु विधावइ सोइ (ख) कावइ घास
 विगुचइ सोइ (ग)

(३४०) ४. कोप (क) जिन (ग) २. वंशहि जस हारि (ख) बुलाइ (ग)
 ४. कछु मोल तुम हम पहि लेहु (क) कछु मोलि तुम्हि आपणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)
 (३४१) १. तव कीनी (ग) २. बोलहि (क) बोले (ग) ३. लेहु (ग)
 मूलप्रति—वइषद

(३४२) १. तल की (क ख ग) २. तूटहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु
 (ग) चउपट (ख) अन्तिम चरण क प्रति में नहीं है ।

(३४३) १. मूवडी (क ख) २. दीनी तहि (ग) ३. कुमार के पडी (क)

वाडि मयरा पहुतउ जाइ, बहुत विरख दीठे तां ठाइ ।

कोइ न जाराइ तिनकी आदि, बहुत भाति फूली फुलवादि ॥३४४॥

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

जाइ जुही पाडल कचनार, ववलसिरि वेलु तिहि सार ।

कूँजउ महकइ अरु कणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुँडु टगरु मंदारु सिंदूरु, जहि वंधे महइ सरीरु ।

दम्बराणा मरुवा केलि अणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥

आम जंभीर सदाफल घरणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब तरणे ।

केला दाख विजउरे चारु, नारिंग करुण खीप अपार ॥३४७॥

नीवू पिंडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।

नारिकेर फोफल बहु फले, वेल कइथ घरणे आवले ॥३४८॥

(३४४) १. तिह (क) तहि (ख)

(३४५) १. पाटल (क) पाडले (ख) २. बाडल सेवती सो सभिचार (क) वावल (ख) ३. अवर (ख) ४. राइ (क) राय (ख) ५. चंपा (क) ६. केतकी गहीर (क) केवडउ हीर (ग)

(३४६) कुँव अगर मंदार सिंदूर (क) कूँडु टगर मधुर सिंदूर (ख) २. मह महइ (क) महकइ (ख) ३. ससरीर (ख) ४. दम्बराणउ (क) दम्बराणा (ख) ५. महंत (ख) ६. नीवू (क) नेवाली (ख)

(३४७) १. अणणत गिरणे (क) आजिरा गरणे (ख) २. विजौरी (क) ३. नारिली (क) करणा (क) करणा (ख) ५. खीप (क ख) मूलप्रति में 'कीपि' पाठ है

(३४८) १. अणंत (क) असंख (ख) मूलप्रति में कइथ के स्थान परइथ पाठ है

नोट—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'ग' प्रति में नहीं हैं ।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

वाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चितइ साहस धीर ।
जइसइ लोग न जाणइ कोइ, वां^१दर दुइ निपजावइ सोइ ॥३४९॥
तउ वं^१दर दीने मुकलाइ, तिन सब वाडी घाली खाइ ।
जो फुलवाडि हुती वहु भाति, वं^३दर घाली सयल निपाति ॥३५०॥
फु^१णि ते वं^३दर पइठे मोडि, रुख विरख सब घाले तोडि ।
सव फल हली तव संघरी, तउपट करि सव वाडी धरी ॥३५१॥
लंका जइसी की हणवंत, तिम वारी की वालखयंत ।
भानु कुम्बर हो वैठो जहा, मालि जाइ पुकारचो तहा ॥३५२॥
मालि भणइ दुइ कर जोडि, मो^२ जिन सामी लावहु खोडि ।
वं^१दर द्वै^५सै पइठे आय, तिहि सव वाडी घाली खाइ ॥३५३॥
जवति माली करी पुकार, रथ चढी कुम्बर लए हथियार ।
पवण वेग सो धायउ तहा, वं^३दर वाडी तोरी जहा ॥३५४॥

(३४९) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) बंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवाडि पाठ है ।
यह चौपई 'ख' प्रति में नहीं है ।

(३५१) १. पुगते (ख) २. पठए (क) ३. रुख (ख) ४. सब
फनाहनी (ख) फुनवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सवि धरी (क ख) चउउ चपट
तिह वाडी करी (ग) मूलप्रति में 'वेद' पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेससी (ग) २. करी (क ख ग) ३. लीधी खु
लपंत (क) किय काल कयंत (ख) तउ वाडी वंदरि रवाधन्ति (ग) ४. छइ (क) था (ख)

(३५३) १. विनवइ (क ग) २. मुझ (क) मोहै (ग) ३. मत (क) ४. बनचर
(क) ५. वाडी (क) दुइ (ख ग) ६. इहि बइठा आइ (ग) दुइ तिहि पइठे आइ (ख)
७. तिन (क) तिन्ह (ख) तिम्ह (ग)

(३५४) १. जव तिहि (क ख ग) २. धाउ (क) पटुता (ग) ३. वानर (क)
४. तोइइ (क) तोडी (ख) तोडहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरघउ काहौ^१ करइ, मायामइ^२ मछर रचि^३ धरइ ।
 तिहि ठा भानु सपतउ जाइ, खाजनु^४ मछर चलिउ पलाइ ॥३५५॥
 भानु भाजि गिय मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु^५ आइ तिह भहउ ।
 तंखिरि^६ बहु वरकामिणी मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई

स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

तेल चढावहि^१ करइ सिंगार, सूहउ^२ गावइ मंगलुचार ।
 रथ चढि कुवरिति^३ उभीभइ, फुरिण मटियाणुउ पूजण गइ ॥३५७॥
 तवइ मयण सो काहो करइ, ऊटु^४ तुरंगु जोति रथ चढइ ।
 ऊटु^५ तुरंगु सुअठे अरडाइ, भानु रालि घोडउ घर जाइ ॥३५८॥
 पांडउ भानु उइ विलखीभइ, गावत आइ रोवति गइ ।
 उटु^६ तुरंग उठे अरराइ, असगुन भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

(३५५) १. काहउ (क) अइसा (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिति धरइ (ग) ४. मूलपाठ तहां जाउ (ग) भानुकुमर तउ पहुंता आइ (ग) ५. खाजत (क) खाजनू (ख) ६. माछर (क ग)—७. चलउ (क ख) खिरि रही मो चली पलाइ (ग)

(३५६) १. जिन (क ग) २. आइ तिह ययो (क) तहां तिसु भया (ग) ३. नयरी (ग)

(३५७) १. तिलु (ख) २. चढवहि (ख) ३. अइसइ (क ख) तब से (ग) ४. कुवरति (क) ते (ख)—चढघो कुंवर रथि आगे भयो (ग) ५. मटियाणी (क) मटियाणउ (ख) मटियाणउ (ग)

(३५८) १. तहि अइसो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. चलइ (क ख) धरइ (ग) ४. उठघा अरडाइ (क ख) तबहि उर सो करइ पुकार (ग) ५. असवण भयो न जणह सुहाइ (क) घोडा भागा भानहि मार (ग)

(३५९) १. तब विलखा भया (ग) २. गावै यी सो घर कहु गया (ग) ३. असबछु (ख) नोट—यह पद्य क प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर
सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

फुरिण मयरद्वउ बंभरणु भयउ, कर^१ धोवती कमंडलु लयउ ।
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खरा^२ वावडी पहुँतउ जाइ ॥३६०॥
उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी जहा ।
भूखउ वामरणु जेम्बरु^३ करहु, पाणिउ^४ पियउ कमंडलु भरहु ॥३६१॥
फुरिण चेडी जंपइ तंखणी, यह वापी सतिभामा तणी ।
इरिण ठा पुरिषु न पावइ^५ जारा, तू कत आयउ विप्र अयाण ॥३६२॥
तउ बंभरण कोपिउ तिराकाल, किन्हहू के सिर मूडे हि वाल^६ ।
किन्हहू नाक कान ते खुटी, फुरिण वंसरणु पइठउ वावडी ॥३६३॥

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

फुरिण तहि वुधि उपाइ घरणी, सुइरी विद्या जल सोखणी ।
पूरि कमंडलु निकलिउ सोइ, सूकी वावडी रीति होइ ॥३६४॥

कमंडलु के जल को गिरा देना

सूकी देखि अचंभी नारि, गो वाभरण चौहटे मभारि ।
धाइ लड़ी वाहुडी कर गयउ, फुलि कमंडलु नदी होइ वहउ ॥३६५॥

(३६०) १. तलि (ग) २. आइ (क ग)

(३६१) १. वावडी (क) चेडी (ख ग) २. जोमरण (क) जेमणु (ख) जीवणु (ग) ३. पाणी पिए (क) पाणी वेहु (ग)

(३६२) १. ता तणी (क) २. इहि ठा (ख ग) ३. आवइ (क)

(३६३) १. तिरिण काल (क) तहि बाल (ख) तहिनाल (ग) २. किन्हहूकउ (क) किन्हहू के (ख) तिन्ह के (ग) ३. वाल (क ख ग) ४. किन्ह (क) सबे (ग)
५. खुटी (क ख ग) इव (क) ६. वइठावउ (ग) भूलप्रति में 'तिताल' पाठ है

(३६४) १. सुमरी (क) सुमरी (ख) संवरी (ग) २. वाइ (ग)

(३६५) १. चउहटे (उ) ते पहुँची सतभामा वारि (ग) २. कूटि (ख)

बूडण लागी पाणी हाट, भरणहि वाणिए पाडी पाठ ।

नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३६६॥

प्रद्युम्न का मायोमयी मेढा बनाऊर वसुदेव के महल में जाना

फुणि तहि मयण मित्र चितयउ, माया रूपी मेढो कियउ ।

पहुतउ वसुदेव तरा^३ खंधार, कठीया जाइ जणाइ सार ॥३६७॥

तउ वशुदिउ वोल्इ सतभाउ, वेगउ तहा भीतरि हकराउ ।

कठिया जाइ संदेसउ कहिउ, ले^५ मैढो भीतरि गयउ ॥३६८॥

छो^१टो मैढो धरौ न संक^२, बिहसि^३ राउ तव छाडी टंक ।

तउ मयरद्वउ वाहु कहइ, वात एम कौ कारगु अहइ ॥३६९॥

(३६६) क प्रति में—

कमंडलु भरि चलिउ बाजारि, करथी पडिउ कमंडलु सारि ।

फूटि कमंडलु नहू तिह चली, लोक उत्तर पूछइ देवली ॥३७४॥

पूछइ पणिहारी बइठे हाट, भरणहि वाणिए पाडी हाट ।

नगर लोग सब कौतिग लिउ, इतनो करि तहां थो चलिउ ॥३७५॥

ख प्रति

बूडण लागी पाणी हाट, भरणहि वाणिए पाडी पाठ ।

नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३७१॥

लोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि बाहुडि चाल्यो (ग)

ग प्रति

वंभरण जाइ जणाईसार, गय वंभरण चउहटं मभारि ॥३५८॥

फारि कमंडलु नही हुइ चली, नगर उनी वोल्इ तब वली ।

बूडण लागउ सभु बाजार, सबइ लोग मिलि करहि पुकार ॥३५९॥

(३६७) १. मनु (क) बहुडि (ग) मंतु (ख) २. मडिउ (क) मेढउ (ख)
माटी (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुदेउ (क) वसुहिउ (ख) वासुदेव (ग) २. तिहि ठाड (ग)
३. सातरिह (ख) वेडा बुइह भीतरह कराउ (ख) ४. वलाइ (ग) ५. कियउ (ख)
खयउ (ग) ६. ले भागउ बहु (क) ले मीडा उहु भीतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. ठाडिउ (क) छोडिउ (ख) छुटा (ग) २. संख (क) संग (ग)
३. बिहसि रायणि आडी रांक (क) बिहसि राय पुखु अटी टंग (ख) बिहसि राय तब
बीनी टंग (ग) ४. अछइ (क ग) मूलपाठ अहइ

विहसि अरांगु पयंपइ ताहि, हउ परदेसी वाभरण आहि ।
 दुखइ टंक तुहारी देव, तउ हउ जीवत उवरउ केव ॥३७०॥
 तउ जंपइ वसुदेउ वहोडी, इहिर वयण तुहि नाही खोडी ।
 मन आपणो घरइ जिन संक, मेरी तूटि जाइ किन टंक ॥३७१॥
 तव तिन्हि मेहउ दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।
 तोडि टांग मैढो वाहुडिउ, वसुदेउ राउ भूमि पडिगयउ ॥३७२॥
 वसुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि मन हासउ भयउ ।
 तिहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण

कर सत्यभामा के महल में जाना

कनक धोवतो जनेउ धरै, द्वादस टीकौ चन्दन करै ।
 च्यारि वेद आचूक पढंत, पटराणी घर जायो पूत ॥३७४॥
 उभो भयो जाइ सीद्वार, कठिया जाइ जगनाइ सार ।
 जेते वाभरण भीतर घरों, सतिभामा वरजे आपणो ॥३७५॥

(३७०) १ देखइ कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिनवरउ मन मःनउ
 बेव (क) तउ हउ तुम्ह ते उवरउ केव (ग) 'हउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. सीडउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क)
 वासुदेव भूमहि गिर पडघो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति—हो वसुदेव
 कहा यह किया,..... ।

ताली पारै सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में—करिहि कमंडलु धोती बंधि, द्वादश तिलक जनेउ कंठि ।

चारिउ वेद अचूक भणाइ, पटराणी घर पहुँता जाइ ॥

१. अचुपके (ख) २. पहुँत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीह दुबारि (क ख) सुतासु (ग)

सुण्यो पढंतउ^१ उपनो भाउ, वह^२ वाभण^३ भीतर हकराउ^४ ।
 राणी तणउ^१ हकारउ^२ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥
 अक्षत^१ नोर हाथ करि लेइ, राणी जाइ^२ आसीका देइ ।
 तूठी राणी करइ पसाउ, मागि विप्र जा^३ उपर भाउ ॥३७७॥
 सिर कंपत वंभण जव कहइ, वोल तिहारो साचउ^१ अहउ ।
 वयणु एकु^२ हौ आखउ सार, भूखउ दाभण देहु^३ आहार ॥३७८॥
 राणी तणउ^१ पटायतु कहइ, भूखउ^२ खरउ करटहा^३ अहइ ।
 राणी आणइ^४ अर्थु^५ भंडार, एकुउ^६ मागइ एकु^७ आहार ॥३७९॥
 तुम विप्र कहत हहु^१ भलउ, तुहि^२ वहु^३ वाभणु हउ एकलउ ।
 वेद पुराण कहिउ जो सार, उतिमु^४ एक आहि आहार ॥३८०॥
 वैठि^१ विप्र उठ भोजन करहु, उपरा^२ उपर काहे लडहु ।
 एक^३ ति उपरि तल वैसरहि, अवरइ^४ विप्र परसपर लडहि ॥३८१॥

(३७६) १. पंडित (ग) २. इह (क) बहु (ख) इहि (ग) ३. बुलाइ (क) लेइ बुलाइ (ग) इहु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अखत (ख) अखित (ग) २. कहूँ आशिष सो वेदु (ग) ३. जिह (क) जह (ख) जिमु (ग)

(३७८) १. करइ (ग) २. अपउ (क) ३. आषार (ग)

(३७९) १. दराणी ततउ पठाइतु कहइ (ख) २. चितु आहाइ (ग) सोइउ कसइ (क) ३. करहिहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आफइ (ग) ६. तू किउ (क) बहुवा (ख) हउतउ (ग) ७. आषार (ग)

(३८०) क प्रति में यह छन्द नहीं है । १. सभि (ग) एकला (ग) ३. सो (ग) — 'ख' प्रति में चौथा चरण नहीं है ।

(३८१) १. वेसि (क) बइसि (ख) बइसहु (ग) २. वंभण (ग) ३. एक नि विप्रति उपरि लडहि (क) ४. जलहि (ख)

निमुनहु वात परदवन तरणी, मुकलाइ विद्या जूभरणी ।
 उपरापहति वंभरण लडइ, सिर कूटहि कुकुवार फरहि ॥३८२॥
 राणी बात कहइ समुभाइ, इतु करटहानु लागी वाइ ।
 दूरउ होइ तहि घालइ रालि, नातरु वाहिर देहि निकालि ॥३८३॥
 तउ मयरधउ बोलइ वयरु, साधु अघारणउ भूखे कम्बरु ।
 खुधा वियापइ सुगइ विचारु, हमि कहु मूठिक देहि अहारु ॥३८४॥
 सतिभामा ता तउ काहौ करइ, कनक थालु तस आगइ धरइ ।
 बइसि विप्र तमु भोजन करहु, उन की बात सयल परिहरहु ॥३८५॥
 बैठउ विप्रु आधासरु मारि, चकला दिनउ आगइ सारि ।
 लेकर दीनउ हाथु पगवाल, आगिणउ लोगु परोसिउ थाल ॥३८६॥

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपर (ग) पकते (ख) उपरि (ग) ३. सिर
 कूटहि कोलाहल करहि (क) सिर कूटहि कूवारउ करहि (ख) पोटाहि सोसु कक
 बहु करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग)
 ४. भलइ बुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. राडि (ग) मूलप्रति में 'बार' पाठ है

(३८४) १. साधु (क ख) २. भपउ (ख) ३. बुधा वियापहि (ख) जुडे विप्य
 (ग) ४. तू वासा (ख) ५. अघारु (ग)

(३८५) १. तब (क ग) २. इसी (ग) ३. तब आगि धराइ (ग) ४. तुम
 (क) तुम्ह (ख ग) ५. उन्ह की (ख ग) इनकी (क) ६. सबे (ग) मूलप्रति में
 'तुम्ह की' पाठ है ।

(३८६) १. बइसउ (क) २. विपु (ख) ३. अघारिण (क) ४. लोटउ (क)
 ५. अप्पिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे अरणि ।
 माडे वडे परोसे तासु, सबु समेलि गउ एकुइ गासु ॥३८७॥
 भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुरा राणी वैठि आइ ।
 जेतउ घालइ सबु संघरइ, वडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥
 वाभण भणइ निसुणि हो बाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल ।
 तिमु तिमु लोगु सयलु परिहरयउ, मो आगे सबु कोडा करहु ॥३८९॥
 जहि जेम्बण न्योते सबु लोगु, तितउ परोसिउ वाभण जोगु ।
 नारायणु कहु लाइ धरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥
 तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि तो खाइ सयल रसोइ ।
 यह वाभणु अजहु न अघाइ, भूवउ भूखउ परिविलखाइ ॥३९१॥
 भयण वीरु यहु वडउ विजोगु, तइ जू नयर सबु न्योत्यो लोगु ।
 सो काहो जेम्बहिगे आइ, इकुइ विमु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

(३८७) १. विधि (ग) ते तउ (ग) ३. भोजन (ग) ४. मंडा (क) माडे (ख ग) ५. बहुत (ग) ६. सकेलि (ख ग) सबनि कीयो एके गासु (क)

(३८८) १. ते तउ खाय (ख) २. बडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उवराइ (ख)
 मूलप्रति में 'ठाइ'

(३८९) १. निवलो लोग सबहि परिहरउ (ग) २. कूडा (क ग)

(३९०) १. जीमण (क ख) ज्योणार (ग) २. निउतउ (क) निउते (ख)
 निवतिह (ग) ३. तिन्ह कइ उपज्या बडा वियोग (ग)

(३९१) १. इहतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सबहि (र) ३. खाते लाइ
 नारायण खाइ (क) ४. विलखाइ (क ख ग)

(३९२) १. बाक (ख) विप्र (ग) २. नगर काज (ग) ३. जीमइगो (क)
 जोबहिगे (ख)

राणी चितह उपरणी कारिण, काहौ अवरु परोसो आरिण ।

भूखउ वाभरण काहो करइ, घालि आंगुली सो उखलइ ॥३६३॥

अंसो वाभरण कोतिगु करइ, सब मांडहीति उखली भरइ ।

मान भंगु राणी कहु कीयउ, मयगु विप्र ते खूडउ भयउ ॥३६४॥

प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

मूँडी मूडि नलीयरा लयउ, निहुडिउ चलइ कुवडा भयउ ।

बडे दांत विरूपी देह, फुरिण सुचलिउ माता के गेह ॥३६५॥

खण खण रूपिणि चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।

मोस्यो नारद कछउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३६६॥

जे मुनि वयण कहे परमाण, ते सबई पूरे सहितारण ।

च्यारि आवते दीठे फले, अरु आचल दीठे पीयरे ॥३६७॥

सूकी वापी भरी सुनीर, अपय जुगल भरि आए खीर ।

तउ रूपिणी मन विभउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३६८॥

(३६३) १. सब पाछउ घरइ (क) सो करइ (ख) ऐसा केतिग
वाभरण करे (ग)

(३६४) १. सब माहउ उखालि सो भरई (क) सब माणहुउ उखलि सो
भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरइ (ग)

(३६५) १. कमंडलु हाथि (ख) नालियर (ग) २. हूडउ भयो (क)
भयउ (ख) होइ (ग) ३. वातारि (क) वंत (ग) ४. विरूपी (ख) विरूपि (ग)
५. बहुरि (क) ६. सुवडिउ (ख)

(३६६) १. मुहिस्यो (क) हंसो (ग) ख प्रति में प्रथम वरण नहीं है ।

(३६७) १. वरन (क) वर (ग) २. आल (ग) ३. चारि (ख ग) ४. अम्बते
५. अंचल (ग) ६. बीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयला (क)

(३६८) १. थाणय (क) पयोह (ख) २. विसयो (क) विसमा (ग)
विभउ (ग) ३. इतउ तापसु चारेहि गया (ग) ४. कह भयउ (ख)

नमस्कारु तव रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उचरइ ।
 करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिधासणु वंसण देहु ॥३६६॥
 समाधान पूछइ समुभाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ।
 सखी बूलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥४००॥
 जीवण^१ करण उठी तंखिणी, सुइरी मयण^२ अग्नि थंभीणी ।
 नाजु न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, वह भूखउ भूखउ विललाइ ॥४०१॥
 हो सतिभाम कै घरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ ।
 जो दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पूरी लाघण तीन ॥४०२॥
 रूपिणि चितह^१ उपनी कारिण, तउ लाइ^२ ति परोसे आरिण ।
 मांस^३ दिवस को लाडु धरे, खूडे रूप सवइ संघरे ॥४०३॥
 आधु लाइ नारायण खाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ आघाइ ।
 तव रूपिणि मन विभी कहइ, किछु किछु जाणउ यहु अहइ ॥४०४॥

(३६६) ३६८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में और है जो निम्न प्रकार है—

तापस देखि उपना भाउ, तव रूपणी पूछई सतभाउ ।

स्वामी आगमछु किहां थो भया, एता ब्रह्मचरछु कहां ते निया ॥

१. खेडउ (क) खूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठी तंखिणी, (क) २. सुमरी बिद्या (ग) ३. अग्नि (क) अग्नि (ख) अग्नि बंधणी (ग) ४. नाज न चढइ भूमि धूजाइ (क) नाज न राभहि चूल्हि धुंधाइ (ख) अग्नि बलइ चूल्हइ धूंधाइ (ग) ५. विललाइ (क ग)

(४०२) तबहि मयण उठि मा पहि गया (ग) २. रहइ (क) भयउ (ख)
 ३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित्त (क) चितहि (ग) २. लगु लडू परसउ (ग) परसे (क)
 ३. नाराइछु कहू लाडू धरे (ग) ४. खोडे वंभण सब संघरे (ग) मूलप्रति में 'बोर' पाठ है ।

(४०४) १. बिभउ (ख) चितहि विसमाइ (ग)

तउ राणो मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रह को घरइ ।
 जइ उपजइ तो कहसा न जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥
 तउ रूपिणी मनि भयो संदेह, जमसंवर घर बाढिउ एहु ।
 विद्या वलु हइ हीएह घणउ, यह परभाउ अहि विद्या तणउ ॥४०६॥
 फुगिइ जे पूछइ करि नयणु, लयउ वरतु तुम्हि कारणु कवणु ।
 तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥
 काहा तें तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिप्या तुहि गुरु कवणु ।
 जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो मोहि ॥४०८॥
 तवहि रिसाणौ बोलइ सोइ, गुरु बाहिरी दीख किमु होइ ।
 गोतु नाम सो पूछइ ताहि, व्याह विरधि जहि सनवधु आहि ॥४०९॥
 हम परदेस दिसंतर फिरहि, भीख मांगि नित भोजन करइ ।
 कहा तूसि तू हम कहु देहि, रुसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

(४०५) १. उबरिको (ग) २. किउ करि लाभइ इसकी माय (ग)

(४०६) १. हइ तुम यह घणउ (क) हइ इह यह घणउ (ख) इसु पहि हइ घणी (ग) २. अखि तिसु तणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ख प्रति में से लिये गये हैं । १. 'वृजइ' (क) २. रुकमिणी (ग) ३. लिउ वर इहु (ग)

(४०८) १. बीन्ही दीक्षा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देखहि (क) दीक्षया (ख) हिष्टि (ग) २. तोहि (क) मोहि (ग) ३. होइ (ग)

(४१०) १. भीख मांगि (क) चरी मांगि (ख) चारि भंग (ग) मूलप्रति में 'चरी मांगित' पाठ है । २. रुसी (क) रुसहि (ख) रुही (ग)

खूँडउ दिठु रिसाणउ जाम, मन विलखाणो रूपिणि ताम ।
 बहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूली जिन^२ लावहु खोडी ॥४११॥
 तवहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा विसूरइ माइ ।
 साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्ब पडि उतरू आफउ मोहि ॥४१२॥
 तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्ब रूपिणि कउ भयउ विवाहु ।
 जिम्ब परदवणु पूच्छु हडि लयउ, सयलु कथंतरू पाछिलउ कहिउ ॥४१३॥
 धूमकेत हौ सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरू लै गयउ ।
 मुहिसिहु नारद कहिउ निरूत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥
 अवर वयणु मुनि कहे पम्वाण, ते सबई पूरे सहिनाणु ।
 अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु विलखउ होइ ॥४१५॥
 सतिभामा घर बहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।
 हारी होड न सोधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥
 माता पास कथंतर सुण्यउ, हाथ कूटि फुणि माथो धन्योउ ।
 आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जण पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

(४११) १. खरा रिसाणा दीखा जाम (ग) खूँडउ निसुणि रिसाणउ जाम
 (ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोबत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होड (क) मूलप्रति में 'डोर' पाठ है

(४१७) १. तो मा (ख) २. तणउ (क)

कंद्रप^१ बुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या बहु रूपिणी ।

निजु माता उभिल करि धरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥

सत्यभामा की स्त्रियों का रूपिमणि

के केश उतारने के लिये आना

एतइ बहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।

अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर एगारि पहुती तहा ॥४१९॥

पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।

सामणि जाणहु आए उण लेहु, अलिउल केस उतारण देहु ॥४२०॥

निसुणि वयण सुंदरियो कहइ, बोल तिहारौ साचउ हवइ ।

निसुणहु चरित अगंगह तरणउ, नाउ मूडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

हाथ आंगुली धरी उतारि, अर मूंडी गोहिण की नारि ।

नाक कान तिनहु के खुरे, फुणि ते सव्व घर तन बाहुरे ॥४२२॥

गामति निकली नयर मभारि, कम्बण पुरिष ए विटमी नारि ।

यहर^३ अचंभउ वडउ विजोउ^४, हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥

एते छण ते रावल गई, सतिभामा पह उभी भई ।

विपरित देखि पयंपइ सोइ, तुम कवण^५इ मोकली विगोइ ॥४२४॥

(४१८) १. कइं पि (ग)

(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिन सामिणि उण लेहु पाठ है

(४२२) १. पडे (ग) २. सेवडे (ग)

(४२३) १. गावत (क ल) गावतु (ग) २. बिडंरी (ल) ३. अउर (क) एहु
(ग) इहु (ल) ४. बियोग (क) विजोगु (ल) वियोगु (ग)

(४२४) १. कवणे (ल) नाई (ग)

नोट—क प्रति में दूसरा और तीसरा चरण नहीं है ।

तव ते जंपइ विलखी भइ, हम ही रूपिणि कं घर गई ।
 नाक कान जो देखइ टोइ, नाउ सरिसु उठी सब रोइ ॥४२५॥
 निसुणि चरितु चर आए तहा, रूपिणि रावल वैठी जहा ।
 बिटमी नारि सिर मूंडे घरगे, नाक कान हम काटे सुगे ॥४२६॥
 निसुणि वयण फुणि रूपिणी कहइ, निश्चे जाणौ येहो अहइ ।
 काज ताज छोडहि वरवीर, परगट होइ तूं साहस धीर ॥४२७॥

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तव सो पयड भयो परदवणु, तहि सम रूपिन पूजइ कवणु ।
 अतिसरूप बहु लक्षणावतु, तउ रूपिणि जाणउ यह पूत ॥४२८॥
 वस्तुबंध—जव रूपिणि दिठ परदवणु ।
 सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कंठ लायउ ।
 अर मो हियउ सपलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥

(४२५) क प्रति में प्रथम दूसरा चरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख)
 नाई (ग) २. सिउ ऊठे सबि रोइ (ग)

(४२६) करबि चरितु घरि आया तहां (ग) २. रोवें (ग) ३. तिय (ग)

(४२७) १. निहवउ जाणउ (ख) नीचउ जाणौ (ग) नविह जाणउ (क)
 २. कुं इह अहइ (क) इह को अहइ (ख) ये हो अहै (ग) मूलप्रति में 'इवह' पाठ है ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यहां 'ग'
 प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मयण (क) मयणु (ख) परगट (ग) २. सरि (ग) तामु रवि न
 पूजइ कवणु (क) सबु को जाणइ मुंवर वयणु (ख) ३. निज (ग)

दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत ।
 वाला^५ तुराह न दिठ मइ, यह पछित्तावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तरौ वयणु निसुरोइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
 खण इकु माह विरधिसो कयउ, फुरिणसो मयण भयउ वेदहउ ॥४३०॥
 खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाइ ।
 खण खण जेत्वणु मागइ सोइ, बहुतु मोहु उपजावइ सोइ ॥४३१॥
 इतडउ चरितु तहा तिहि कियउ, फुरिण आपणउ रूपो भयउ ।
 माता मयणु सुनु मोहि, कवतिगु आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अवसर कथंतर भयउ, सतिभामा महलउ पठयउ ।
 तुम बलिभद्र भए लागने, आइस काम रुकमिणी तरौ ॥४३३॥

(४२६) १. बाकउ बीयउ (क) अंकउ भरिउ (ख) अंकउ लिउ (ग)
 २. हिय तब कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फल (क) जीबिउ सफउ (ख) जीवहु सफउ
 (ग) ४. उरि धरिउ (ख) मइ उरि धरवे (ग) ५. बालकु होतु न बीह मइ
 इहु पछितावा पुत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ क्ष प्रति में नहीं है ।

(४३१) १. भोजन रोइ (ग)

(४३२) १. सुणहि तू (क) २. कउतिग (क) नोट—ग प्रति में चौथा
 चरण नहीं है । मूलप्रति में 'दसो' पाठ है ।

(४३३) १. अमर (क ख ग) २. कंचुकि (क) महला (ग) ३. अइसा (क)
 अइसे (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठयो' पाठ है

महलउ जाइ पहुतउ तहा, बलिभद्र कुवर बइठे जहा ।

जुगति विगतिहि विनइ धरणी, ऐसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

इलधर के दूत का रूक्मिणी के महल पर जाना

हलहल कोपि दूतु पाठयो, पवण वेगि रूपीणि पहुँ गए ।

उभे भए जाइ सीहद्वार, भीतर जाइ जणाइ सार ॥४३५॥

नवइ मयण वुधिमह धरइ, मूँडउ वेस विप्र को करइ ।

बडउ पेट तिनि आपणउ कीयउ, फुरिण आडौ दुवारि पडि ठयउ ४३६

तवहि दूत बोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि ।

तउ सो बाभण कहइ बहोडि, उठि न सकउ आइयहु बहोडो ॥४३७॥

निमुणि वयण ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ रालियउ कडाइ ।

जइ इह कीम्वहूँ बाभणु मरइ, तउ फुरिण इन्हकहू गोहिच चढइ ॥४३८॥

(४३४) १. सततउ (क) संस्तो (ख) संपती (ग) २. बीबी (क) स्वामी
बात सुणेहि मुक्त तरणी (ग)

(४३५) १. बलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पाठयो (क) पाठइ (ख) पाठया
(ग) ४. धरि (ग)

(४३६) १. बूडउ (क ख) बूडा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. आनि इह (क) हउ न सकौ आये बहोड (ग)

(४३८) १ गहि गोडे रालउ इक नइ (क) गोडे बूलहि बलिउ न जाइ
(ग) २. जो इहु कबही बंभणु महणु । तउ फुरिण इसु की हत्या चढइ (ग) ग प्रति में
निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहू देइ न पइसाह, संधि रह्या सो घर का बाह ।

गहि गोडा जे रालउ तोहि, मरइ सु बंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

प्रवेश न प्राप्त करने के कारण दूत का वापिस लौटना

अइसो जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए ।
 वाभण एकु वाडह पडउ, जाणि सु दिवसु पंचकउ मडउ ॥४३६॥
 तिन पइ हम न लइ पयसारु, रुधि पडिउ सो पवलि दुवारु ।
 गहि गोडउ जउ जालइ ताहि, मरइ सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुरिण वयरण हलहर परजल्यउ, कोपारूठ हो आपण चलिउ ।
 जण दस बीसक गोहरण गए, पवरण वेगि रूपिणि पइ गए ॥४४१॥
 उभे भए ति सीहद्वार, दीठउ वाभण परउ दुवार ।
 तउ बलीभद्र पइइ ताहि, उठहि विप्र हमि भीतर जाहि ॥४४२॥
 तव वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभामा घर जेम्बरण गयउ ।
 सरस अहार उवरु मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफरचउ ॥४४३॥

(४३६) १. इसउ वयरण (क) अइसउ जाणिति (ख) बीठा वंभण (ग)
 २. वारणइ (क) वारिहइ (ख) वाहरि हइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहू बेइ न पइसारु (ग) २. रहषा
 घर का वाह (ग) ३. रालहि (क) राडहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु वंभणु हत्या
 आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें
 के पहिले बिद्या गया है । मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहचहि आइराहि पाठ है

(४४१) १. पजजलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख)
 जाणइ बइसंदरि छौं टल्यउ (ग) ३. साबिहि (ग) ४. घरि (ग)

(४४२) १. जाइसीह (क ख) तिसीहउ (ग) २. वारि (क) बीढा वाभण
 पडपा सुवारि (ग) ३. कहइ हसि बात (ग)

(४४३) १. एजो घरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में 'वहार'
 पाठ है । ४. उवरु (क) बहुत संघरउ (ख) ५. आफरियउ (क) अकरिउ (ख) आफरं (ग)

तव वलिभद्र कहै हसि वात, एकर हटा न उठइ खात ।
 वाभण खउ लालबी होइ, बहुत खाइ जाणइ सबु कोइ ॥४४४॥
 तवइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू वलिभद्र खरौ निरदयी ।
 अवर करइ वाभण की सेव, पर दुख बोलइ तू केव ॥४४५॥
 तवइ उठिउ वलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि चलयउ कढाइ ।
 कहा विप्र कहु दीजइ कानि, वाहिर करि आवहु निकालि ॥४४६॥
 तव हलहर लइ चलीउ कढाइ, पूछइ मयगु रुक्मिणी माइ ।
 एक वात हो पूछउ तोहि, कवण वीर यह आखहि मोहि ॥४४७॥

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यह कहिए वलिभद्र कुवारु ।
 सिधजूझ यो जाणइ घणउ, यह पीतियउ आहि तुमि तणउ ॥४४८॥
 गहि गोडइ वह वाहिर गयो, बांधि पाउ धडउ हइ रहउ ।
 देखि अचंभउ हलहरु कहइ, गुप्त वीर य कोण अहइ ॥४४९॥

(४४४) १. रटिया अनुसरि खात (क) रटिहानउ हटहि खात (ख)
 रटिकान उठुही खातु (ग) २. खरउ (ख) खरा (ग)

(४४५) १. तहु बोखंतइ बोलहि वेव (ग)

(४४६) १. तिन लीयो उचाइ (ग) २. गालि (क ख) गाल (ग) ३. बहु
 वेह (क) सुबीजं निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. बुद्धि पाइ खुटउ होइ भयो (क) बद्धिउ पाउ भइ अहा रहिउ
 (ख) बाधा पाउ भरति महि हुया (ग) २. करइ (ख) ३. कोइ (ग)

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

रा^१लि पाउ भुइ उभउ रहइ, तहि^२ क्षण सिंह रूप वहु^३ भयउ ।
 तहि^४ हलु आवधु लयो सम्हालि, फुरिण ते दोउ भीरे पचारि ॥४५०॥
 जुमइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सवल मलावभ^१ लरइ^२ ।
 सिंघ रुपि उठियोउ संभालि, गहि गोडउ घालियउ अखालि ॥४५१॥
 छपनकोटि नारायण जहा, पडियो जाइ ति हलहर तहा ।
 देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भणइ कान्ह यह वडउ विजोगु ॥४५२॥

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा

अपने वचन का वर्णन

इहर वात तो इहइ रही, बाहुरि कथा रुपिणी पह गइ ।
 पूछिउ तव नंदन आपनौ, कापह सीख्यउ वल पोरिष घणौ ॥४५३॥
 मेघकूट जो पाठइ ठाउ, जमसंवर तहा निमसै राउ ।
 निसुणौ वयण माइ रुपिणी, तिहि ठा विद्या पाइ घणौ ॥४५४॥

(४५०) १. राडि पाउ भौमि ऊभौ सोइ (ग) २. तंलिणि (ग) ३. विक्रमइ सो होइ (ग) ४. उठि वलिभद्र घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवधु लियो संभालि (ख) हलु आवधु लिया संभालि (ग) मूलप्रति में—‘तहि लुब्धावधु’ पाठ है

(४५१) १. मल्लबहु (क) २. जुम्भिवइ (क) लडहि (ख) ३. अडालि (क) नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है । ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है ।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पड्या (ग)

(४५३) १. अइसौ (ग) हरनहर बात उही इह रही (ख) २. आपहि कण पउरिषु घणौ (ग)

(४५४) १. पट्टइ (क) पावा (ग) पावइ (ख) २. सुणहु बात माता रुक्मिणि (ग) ३. यह (क) बा (ख) दुइ (ग)

निसुणि वयण हु आखउ तोहि, नानारिषि ले आयो मोहि ।

उदिधिमाल माइ यह जोडि, फुणि प्रदवन कहै कर जोडी ॥४५५॥

विहसि माइ तव रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद अहइ ।

निसुणि पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा

में ले जाने की स्वीकृति लेना

तउ मयरद्वउ कहइ सभाइ, बोल एकु हौ मांगो माइ ।

वाह पकरि तोहि सभा वतारि, लेजइहो जादौनी पचारि ॥४५७॥

यादवों के बल पौरुष वा रुक्मिणि द्वारा वर्णन

भणइ माइ सुणि साहस धीर, ए जादौ है बलीए वीर ।

हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाए ॥४५८॥

पंचति पंडव पंचति जणा, अनुल बल कौतीनन्दना ।

अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिष नाही छेव ॥४५९॥

छपन कोटि जादौ वलिगंड, जिनके भय कांपइ नवखंड ।

एसे खत्री वसइ बहूत, किम्व तू जिणइ अकेलो पूत ॥४६०॥

(४५५) १. लई अजोडि (ग) लईय बहोडि (क ख) २. बहोडि (ग)

(४५७) १. बीजे (ग)

(४५८) १. भानउ चलो हउ (ग) २. महयलि (क) कहियहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाए (क ख)

४. अवर मरुल कैरव नन्दना (क) मरुल कुंती रांबण (ख) बल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तीनि (ख) बहमंड (क) २. जिसे (ग) ३. नियत (ग)

४. जाइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध—ताम कोप्यो भणइ मयरद्धु
 रण तोडइ भड अतुल वल, लउ मान जादम असेसह ।
 विहडाउ रण पांडवह, जिणऊ रण सव्वह नरेसह ॥
 नारायण हलहर जिणिवि, सयलह करउ संघार ।
 पर कुरवि जिणवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमार ॥४६१॥

चौपई

मयणु चरितु निसुणहु सवु कवणु, नारायणु जुभइ परदवणु ।
 वाप पूत दोउ रण भिरे, देखइ अमर विमाणाह चढे ॥४६२॥

रुक्मिणि की बांह पकड़ कर यादवों की सभा में
 ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये सलकारना

कोपारुढ मयण जव भयउ, वाह पकरि माता लीए जाइउ ।
 सभा नारायणु वडैठउ जहा, रूपिणि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥
 देखि सभा बोलइ परदवणु, तुम सौ वलियो खत्री कवणु ।
 हउ रूपिणि ले चल्यो दिखाइ, जाहि वलु होइ सु लेहु छुडाइ ४६४

(४६१) १. मयण रण (क) मयरद्ध (ख) मूलपाठ ममभरि २. रण तोडइ भड अतुल बल (क ख) धाइ लयरद्ध रण तोडउ भड ३. जबह (ख) ४. जिणिवु (क) जिणऊ रण सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ जिहणु सवरि सहकरि नरेसह ५. एकुवि जिणवर मुच्चिकरि (ख) नोट— वस्तुबंध छान्द ग प्रति में नहीं है ।

(४६२) १. सह कोछु (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपारुपि (ग) २. रूपिणि (ग)

(४६४) १. महि (क ख ग) २. किउछु (ग) ३. जहा (ग) ४. झाइ (क ख)

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित
करके युद्ध के लिये ललकारना

तू नारायण मथुराराज, तइ कंस भान्यो भरिवाउ ।
जरासंध तइ वधौ पचारि, मोपह रूपिणि आइ उवारि ॥४६५॥
दसह दिसा निसुणो वसुदेव, जूभत तराउ तुम जाणउ भेउ ।
जादो मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रूपिणि लेहु अजोडि ॥४६६॥
वलिभद्र तू वलियो वर वीर, रण संग्राम आहि तू धीर ।
हल सोहहि तोपह हथियार, मो पह रूपिणि आइ उवार ॥४६७॥
तूही अर्जुन खंडव डहणु, तो पवरिष जाणै सवु कवरणु ।
तैं वयराइ छिडाइ गाइ, अब तू रूपिणि लेइ मिलाइ ॥४६८॥
भीम गजा सोहहि कर तोहि, पवरिष आज दिखावइ मोहि ।
वारि पाच तू भोजन खाइ, अब संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥
निसुणि वयण सह्यो जोइसी, करि जोइस काहौ हो वसी ।
विहसि वातपूछइ परदवणु, तुमहि सरिस जिणइ रण कवरणु ॥४७०॥

(४६५) १. हुउ (ग) २. कंसह (क) कंसह (ख) ३. बांधिउ (क) जीतिया (ग) बांधियउ (ख); ४. लोहे (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होवह (ग) २. बिसार (क ख ग) ३. भूभ (क) जूभण (ग) ४. वलिण (ग) ५. बहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभउ तह गुरुआ गंभीर (ग) २. साहस धीर (ग) ३. वीर (ख) ४. हलु सोहितो (ग) ५. बलकरि (ग) ६. आज (ग)

(४६८) १. खंडव बरा बहणु (क) खंडा बरा बहणु (ग) धणुक धरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन अराइ (ग)

(४६९) १. गवा (क) २. अबहि आइ जुभहि रण माहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसकइ सउ होइसी (क ख) निराण्योइसु कइ साहउ इसी (ग) २. दसवलि माहे रणि जोतइ कवरणु (ग) नोट—जीया धरण ख प्रति में नहीं है ।

निकुल कुंवर तउ पवरिषु सार, तोपह कोत आहि हथियार ।
 अब हइ भयो मरण को ठाउ, मोपह रुपिणि आनि छिडाइ ॥४७१॥
 तुहि नारायण हलहर भए, छल करि फुणि कुंडलपुर गये ।
 तवहि वात जाणी तुम्ही तणी, चौरी हरी आणी रुकिमिणी ॥४७२॥
 मयरधउ जपइ तिस ठाइ, अब किन आई भिरहु संग्राम ।
 बोल एकुह बोलो भलो, तुम सब खत्री हुउ एकीलो ॥४७३॥

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध
 के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु—निसुणि कोप्यो तहा महमहरण ।
 जाणै वैशुंदर धृत डल्यउ, जाणिक सिंह वन मा गाजिउ ।
 रां सायर थल हलिउ, सयन सवनि जादवन्हि सजिउ ॥
 भीउ गजा लइ तहि चलिउ, अर्जुन लिउ कोवड ।
 नकुल कोणि फर कोत लउ, तउ हलिउ वरम्हंडु ॥४७४॥
 चोपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनद्धउ जादमराउ ।
 हैवर साजहु गैवर गुरहु, साजहुइ सुहउ आजु रण भिडहु ॥४७५॥

(४७१) १. सोहइ इत्तु तोहि कुंता हथियार (ग) नोट—ए प्रति में चौथा चरण नहीं है

(४७२) १. बलि पणि (क) २. जाइ (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. घिउ (ग) ३. जणु (ख) जाणु (ग) ४. गहरिण (ख) ५. सुर सायर तबउ बलो (क) रां सायर महि उछलियउ (ख) जाणउ सेबनु मेह उछलिउ ६. सयल जाम (क) सयन अबहि (ख) बुडिउ सेनु बीसानु बिजजउ (ग) ७. हलहरि हलु आवडलिउ (ख) ८. फाटउ (क) हाल्या (ग) मूलप्रति में—अरुहिउ पाठ है ।

(४७५) १. बाबहु (ख)

आयसु भयउ सुहर रण^१ चलइ, ठा^२ ठा के विसखाती करइ ।

केउ^३ कर साजइ करवालु, केउ साजि लेहु हथियारु ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गँवर गुडहि, केउ सुहर साजि रण चढइ ।

केउ तुरीन पाखर^२ घालि, केउ आवध^३ लेइ सभालि ॥४७७॥

केउ टाटरा जूझण^१ लेइ, केउ माथे टोपा^२ देइ ।

केउ पहरइ आगिसनाह^३, ऐसे होइ चाले नर नाह ॥४७८॥

कोउ कोंतु लेइ कर साजि, कोउ असिवर नीकलइ माजि ।

कोउ सेल सम्हारइ फरी^१, कोउ करिहा साजै छुरी ॥४७९॥

केउ भगाइ वात समुभाइ, इन सुहडनि हइ लागी वाइ ।

जिहि है रूपिणि हरि पराण, सो नर नहीं तिहारै मान ॥४८०॥

एक ठाइ सव खत्री मिलहु, घटाटोप होइ जूझण^२ चलहु ।

वोछी^३ बूधि जिन करहु उपाउ, अर^४ यो भयउ मरण कउ चाउ ॥४८१॥

(४७६) १. निसाणेह (ग) २. टाटर टोपजि सिरि परि घस्या (क) ठाडे होइ उत्सारवती कराऊ (ग) ३. केइ कमरि कसहि (ग) कोइ (ख)

(४७७) १. जात रयि (ग) रय (ख) २. अंबारी (ख) ३. आयुष (ग)

(४७८) १. जोसण (ग) २. टोपी (ख) ३. अंग (क ग) ४. रण मांहि (क ख ग)

(४७९) १. रण (ग) २. नीकलए (क) नीकालहि (ख) लेहि रण ३. खरी (क) करी (ग) ४. हाथिहि (ग)

(४८०) नोट—प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८१) १. आयु रणि (ग) २. जूझण (ख) करी पुम्ह (ग) बूल पाठ खत्री ३. उत्ति (क) कछु (ग) ४. इय हियो (क) इहु हइ (ग) ५. कउ ठाउ (क) कउ बाउ (ख) का ठाउ(ग)

चाउरंगु बलु मिलिउ तुरंतु, हय गय रह जंपाण संजुतु ।
 सिगिरि छात दीसहि अपाण, अंतरीख हुइ चले विमाण ॥४८२॥
 असी सयन चली अपमाण, वाजण लागे दरंड निसाण ।
 घोडा खुररइ उछली खेह, जाणौ ताजे भादम्ब के मेह ॥४८३॥

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

वाइ दिसा करंकइ कागु, वाट काटिगो कालौ नामु ।
 महुवरि दाहिणी अरु पडिहारु, दक्षग दिस फेकरइ सियालु ॥४८४॥
 वण मा दीसइ जीव असंखि, धुजा पडइ तिन बैसर पंखि ।
 सारथि भणइ कहै सतिभाउ, वूरै सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥
 तउ केसव बोलइ तिस ठाई, सुगमु सुगणइ विवाहरा जाइ ।
 सा सारथी समुझावै कोइ, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥
 चालै सुहड न मानहि सवनु, देखि सयनु अकुलाणो मयणु ।
 माता रूपिणि घालि विमाण, पाछइ आपण रचइ भूपाण ॥४८७॥

(४८२) १. बलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले बहत्त (ग) ४. सिगिरि छात्र (क ख) सिंगल छात्र नहीं परवाणु (ग) ५. वाजइ मानइ गुहिर निसाण (क) ६. खडा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरइ (क) घोडा लइ (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ खोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहार (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहार कूकइ बसिए बिता सीयालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहार

(४८५) १. इन सकुणिहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमाण (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है ग—सबहि सबलु बाहुडि बुधि माणि, माता रूपिणि खडी बिभाणि ।

चडि करि रवि बोलइ महामहण, चालहु सुहड न मानहु सबलु ॥

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करवा

तबइ सयण मन मा वधिकरी, सुमिरी विद्या समरी करी ।

जइसउ तह वलु पर देखीयउ, इसउ सयन आपणउ कीयउ ॥४८८॥

युद्ध वर्णन

दाउ दल सयउ मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए ।

इनउ साजि लए करवाल, जाणिक जीभ पसारी काल ॥४८९॥

मयगल सिउ मैगल रण भिरइ, हैवर स्यो हैवर आ भिरइ ।

रावत पाइक भिरे पचारि, पडइ उठइ जिमवर की सारि ॥४९०॥

केउ हाकइ केउ लरइ, केउ मार मार प्रभणइ ।

केउ भीरहि स्मरि रण आजि, केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥

केउ वीर भिडइ दूवाह, केउ हाक देइ रण माह ।

केउ करइ धनष टंकारू, केउ असिवर करइ संघारू ॥४९२॥

(४८८) १. बाहडि (ग) २. धरी (ल) ३. सेना करी (क) सयन कारणी
(ल) विरधी करी (ग) ४. तसउ (क) तह सउ (ल) जे ता तिनि परबल देखिया,
ते ता सेनु आपणा कीया (ग)

(४८९) १. साम्हे उभे (क) सनभुल जब (ल) बीर बराबर भये (ग)
२. बरलहर (क) ३. किनही (क) किनहू (ल) केइ (ग) ४. जीभ (क ल ग)

(४९०) १. आ भिडहि (क) २. आबुडइ (क) किरजडे (ग) ३. सहहि
अतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हाजि कहिके पहुँहाह, केइ भारते कहि इम भणहि ।

केइ भिडहि संबरि रहि गाजि, केइ कायर नासहि भाज ॥

१. मूलपाठ रणाजि

(४९२) १. घूब का टाउ (ग) २. पहार (क ल) के अक्षवार बासहि घाउ (ग)

देखि स्मरि^१ बोलइ हरिराउ, अर्जुन^२ भीष्मु तिहारौ ठाउ ।

सहिद्यो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिषु^३ आजु दिखावहि मोहि ॥४६३॥

फुगि पचारि बोलइ हरिराउ, दसौ दिसा निसुणौ वसुदेउ ।

बलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तराउ, दिखलावहु पवरिश आपराउ ॥४६४॥

कोप्यो भीमसेनि^४ तुरी चढाइ, हाकि^५ गजा ले रणमहि भिडइ ।

गैयर सरीसो करइ प्रहार, भाजहु^६ खत्री नही उबार ॥४६५॥

कोपारूढ पथ^७ तव भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लीयउ ।

चउरंग बलु भिडउ पचारि, को रण पंथ^८ न सकइ सहारि ॥४६६॥

सहयो हाथ लेइ करिवालु, निकुल कौत ले^९ करइ प्रहार ।

हलहर जुझ न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ॥४६७॥

जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण संग्राम^{१०} ति साहस धीर ।

दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, बहुतइ सुहर जूझि रण पडे ॥४६८॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना

तव मयरद^{११} कोप मन धरइ, माया मइ जूधु बहु करइ ।

मोहे सुहृद सयल रण पडे, देखइ सुहृद^{१२} विमारा चढे ॥४६९॥

(४६३) १. सेनु (ग)

(४६५) १. भीम तवहि तुल चढया (ग) २. हाथि (क ग) मूलप्रति में 'लए सो भीडह' पाठ है ३. जूझ भीम वेइ बहूली सार (ग)

(४६६) १. कोपिरूढ पथ (ग) २. पथु (ख) ३. पथह (ख) पथ (ग) ४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'अल' पाठ है ।

(४६८) १. संग्रामहि (ग) २. आहि रणधीर (क) ३. जे रण संगमि आहि रणधीर (ख) ४. मायामयी जुझ रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमसो तव जूझ कराइ (ग) २. मोहरि विद्या बीई समवायि (ग) ३. अमर (क ख ग)

ठा^१ ठा रहिवर हयवर पडे, तूटे छत्रजि रयगनि जरे ।

ठाठा^३ मैगल पडे अनंत, जे संग्राम आहि^४ मयमंत ॥५००॥

सेना जूभि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।

हाहाकार करै महमहगु, वलियो^२ वीरु आहि यह कवणु ॥५०१॥

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

वस्तुबंध—पडे जादौ व देखि वर बीर ।

अरु जे पंडौ अतुलवल, जिन्हहि^१ हाक सुर साथ कंपइ ।

जिन चलंत महि थर हरइ, सवलधार नहु कोवि जित्तइ ॥

ते सब क्षत्री इहि^५ जिरो, यह^६ अचरिउ महंतु ।

काल रूप यह^७ अवतरिउ, जादम्बु कुलह खयंतु ॥५०२॥

चौपइ

फिरि फिरि सैना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।

मोती रयग^१ माल जे जरे, दीसइ छत्र तूरी रण पडे ॥५०३॥

हय गय रहिवर पडे अनंत^३, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।

ठाठा^३ रुहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥

(५००) १. ठां ठां हिबइ आंसू पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग)

४. सुर (ग)

(५०१) १. कार (क ग) मूलपाठ कालु २. रणमहि वीर अप्पि परवणु (ग)

(५०२) १. अत्रुजे (ख) २. अरजुन (ग) ३. जिन्ह हाक ते सुरगुय डोलइ (ग) ४. जिन्ह हाक इव मेविनी घसइ (ग) ५. समर (ख) चलइ मेर जिन्ह हाकु भोले (ग) ६. रण (ग) ७. इहु सूर मयमंतु (ग) ८. सब संवरइ (ख)

(५०३) १. रल (ग) २. तूरि (ख) तुही घर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।

(५०४) १. मयगल (ग) २. बहुत (ग) ३. वजिरपडे (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीणी^३ स्याउ करइ पुकार, जनु^३ जमराय जगावहि सार ।
वेगि चलहु सापडी^४ रसोइ, असइ^५ आइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि^१ रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ खर हडइ ।
हालइ महियलु सलकिउ^३ सेस, जम संग्राम चलिउ हरि केसु ॥५०६॥

युद्ध भूमि में रथ बढाने पर शुभ शकुन होना

जव रण पेलिउ रथु आपनउ, तव फरकिउ लोयणु दाहिणउ ।
अरु दाहिणइ अंगु तसु^४ करइ, सारथि निमुणि कहा सुभु करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सवु जिगी, अरु इहि आइ हडी रुक्मिणी ।
तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥
तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण ।
भाजहि^१ सुहड हाक तुह तरणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

(५०५) १. वाघिणि (ख) गीढउ (ग) २. स्थाल (ग) ३. ते (ग) ४. संपडइ (ख) ५. स्याहु आय जिस ति ते होइ (ख) पंखी पसुवन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि तुडि (ख) कोपि रणि (ग) २. खडहडइ (ख) पर्वत धर हरणो (ग) ३. सकिउ (ख) बोले (ग) ४. चढिउ (ख) चल सुरणि जादमह नरेसु (ग)

(५०७) बीठी सयन पडी धर ताम कोपारुठ विसनु भउ ताम ।

तंखणि हाथलइ कर चाउ, आरियण बल भानउ भडिवाउ ॥

यह शब्द मूलप्रति में नहीं है ।

(५०८) १. सुहड (ग) ३. तीसरा चरण 'ल' प्रति में नहीं है मूलप्रति में ।
'कुवर' पाठ है ।

तउ जंपइ केसव वर वीर, निसुणी वयण तू खत्री धीर ।

तइ महु सयन सयलु संघरयउ, अर भामिनी रूपिणि ले चत्यउ ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुहु उपरि मुह कोपु न होइ ।

जीवदानु मै दीनउ तोहि, बाहुड रूपिणि आपहि मोहि ॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तव हसि जंपइ षत्री मयणु, अमी वात कहै रण कवणु ।

तोहि देखत मै रूपिणि हडी, तो देखत सव सयना परी ॥५१२॥

जिहि तूरण मा जिणिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि सांथि क्यो होइ ।

जाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, बहुडि भामिनी मांगइ केम्व ॥५१३॥

मै तू सूरिणु जूझ आगलउ, अव मो दीठउ पौरुष भलउ ।

कछु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए ॥५१४॥

नउ मयरद्व हसि करि कछउ, तइ सव कुटम धरणि पडि सछउ ।

तेरउ मनुइ परंखिउ आजु, तुहि फुणि नाही रूपिणि काजु ॥५१५॥

(५१०) १. तास (ग) २. सहु मयलु सयेतु संघरिउ (ख) मोहि (ग)
३. तिया (ग)

(५११) १. इखु (ग) २. जाहि (ग)

(५१२) १. बोलइ (ग) २. राठी (ग)

(५१३) १. मारणा वलु सयार विगोइ (ग) २. सारथि (ग) सांति (ख) किन कोइ (ख)

(५१४) १. तेता (ग ख) तीसरा चरण ख प्रति में रहों है । दूसरप्रति में मेलउ पाठ है ।

(५१५) १. बिहसि फुणि (ख) तवहि वहसि (ग) २. जेता हरइ मनि संसारहइ (ग)

छोडि आस तइ परिगह तरणी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।

जउ तेरे मन कछु न आहि, पभराइ मयगु जीउ लै जाहि ॥५१६॥

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का

क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

मरा पछितावउ जादमुराउ, मइयासहु वोल्याउ सतिभाउ ।

इहि मोस्यो वोल्या अगलाइ, अब मारउ जिन जाइ पलाइ ॥

उपनउ कोप भइ चित काणि, धनुष चढाइयउ सारंगपाणि ॥५१७॥

अर्द्ध चंद्र तहि वाधिउ वाण, अन्न याकउ देखियउ पराणु ।

साधिउ धनियउ दीठउ जाम, कोपारूढ मयग भो ताम ॥५१८॥

कुसुमवाण तव वोलिउ वयगु, धनहर छीनि गयउ महमहरगु ।

हरि को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनष संचारिउ ताम ॥५१९॥

फुरिण कंदपु सरु दीनउ छोडी, वहइ धनकु गयो गुण तोडि ।

कोपारूढ कोप तव भयउ, तीजउ चाउ हाथ करि लयउ ॥५२०॥

(५१६) तजी (ग) २. जोयडा (ग)

(५१७) १. मनि (ख, ग) २. मइ इहसिउ (ग) मइ सुख (ग) ३. आगलउ (ख) ४. इव (ख) जिन (ग)

(५१८) १. तिनि संध्या वाणु (ग) २. इव इह (ख) इव वेखउ इसु तरणा निवानु (ग) ३. धराहरू (ख, ग) ४. कोपिरूप (ग)

(५१९) मेलिउ (ख ग) २. चाउ (ख) मयगु (ग) ३. छिन्नउ तव (ग) ४. तव हरि चाउ तूटिया ताम (ग) ५. चढाया (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

(५२०) १. तव (ग) २. मुहई (ख) ऊभी घशुष गया सो तोडि (ग) ३. बिष्णु (ख) बिष्णु (ग) ४. कटारा (ग)

मैलइ बाण मयण तुजि चडिउ, सोउ बाण तूटि घर परघउ ।

विस्तु सभालइ धनहर तीनि, खिण मयरदउ घालइ छीनि ॥५२१॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की बीरता का पुनः उपहास करना

हसि हसि बात कहै प्रदवणु, तो^१ सम नाही खत्री कम्बणु ।

कापह सीख्यउ पोरिष ठाउणु, मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥

धनुष बाण छीने तुम तरौ, तेउ राखि न सके आपसो ।

तो पवरिषु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूजिउ राजु ॥५२३॥

फुरिण मयरदउ जंपइ ताहि, जरासंध क्यो मारिउ कांसु ।

विलख वदन तव केसव भयउ, दूजउ रथ मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न

प्रकार के बाणों से युद्ध करना

तहि आरूढो जादौराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ ।

अगनि बाणु धायउ प्रजुलंतु, चउदस भल बहु तेज करंतु ॥५२५॥

(५२१) १. सोइ धनुष टूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदवणु (ल) २. घउरुन (ग) ३. रहसि भाइ पूछइ महमहणु (ग)

(५२३) १. छेवे तुहि तरौ (ल)

(५२४) १. किम जीतिउ (ल) तइ जीत्या (ग) २. मूल प्रति में 'कहीं' बाठ है।

(५२५) १. अगनि बाणु केसव बहुउ (ल) अगनिबाणु, अरई, अगनिबाणु (ग)
२. तिहि को आन न जाई अरुउ (ल)

मयरे^१द्वे दल चले पलाइ, अग्निगि^२भल लरइ सहण न जाइ ।
 डा^३भहि हय गय रहिवर घरणे, उह^४टे सयन पजूनहा तरणे ॥५२६॥
 कोपारूढ भयो तव मयरा^५णु, ता रणहाक सहारइ कवरणु ।
 पुहपमाल कर धनहर लीयउ, साधिउ मेघबाण पर ठयउ ॥५२७॥
 मेघना^६दु धनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत ।
 पाणी आगि बुझाइ जाम्व, जादम सयन चली वहि ताम ॥५२८॥
 रहिवर छत्रजि दीसइ भले, नीर प्रवाह सयल वहि चले ।
 हय गय तुरय^७ वहइ असेस, खत्री राणे वहे असेस ॥५२९॥
 तव जंपइ महमहरण पचारि, कीयह सुक्रम की चालि ।
 नारायण मन परयो सदे^८हु, हुं^९तो यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥
 तव मनह अचंभो भयो, मारुत बाण हाथ करि लयो ।
 जवइ^{१०} बाण धाइयो भहराइ, मेघमाली घानी विहडाइ ॥५३१॥

(५२६) १. रउछभल (ख) रूपवंत (ग) २. अग्निबाण रण सहण न जाइ
 (ग) अग्नि भल लल सहणन जाइ (ख) ३. डाभहि (ख) ४. हउरे (ख)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(५२८) १. मेघबाण (ख ग)

(५२९) १. घरणे (ग) २. हुये तंखिणे (ग) ३. रन संवहितउ चले (ग)
 ४. खत्री वहे जे रण आगले (ग)

(५३०) १. हरिराउ संभालि (ग) २. की यह सुक्रम भउम की मारि (ख)
 कउ इहु सुकु कम मंगलबाणु (ग) ३. बडा (ग) ३. कहा हु तउ इह वरसिउ मेहु (ख)
 उहु सु कहा ते आया मेहु

(५३१) १. मारची (ग) २. जवहि पवन छूटा तिहि ठाइ (ग) ३. मेघमाला
 भाले बहुराइ (ग)

मायामय सन खर हडइ, उरइ छत्र महिमंडल परहि ।
 चउरंग दलु चलिउ पडाइ, हय गय रह को सकइ सहारि ॥५३२॥
 तवइ पजून कोपु मन कियउ, परवत वाण हाथ करि लयउ ।
 मेलीउ वाण धनसु कर लयउ, रुद्धि पवरु आडहु हुइ रखउ ॥५३३॥
 कोप्यो द्वारिका तरागे नरेसु, मयराहि पवरिसु देखि असेसु ।
 वज्र प्रहार करइ खरा सोइ, पव्वउ फूटि खंड सौ होइ ॥५३४॥
 देवतु वाणु मयरा लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।
 तव केसव मन विसमइ होइ, याको चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥
 अयसउ जुभु महाहउ होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।
 दोउ सुहड खरे वलिवंत, जिन्हि पहार फाटहि वरमहंड ॥५३६॥
 श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की बीरता के बारे में सोचना
 तवइ कोपि जादौ मनि कहइ, मेरी हाक कवरा राग सहइ ।
 मोस्यो खेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

(५३२) १. माया रूपि पवन संघरइ (ग) २. अर (ग) ३. पलाइ (ग)
 ४. गयवर के सकउ रहाइ (ग)

(५३३) १. मणि (ग) २. हस्त (ग) ३. आगइ (ग)

(५३४) १. फुलि (ग) २. पर्वत (ग) ३. डुइ (ग)

(५३५) १. देव विभाग (ग)

(५३६) १. मही महि (ग) २. बीर (ग) वलिबंड (ग) ३. जिन्ह बालंत्या
 कोपहि ब्रह्मंड (ग)

(५३७) नोट—बीया चरण ग मति में नहीं है ।

मइ रण जीतिउ कंसु पचारि जरासंध रण घालि मारि ।

मै सुर असुर साथ रण बहाउ, यह गरहु जु खेत अरि रहाउ ॥५३८॥

भीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार खेना

तब तिहि धनहर घालिउ रालि, चन्द्रहंस करलीयो सभालि ।

बीजु सपिसु चमकइ करबालु, जागौ सु जीभ पसारै काल ॥५४६॥

जवति खरम हाथ करि लयउ, चंद्र रयगु चाम्बइ कर गहिउ ।

रथ ते उतरि चले भर^३ जाम, तोनि भुवन अकुलाने ताम ॥५४०॥

इंदु चंदु फरा वै खल भत्यउ, जागौ गिरि पर्वतउ टलटल्यउ ।

मन मा कहइ सुरंगिनि नारि, अवयहु इहइ कइसी मारि ॥५४१॥

किसन कोपि रण धायउ जाम, रूपिणि मन अवलोइ ताम ।

दउ^२ सचारै मेरो मरगु, जुझइ कान्हु परइ परदमगु ॥५४२॥

नारद निसुगि कहु सतिभाउ, अव या भयो मीच को ठाउ ।

जव^१ जिउ सुहड न भीरइ पचारि, वेगो नारद जाइ निबारि ॥५४३॥

(५३८) १. इहु गरुवा जे रण महि रहाउ (ग)

(५३९) १. तिन्हि (ग) २. धरहर (ग)

(५४०) १. जब हरिहाथ लडग करि लेइ (ग) तबहि लडगु हर्ष करिलिये
(ल) २. बामइ (ल ग) ३. भुई (ग) भउ (ल)

(५४१) १. आसल पर हरे (ग) २. भले (ल) ३. जंरमव पावन गिरि पर्व
ठलई (ग) ४. लुरूपिणि (म)

(५४२) १. बिप्ल कोपि रण धरया बबहि (ग) २. बहू पकाउइ (ल ग)
३. पउ इवकू बूझई परदमगु (ग)

(५४३) १. लपु (ग)

रघुभूमि में नारद का आगमन

रूपिणि वयस्य मन सो धरइ, हो तो विमाणह रीष्य उत्तरइ ।

रण मयरद्ध नारायण जहा, नारदु जाइ सपत्तउ तहा ॥५४४॥

विस्नु मयण रथ दीठउ पाउ, चाहै करण कुवर कहु घाउ ।

नानारिषि षण पहुंतो जाइ, वाह पकरि सो धरचो रहाइ ॥५४५॥

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

तव हसि नारद लागो कहण, मोहि वचन निसुराह महमहणु ।

कहउ तोसिउ कहहु बहुतु, यह प्रदवण तिहारो पूतु ॥५४६॥

छठी निसिहिसो हरि लयउ, कालसंवर धरवृद्धिहि भयउ ।

इहि जीत्यो स्यंघरथ पचारि, पुनवंत यह देव मुरारि ॥५४७॥

सोला लाभ भए इहि जोगु, कणयमाल सिउ भयउ विजोगु ।

कालसंवर जीत्यो तिहि ठाइ, पंद्रह वरिस मिली तुह आइ ॥५४८॥

यह सु मयणु गरुवो वरवीर, रण संग्राम जु साहस धीर ।

याह पौरिषको वरांइ वराउ, यह सो पूत रूकिमिणी तराउ ॥५४९॥

(५४४) १. रूपिणि वयस्य तव बाहुडहि, इहुं वेग-रथ ते उत्तरहि (ग)

(५४५) १. नाराइणि रथि दीना पाउ (ग) २. लोडइ (ग)

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है

(५४६) १. क्या क्या हो तुम्हसउ २. तुम्हारा

(५४७) १. सिंघरथराउ (ग) २. पुण्यवंत (ग)

(५४८) १. बारह (ग) मूलप्रति में—'सो लाल' पाठ है

(५४९) १. रहि (झ) इसु (ग) २. बरुई (झ) बरुई (ग) मूल प्रति में परांइ पाठ है ।

एत^१हि मयण पास मुनि जाइ, तिहि^२स्यो वात कहइ समुभाइ ।

यह^३ तो आहि पिता तुम तराउ, जिहि पवरिष दीठउ तइ घराउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्री कृष्ण के पाँच पढ़ना

तउ परदवणु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ ।

तव^१ नारायण हसिउ हीयउ, मयण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥

धनु^१ रुपिणी जेनि उर धरीउ, धनि सुरयणि जिणि अवतरिउ ।

धनि^२सु ठाउ विराधी गवउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥

धनुष वाणु तिहि घाले रालि, वाहुडि कुवर लैयउ अवठालि ।

जिहि घर आइसो नंदनु होइ, तिहि^३स्यो वरस लहइ सवु कोइ ॥५५३॥

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिषि बोलइ एम, चलहु नयरि मन भावहु खेव ।

कुवर मयण घर करहु पएसु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥

नारायण मन विसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुझि रण गयउ ।

जादम कुटम पडे संग्राम, किम्व मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥

नानारिषि बोलइ वयण, क्षत्री तू^१ मोहिणी सकेलइ मयण ।

क्षत्री सुहड उठइ वरवीर, रण संग्राम मति साहस धीर ॥५५६॥

(५५०) १. नारद मयणि पास उठि जाइ, (ग) २. इहु सो पिता तु अपि तुम्ह तरा (ग) ३. तिसु पुरिष क्या वराउ घरा (ग)

(५५१) १. तव नारायण उठइ उछंगि, मयण साथि भया बहु रंग (ग)

(५५२) १. धनि (क) २. जिनि उबरि बस्यो (ग) ३. धनु सुठाउ जिहि विरधिहि गयउ (क ग)

(५५३) १. धनि उवाह (क) धकवालि (ग) २. धइसउ (क) ३. तिहि परमंस लहइ सवु कोइ (क) तिहि घरि सलह करइ सहु कोइ (ग)

(५५६) तुहु (क) तू सो (ग) २. संग्रामजि (क क) संग्रामहि (ग)

मोहिनी बिद्या को उठा लेने से

सेना का उठ खड़ा होना

तव मयण^१धइ छाड्यो मोहु, मोहिणि जाइ उतारयो मोहु ।

सैन उठी बहु साहु समुद्रु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुद्रु ॥५५७॥

पांडो उठे सुहड वरवीर, हलहुलु दस दिसा घर धीर ।

छपन कोटि जादव बलिवंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥

हय गय रहवर अरु जंपाणु, उठे जिमहि सल पडे विमाण ।

सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार, उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥

प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयण^१ कुवरू जव दीठउ आनंदिउ हरि राउ ।

लइ उछंगि सिर चुमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥

भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।

सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंदपु घर आयउ ॥

सहुंकार भरांत दैव, जरा पुरियण तुठउ ।

मन आनंदिउ राउ, नयण जउ कंदप वयठउ ॥५६०॥

(५५७) १. मयणधइ छोडइ कोहु (क) २. अउ सट्ट समहु (क) सेन्या उठि लड़े अरु बूहु (ग) ३. जखु सु उछलिउ पलय समुद्र (क) जाग्या बलु बोझल्या समुद्रु (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

(५५८) १. पंडव (क ग)

(५५९) १. जंपण (क) भंपाण (ग) २. उठे मयवल अथवाकि क्याण (ग) ३. विमाण (क)

(५६०) धवल (मूल प्रति) बोहा (क) धवल वंशों के (ग) १. अन्नाभा (ग)

भेरि तूर बहु बाजहि, कलयरु भयो अनंदु ।
 रूपिणि सरिस मिलावऊ, अवहि मिलिउ तहि पूतु ॥
 अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु ।
 अतुर मल्ल वर वीर, सुयण गायणाणंदणु ॥
 चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे ।
 कलयलु भयउ वहुतु, ततूर भेरि ताहि बाजे ॥५६१॥
 मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिधासणु आणि ।
 मयरद्धउ वयसारियउ पुनवंत घर जाणि ॥
 पुनवंत घर जाणि, तहरि कंद्रप वइसारिउ ।
 मोती माणिउ भरिउ थाल आरति उतारिउ ॥
 पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ ।
 ठयो सिधासणु आणित, मोती चउक पुरायउ ॥५६२॥
 घर घर तोरण उभे मोती वंदनमाल ।
 घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार ॥
 घर घर मंगलचार नयर जन सयल वधावउ ।
 पुन कलस लइ चली नारि नइ कंद्रप घर आयउ ॥
 कामिणी गीत करति, अगर चंदन बहु सोभे ।
 मोती वंदनमाल, घर घर तोरण उभे ॥५६३॥

(५६१) अवरु (अ) २. जण (अ)

(५६२) १. घर तोरण उभे नारि

(५६३) १. अकोडि (अ) मूलप्रति में—'अको' पाठ है । (अ)

चौपाई

सयना सयल उठी धर जाम, छपनकोडि घर चाले ताम ।

द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुगि सवु चलिउ अछोहु...॥५६४॥

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

गरुवड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मभारि, मयण किरणि रवि लोपियउ ।

चडि अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अविलेखियउ ॥

धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण घर अवतरिउ ।

सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ ।

घर घर तोरण उभे वार, छपन कोडि उछव भयउ ॥५६५॥

(५६४) १. अलोडि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहसु सवु करइ सुगई, सुहला जीतवु आज ।

कहइ इव बकमिणि माइ, परिगहु सवु भाइ वइटा ।

आनंदा हरिराउ, मइछु जब नयणे बौटा ॥५६६॥

भोरि तूरि वहु वजहि, कोलाहल बहुत् ।

रूपिणि सरिसु मिलावडा, भाइ मिल्याति सुपुत् ।

आमुकट सिरि मोतोमाला, धरि धरि मंगलचार ।

जिनसि अडवंरु छत्त, जायु वरसहि घण गज्जहि ।

ऊठ्यो जय जय कार भेरि तूरा वहु वज्जहि ॥५७०॥

घरि घरि तोरण खडे, घरि घरि वेव उचारइ ।

घरि घरि गुडी उछली, घरि घरि आनं व अपार ।

घरि नयरि घरि घरिहि बधाया, करहि धारतउ थालि ।

भावु बंभण सहि आया, हसि हसि पूछइ बात ।

बहुत परमल तिन मूलं, सिधासछु ताणीया ।

अरु घरि तोरण ऊभे..... ॥५७१॥

बो मोती माणिक भरि थालु, अवरु तिसु तिलकु कराया ।

सुर तेतीस रहसु वहु, सिहासण बइसाया ॥५७२॥

चौपाई

संग्य सवे ऊठी धर जाम, छपन कोडि चले धरि ताम ।

कंद्रपु पइटा नयर मभारि, बाजे सबव अपार ॥५७३॥

(५६५) १. नारि नज्जहि (क) मूलप्रति में चडि पाठ नहीं है २. अभिलेखिउ (ख)

भयउ उछाहु जगत जाणिउं, नयर मंगल किजइ ।
 ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सवद वजहि ॥५६६॥
 जवइ मयण परिगह गए, घर घर नयरि वधाए भए ।
 गुडी उछली घर घर वार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति च्यारि वेद ऊच्चरइ, वर कामिणी तह मंगलु करइ ।
 पून कलस तह लेइ सवारि, आगे होण चली वर नारि ॥५६८॥
 नयरि उछाहु करवहु घणउ, जव ते दिठे नयन परदवणु ।
 सिंघासण वयसारिउ सोइ, पुरयन तिलकु करइ सवु कोइ ॥५६९॥
 दहि दूव सिर आक्षित देइ, मोती माणिक थाल भरेइ ।
 कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सो ठाउ जमसंवर विजाहर राउ ।
 माणिक कंचण माल संजुत, द्वारिका नयरी आइ पहुत ॥५७१॥

(५६८) १. बंभण (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछलइ
 ३. सिंघासन बैसाल्यो सोइ (ग) ४. सिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) वेइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ बहु कवणु (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति में
 नहीं है ।

(५७०) १. वहीय दूव (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघकूट ओ द्वाउ (ग) तीसरा और चौथा
 पद्य ख ग प्रति में नहीं है । मूल पाठ विजाह

पवन वेग विजाहरराउ, जिसकी सयनु न सूझै ठाउ ।

रतिभामा जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मझारि ॥५७२॥

धर्मसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवर भेटिउ हरिराउ, बहुत भगति बोलइ सतिभाउ ।

तइ बालउ पालिउ परदवणु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्बणु ॥५७३॥

तव रूपिणि बोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल कै लागी पाइ ।

किम्बहुउं उरणि होउ घर तोहि, पूत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

बहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयण कुवर को ठयउ विवाहु ।

धरि लग्न जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥

हडे वंस त्रि मंडपु ठयउ, बहुत भंती ते तोरणु रहउ ।

कापरछाए बहु विथार, कनक कलस डोलहि सिंहवार ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहण सयल निकुताइ, आगै निमति पुहमि के राइ ।

मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥

अंग बंग कलिगह तरगे, दोप समूंद के भूजही घरगे ।

लाड चोर कानकेजिकीर, गाजणवइ मालव कसमीर ॥५७८॥

(५७२) १. त्रिहि कह सइनि (ग) २. रतिनामा (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हरइ (ग) २. कीतिगुभया (ख) ३. सिंह दुवारि (ख) क्षीपहि पहि वारि (ग)

(५७७) १. करिसम लहणु (ख) २. अनेक, पुहमि के भउते राइ (ग)

(५७८) १. कानिगह (ख) तिलंगह (ग) २. कामाडेजिकीर (ख) लाडग उडक भयज कसमीर (ग) ३. गाजणीव सहलिया बहुबीर (ग)

गूजर तेसो भीजी भऐ, वेलावल संभरि के भले ।

जिजाहुति कनवजी भले, पुहमि राइ सव निमते गऐ ॥५७६॥

संख सबुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।

भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥५८०॥

विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।

बहु कलियर नयरि उछलिउ, जव मयरद्वु विवाहण चलिउ ॥५८१॥

रयणीनि जडे छत्र सिर धरइ, कनक दंड चावर सिर ढलइ ।

कनय मुकट सिर उदउ करंत, जाणौ पावय रवि करण करंत ॥५८२॥

तव बोलइ रुक्मिणी रिसाइ, सतिभामा आणिह केसइ ।

तीनि भवण जउवरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ तोहि ॥५८३॥

केस उतारि पाय तल मलइ, फुणि परदवण विवाहणु चलइ ।

एतइ मिलि सयल जनु सव्वु, दुहु नारि करयउ क्षिम तव्वु ॥५८४॥

(५७६) १. ते सोरठी जे भले (ख) कनकदेस सोरठ जे भले (ग) २. जोजन बेश कनउजी मिले (ग)

(५८१) १. चारउ वेद विप्र ऊचरहि (ग) २. इव (ग)

(५८२) १. रयणीह (ख ग) २. जडित (ग) ३. अणि छत्र सिर ऊपरि धरयो (ग) ४. उदो (ग) ५. जाणउ नव रवि किरण करंतु (ख) जाणु कि सूर किरण छोडति (ग) अउर अडंवर वाणी भले बलहि, अउर कटि कउतिग चले यह पाठ ग प्रति में अधिक है ।

(५८३) १. आणहि कराइ (ग) आणीहिनु कराइ (ग)

(५८४) १. मिले जउ साह सयलु जण सोधु (ग) २. विशयल जमनु सभ (ख) ३. करामउ क्षिम तव्वु (ख) होइ विवाह बुद्धो संजोयु (ग)

सयल कुटम मनि भयउ उछाहु, कुम्बर मयरा कउ भयउ विवाहु ।
 दइ भावरि हथलेव कीयउ, पाणिगहगु इम्ब कुवरहि लयउ ॥५८५॥
 भयउ विवाहु गयउ घर लोगु, करइ राजु वहु विलसह भोगु ।
 देखित सतिभामा गहवरइ, सवतिसालु वहु परिहसु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मंजु आठयउ, दिजु वेग खेयउ पाठयउ ।
 रयरा सचउ पाटण तिहि ठाइ, रयराचलु तहि निमसइ राउ ॥५८७॥
 विजु वेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा हो पठयो देव ।
 रविकीरति सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, वहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।
 वहुत नयर मह करइ उछाह, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पाणिग्रहण जब कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो विवाहु लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज विलसहि वहु
 भाय (ग) ३. देखन (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहसि भरी (ग)

(५८७) १. मंजु (ख) २. भरठयउ (ख) भरठयो (ग) ३. विजु वेग खयउ
 पाठयउ (ख) विजइ विगे जोइरा पाठयो (ग) ४. रमरा संभु पाटणपुर ठाउ (ख)
 ५. निवसइ (ख) लगा बंक तिहिहि ले आउ (ग) मूलपाठ-बिमवइ

(५८८) बाल्यो इतु पवन मनुलाइ. वेगि पकता सिरा महि जाइ ।

यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तथा मूल प्रति का प्रथम द्वितीय
 चरण ग प्रति में तृतीय अनुर्थ चरण है ।

(५८९) १. विद्याधर सुनिह मिलहु सुखेहु, धीय सुयंबव भानकउ देहु

माण्ड बोल कुटमु बहु मिलिउ, खगवइराउ मसाहरा चलिउ ।
 द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु धरघो छवाइ ॥५६०॥
 तोरण रोपे घर घर वार, कनक कलस थापे सीहद्वार ।
 सयल कुटंव मिलि कीयो उपाउ, भानकुवर को भयउ विवाहु ॥५६१॥
 पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ ।
 राज भोग सब मिलइ मयगु, तहि सम पुहमि न दीसइ कवगु ॥५६२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति

एतइ अवरु कथंतर भयउ, पूर्व विदेह जाइ संभयउ ।
 पूंडरीकणी रायर हइ जहा, खेमधर मुनि निमसइ जहा ॥५६३॥
 नेम धर्म संजमु जु पहागु, तहि कहु उपराउ केवलज्ञान ।
 आइत स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनिसर सेव ॥५६४॥

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

नमस्कार कीयउ तंखीणी, पूजी वात भवंतर तरणी ।
 पूव सहोवर मुनि गुणवंतु, सो स्वामी कहिठार उपंत ॥५६५॥

(५६०) १. सुपरियरु मिल्यो (ग) २. मुसाहरा (ख) विवाहण (ग) ३. तोरण घरे रचाइ (ग) तृतीय एवं चतुर्थ चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

(५६१) १. कामिणि गावहि मंगलचारु (ग) २. उछाउ (ग) ३. हुआ (ग)

(५६२) ख प्रति में यह चौपाई नहीं है । ग प्रति में निम्न चौपाई है ।

इसे अलंवल राखु कराहि, हउसनाक राखहि मनमाहि ।

राखु भोगु सहि बिलसहि आगु, नाही कोइ तिन्ह सनमानु ॥५६३॥

(५६३) १. पूरव बेसि जाइ सो गया (ग) २. खेमधर (ग)

(५६४) १. तपि क्रिया समान (ग) २. उपजहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग बसइ सो देव (ग) भूलमति में 'पसइ' पार है ।

(५६५) १. मेमसिर की जोति जाण (ग) २. मोहि (ग) मुणहि (ख) ३. सो सामी कहि ठाउ उचलु (ख) सो सम्यकवर आहि पहुंत (ब)

संसयहरु फुगि कहइ संभाउ, भरहखेत सो पंचम ठाउ ॥
 सोरठ देस वारमइ नयर, तहि समीपु हइ न दीसइ अवर ॥५६६॥
 तह स्वामी महमहरा नरेसु, धर्म नेम्म सो करइ असेसु ।
 बहु गुणवंत भञ्ज तसु तरणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५६७॥
 तहि घर उपराउ खत्री मयरा, पुनवंत जाणइ सव कम्बरा ।
 तासु के रूप न पूजई कोइ, करइ राज घरणि मा सोइ ॥५६८॥

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

निसुणि वयरा सुर वइ गो तहा, सभा नारायण वइछो तहा ।
 सुरमणि रयणजडिउ जो हार, सोविमुत आविउ अविचार ॥५६९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

फुगि रवि सुर वइ लागउ कहरा, निसुणि वयरा नरवइ महमहरा ।
 जिहि तू देइ अनूपम हार, हउ कूखि लेउ अवतार ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार

देने का निश्चय करना

तउ मन विभउ जादउराउ, मन मा चित करइ मन भाउ ।
 चंद्रकांति मणि दिपइ अपार, सतिभामा हियह आफहु हार ॥६०१॥

(५६६) १. सोताइरु (ग) २. वृषइ राउ (ख) भूचइ तिहि ठाई (ग)
 मूलपाठ-भूचैठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देसु ५. पूजइ (ग)

(५६७) १. तउ महमहरा राउ नरेसु (ग) २. नारि (ग)

(५६८) १. बिलतहि महि सोइ (ग)

(५६९) १. देइ नारायण कहै बिचार (ग) प्रथम तथा द्वितीय चरण के स्थान में निम्न पाठ है-परववखु बीट्टा वइट्टा पासि, पूरव नेह जिनु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिमु तिय के कइ गलि घालिहि हार (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. भरि भाउ (ग)

प्रधुम्न द्वारा रुक्मिणि को सूचित करना

तव^१इ मयण^२ मन चमक्यउ भयउ, पवण वेगि रुपिणि पह गयउ ।
 माता बयण सूझइ तू मोहि, एक अनूपम आफहु तोहि ॥६०२॥
 पूव सहोवर जो मोहितणउ, सो सनेह बहु करतउ कनउ ।
 अब मो देउ भया सुरसार, रयणजडित तिण आप्यो हार ॥६०३॥
 अब वह अहारमु पहरे सोइ, तहि घर पूत आइसो होइ ।
 माता फुडउ पयासहि मोहि, कहहु तहा का अफामु तोहि ॥६०४॥
 तव रुपिणि बोलै मुह चाहि, तू मो एकु सहस वरि आहि ।
 बहुत पूत मो नाही काज, तू ही एकु मही भूजै राज ॥६०५॥

जामवंती के गले में हार पहिनाना

फुणि बाहुडी बोलै रुपिणी, जंववती जु वहिण महु तणी ।
 निसुरिण पूत तौहि कहौ विचार, इनी कउ जाइ दिवावइ हारु ॥६०६॥

(६०२) १. तोह (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम घणहु (ग) बहु करतो घणउ (ल) २. इव सो देव भया मुनिसारु (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हार जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि कइ (ग) ३. कहुन बोलउ मोहि कहाहि, तहाक हउ बयाबाडे तोहि (ग)

(६०५) १. बडि (ग) २. मोहि जाणो काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति राखु (ल)

(६०६) १. तुम्ह (ग) २. उत्तकउ (ग)

जामवती का श्रीकृष्ण के पास जाना

तवहि मयणु मन कहइ विचार, जंववती कहु लेहि हकारि ।
 काममूंदरी पहरइ सोइ, बोल रूप सतिभामा होइ ॥६०७॥
 न्हाइ धोइ पहरे आभरण, कण कंकण सोहइ ते रमण ।
 तिहिठा वइठे कान्हु मुरारि, तहा गइ जामवती नारि ॥६०८॥
 तउ मनविहसिउ तव मन चाहि, तहा जाणइ सतिभामा आहि ।
 बाहुडि कन्ह न कीयउ विचार, तिहि वछथलि घालिउ हार ॥६०९॥
 घालि हारु आलिगनु कियउ, तिहि उपदेस आहि संभयउ ।
 फुणि गिय रूपु दिखलि जाम, मन भिभिउ नारायण ताम ॥६१०॥
 वस्तुबंध—
 ताम जंपइ एम महमहरण ।
 मन भिभिउ विसमउ करइ, जइ यउ चरित सतिभामा जाणइ ।
 वैरूप करि मोहरणइ जा संवइ आणइ.....॥
 जो विहिण सइ चितयऊ, सो को मेटणहार ।
 पुनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. बोल रूप (ख) बोले रूप (ग)

(६०८) १. ते रमण (ख) ते रयण (ग) मूलपाठ तान्धोरण २. जहिठा (ख ग)

(६०९) १. बिगसइ केसव २. इहु (ग) ३. ताह गलइ हंसि घाल्यो हार (ग)

(६१०) १. करइ (ग) २. ठा छाइ वेउ संचरइ (ग) उरि वेइ (ख)

ग— काम मूंदरी घटी उतारि; देखइ राज जम्बवती नारी ॥

(तीसरे चोखे चरण के स्थान पर है)

(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—

ताम जंपइ जंपइ एम महमहच्छु मनि बिभउ विस्मउ भयो ।

एहु रूप कहि मोहुनी, मयणि कुबरि माइयो विमाणि ।

चरितु सतिभामा जाणी, एह काम कटु की कवच्छु हरिरामा चिति चितवइ ।

जो विहिण जितु चितयउ सो फिउ मोह्यो जाइ ।

आहि जंबवती बिलसंतु करहि राज बहु भइ ॥

जव^१ जंवइ पूत अवतरिउ, संवकुम्वारु नाउ तसु घरचउ ।
 बहु गुणवंत रूप कउ निलउ, ससिहर कान्ति जोति आगलउ ॥६१२॥
 सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

एतह पढम सगिग जो देउ, सुर नर करइ तास की सेव ।
 सो तह हूँ तउ आउ खउ चयउ, सतभामा घर नंदण भयउ ॥६१३॥
 लक्षणावंतु सयल गुणवंत, अति सरूप सो सीलम्वंत ।
 नाम कुवर सुभानु तहा चयउ, सतिभामा घर रांदण भयउ ॥६१४॥
 दोनु कुवर खरे सुपियार, एकहि दिवस लियउ अवतार ।
 दोउ विरधि गए ससिभाइ, दोइ पढै गुम्हौ इक ठाइ ॥६१५॥

शंभुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

एक दिवस तिनि जूवा ठयो, कोडि सुवंद दाउ तिन ठयउ ।
 संब कुवर जीणउ तहि ठाइ, हारि सुभानुकुवर घरि जाइ ॥६१६॥

यूत क्रीडा का प्रारम्भ

तब सतिभामा परिहसु करइ, मन मा मंत्र चित्ति सौ करइ ।
 करह खेल कुकडहि व्होडी, जौ हारे सा देइ दुइ कोडि ॥६१७॥

(६१२) १. जबवतो ए पूत अवतरणो (ग) २. किनु निले (ग) ३. सूरन
 तिसु बडि तुलइ (ग)

(६१३) १. इह पटमनि संवेह सो बेर, एहुता कर्म संयोगइ देव (ग)

(६१४) १. बलिस (ग) २. तसु भया (ग) ३. दुइज खंनु जिउ विरधो गया (ग)

(६१५) १. हजियार (ग)

(६१६) १. हावयो सयनु बाउ तिन्हि कियो (ग)

(६१७) १. गहि (क) बहि (ग) २. भूलप्रति में बि पाठ है । ३. बिसावरइ
 (ग) ४. कूकडहवकोडि (ग) ५. बाहुडि बाउ धरधा तिन फेरि ।

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपर भिरे ते आइ ।

कुवर भान तणउ गो मोडी, संवकुवर जिरो द्वे कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ मंत ता ओरइ कियउ ।

दूत हकारि पठायो तहा, वहुरि विजाहर निमसइ तहा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी जणाइ सार ।

भणइ दूतु मनि चित्या लेहु, पुत्री एकु भानहि देहु ॥६२०॥

सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर मन भयउ उछाहु, दीनि कुवरि भयो तह व्याहु ।

द्वारि ना नयरी कलयलु भयो, व्याह सुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर सुभान विवाहै जाम, तव रूपीणि मन चितइ जाम ।

दूत बुलाइ मंत्र परठयो, रूपुकुवर पास पाठयो ॥६२२॥

(६१८) १. सभा नारायणु मुखु चाल्या मोडि (ग) २. जीता बोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संवकुवर जीति धनु लीया (ख ग)

२. कुवर सुभानुहि आये हारि, तउ विलखी सतभामा नारि (ख ग)

(६२०) १. विजाहर राइ (ग) २. भणौ विपु जिन अनवितु लेहु (ग)

३. बेहि (ख ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुचित लेख, पुत्री एकु भानइ लेहि, पाठ है ।

(६२१) १. विजाहर (क) विजाह (ख) २. तिम (क) बीनी (ख ग)

३. उतिगु लोगु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तव रूपणि मनि उहुयो चाउ, हउ अपरणा व्याहु करिभाउ (ग)

२. तव कियो (क) सठयो (ख) ३. पासहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ख)

कुंडलपुरिहि दूतु पाठयो, जाइ रूपचंदु बीनयउ (ग)

रूपिमणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंदस्यो कछो निरस्त ।
स्वामी बात सुणो मो तरणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ॥६२३॥

संवकुम्भार कुचर परदवणु, तिहि पवरिसु जाणइ सव कवणु ।
जइसे तुम स्यो वाढइ नेहु, दुहु कुमार कहु बेटी देहु ॥६२४॥

रूपचन्दु वोल्इ तिस ठाई, रूपिणि कहु तू लेइ मनाइ ।
जादौ वंस पूत जो होइ, तिसको वाहुरि धीयको देइ ॥६२५॥

कहइ वात जणवउ समुझाइ, इत्वही कहहि रकुमिणी जाइ ।
सामंडि तइ जु पवाडउ कियउ, बात कहत नहु दूखित हियउ ॥६२६॥

जिणि परिगहु घालियउ अवाटइ, सेसपाल तू गई मराइ ।
अजहु वयण कहइ तू एहु, मयणकुचर कहु बेटी देहु ॥६२७॥

(६२३) निरस्त (क) - नोट - प्रथम और द्वितीय खरण ग प्रति में नहीं है । मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. बाधइ (क) ३. वेहु (क) बहू (ग)
कुचरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. कउ तउ बेटी तहु (क) स्यउ तू कहइ बुलाइ
३. मूल प्रति में—पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धीयन बेई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणसिउ (ख) इहि (ग) २. तू तिन्हस्यउ
जाइ (घ) ३. सामलि (क ख) संभलि करियहु म्हारु दिया (ग)
४. ठाढइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (क) मूलपाठ—तू कत्यो मरवाइ २. अहि (ग)
३. कहु (घ) मूलपाठ तू

निसुणि वयण खण चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहुत ।

तुम^१ को वचन कहै समभाइ, सो^२ जण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायण स्यो आयस^१ कहउ, हम^२ तुम माह कमण सुख रहिउ ।

केते^३ अवगुण तुम्हारे^४ लेउ, तुम कहु छोडि डोम^५ कहु देउ ॥६२९॥

निसुणि वात विलखाणी वयण, आसू पातु कीए द्रै नयण ।

मानभंग ईहि^३ मेरउ कीयउ, वुरो^४ कियउ मुह दूख्यो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रुपिणी, पूछि वात जननी आपणी ।

कवण बोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जण पाठयो ।

दुष्ट वचन ते^३ कहे बहुत, साले खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

(६२८) १. तिहकउ (क) उहकउ (ख) मोस्यउ (ग) २. आइ कहा रुकमिणि के आइ (क) सो ति कहिउ रुकमिणी सिहु आइ (ख) सो तिन्ह कहे रुकमिणि आइ (ग)

(६२९) १. एसो (क) अइसउ (ख) आइसा चयउ (ग) २. हम तुम्ह आइ सुबइ सा भयउ (ग) ३. कितेक (ग) किते (ख) ४. धारे (ग) ५. डूम (क ख ग)

(६३०) १. सो बिलखी वयण (ग) २. करहि दुहु (क) करइ दुइ (ख ग) ३. यहु (क) इति (ख, ग) ४. बुरा बोलु मोरयउ बोलीया (ग)

(६३२) १. इसिउ पूत मंत्र आठयो (क) मइयिउ पूत वयण आययउ (ख) मइया पुत्र मंसु इहु दूयउ (ग) २. छउ जण पाठयो (क, ख) दूत पाठयो (ग) ३. साले खरउ होयइ मोहि पूतु (क) साले करे मुहि होय बहुत (ख) सालहि हिमे करे ते पूत (ग)

मइ जाण्योउ मुहि भायउ अहइ, एसी वात निचू भउ कहइ ।
 विषयवासिणि मानइ होइ, एसी वात कहइ न कोइ ॥६३३॥
 निसुणि वयण परदवनु रिसाइ, हीणु वयण तह बोलइ माइ ।
 रूपचंदु रण जिणहु पचारि, पाण रूप छलि परणउ नारि ॥६३४॥

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीणी, सुमिरी विद्या बहुरूपिणी ।
 संबु कुवर परदमनु भयउ, पवण वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३५॥

दोनों का डोम का वेष धारण कर लेना

दीठउ नयर दुवारे गयउ, डोम रूप दोउ जण भयउ ।
 मयण अलावणि करण पठए, सामकुमार मंजीरा लए ॥६३६॥
 फिरे वीर चोहटे मभारि, उभे भये जाइ सीहवारि ।
 बहु परिवार सिउ दीठउ राउ, तउ कंदपु करह ब्रह्माउ ॥६३७॥

(६३३) १. नीच (क) नीच स्थो (ग) २. विष्णु सिंघासणि (क)
 विष्णुसवासिणि (ल) किम वचन सुणि बोलइ सोइ (ग)

(६३४) १. पवनवेग (ग)

(६३५) १. संबु कुवर परदमनु भयो (क) संब कुवारि कुवर हुए भए (ग)
 मूल प्रति में 'स्वामी' पाठ है ।

(६३६) १. द्वारि झाइए (ग) २. करि पाठए (क, ल) करहि द्वयो (ग)
 ३. संबु कुवारि (ग)

(६३७) सीह कुवारि (ग) सीह कुवारि (ल क) २. परियण सिउ
 (ल) परिगहस्थउ (ग)

गीत कवित जे आदम तरौ, ते कंदप गाए सब सुरो ।

अवर गीत सब चीतइ धरणी, जादम राय की सलहरण करइ ॥६३८॥

जादम तराउ नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ भयउ ।

बहुत गीत की जाणहु सार, कहा हुते आए वैकार ॥६३९॥

रूपचन्द को अपना परिचय बतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भुंजइ नरायणु जादमुराउ ।

पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोवरि जो तुह तरणी ॥६४०॥

तुहि सलहरण वइ करइ बहुत, तिणि राणी पठए दत्त ।

तुम्हि उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥

वाले बोलति करहु पम्वारणु, सतु वाचीय परि होइ पवारण ।

भाग पालि मन धरहु सनेहु, दोउ पुत्री हमि कहु देहु ॥६४२॥

(६३८) १. आषणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति नकि (ग) ३. जावम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग सरो पाठ है तथा चतुर्थ चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) सुणउ (ग) २. मन विलखउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए बहुवार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहा ते आए ए वैकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) वसहि (ख) भुंजइ ताह नारायण राउ (ग)

मूलप्रति में—'बुजइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवंत (क) तोहि सराहरण करहि बहुत (ग) २. पठए बे दूत (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइलि था पट्टया दूत (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परबाणु (ख) परदमणु (ग) २. प्रमाण (क) पर-बाणु (ख) सत्य वयण ते होहि परबाणु (ग) ३. भागिवंत (क) भाजि जामिनि (ग) ४. कन्या (ग)

रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

वस्तुबंध—

निमुणि कोपिउ खरउ तहिराउ ।

जाणी वैसु^१ंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु^२ कंपिउ ।

पारा^३भ वोलात गयउ, एहु वोलाते कवगु जंपिउ ॥

ले^४ वाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ ।

जइ^५ जादौ वहहि सवल, तोहि छुरावहु आइ ॥६४३॥

चोपई

गीम्व गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार ।

हाथ अलावणि सिंगा^२ लए, हाट चोहटे सव परिरहे ॥६४४॥

तंखरा^१ कुवर भइ पुकार, रूपचंद^३ रा जाणी सार ।

हय गय रह सेती पलराइ, छग इक माह पहुंतउ आइ ॥६४५॥

रूपचंद^१ रा पहुतो आइ, सामकुम्वारु^२ परदमरा जहा ।

एक^३ ताक्क सव एकहि साथ, सागालाए^४ अलावणी हाथ ॥६४६॥

(६४३) १. तबहि मनिराउ (ग) २. अति रोस कीए (ग) ३. प्राण जीव (क) पारा जीव (ख) पुणि बोलीओ भ्रिम गयो (ग) ४. लेई बाहिर निगयउ (क) वहि लेहो वहु निगहहु (ग) ५. वांह पकडि वन महि धरिउ जैसे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. ग्रीव (क) गाबत गाहे करहि पुकार (ख) गीत कवित तिनि काठ बारि (ग) २. अरु गलि जाइ (ग) ३. भरि गए (क ख) अये बुद्धि चौहटे फिराइ (ग)

(६४५) १. पुरबि (क) डुरवरि (ख) पुत्र गुये हंकारि (ग) २. राय जयाई सार (क) कहु दीनी सार (ग) ३. रथ पाइक (ग)

(६४६) आइ पहुतउ तिहा (क) २. संख कुमार परदमरा (क) संख कुचक परबीछ (ग) ३. एक तक नासरि (ग) ४. गले अलावणी बीछा हाथि (ग)

देख डाम मन विभ^१उ राउ, नी^२घण जाति करउ कि^३म घाउ ।

घण^४क सखाणि वाण जव हणो, तहि^५ पह अवर मिले चउमुखो ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारूढ मयण तव भयउ, चाउ चडाइ हाथ करि लयउ ।

अग्निवाणु दीणउ मुकरा^१इ, जुभत षत्री चले पलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, बाधिउ मामू गले दइ पाउ ।

लइ कन्या सवु दलु पलणाइ, द्वारिका नयरि पहुते आइ ॥६४९॥

रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा ।

रूपचं^१दु हरि दीठउ नयण, हमइ लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तव हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भारो^१जु तिहारउ अहइ ।

इहि विद्यावलु पवरिषु घणउ, जिणि जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

(६४७) १. विलखो (क) चितइ (ग) विभिउ (ख) २. निरघण (ख ग)
३. किउ (क) को (ग) ४. घणुष बाण ले हाथि हिलाइ (ग) ५. ऊपरि
अधिक चउमुखो गिलाइ (ग)

(६४८) १. मुकलाइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप () मामा (ग)

(६५०) १. रूपचंद (क ग) २. इह के बहुतु किया महमहण (ग)

(६५१) १. यह भारणजा तुहारा अहइ (ग) २. इह सुपुत, एकमिलि
तरा (ग) नोट—यह छन्द (क) प्रति में नहीं है ।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तव हसि माधव कीयउ पसाउ, वाधिउ छोडिउ मनधरि भाउ ।
मयरद्वे हसि आकउ भरिउ, फुणि रूपिणि पहँ घर ले चलयउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणि का मिलन

भेटी जाइ वहिणि आपरणी, बहु तक मोहु धरचो रुक्मिणी ।
बहु आदर सीभइ ज्योनार, अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥
भायउ वहिणि भारिजे भले, भयउ धेमु जइ एकत मिले ।
निमुणि वयण तव भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ विवाहु ॥६५४॥

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

हरे वंस तव मंडप ठये, बहुत भांति करि तोरण रए ।
छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण चले ॥६५५॥

(६५२) १. करि मनिचाउ (ग) २. रूपचन्द राउ (ग) ३. मंराषा हसि अंकी भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. बहुत मोहु करं रुक्मिणी (ग) बहुत सनेहु धरिउ रुक्मिणी (ख) २. कीजहि जीमणवार (क) साजइ जवनार (ख) रची जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भारिजे भले (क) मिले (ख) आए बहण भरइ तुम्ह भले (ग) २. भली तरी जो लोमहमिले (ग) ३. दुयो (ग)

(६५५) १. का (ग ख) २. रोपिया (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ 'विवाहण' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रूपचन्द लिब बोलइ बारिण, बोइ कन्या देवउं आणि (ग)

संख भेरि बहु पडह अनंत, महुवरि वेण तूर वाजंत ।
 दे भावरि हथलेवड भयउ, पाणिगहन चोहुजण कियउ ॥६५६॥
 घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवर कउ भयउ विबाहु ।
 सूरिजन जण ते मन मारलइ, एकइ सतिभामा परजलइ ॥६५७॥
 रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायण सो घर गयउ ।
 कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ॥
 एयंतरि मनु धम्मं ह रलो, जिणु वंदुण कैलासहि चलिउ ॥६५८॥

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध—

ताम चितइ कुवर परदवणु ।

भउ संसार समुदु परिजयनु, धम्मं दिहु चित दिजइ ।

कैलासहि सिर जिणवर भुवण, सुद्ध भाइ पूज्जइ किज्जइ ॥

अतीत अनागत वरत जे दीठे जाइ जिणिंद ।

जे निपाए जिणवर भुवण, धनु धनु भरहं नरिंद ॥६५९॥

(६५६) १. मधुरी कीण ताल वाजंत (क) २. कीया (ग) ३. पाणप्रहण करि दुइ परणीया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग आगे हुइ चले (ग)

(६५८) इस पद्य में ६ चरण हैं । १. इत्थंतरि (क) एयंतरि (ख) येयंतरि (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुसर तरइ (क) समुवपरि (ग) समुहपरि (ख) २. जैनधर्म (क ख ग) ३. सिखर (ख) कबिलासह सो सिखरि (ग) ४. वरति वंदे (क) ५. जेरि कराए जिण भवरण ते सब वंदे आनंद (ख) ग प्रति में अन्तिम २ पंक्ति निम्न प्रकार है—

चलिउ ताह जह कम छिजइ फिरि फिरि देखइ जिण भुवण ।

वंदइ भावन भाइ जे जिन, आम्हा महि रहहि तह महोदुसरबाइ ॥

फिरि चेताले वंदे मयरा, तिन्हि ज्योति दिपइ जिम्ब रयरा ।
 अट्टविधि पूजउ न्हवणु कराइ, वाहुडि मयरा द्वारिका जाइ ॥६६०॥
 इथंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।
 तिहि कुरखेत महाहुउ भयउ, तिहिनेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥
 वाहुरि मयरा द्वारिका जाइ, भोग विलास चरित विलसाइ ।
 छहरस परि सीभइ ज्योनार, अमृत भोजन करै आहार ॥६६२॥
 तहा सतखणा धोल हर अवास, निय निय सरसे भोग विलास ।
 अगर चंदन बहु परिमल वास, सरस कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी रीति कालुगत गयउ, फुरारि नेमि जिन केवल भयउ ।
 समवसरण तव आइ सुगिद, वरावासी अवर सुररिंदु ॥६६४॥
 छपनकोटि जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।
 समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तहा ॥६६५॥

(६६०) १. बंदण कराइ (ख) बंदे जाणु (ग) २. तिन्ह को जोति देखइ
 जिराभाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिगिह (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छह रति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. धवल (क ख ग) २. निय पिय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग)
 ३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ—तंबोल कुलव
 सर बीस

(६६४) १. अइसी (क ख) इसी (ग) २. भुवरावासी आयो धरिण्डु (ग)

(६६५) १. सभी जादम मिले (ग)

देवि^१ पयाहिण करिउ बहूत, फुणि माधव^२ आरंभिउ^३ धुति ।
 जय कंदर्प^४ खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए सेव ॥६६६॥
 जइ कम्मट्ट दुट्ट खिउकरणा, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।
 तुम पसाइ हउ दूतर तिरउ, भव संसारि न बाहुडि परउ ॥६६७॥
 करि^५ स्तुति मन^६ महि भाइ, फुणि नर कोठि बइठउ जाइ ।
 तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि धरइ ॥६६८॥
 धर्माधर्म सुणिउ दुठ वयण, आगम तणउ सुणिउ परदवणु ।
 गणहर कहु पूछइ षण सिधि, छपनकोटि जादम की रिधि ॥६६९॥
 नारायण मरण कहि पासु, सो मो कहु आपहु निरजासु ।
 द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।
 वारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥
 द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।
 मद ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हलहल उवरइ ॥६७२॥

(६६६) १. देव कहीजे कथा बहुल (ग) २. आरंभिउ धुत्त (क) आरंभिउ
 थोउ (ख) पुणि केसउ आइरबउ धुत्त (ग) ३. मूलपाठ आरंभिउ धुत्त ४. करहि
 तिसु सेव (ग)

(६६८) १. करिबइ धुत्ति (क) करिब धुत्ति (ख) करिबि धुत्ति (ग)
 २. मनिमहि (क ख ग) दूसरा और तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(६७०) यह छन्द क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. बलिभद्र (ख) २. छपनकोटि समुद्र संघरहि (ग)

मुनि आगमु सो मेटइ कम्बगु, जरदकुमार हाथ हरि मरगु ।
 भान सुभानु अर सामिकुमार, आठ महादे संजमु भार ॥६७३॥
 सुणि वात जउ गराहर पासु, निहचे द्वारिका होइ विणासु ।
 दीपायनु तपचरणह गयउ, जरदकुमार वनवासा लयउ ॥६७४॥

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

दसदिसा खहु जादम भए, करि संजमु जिगावर पह गए ।
 दीप्या लेइ कुमर परदवगु, चितावत्थु भयउ नारायणु ॥६७५॥

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण

श्रीकृष्ण का दुखित होना

विलख वदनु भयो नारायणु, हा मुहि पूत पूत प्रदवनु ।
 कवण बुद्धि उपनी तो आजु, लेहि द्वारिका भुंजइ राजु ॥६७६॥
 राजधुरंधर जेठउ पूत, तोहि विद्यावल आहि बहुत ।
 तोहि पवरिषु जाणइ सुरभवण, जिणतपुलेइ पूत परदवगु ॥६७७॥
 कालसंवर जाणइ तो हियउ, हउ रण महतइ विलखो कीयउ ।
 तइ रूपिणि हरी मुहुतणी, फुणि तइ सुहड पचारे घरौ ॥६७८॥

(६७३) १. जरा (ग) २. होइ (ग) ३. सम्बु (क ख ग)

(६७४) १. जरासिधु (क) जराकुमार वनवासी भया (ग)

(६७५) १. चितवन्त (क) चितावत्थ (ग) २. भयउ (क) ३. महमहरा
 (क) महमहरा (ग)

(६७६) १. बोलइ तिस कवण (क) बोलइ नारायण (ख) बोलइ
 महमहरा (ग)

(६७७) १. जत (क)

नारायण के वयण सुणोइ, तं पडि ऊत^३रु कंद्रपु देइ ।

का^३ कउ राजुभोग घरवारु, सुपिनंतरु जइसउ संसारु ॥६७६॥

का कउ धन पौरिषु वलु घणउ, का कउ वापु कुटंव कहि तरणउ ।

घडिक^१ मा जाइ विहडाइ, आव^२ क्षिपति को सकइ रहाइ ॥६८०॥

रुक्मिणि का विलाप करना

नारायण वारि विलखाइ, फुणि रुपिणि सपत्नी आइ ।

करण कलाप करइ विललाइ, केमु पूत मन धरमु रहाइ ॥६८१॥

एकु पूत तू मोको भयउ, धूमकेत तवही हरी लयउ ।

कनकमाल घर विरधि करंत, वाले सुखह न देखिउ पूत ॥६८२॥

फुणि मोहि घर आयो आनंदु, कुल उद्योत^१ जिम पून्यो चंदु ।

राज भोगत ए किए असेस, अब ए भूमिर^२ रहोगे केस ॥६८३॥

(६७६) १. तंखिणि (ग) २. कंद्रप उतर बेइ (ग) ३. किमुका राज वेस घरवारु (ग)

(६८०) १. घडी एक घाले (ग) २. उपति क्षपति के रहइ धराइ (ग)
ग प्रति में प्रथम द्वितीय चरण नहीं है ।

(६८१) १. बाहुडि (क ख) २. बलत अगनि कउ लिउ बुझाइ (ग)

(६८२) १. स्तनपान मेरो नवि करिउ, नवि उछंगि कवहि मह धरिउ (क)

(६८३) १. उद्यो जाणुं (ग) २. लहिगे (ख ग)

क प्रति में निम्न प्रकार है—

रुपिणि मइ तय कउ मन कियउ, इव किस देखि सहारउ हियउ ।

राजा एक कीता असेस, अब ए तुमिर सह केस ॥६८८॥

क प्रति में निम्न छन्द अधिक है—

पुनि इव रुपिणि लागी कहण, जिन तब लेहि पूत परदमण ।

इसी कहि मइ तू उर धरिउ, अब किस देखि सहारउ हियउ ॥

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तरणउ वयण निसुगोइ, तव प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
 लावण रुग सरीरह सारु, जम रुठे सो होइ है छारु ॥६८४॥
 अवगी भाइन कंदलु करइ, माया मोहु माणु परिहरइ ।
 जिन सरीर दुख धरहु बहुत, को मो माइ कवण तुहि पूतु ॥६८५॥
 रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहुमि अवतरइ ।
 पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुज्जण सज्जण लेइ सो चाहि ॥६८६॥
 हम तुम सन्मधु पुव्वह जम्मु, सोहुउ आणि घटाउ कम्म ।
 इम्ब करि मनुसमभावइ ताहि, रूपिणि माइवहुडि घर जाहि ॥६८७॥

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुभाइ रूपिणि माइ, फुणि णिमि पास वइठउ जाइ ।
 देसु कोसु परिहरे असेस, पंचमुवीर उमाले केस ॥६८८॥
 तेरह विउ चारितु चरेइ, दह लक्षण विहु धरमु करेइ ।
 सहइ परीसह वाइस अंग, बाहिर भीतर छांयउ अंग ॥६८९॥

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. वुल (क ख ग) मूल पाठ वुल्ट

(६८६) १. रहडमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूव्व जनमि (ग)

(६८८) १. जिण (क ख) मुनि (ग) २. बाल (ग) ३. पंच मुठि उपाडे
 केस (क) पंच मुठि सिर उपडि केस (ख) पंचमरुट्टमउ लाये केस (ग)

(६८९) १. बिरडि चारै तनु चार (ग) २. वंसु संसु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

धाइ कम्मु को किउ विणासु, उपणउ केवलु षण निरजासु ।
 दीठउ लोयण लोयपमाण, आयउ चित्तव उच्छउ भाणु ॥६६०॥
 तंखण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर हलहर धरणिंदु ।
 नारायण बहु सजण लोगु, सुरयणु अछरायणु बहु भोगु ॥६६१॥
 थुणइ सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर ।
 जय कंद्रप हउ मति नासु, जाई तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६६२॥
 इय थुतिवि सुर वइ फुणि भणइ, धणवइ एकु चित भउ सुणइ ।
 मुंड केवली रिद्ध विचित्त, रचहि खणंतरि वणण विचित्त ॥६६३॥

(६६०) १. जो चित्तव सोचउ या आसु (ग)

(६६१) १. विद्याधर आया घरि आनन्दु (ग) २. नर सुर को तह हव संजोग (क) ३. ब्रूमण (ग)

(६६२) १. सुणइ नारि सर (क) सुणइ सुवाणी प्रवणे अपार (ग)
 २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोहणिजिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो बिणास (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडा भव पास (क) जउ भौ बिद्या लीया पासु (ग)

(६६३) १. एम भणिमि सुर सानी भणइ, धणवइ एकु चितइ सुणइ (क)
 इव सुणि सुरवइ सो फुणि भणइ, ध्यावइ नवइ बुइकचित्तिसुणइ (ग)

२. पबित्तु (ग) ३. पाणरति (ग)

ग्रंथकार का परिचय

मइसामीकउ कीयउ बखाराण, तुम पजुन पायउ निरवाण ।
 अगरोवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥६६४॥
 सुधराण जराणी गुणवइ उर धरिउ, सामहराज धरह अवतरिउ ।
 एरछ नगर वसंते जानि, सुगिउ चरित मइ रचिउ पुराण ॥६६५॥
 सावयलोय वसहि पुर माहि, दह लक्षरा ते धर्म कराइ ।
 दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि चितहं जिरोसरु देउ ॥६६६॥

(६६४) १. प्रसाद (ग) २. आगरोवइ (ग) अगरोवइ (ख) निम्न छन्द
 अधिक है—

विहरइ गाम नगर बहु देस, भविय जीव संवोहि असेस ।
 पुरि तिनि छाठ कम्म पण कियो, पुरा पजुण नियवाणह गयो ॥
 हउ मतिहीण बिबुडि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ बखारु ।
 उछाह मन में कियउ चरितु, पढमइ उढाइ दे सो वित्तु ॥७००॥

पंडिय जण नमउ कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु खोडि ।
 अगरोवाल की मेरी जाति, अगरोवे मेरी उतपति ॥७०१॥
 पुव चरितु मइ सुणे पुराण, उपनउ भाउ मइ कियो बखार ।
 जइ पुहमि इक चित्र कियो, साई समाइवि लियउ ॥७०२॥

खउपइ वंष मइ कियउ विचित्तु, भविय लोक पढहु दे चित्त ।
 हं मतिहीणु न जाणउ केउ, अखर मात न जाणउ भेउ ॥७०३॥

(६६५) १. सुधराण (ग) २. गर्भुं उरि धरघो (घ) ३. साहु महराज (क)
 सामहराइ करिया अवतरघो (ग) ४. एसचि (क) एयरछ (ख) येरस (ग) ५. हम
 करिउ बखारण (क) मैं कीया बखारु (ग)

(६६६) १. लवत लोग (ख) सब ही लोक (ग) २. नाबहुल से राज
 कराइ (ग) ३. बरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण नाखहि दूजउ भेउ (ख)
 दर्शन माहि नही तिन्ह भेउ (ग) ४. जयउ विचित्त (क) ध्यावहि चित्त (क)
 यावहि इक मन जिमवद देव (ग)

एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
 हलुवइ धर्म खपइ सो देव, मुक्ति वरंगणि मामइ एम्ब ॥६६७॥
 जो फुलि सुणइ मनह धरिभाउ, असुभ कर्म ते दूरि हि जाइ ।
 जोर वखाणइ माणसु कवणु, तहि कहु तूसइ देव परदवणु ॥६६८॥
 अरु लिखि जो लिखियावइ साधु, सो सुर होइ महागुणराधु ।
 जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६६९॥

(६६७) १. हलुव कर्षुं गुणि होइ सो दोउ (क) २. पावइ एउ (क)
 क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६६९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द है—

पढहि गुणहि जे चित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे सुखि करइ ।
 सुणइ सुणावइ भव्ह लोय, तिह कउ पुत्र परापति होइ ॥७०५॥
 ख प्रति—

सु फुलि सुणइ मनह धरि जाउ, जो वखाणइ माणसु कमथु ।
 तिस कहु तूसइ सइ बेउ परववणु, ॥७११॥
 अरु लिखि जोर लिखावइ सुद्ध, सो सुर होइ महागुणरिद्ध ।
 जोर पढावइ गुण कउ निलउ, सो नर पावइ संजमु भलउ ॥७१२॥
 एहु चरितुह पुत्र भडाह, जो नर पढइ हु नर महं साह ।
 तहि परववणु तूरं सि फउ देह, संपति पुत्र अवर जमु होइ ॥७१३॥
 हउ बुधि हीणु न जाणउ भेउ, अखर मातह सुणिउ नभेउ ।
 पंडित जणहं नवउ कर जोडि, हीण अधिक जिन लावहु खोडि ॥७१४॥
 इति प्रद्युम्न चरित्रं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु
 ग प्रति—

हउ हीण बुद्धि न जाणउ केव, अखित मंतु सु मुनिवर भेउ ।
 पंडित जन विनबउ कर जोडि, अधिकउ हीनु जिन लावहु खोडि ॥७१२॥
 मइ स्वामी का कीया वखाणु, पंडित जन मति होहु सुजाण ।
 केवल उपजइ गुण संपुंनु, सुणहु आवगउ उपजइ पुणु ॥७१३॥

॥ इति परववणु चउपई समाप्त ॥

यहु चरितु पुन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्रु अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ बुधिहीणु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगल्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत्
१६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं
आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा
योग्यदत्तं । श्रेयोस्तु ॥



हिन्दी-अर्थ

प्रथम सर्ग

स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधार कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेंद्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका निकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधार प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्रेश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधार प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में खकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो संसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे क्षेत्रपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरछ से भुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को भाव सहित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ प्रद्युम्न और सुपार्ष्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(९) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें श्रेयांसनाथ की जय होवे। वासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुण्डुनाथ, अठारहवें अरुणनाथ, उगनीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिमुप्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये मुझे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र सुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भाद्रव मास की पंचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुणों की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण बाणों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पांचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरूपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र तेसीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्मल गुरु को आव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जम्बूद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गांव बसे हुये हैं वे नगरों के सहारा लगते हैं। जो अग्र हैं वे देव विमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में अनेक मंदिर धवल तथा ऊँचे हैं जिन्ह पर सुन्दर स्वर्ण-कलाश भालकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में छत्रिष्व नगरी है जहाँ कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका बारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलरा दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौबारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। वहाँ के किबाड़ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये हैं तथा मोतियों की बंदनवार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहाँ एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान हैं जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहाँ चौरासी बाज़र (चौपड़) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में खूब गहरा समुद्र है जिसका जल चारों ओर झकोला मारता है। जहाँ करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी वह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियाँ रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहाँ शूद्र भी रहते हैं, तथा जहाँ छत्तीसों कुल के लोग सुख पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब वह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। वह तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा शत्रुओं के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन श्रीकृष्ण पूरी सभा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहाँ खाली स्थान नहीं सूख रहा था। अगर आदि सुगन्धित पदार्थों की गंध जहाँ चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चवर) शिर पर टुल रहे थे।

(२४) जहाँ पांच प्रकार के (स्तिर, ताल, भाँक, नगाड़ा तथा तुरही) बाजे खूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुन्दर फायल पहने हुये भाव भरती हुई मृत्यु करने वाली ताल, विनोद एवं कला का अनुसरण करती हुई पाँच घर रही थी।

नारद ऋषि का आगमन

(२५) इतने में हाथ में कमंडल लिये हुए मुँड़े हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये प्रसन्न मन राजर्षि नारद वहाँ जा पहुँचे ।

(२६) श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया । एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहाँसे हुआ ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्य-लोक के जिन मन्दिरों की वन्दना करने गये थे । द्वारिका दीलने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें ।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहाँ पधारे । हे नारद ऋषि ! आपने हमारे ऊपर कृपा की । आज यह स्थान पवित्र हो गया ।

(२९) बच्चनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हँसने लगे तथा उनसे सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी । नारद जी आशीर्वाद देकर खड़े हो गये और फिर रणवास में चले गये ।

(३०) जहाँ सत्यभामा शृंगार कर रही थी तथा आँखों में काजल लगा रही थी । चन्द्रमा के समान ललाट पर जब वह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहाँ पहुँचे ।

(३१) हाथ में कमण्डल लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे । वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा ।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई । उस मंद-बुद्धि ने कुतर्क किया कि वहाँ पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है ।

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे । सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा । तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उसे सहन नहीं कर सके । तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये ।

(३४) बिना ही ब्रह्म के जो मानमें लगता है यदि उसको बाजा मिल जावे तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उसे बिच्छू खा जाय ? एक तो नारद और फिर वह क्रोधित होकर चलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्वत के शिखर पर जाकर बैठ गये । वहां बैठे हुये मन में सोचने लगे कि सत्यभामा का किस प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी । मैं सत्यभामा का अभिमान कैसे खण्डित करूं ? या तो किसी से इसको मयभीत कराऊं अथवा इसको शिला के नीचे दाब कर छोड़ दूं लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा । अन्त में यह विचार किया कि जो इससे भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे ।

(३७) तब वे गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख डाले ! एक सौ दस जो विद्याधरों की नगरियां थी उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख डाला ।

नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई रुपवती कुमारी दिखाई नहीं दी । फिर नारद ऋषि वहां आए जहां विद्याधर की नगरी कुण्डलपुरी थी ।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को खूब जानता था । जिसके अनेक लक्षणों से युक्त रुपवान पुत्र एवं पुत्री थी ।

(४०) दृष्टि फैलाकर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाता की कृपा से संयोग मिल जावे तो इसका नारायण से सम्बन्ध हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य है ।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आशीर्वाद देकर रणवास में गए । उसी क्षण उनको सुरसुंदरी और कुमारी रुक्मिणी दिखाई पड़ी ।

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) वह अत्यन्त रूपवती तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान मुख वाली वह ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा हो। इस के समान चाल वाली वह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुन्दरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रख दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अब आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके बचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन खण्ड का जो चक्रवर्त्ति है तथा छप्पन करोड़ यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोड़कर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं मेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड़ दो, नारायण ही रुक्मिणी को व्याहेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रसन्न हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी ! सुनो और सत्यभाष से कहो। वह युक्ति बताओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नन्दनवन को सकेत-स्थल बनाना, वहीं पर मैं तुमसे (श्रीकृष्ण) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) तब देवांगना सहश रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णसुरारी को कौन पहिचानेगा तब सुविज्ञ नारद ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा बलिभद्र जिसका भाई है। अपने बाण से जो सात ताल वृक्ष को बीधता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार बात निश्चित करके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहां आप जहां नारायण सभा में बैठे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे उससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामवाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विद्याधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) उसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर संकेत-स्थल है उसी स्थान पर लाकर भेंट कराऊंगा।

श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर एवं सारथी को बिठाकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(४६) तब सारथी ने चरु भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुसवस्तुपुर पहुँच गया। जहाँ वन में मन्दिर था वही पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा सन्देश भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नन्दनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हंसी। मोती एवं मारिक आदि से थाल भरा, बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहाँ जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल वृत्तों को बाणों से बीधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूँदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूँदड़ी फूट कर चून हो गई मानों गरहट के नीचे चावलों के कण पिस गये हों।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दबाया। दबाने से सातों सूँचे हो गये और बाणों ने सातों ही ताल वृत्तों को बीध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढ़ाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

वनपाल द्वारा रुक्मिणी-हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिसमें शक्ति हो वह आकर छुडाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढ़ा लिया तथा उसने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शंकित हो गया तथा महिम्नवल्ल भर भर कंपने लगा। महिलाओं ने जाकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में लड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) जब भीष्मराव मन में क्रुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा बजने लगा। घोड़ों पर काठे कसो, हाथियों को रवाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर लीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज रात्र में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करें।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराव दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उड़ली कि मानों भादों के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) दुलते हुये राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हों। अथवा दुलते हुए राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार की सेना इकट्ठी होकर वायु-वेग के समान रात्रभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुआ दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ डर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! रात्र में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ! धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखलाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) बात कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार मेंट हुई जैसे अग्नि में बी पड़ा हो। हाथ में धनुषबाण संभाल लिया। अब संभाम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के वचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया वही तुमने उपाय किया। अब तुम मिल गये हो; कहां जाओगे ? अब मार कर ही रहूँगा।

(७३) अब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया ।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(७४) हकाल और ललकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो । तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया ।

(७५) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े । तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया ।

(७६) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया । फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूख रहा था ।

(७७) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे । युद्ध बढ़ता ही गया बढ़ नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी ।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(७८) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है । तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया ।

(७९) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया । रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहां से भागने लगी ।

(८०) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराव की रक्षा करो । मन में वैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो ।

(८१) तब नारायण ने कृपा करके बंधे हुए भीष्मराव को छोड़ दिया । रूपचन्द से गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया ।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुडकर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा । जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे ।

(८७) तब उनके मन में बड़ी खुशी हुई । आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें । भ्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं ।

(८८) बांसों का मंडप बनाया तथा भाँवर देकर हथलेवा किया । पाणिप्रद्वय करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके पश्चात् कृष्णमुरारी अपने घर रवाना हो गये ।

श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि आद्यों ने मिलकर उत्सव किया । घर घर में गुडियों को उड़ाला गया तथा तोरण एवं बंदनवार बांधी गयी ।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर में प्रविष्ट हुए । स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे ।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए । सत्यभामा की चिंता छोड़ दी । सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त डाढ़ से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी ।

सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां बलिभद्रकुमार बैठे हुये थे । शीश झुकाकर उसने निवेदन किया कि हे देव ! मुझे सत्यभामा ने भेजा है ।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते ।

(६४) वक्त्रों को सुनकर हलधर वहां गये जहाँ नारायण बैठे हुये थे । हंस करके उन्होंने अत्यन्त धन्य पूर्वक कहा कि तुमको सत्यभामा की सैमाह भी करनी चाहिये ।

(६५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूठा उगाल गांठ में बांधा कर वहां पहुँचे जहां सत्यभामा का मन्दिर (महल) था ।

(६६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्ष्या से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी ! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड़ दिया है ।

(६७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया । फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गांठ को झुलाकर खाट के नीचे लटकवा दी ।

(६८) जब गठरी को झूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला । गठरी से बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी । तब सुगंधित वस्तु को देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली ।

(६९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है । तुम अपने सब भ्रमों को गया समझो ।

सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा मत्तभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ । तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उससे तुम्हारी भेंट कराऊंगा ।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये । और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाडियां हैं । चलो आज वहां जीमण करें ।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालकी पर चढ़कर बगीची में गये । जहां बावड़ी के पास अशोक वृक्ष था वही रुक्मिणी को उतार दिया ।

(१०३) श्वेत वस्त्र, उज्ज्वल आभूषण तथा हाथों में कड़ों से सुशोभित रुक्मिणी को वैष्णो का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और आप जपने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को वहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर वाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली—हे स्वामिनी ! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगें।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मिणी पति प्रेम से बांचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या वाय लग गई है ? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी अधिक भक्ति क्यों कर रही हो ? यह आले में (ताक) में रुक्मिणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, यह रुक्मिणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्वालवंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मिणी से कहा—चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गईं। सब सुस भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निकल गये तब दोनों रात्रियां गर्भवती हुईं।

(११२) तब सत्यभामा ने एक बात कही कि जिसके पहिल पुत्र उत्पन्न होगा वह जिसके पीछे पुत्र उत्पन्न होगा उसे हरा देगी। तथा वह उसके पुत्र के विवाह के समय सिर के केश भी मुंडवा देगी।

(११३) बलिभद्र आकर सत्यभामा और रुक्मिणी के लागना (साक्षी) बन गये। दोनों ने उनसे कह दिया तुम हमारा पक्ष मत करना। जो भी हार आवे उस ही के सिर आकर मूँड देना।

(११४) इधर कौरवों ने दूत भेजा वह नारायण के पास पहुँचा। उसने कहा कि आपके जो बड़ा पुत्र उत्पन्न हो उसके जन्म की सूचना दूत के हाथ भिजवा देना।

सत्यभामा और रुक्मिणी की पुत्र रत्न की प्राप्ति

(११५) इस प्रकार बहुत दिन बीतने पर दोनों ही रानियों के पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों ही घरों में इस प्रकार लक्षणवान एवं कला संयुक्त पुत्र हुए।

(११६) सत्यभामा का (दूत) बधावा लेकर गया और वह जाकर सिर की ओर खड़ा हो गया। रुक्मिणी का बधावा लेकर जाने वाला दूत पैरों की ओर जाकर बैठ गया।

(११७) नारायण जगे और बैठे हुये। उस समय रुक्मिणी के दूत ने बधाई दी। दूत हंमता हुआ हाथ जोड़ कर बोला-रुक्मिणी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है।

(११८) दूसरे दूत ने भी बधाई दी और नारायण से निवेदन किया कि हे स्वामिन! मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने के लिये कि सत्यभामा के पुत्र उत्पन्न हुआ है, भेजा है।

(११९) तब श्रीकृष्ण ने हलधर को बुलाया और जो बात हुई थी वह उनसे बैठाकर कह दी। झूठ बोलकर कैसे टाला जा सकता है। प्रशन्न ही बड़ा पुत्र है।

(१२०) दोनों रानियों के पुत्र उत्पन्न हुये। इससे घर घर बधावा गाये जाने लगे। सभी मंगलाचार गाने लगे और ब्राह्मण वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

(१२१) मेरी एवं गुरहि खूब बजने लगे। महुवर एवं शंख के लगातार शब्द होने लगे। घर घर में केशर अथवा रोली के बिन्दु लगाये गये तथा स्त्रियाँ अपने २ घरों में मंगल गीत गाने लगीं।

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। यज्ञ कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय-है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रह्वन्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहाँ वन में शिला रखी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूं। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूं? इतने में ही उसने एक ५२ हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूं जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं मेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्मों को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहाँ सो रही थी वहाँ जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुशी हुई और उसने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। छप्पन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं पता नहीं चला।

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) सेवकूट नामक एक स्थान था जहाँ यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास बारह सौ विद्यायें थी। तथा जिसकी कंचनमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन बन् क्रीडा को हुआ तथा विमान पर चढ़कर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहाँ वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दब आया था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी आवन हाथ ऊँची (लंबी) शिला को देखी। वह क्षण में ऊँची तथा क्षण में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बत्तीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढ़ने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण छन्द एवं तर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुष एवं बाण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिड़ना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न-कुमार को हो गया।

(१३६) प्रशुन्न ऐसा नीर कल गन्ध जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह चमसंवर के घर बंद रहा है। अब यह क्या द्वारिका जा रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन कृष होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विधाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू बहते हुये कभी थकते न थे। पूर्व जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सम्हालूं ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ? अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और ची चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण से मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी संताप कर रही थी उस समय नारायण एवं बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे—हे सुन्दरि ! मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रशुन्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे अमरान में से गोध उठावेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के खेद को भूल गयी। इस प्रकार दुःखित होते हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४६) जिसका सिर मुड़ा हुआ है तथा चोटी उड़ रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुःखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी ।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी—हे स्वामी ! मेरे प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया ?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐसा (पुत्र) हुआ था । किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलाश कीजिये ।

(१४९) नारद ने तब हंसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला । स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा ।

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने समझाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंधर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है ।

(१५१) नारद ऋषि सीमंधर स्वामी के समवशरण में गये । वहां चक्रवर्त्ति को बहुत आश्चर्य हुआ । नारद से वृत्तान्त सुनकर चक्रवर्त्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं ।

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है । वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है ।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो । जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं ।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहाँ एक बावन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दबा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र वैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहाँ विद्याधरों का राजा रहता है। कालसंवर राजा वहाँ आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहीं पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। वह बारह वर्ष वहाँ रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) वचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहाँ आये जहाँ मेटकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहाँ जाकर रुक्मिणी से मिले और उसका पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी। हृदय में संताप मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा सेंवार फिर से हरे भरे हो जावेंगे ! स्वर्ण-कज्जरा जल से पूर्ण सुशोभित होने लगेंगे। कूर एवं बावड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृत्तों में फूल आ जावेंगे। जब तुम्हारे आंचल पीले पड़ जावेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध भरने लगेगा तब वह साहसी और धीर वीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण बता कर नारद मुनि वहाँ से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। वह पक्ष, मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अब कथा का क्रम प्रद्युम्न की ओर जाता है।

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहां एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने उपाय सोचा कि इसको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जीतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीड़ा ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पाम नहीं आया। तब हंमकर प्रशुम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिंहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम बच्चे हो अभी तुम्हारा अवसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूं।

(१६८) (प्रशुम्न ने कहा)---बाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का बच्चा भी यदि डस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) सिंहनी बालसिंह को पैदा करती है वही हाथियों के भुंड को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी वन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किसी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्र रूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) वैसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं शत्रुओं के दल का बटकर नष्ट करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊं तो आपको लज्जाजंग।

(१७२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर कृपा की। जब यमसंवर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरंगिनी सेना को सजा कर रवाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरदी बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उछलकूद होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौदे तथा काठियां रख दी गयीं। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहस्थ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उछलने लगी। सजे हुये रथों के साथ जो बाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हों। उसके प्रबल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे सब बीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर सिंहस्थ कहने लगा यह बालक कौन है? इस बालक को रण में किसने भेज दिया है? मुझे इसके साथ युद्ध करने में लज्जा आती है।

(१७७) बार बार मैं मुड़ कर राजा ने कहा कि वह इस बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार! तुम वापिस घर चले जाओ।

प्रद्युम्न एवं सिंहस्थ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न क्रोधित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अच्छी तरह से तुम्हारा नाश करूँगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली। मेघ के समान निरन्तर बाणों की वर्षा होने लगी। सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड़ गये। रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे।

(१८०) हाथियों से हाथी भिड़ गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े। इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये। वह युद्ध क्षेत्र रमशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे।

(१८१) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर रण में भिड़ गये। दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये। दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे।

(१८२) वे दोनों ही वीर मल्लयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अखाड़ा बना दिया। अन्त में सिंह रथ बिल्कुल धार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया।

(१८३) जब प्रद्युम्न कुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे। सिंह रथ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुणवान कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनंदित हुये। राजा भी देखकर आनंदित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस अवसर पर बड़ी कृपा की है। मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो।

(१८४) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो। विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंह रथ राजा को छोड़ दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंह रथ भी भेंट देकर घर चला गया।

(१८५) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया। राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि दत्तक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे।

(१८६) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि अब इसको समाप्त करना चाहिये। अब इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिससे हमारा राज्य निष्कण्टक हो जावे।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८७) इस युक्ति को कोई प्रकट न करे। प्रद्युम्न कुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर सलाह की और खेलने के बहाने से वन-कीड़ा को चले।

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर हैं जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है ।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा । परकोटे पर चढ़कर बीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुंकारते हुये मिला ।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड़ गया तथा पूँछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया । उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यत्न का रूप धारण कर खड़ा हो गया ।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे । जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे ।

(१९२) (और कहा कि) कृष्ण के घर उसका अवतार होगा । तुम प्रद्युम्न को देख लेना । उस राजा की यह धरोहर है । इसलिये अपनी विद्यायें सम्भाल लो ।

१६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोषिणी ४. रत्न-दर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यातारणी १२. बहुरूपिणी १३. जलबन्धिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बन्धिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया । मुकुट सौंप कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढ़ा । वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पाँच सौ भाई हंस रहे थे ।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ । वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लेजा कर दूसरी गुफा दिखाई ।

(१९८) उस गुफा का नाम काल गुफा था । कालासुर दैत्य वहां रहता था । पूर्व जन्म की बात को कौन मेट सकता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया ।

(१६६) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रख दिये।

(२००) इसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किकर बन कर उसके पैरों में गिर गया। फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा। उस साइसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया। एक भयंकर सर्प घनघोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया। नागशय्या, बीणा और पावड़ी ये तीन विद्याएँ उसके सामने रख दी।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहाँ से लाभ हुआ। फिर वहाँ से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहाँ के रक्षक बौड़े और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वज्र को कौन भेत्न सकता है? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जो सर्प के मुख में हाथ डाल सकता है।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं। वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको मगर से चिन्हित एक ध्वजा दी।

(२०८) इसके पश्चात् जब वह वीर हृदय में साइस धारण कर अग्नि-कुण्ड में गया तो वहाँ का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये।

(२०६) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव बंदर का रूप धारण कर वहां आ पहुँचा।

(२१०) आम तोड़ने वाला तू कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूझकर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उड़ड़ हाथी चिघाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मदनमत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमर से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूँड तोड़ दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा।

(२१४) इसके पश्चात् प्रद्युम्न को वे बावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी बंबी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उसमें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) वह उस सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विषधर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूँदड़ी एवं धुरी दी।

(२१६) मलयागिरि पर्वत पर जब वह गया तो आश्चर्य से वहां खड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह से संघात (वार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उसकी सेवा करने लगा। उसने कंकण की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिर का मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) बरहासेन नामक जहां गुफा थी वहां उन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई व्यंतर देव था जिसने जल भर में बराह का रूप धारण कर लिया।

(२१६) वह बराह रूप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसके दाँतों से भिड़ गया तथा घात करने लगा। देव ने फूलों का धनुष एवं बिजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहाँ दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बंधा हुआ था।

(२२१) बंधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब बसंतराज के मन में बड़ा उत्साह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहाँ एक यक्ष आ पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-वाण नामक वाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहाँ खड़ा हो गया। जहाँ तमाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहाँ चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) बसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार ! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न वहाँ गया जहाँ उसके पाँच सौ भाई खड़े थे।

(२२६) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुँह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण बीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहाँ भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहंकार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान् अरिहन्तदेव ने कहा है कि इस संसार में पुण्य बड़ा बलवान है। पुण्य से ही सूर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुक्मिणी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर बड़ा और महान् पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने अपना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, छत्र, मुकुट, रत्नों से जटित नागशय्या, बीणां, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शेखर हार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुष्प धनुष, हाथ के कंकण, छुरी, कुसुमवाण, कानों में पहिनने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर वश में करना, रत्नों के युगल कंकण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और क्षण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहाँ जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्तिपूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३६) उस श्रेष्ठ वीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामबाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहां पहुँचा जहां उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे आंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूँ।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही बात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहां यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुक्मिणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी प्राता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहां से हर लिया और शिला के नीचे दबाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहां से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें आंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्व जन्म का सम्बन्ध है। यदि वह तुम्हारे प्रेसरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विधायें प्राप्त करलो।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहां से लौट गया तथा कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विधायें दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) कुमार से प्रेसरस की बात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विधायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन दांव पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूँ।

(२४९) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर को कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुरेच लिया तथा केश बिलेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पांच सौ कुमार वहां आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे बिगाड़ कर चला गया।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

(२५३) वचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रव्यलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पांच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की इच्छा पूरी हुई। इससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न ! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साहसी और धीर वीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४६६ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२४७) उसने एक कुमार को छोड़ दिया कि जाकर राजा को सारी बात कह दे और कहला दिया कि अगर तुम में साहस हो तो सभी दलबल को लेकर आ जाओ ।

(२४८) यमसंवर राजा बैठा हुआ था वहाँ वह कुमार भाग कर पुकारने लगा कि सभी कुमारों को बावड़ी में डालकर ऊपर से बज्र शिला डाल दी है ।

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

(२४९) वचनों को सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने विचार किया कि आज प्रद्युम्न को समाप्त कर दूँगा । रथ हाथी को सजा लिया गया तथा घोड़ों पर काठी एवं हाथी पर भूल रख दी गयी ।

(२५०) धनुषधारी, पैदल चलने वाले, खड्गधारी तथा अन्य सारी फौज को चलने में जरा भी देर नहीं लगी । प्रद्युम्न ने सेना को आते हुये देखकर मायामयी सेना तैयार करली ।

(२५१) यमसंवर की बलशाली सेना वहाँ जा पहुँची तथा एक दूसरे को ललकारते हुये मदोन्मत्त होकर परस्पर भिड़ गई । युद्ध में राजा से राजा भिड़ गये तथा पैदल से पैदल लड़ने लगे ।

(२५२) यमसंवर हार गया तथा उसकी चतुरंगिनी सेना को मार कर गिरा दिया गया । तब विद्याधर राजा बड़ा दुःखी हुआ और अपना रथ मोड़ करके नगर की ओर चल दिया ।

(२५३) जब वह अपने महल में पहुँचा तो कालसंवर ने कनकमाला से जाकर यह बात कही कि तीनों विद्यायें मुझे दे दो ।

(२५४) वचन सुनकर वह स्त्री बड़ी दुःखी हुई तथा ऐसी हो गई मानों सिर पर बज्र गिर गया । हे स्वामी ! उन विद्याओं का तो यह हुआ कि मुझ से प्रद्युम्न छीन ले गया ।

(२५५) स्त्री के वचन सुनकर उसका हृदय कांप गया और उसके होश उड़ गये तथा हृदय विदीर्ण हो गया । मुझ जैसे व्यक्ति से भी इसने झूठ बोली । वास्तव में प्रेम रस में डूबने के कारण इसने तीन विद्याएँ उसको दे दी और मुझ से अब छल कर रही है कि कुमार छीन कर ले गया ।

(२६६) उसका चरित्र देखकर राजा बोला कि अब उसकी (राजा की) मृत्यु का कारण बन गया। जो मनुष्य स्त्री में विश्वास करता है वह बिना कारण ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्त्री का चरित्र सुनकर वह विवाधरों का राजा व्याकुल हो गया।

स्त्री चरित्र वर्णन

(२६७) स्त्री झूठ बोलती है और झूठ ही चलती है (आचरण करती हैं) वह अपने स्वामी को छोड़कर दूसरे के साथ भोग विलास करती है स्त्री का साहस दुगुना होता है अतः स्त्री का चरित्र कभी भुलाने योग्य नहीं है।

(२६८) उसके मन में सदैव नीच बुद्धि रहती है। उत्तम संगति को छोड़कर नीच संगति में जाती है। उसकी प्रकृति और देह दोनों ही नीच हैं। स्त्री का स्वभाव ही ऐसा है।

(२६९) उज्जैनी नगरी जो एक उत्तम स्थान था वहां पहिले बिंब नामका राजा स्त्री पर खूब विश्वास करता था इस कारण उसे अपना जीवन ही समर्पण करना पड़ा।

(२७०) दूसरे यशोधर राजा हुए जो कि अपनी पटरानी महादेवी से नारा को प्राप्त हुये। उसने राजा को विष पूर्ण लड्डू देकर मार दिया और स्वयं कुबड़े से जाकर रमने लगी।

(२७१) अब तीसरी स्त्री की बात सुनिये। पाटन नामका एक स्थान था उस काल में वहां 'ह्या' नामका सेठ था जिसके 'तीनि' नाम की सुन्दर स्त्री थी।

(२७२) एक बार वह सेठ व्यापार को गया हुआ था। तब किसी ने उसे जीम के वशीभूत कर लिया। सेठ की मर्यादा छोड़कर उसने एक धूर्त को अपने यहां लाकर रख लिया।

(२७३) अपने पति के प्यार को छोड़कर उस आये हुये धूर्त को उसने भर्तार बना लिया। इस प्रकार स्त्रियों के साहस का कोई अन्त नहीं है। इन स्त्रियों का चरित्र कितना कहा जाय।

(२७४) अभया रानी की नीचता के कारण सुदर्शन पर संकट आया तथा उसी के कारण महायुद्ध हुआ और अन्त में सुदर्शन को तपस्या के लिये जाना पड़ा।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बड़ी थी वह सूपनखा को लेकर ही बड़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध ठहरा। उसमें अठारह अक्षौहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं भेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रद्युम्न ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं भेट सकता। सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन बिछुड़ जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है ? फिर वह राजा वापिस मुड़ा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष को टंकार की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों धीर रण में आकर भिड़े तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि असमय में बादल खूब गर्ज रहे हों।

(२८२) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपाश को फेंका। पूरा दल-नागपाश द्वारा दृढ़ता से बांध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(२८३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसंवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२८४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लड़ाई? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड़ रहे हो?

(२८५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसंवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२८६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका स्तिर चूम लिया। राजा को बहुत पछतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२८७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड़ दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर सब की मूर्च्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुड़ा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२८८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उसी समय कहा कि तुम्हारी घर प्रतीक्षा हो रही है।

(२८९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही घर की ओर मुँह करलो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२९०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हंसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परखावेगा?

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

(२९१) नारद ने क्षण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हंसी में तोड़ डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड़ दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२६२) जब नारद दुःखित मन हुये तो मदन ने हंस करके उपाय किया और माणिक और मणियों से सज्जित एक विमान तैयार कर दिया ।

(२६३) प्रद्युम्न ने जिस विद्या बल से विमान को रचा था उस विमान ने अपनी कान्ति से सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति को भी फीका कर दिया । वह ध्वजा, घंटा एवं झालर संयुक्त था । उस पर नारायण का पुत्र प्रद्युम्न चढ़ा ।

(२६४) चढ़ने के पूर्व कालसंवर को बहुत समझा करके अति भक्ति भाव से उसके चरणों का स्पर्श किया । कुमार ने तब क्षमा याचना की और कंचनमाला के घर गया ।

(२६५) कुमार प्रद्युम्न एवं नारद मुनि विमान पर चढ़ कर आकाश में उड़े । बहुत से गिरि एवं पर्वतों को लांघ करके जिन मन्दिरों की वन्दना की ।

(२६६) फिर वे वन मध्य पहुँचे तो उस स्थान पर उद्धि माला दिखाई दी । प्रद्युम्न को मार्ग में बरात मिली जो भानुकुमार के विवाह के लिये द्वारिका जा रही थी ।

(२६७) नारद ने प्रद्युम्न से बात कही कि यह कुमारी पहिले तुम्हीं को दी गयी थी । तुमको जब धूमकेतु हर ले गया तो उसे अब भानुकुमार को दे दी गई है ।

(२६८) नारद ने कहा कि इसमें मुझे दोष कोई नहीं मालूम होता है । यदि तुम्हारे में शक्ति है तो इसको जबरन ले लो । ऋषिराज के वचनों को मन में धारण करके उसने अपना भील का भेष कर लिया ।

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

(२६९) हाथ में धनुष तथा विपाक बाण ले लिया और उतर कर उनके साथ मिल गया । पवन के वेग के समान आगे जाकर उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया ।

(३००) मैं नारायण की ओर से कर लेने वाला हूँ इसलिये मेरी अधिक लाग है वह मुझे दो । जो मेरे योग्य अच्छी चीज है वही मुझे दे दो जिससे मैं सब लोगों को जाने दूँ ।

(३०१) महिलाओं ने कहा कि हमारी बात सुनो तुम कौनसी बड़ी वस्तु मांगने हो। धन सम्पत्ति सोना जो चाहे सो ले लो और हमको आगे जाने दो।

(३०२) भील ने क्रोधित होकर उनको जाने दिया तथा कहा कि ऐसे जाने से क्या लाभ है। जो भली वस्तु तुम्हारे पास है वही मुझे दे दो और आगे बढ़ो।

(३०३) तब महिलाओं ने उसका मुँह देख कर कहा कि एक कुमारी जो हमारे पास है उसको तो हरि के पुत्र भानु से सगाई कर दी गयी है। अरे भील ! तुम और क्या मांग रहे हो।

(३०४) उस भील वीर ने कहा यही (कुमारी) मुझे दे दो जिससे मैं आगे तुमको मार्ग दूँ। महिलाओं ने क्रोधित होकर कहा कि अरे भील यह कहना तुम्हें उचित नहीं है।

(३०५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर विचार करके कहने लगा कि मैं नारायण का पुत्र हूँ इन वाक्यों में तुम सन्देह मत करो और उदधि माला को मुझे दे दो।

(३०६) महिला ने कहा कि हे नटखट तुम भूँट चोलने में बहुत आगे हो। जो तीन खंड प्र०वी का राजा है क्या उसके पुत्र का ऐसा भेष होता है ?

(३०७) तब वे सीधे मार्ग को छोड़कर टेढ़े मेढ़े मार्ग से चले तो उधर भी दो कोडी (४०) भील मिल गये। सधारु कवि कहता है कि तब भील ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पूर्वक छीन लूँ तो मेरा दोष मत समझना।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बलपूर्वक छीन लेना

(३०८) तब उसने कुमारी को छीन लिया और मुड़ करके विमान पर चढ़ गया। भील को देखकर यह कुमारी मन में बहुत डरी और करुण विलाप करने लगी।

(३०९) पहिले मेरी प्रद्युम्न के साथ सगाई हुई फिर भानुकुमार के साथ विवाह करने के लिये चलो। हे नारद मेरी बात सुनो अब मैं भील के हाथ पड़ी हूँ।

(३१०) उद्धि माला ने कहा अब मुझे पञ्च परमेष्ठियों की शरण है। यदि मृत्यु न होगी तो मैं सन्यास ले लूंगी। तब नारद के मन में संदेह हुआ कि इसने बहुत तुरी बात कही है।

(३११) नारद ने उसी समय कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएँ दिखा रहा है। तब प्रद्युम्न ने बत्तीस लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया।

(३१२) उस सुन्दरी उद्धिमाला को समझा कर वे विमान से शीघ्र चलने लगे। विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है। हे नारद ! यह कौनसी नगरी है ?

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है। शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्ज्वल है। कूवे, बावड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनेंद्र भगवान के मन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्टित यह द्वारिका नगरी है।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन सुनो। मुझे स्पष्ट कहो तथा कुछ भी मत छिपाओ। हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (वह मैं तुमको बताता हूँ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पाँचों वर्णों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशोभित है वह नारायण का महल है।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो। जिसकी ध्वजा में मेंढे का चिन्ह है वह वसुदेव का महल है।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहाँ ब्राह्मण बैठे हुये पुस्तक पढ़ रहे हैं तथा जहाँ बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्वभावा का महल है ।

(३१९) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियाँ चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता बड़ा हर्षित हुआ । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा । तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ । यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है । यह वही कुमार है जिसका विवाह है । इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहाँ प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करूँगा । उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा बड़ा चंचल था तथा लोर से हिनहिना रहा था । जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे । जिसके चार चार अंगुल के कान थे । जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी । वह ब्राह्मण उसकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था । अकेले भानुकुमार ने उसको देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर कहाँ जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बलख घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहाँ लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण को बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूँगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अच्छा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखो हुआ कि इस विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देओ। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौड़ा करके देख लो।

भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को समझाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया यह बड़ी विचित्र बात हुई इससे मभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चढ़े ? इन तरुण से तो हम वृद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार ! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा डरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढ़ते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बचना) चाहते हो तो अपना कुछ पुरुषार्थ दिखाओ।

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस बीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(३३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भानुकुमार आया । लेकिन वह लटक गया और उसे चढ़ा नहीं सका । जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पांव रख कर चढ़ गया ।

(३३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा । सभा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया ।

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(३३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये । राजा का जहाँ उद्यान था वहाँ वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया ।

(३३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहाँ के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता । यदि घास काटोगे तो किरकिरी होगी ।

(३४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, भूखे घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो । घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना ।

(३४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूँदड़ी उतार कर दे दी । रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लेंगे ।

(३४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे । तब रख वाले छाती कूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया ।

(३४३) उन्होंने वह काम मूँदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली । तब वह वीर वहाँ पहुँचा जहाँ सत्यभामा की बाड़ी थी ।

(३४४) प्रद्युम्न बाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखायी दिये । वे कब के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था । फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी ।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की बेल थी। कणवीर का कुंज महक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अगर, मंदार सिन्दूर एवं सरीष आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुवा एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस बगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंध फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं सदाफल के बहुत से पेड़ थे। तथा जहां बहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, बिजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लोंग, लुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। वह वन कैथ एवं आंवलों के वृक्षों से युक्त था।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की बाड़ी देख कर उस वीर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और साहस पूर्वक विचार कर के दो बंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों बंदरों को छोड़ दिया जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला। जो फूलबाड़ी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन बंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन बंदरों को मुखा कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड़ डाले। फूलबाड़ी का संहार करके सारी वाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लंका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों बंदरों ने बाड़ी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानुकुमार बैठा हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे बोध मत देना। दो बन्दर वहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुष्कर की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ़ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां बन्दरों ने बाड़ी को चौपट कर दिया था ।

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की । जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया । मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया ।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया । उस समय दिन का एक पहर बीत गया था । प्रद्युम्न को बहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने जा रही थी ।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढ़ा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगी । कुमार रथ पर चढ़ा तथा स्त्रियां खड़ी हो गई और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गई ।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया । ऊंट और घोड़ा अरड़ा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये ।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगी तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं । जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशुक्ल हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता ।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया । स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर पश्चात् बावड़ी पर जा पहुँचा ।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी खड़ी थी । वह कहने लगा कि भूखे ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो ।

(३६२) उसी क्षण दासी ने कहा कि यह सत्यभामा की बावड़ी है यहाँ कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहाँ कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उसी समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूँड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने बावड़ी में प्रवेश किया।

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोषिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कमंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे बावड़ी सूख कर रीती हो गई।

कमंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) बावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कमंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी २ चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहाँ से चल दिया।

प्रद्युम्न का मायामयी मेंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मायामयी मेंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मेंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मेंढे को बिना शंका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३७०) प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग मैं पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३७१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी।

(३७२) तब उसने मेंढे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टाँग तोड़ दी। टाँग तोड़ कर मेंढा वापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३७३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो छप्पन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हंसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३७४) पीली धोवती तथा जनेउ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३७५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३७६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लकड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३७७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आर्शीवाद दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र? कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३७८) फिर सिर हिलाते हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बोली सच्ची हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३७९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिला दो।

(३८०) उसने वहां एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं थकेला हूँ। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलाओ।

(३८१) वहां ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आपस में लड़ने हो ?

(३८२) अब प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जूफली बिद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझा करके कहा कि इन लड़ने वालों को बाधु लग गई है जो दूर हो जावें उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक सुठ्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण ! बैठ कर भोजन करो तथा उनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का स्वा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही घास में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहां आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल बची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक उबाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रसोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो अब भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भखा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि अब इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी अब भूखे ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली बर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके वहां से खड़ा हो गया।

प्रद्युम्न का विकृत रूप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूँड मुंडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर भुका हुआ वह कुबड़ा बन गया। वह वहां से लौटा। उसके बड़े बड़े दांत थे तथा कुरूप वेह थी। वह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढती थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह बात कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष फले हुये देखे तथा उसका आंचल पीला दिखाई देने लगा।

(३६८) सूखी बावड़ी नीर से भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक ब्राह्मचारी वहां पहुँचा।

(३६६) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस खोड़े ने धर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचा की का आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(४००) रुक्मिणी ने तो समझा करके क्षेमकुशल पूछा किन्तु वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी सखी को बुलाकर सब बात बता दी तथा इसका जीमन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(४०१) तत्काल वह जीमन कराने के लिये उठी तो प्रद्युम्न ने अग्नि स्तम्भिनी विद्या को याद किया। उस कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा धुआँ धार हो गया तथा वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा।

(४०२) मैं सत्यभासा के घर गया था लेकिन वहाँ भी खाना नहीं मिला तथा उल्टा भूखा रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(४०३) रुक्मिणी ने चित्त में सोचा और उमको लड्डू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लड्डू रखे हुये थे वे सब कुचड़े रूप धारी प्रद्युम्न ने खा लिये।

(४०४) जिस आधे लड्डू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक तृप्त रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ समझ में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(४०५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(४०६) तब रुक्मिणी के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह कालसंवर के घर बड़ा हुआ है वहाँ उमने कितनी ही विद्याएँ सीख ली है यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(४०७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उमसे पूछा कि हे महाराज आपका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपकी कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश डालिये । फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है ?

(४०९) तब वह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा । गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है ।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं । भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं । तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रूठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी ।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी । वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी । मेरी भूल हो गयी थी आप दोष मत दीजिये ।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो । मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूँ जिसका जवाब दो ।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा ।

(४१४) उसे धूमकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया । मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा ।

(४१५) और जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं । लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुःखित हो जावेगा ।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानु कुमार का विवाह है । मैं आज होड़ में द्धार गयी हूँ तथा कार्य की सिद्धि नहीं हुई है । इसी कारण मेरा मस्तक आज मूँढ़ा जावेगा ।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माथा धुना । मन में पञ्चतापा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो ।

(४१८) वसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। अपनी माता को उसने ओम्कल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी बना दी।

सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से बहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पाँच पड़कर उससे निवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुम अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा बोल सच्चा हो गया है। अब कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूँड लिया।

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अंगुली को काट लिया और साथ की स्त्रियों को भी मूँड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के बीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है? सबको यह बड़ा विचित्र आश्चर्य हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है?

(४२५) तब वे दुःखित होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। अब उन्होंने टटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मूँडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से वही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्षण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कंठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पड़तावा सदैव रहेगा कि मैं उसका बचपन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पांच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न बारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी वह लौटने लगा, कभी हट करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) वहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिख लाऊंगा।

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहा कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४३४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। बड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४३५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणी को इसकी सूचना भेज दी।

(४३६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूँडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पेट एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह आड़े होकर द्वार पर गिर गया।

(४३७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण उठो जिससे हम भीतर जा सके। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४३८) उसके वचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो आपको गोहत्या का पाप लगेगा।

प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४३९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४४०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पोत (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जावे और वह मर जावेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४४१) बात सुनकर बलभद्र क्रोध से प्रज्वलित होकर चले। तथा उनके साथ दस बीस आदमी गए और वे पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४२) वे सिंह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे ।

(४४३) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था । उसने उदर को सरस आहार से इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता ।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे । ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं ।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी है । दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो ?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उसके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले । ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो ? आओ मुझे बाहर निकाल दो ।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अपनी माता रुक्मिणी से कहा । एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो ।

रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं । यह सिंह से युद्ध करना खूब जानते हैं । यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) है यह मैं तुम से कहती हूँ ।

(४४९) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर खेंच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बढ़ाकर धड़ सहित वहीं पड़ा रहा । यह आश्चर्य देखकर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है ?

प्रद्युम्न का सिंह रुप धारण करना

(४५०) पांव टेक कर वह भूमि पर खड़ा हो गया और उसी क्षण उसने सिंह का रुप धारण कर लिया । तब हलधर ने अपने आयुध को सम्हाला । फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये ।

(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े बाजी करने लगे दोनों बीर मल्ल युद्ध करने लगे। सिंह रूप धारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और बल-भद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया।

(४५२) जहां छप्पन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहां जाकर हलधर गिरे। सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहां ही रहे। अब यह कथा रुक्मिणी के पास के प्रारम्भ होती है। वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि इतना बल पौरुष कहां से सीखा ?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्वतीय स्थान है वहां यमसंवर नामका राजा निवास करता है। हे माता रुक्मिणी ! सुनों मैंने वहीं से अनेक विद्यायें सीखी हैं।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे बचन सुनो। नारद ऋषि मुझे यहां लाये हैं। फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उदधि माला को ले आया हूँ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है। हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उदधिमाला कहां है उसे मुझे दिखलाओ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की समा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक बचन मांगता हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारी बाँह पकड़ कर के सभा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस साहसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहां है उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे।

(४५६) पांचों पाण्डव जो पंच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छप्पन कोटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेले उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अशेष यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ़ कर आ गये।

**रुक्मिणी की बाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे
छुड़ाने के लिए ललकारना**

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की बाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उसमें बल है तो आकर छुड़ा ले।

**सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके
युद्ध के लिए ललकार**

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पछाड़ कर मार दिया था। अब मुझ से रुक्मिणी को आकर बचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके वह कहने लगा, कि हे बसुदेव ! तुम रण के भेद को खूब जानते हो । तुम छप्पन कोटि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुडा लो ।

(४६७) हे बलभद्र ! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो । रण संग्राम में बड़े धीर कहे जाते हो । हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडालो ।

(४६८) हे अर्जुन ! तुम खांडव वन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुष को सब कोई जानते हैं । तुमने विराट राज से गाय छुडायी थी । अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुडा लो ।

(४६९) हे भीम ! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है । अपना पुरुषार्थ मुझे आज दिखलाओ । तुम पांच सेर भोजन करते हो । युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो ।

(४७०) हे ज्योतिषी सहदेव ! मेरे वचन सुनो । तुम्हारे ज्योतिष के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ । फिर हंसकर प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम्हारे समान कौन रण जान सकता है ?

(४७१) हे नकुल ! तुम्हारा पुरुषार्थ भी अतुल है । तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है । अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडाओ ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी छल से कुंडलपुर गये थे । उसी समय तुम्हारी बात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे ।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में आकर क्यों नहीं भिड़ते हो । मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूँ । एक ओर तुम सब क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूँ ।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण काँ युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में घी डाल दिया हो । मानों सिंह ने तन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी झिलने लगे हों । तब सब यादव अपनी सेना सजाने लगे । भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने कोदंड धनुष को उठा लिया और नकुल ने हाथ में भाला ले लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड कंपित हो गया ।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया । यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये । घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिड़ना होगा । ऐसा आदेश दिया ।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये । ठः ठः चारों ओर ये शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये ।

युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे । कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये । कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये ।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये । कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये । कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले ।

(४७९) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढ़ी हुई तलवार लेकर निकला । किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली ।

(४८०) कुछ लोग बात समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है । जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है ।

(४८१) एक ही स्थान पर सब क्षत्रिय मिल गये और घटाटोप (मेघ जैसे) होकर युद्ध के लिए चले । तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अब यह मरने का दाव आ गया है ।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहां मिल गयी । वहां घोड़े, हाथी, रथ और पैदल सेना थी । अप्रमाण छत्र एवं मुकुट दिखने लगे तथा आकाश में विमान चलने लगे ।

(४८३) इस प्रकार ऐसी असंख्यात सेना चली और चारों ओर खूब नगाड़े बजने लगे । घोड़ों के खुरों से जो धूल उड़ती उससे ऐसा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों ।

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४८४) सेना के बायीं दिशा की ओर कौवा कांव कांव करने लगा तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया। दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे।

(४८५) वन में असंख्य जीव दिखाई दिये। ध्वजायें फकड़ने लगी एवं उन पर आकर पक्षी बैठने लगे। सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये।

(४८६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें। वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ बिधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है।

(४८७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले। जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिंता हुई। माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खड़ी कर दी।

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४८८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विद्या का स्मरण किया। जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी।

युद्ध वर्णन

(४८९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया। कितने ही योद्धाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया। वे ऐसे लगने लगे मानों काल ने जीभ निकाल रखी हो।

(४९०) हाथी वालों से हाथी वाले योद्धा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी। पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी। तलवार के वार के साथ २ वे भी पड़ने एवं उठने लगे।

(४९१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है। कोई मारो मारो इस प्रकार चिल्ला रहा है। कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं।

(४६२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४६३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम ! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव ! मैं तुमसे कहना हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र ! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय गने लगे और कोई बचा नहीं।

(४६६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४६७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने हलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४६८) सभी यादव एवं यौद्धा रणभूणि में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४६९) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से मूर्छित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(५००) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिबेष्टित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(५०१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी। तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

(५०२) देखते देखते सभी यादव वीर गण गिर पड़े तथा साथ २ सभी सेनायों गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी थर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज हारे हुये पड़े थे यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(५०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये छत्र रण में पड़े हुये दिखाई दिये।

(५०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। मदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और वेताल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(५०५) गृद्धिणी और सियार पुकार रहे थे मानों यमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमत्तो जिससे पूर्ण वृत्त हो जाओ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(५०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे संग्राम के लिये चले तो सकल महीतल कांपने लगा एवं शेषनाग भी हिल गया।

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शङ्कन होना

(५०७) जब अपने रथ को उनसे युद्ध में आगे बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फडकने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(५०८) क्योंकि रण में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रण में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०६) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है ।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे क्षत्रिय ! मेरे वचन सुनो । तुमने सभी मदोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो ।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान क्षत्रिय हो । तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है । मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हँस कर बोला किरण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी ।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मां . रहे हो ।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुरुषार्थ देख लिया है । तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता । तुम्हारी सारी सेना पड़ी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है ।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी सहन कर रहे हो । मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणी से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणी के योग्य नहीं हो ।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड़ दो । प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ ।

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पछताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ कर बातें कर रहा है अब इसे मारता हूँ यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुष को चढ़ा लिया ।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा । जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुष चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया ।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है । जब श्रीकृष्ण का धनुष टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुष चढ़ाया ।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुष की प्रत्बंधा टूट गयी । तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुष को अपने हाथ में लिया ।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर वार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता । त्रिष्णु ने जब तीसरा धनुष साधा लेकिन क्षण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हंस करके श्रीकृष्ण से बात कही कि आपके समान कोई वीर क्षत्रिय नहीं है ? आपने यह पराक्रम किससे सीखा ? आपका गुरु कौन था यह मुझे भी बताइये ।

(५२३) तुम्हारे धनुष बाण छिन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके । तुम्हारा पौरुष मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे ?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंध तथा कंस को कैसे मारा ? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ मंगाकर उस पर बैठ गये ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के वायों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढ़कर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रज्वलित अग्निबाण को फेंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उस पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण को सेना बहने लगी।

(५२९) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ वगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है ? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया ?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र उड़ उड़ कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरंगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढ़ाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(५३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुये । वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये ।

(५३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया । तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके ।

(५३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका । दोनों ही बड़े बलवान् योद्धा हैं जिनके प्रहार से ब्रह्मांड भी फटने लगा ।

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

(५३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह-सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सका है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है ।

(५३८) मैंने युद्ध में कंस को पछाड़ा और जरासिन्धु को रण में ही पकड़ कर मार डाला । मैंने सुर असुरों के साथ युद्ध किया है । जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा ।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

(५३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया । वह खड्ग विजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो ।

(५४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो । जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये ।

(५४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलबली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो । देवोंगनायें मन में कहने लगी कि देखें अब इसे कैसे मारता है ?

(५४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है । श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा ।

(५४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है। जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जावे हे नारद ! शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो।

रण भूमि में नारद का आगमन

(५४४) रुक्मिणी के बचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा। नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहां प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी।

(५४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया। प्रद्युम्न वार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहां पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया।

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(५४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे वचन सुनिये। यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।

(५४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बंटा है। इसने सिंहस्थ को जीता है। हे कृष्ण ! यह बड़ा पुण्यवान् है।

(५४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला से इसका बिगाड़ हो गया है। इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष सगण्य होने के पश्चात् तुमसे मिला है।

(५४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान् एवं साहसी है। इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है ? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है।

(५५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही। यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है।

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पाँव पड़ना

(५५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया। तब नारायण ने हृदय में खूब प्रसन्न होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया।

(५५२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विद्याधरी) को भी धन्य है जिसके यहाँ यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलाप हुआ है।

(५५३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा घूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(५५४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खूब उत्सव करो।

(५५५) श्रीकृष्ण के मन में तो विपाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा ?

(५५६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मोहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी योद्धा एवं सुभट उठ खड़े हों।

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खड़ा होना

(५५७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही उमड़ रहा हो।

(५५८) वीर एवं श्रेष्ठ पारङ्ग, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(५५९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पदाति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों ? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सभारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठे हों।

प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो बैठे । सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे । प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे । उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है । सभी कहने लगे कि आज परिजनों का देव मानों प्रसन्न हुआ है । श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके तथनों में समा रहा है ।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं । जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है । सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरूप पुत्र उसको मिला है । बड़ा योद्धा एवं वीर है । सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है । सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बादल गर्ज रहे हैं ।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया । इस घर को आज पुन्यवाला समझो । उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है । मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई । युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा । जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था ।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतियों की बदनवार बँधी हुई थी । घर घर पर गुड़ियां उछाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे । नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयी । अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी । घर घर मोतियों के बदनवार एवं तोरण थे ।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा छप्पनकोटि यादव घर चले । जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें क्षोभ हीन होकर चले ।

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी छिप गयीं । गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की ।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय कार कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँधे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(५६६) नगर में इतने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं पंच शब्द बजने लगे।

(५६७) जब प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में बधावा गाये जाने लगे। गुडियां उछाली गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(५६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी को चलीं।

(५६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जब से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(५७०) दूध, दही एवं अक्षत माथे पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती उतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियां वहां से चलीं।

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(५७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(५७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उड़ती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(५७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्य कौन स्वजन है ?

(५७४) तब रुक्मिणी उसी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे ऊच्छ्रण होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिन्ना दी है ।

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

(५७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्न-कुमार का विवाह निश्चित हो गया । ज्योतिषी को बुलाकर लग्न निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(५७६) हरे बांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये । लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(५७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया । जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये ।

(५७८) अंगदेश, बंग (बंगाल), कलिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये । लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवड़ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये ।

(५७९) गुर्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे । विपाडती कान्यकुब्ज के अच्छे थे । पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये ।

(५८०) शंखों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे । भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे ।

(५८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर २ मंगलाचार गीत गाने लगी । नगरोत्सव के कारण कल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले ।

(५८२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र शिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर दुरने लगा। सोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फेंक रहा हो ?

(५८३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करे तो भी मैं उसके केश उतरवाऊँगी।

(५८४) केश उतार कर उन्हें पाँव से मलूँगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५८५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भाँवर देकर हथलेत्रा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिग्रहण हुआ।

(५८६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौते उसका परिहास करती थी।

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

(५८७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहाँ रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५८८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहाँ जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे यहाँ भेजा है। रविकीर्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उसी लड़की को भानुकुमार को दे दें।

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५८९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा त्रिशाधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहाँ मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण-कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानु कुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उसके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमधर मुनि को केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शंबुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहाँ पुंडरीक नगरी थी तथा जहाँ क्षेमधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि ! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किस स्थान पर पैदा हुआ ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने सभा में कहा कि पृथ्वी पर पाँचवाँ भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। उसमें सोरठ देश में द्वारिकावती नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी महिम्न श्रीकृष्ण है जो सपूर्ण नियम धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या बड़ी गुणवती है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५६८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ । उस पुरुषवान् को सभी कोई जानते हैं । सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है ।

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५६९) केवली के वचन सुनकर देव वहाँ गया जहाँ सभा में नारायण बैठे थे । देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा ।

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महामहर्षि ! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये । जिसको तुम अनुपम हार भेंट देओगे उसी की कुत्त से मैं अवतार लूँगा ।

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को भाने वाली मन में चिन्तना करने लगे । चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूँगा ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया । माता से कहने लगा कि पेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बताता हूँ ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भव में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था । अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है ।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आकर पुत्र होगा । हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुम्हें प्राप्त करा दूँ ?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही सद्गुण संतान के बराबर हो । बहुत से पुत्रों से मुझे कोई काम नहीं है । तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो ।

जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी बहिन जामवंती है। हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो।

जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहाँ बुला लाओ। जो काम मुंदबी पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े और गहने पहिने। उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था। जामवंती वहाँ गयी जहाँ श्रीकृष्णजी बैठे थे।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये। तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिङ्गन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शंभुकुमार उत्पन्न होगा। जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए।

(६११) तब महमहण ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विस्मित और अचभित कर दिया। यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लिया तो विकृत रूप करके मोह लेगी। वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन भेद सकता है। श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान् ही निष्कण्टक राज्य करता है।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शंभुकुमार रखा गया। वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लज्जित करने वाला था।

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सुर और नर करते थे ऐसा प्रथम स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उत्पन्न हुआ।

(६१४) जो वहाँ से चयकर अनेक लक्ष्णों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान् सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अवतार लिया था चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पढ़ने लगे ।

शंभुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद (मोहर) का दांव लगाया । उस दांव में शंभुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया ।

दूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी । उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे ।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्ग आपस में भिड़ गये । इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंभुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली ।

(६१९) इसके पश्चात् उसने बहुत से खेल किये । (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के पश्चात् दूत को बुलाकर वहां भेजा जहां विद्याधर रहता था ।

(६२०) दूत ने वहां जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी । वहां दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ ।

सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया । जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शब्द होने लगे ।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और रूपकुमार के पास भेजा ।

रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) वह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है ।

(६२४) शंभुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुष को सब कोई जानते हैं । दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े ।

(६२५) तब उस अवसर पर रूपचन्द ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रूपचंद) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि संभल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुखित हुआ ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई । आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो ।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया । उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी ।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते हैं ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें । तुमको छोड़ कर हम डूम को देना पसन्द करते हैं ।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू बरसने लगे । इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुखी कर बहुत बुरा किया है ।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित बदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी बोली से दुखी है यह मुझे शीघ्र कह दे ।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने मंत्रणा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था । वहां दूत से उसने जो दुष्ट वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय बिंध गया ।

(६३३) मैंने तो यह जाना था कि वह मेरा भाई है किन्तु उसने नीच बनकर ऐसी बात कही है। वह मुझे विषय वासिनी मानता है। भला ऐसी बात कौन कहता है ?

(६३४) रुक्मिणी के वचन सुनकर प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ कि उसने माता से नीच वचन कहे। अब रूपचन्द को रण में पछाड़ कर उसकी प्राणों से प्यारी पुत्री को छलकर परागूँगा।

प्रद्युम्न का कुण्डलपुर को प्रस्थान

(६३५) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहुरूपिणी विद्या को स्मरण किया। शंबुकुमार और प्रद्युम्न पवन वेग की तरह कुण्डलपुर गये।

दोनों का डूम का भेष धारण कर लेना

(६३६) नगरी के द्वार दिखलाई देने पर दोनों ने डूम का रूप धारण कर लिया। मदन ने तो हाथ में अलावण ले ली तथा शंबुकुमार ने मंजीरा ले लिया।

(६३७) फिर वे दोनों वीर चौराहे की ओर मुड़े तथा सिंहद्वार पर जाकर खड़े हो गये। वहाँ राजा अपने बहुत से परिवार के साथ दिखलाई दिया तब मदन ने अपनी माया फैलाई।

(६३८) फिर मदन ने बहुत से गीत एवं कवित्त जो यादवों के सम्बन्ध के थे उत्तेजित हो हो कर गाये। गीतों को सब ने ध्यान से सुना लेकिन श्रीकृष्ण की प्रशंसा के गीत उन्हें अच्छे नहीं लगे।

(६३९) जब उसने यादववंश का नाम लिया तो रूपचंद का मन दुःखित हुआ। रूपचंद ने पूछा कि मैं तुम्हारे गीतों का सार जानता हूँ पर तुम कहाँ से आये हो, यह बतलाओ !

रूपचंद को अपना परिचय बतलाना

(६४०) हमारे स्थान का नाम द्वारिका नगरी है और जहाँ यदुराज श्रीकृष्ण राज्य करते हैं। जिनके रुक्मिणी पटरानी है। हे राजन् ! जो तुम्हारी बांहन भी है।

(६४१) उस राणी ने जो तुम्हारे पार दूत भेजा था उसने तुम्हारी बहुत सराहना की थी। उसी ने वहाँ जाकर तुम्हारा उत्तर कहा। और उसी के कारण हम यहाँ आये हैं।

(६४२) अपने कहे हुए वचनों को प्रमाण मानो क्योंकि सत्यवक्ता के वचन प्रमाण होते हैं। हे भाग्यवान् हम से स्नेह (संबंध) करके अपनी दोनों कन्यायें दे दो।

रूपचंद का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

(६४३) यह सुनकर राजा क्रोधित होकर खड़ा हो गया। ऐसा लगने लगा मानों अग्नि में घी डाल दिया हो। उसका सम्पूर्ण अंग एवं मस्तक काँप गया तथा बोलने २ प्राण भी उड़ने लगे। ऐसे बोल तुमने किससे कहे हैं ? उसने आदेश दिया कि इनको बाहर लेजा कर शूली पर चढ़ा दो। यदि यदुराज में ताकत है तो वह इनको आकर छुड़ा लेंगे।

(६४४) तब उन्होंने पकड़े जाने पर जोर २ से पुकार की कि हम डूम हैं डूम हैं। ये शब्द चारों ओर छा गये। उसके हाथ में अलावणि (अलगोजा) थी जिसके सुनने के लिये सारे बाजार एवं हाट भर गये थे।

(६४५) उसी समय कुमार रूपचन्द ने सब राजाओं को पुकारा तथा सब बातें बताई। वे हाथी घोड़ों को साथ लेकर एक ही क्षण में वहाँ आ पहुँचे।

(६४६) तब राजा रूपचंद वहाँ आये जहाँ प्रद्युम्न और शंबुकुमार थे। वे दोनों एक साथ अपने हाथ में एक तारा (सितार) अलावणि (अलगोजा) और वीणा लेकर गाने लगे।

(६४७) डूम को देखकर राजा के मन में शंका पैदा हुई कि वह नीच जाति पर किस प्रकार प्रहार कर सकता है। धनुष साध करके जब उसने बाण छोड़े तब दूसरों ने भी चौगुणे बाण छोड़े।

प्रद्युम्न और रूपचंद के मध्य युद्ध

(६४८) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा धनुष चढ़ा कर हाथ में ले लिया। उसने क्रोधित होकर अग्निबाण छोड़ा जिससे लड़ते हुये सभी क्षत्रिय भागने लगे।

(६४६) सेना भाग गयी तथा मामा के गले में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६४७) रूपचंद को लेकर महलों में पहुँचे जहां श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद ने आँखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

रूपचंद को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

(६४१) तब मधुसूदन ने हंस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुष एवं विद्याबल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद को छोड़ देना

(६४२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और बंधे हुये रूपचंद को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

रूपचंद और रुक्मिणी का मिलन

(६४३) वहां जाकर उसने अपनी बहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६४४) भाई, बहिन एवं भानजा अच्छी तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचंद को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

प्रद्युम्न एवं शंखुकुमार का विवाह

(६४५) तब हरे बांस का मंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करने चले।

(६५६) बहुत भांति के शंख एवं भेरी बजी। मधुर बीणा एवं तूर बजा। भांषर डाल कर हथलेवा लिया गया तथा चारों का पाणिमहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो सज्जन लोग थे वे तो खूब प्रसन्न थे किन्तु अकेली सत्यभामा ऐसी थी जिसका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और वह समधी नारायण के यहां से घर गया। वह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वारिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस घड़ी धर्म में लगा तथा जिन चैत्यालय की बंदना करने के लिये कैलाश पर्वत पर चले गये।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने चिंतवन किया कि संसार समुद्र से तैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा कैलाश पर्वत पर जो जिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थकरों के चैत्यालयों को देखा और कहा कि जिनने जिनेन्द्र भगवान के ये चैत्यालय बनाये हैं वे रत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने चैत्यालयों की वंदना की जिनकी उद्योति रत्नों के समान चमकती थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वारिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके पश्चात् दूसरी कथा का अध्याय प्रारम्भ होता है। कौरव और पाण्डवों में कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संयम धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वारिका जाकर विविध भोग विलासों को भोगने लगे। बटरस व्यंजन से युक्त अमृत के समान भोजन करने लगे।

(६६३) वहां सात मंजिल के सुन्दर श्वेत महल थे उनमें वे नित्य नये भोग विलास करते थे। वे महल अगर तथा चन्दन की सुगन्धि से युक्त थे तथा सुन्दर फूलों के रस से सुवासित थे।

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

(६६४) इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हुआ और फिर नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब उनके समवशरण में सुरेंद्र, मुनीन्द्र, एवं भवनवासी देव आदि आये।

(६६५) छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर, नारायण एवं हलधर के साथ चले जहां नेमिनाथ स्वामी समवशरण में विराजमान थे। वहीं श्रीकृष्ण तथा हलधर जा पहुँचे।

(६६६) देवताओं ने बहुत स्तुति की। फिर श्रीकृष्ण ने (निम्न प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की। हे काम को जीतने वाले तुम्हारी जय हो ! तुम्हारी सुर असुर सेवा करते हैं (हे देव तुम्हारी जय हो ।)

(६६७) दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाले हे देव ! तुम्हारी जय हो ! मेरे जन्म जन्म के शरण, हे जिनेन्द्र ! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे प्रसाद से मैं इस संसार समुद्र से तिर जाऊं तथा फिर वापिस न आऊं।

(६६८) इस प्रकार स्तुति करके, प्रसन्न मन हो मनुष्यों के कोठे में जाकर बैठ गये। तब जिनेन्द्र के मुख से बाणी निकली जिसे देवों, मनुष्यों एवं सब जीवों ने धारण किया।

(६६९) धर्म और अधर्म के गहन सिद्धान्त को सुना तथा प्रद्युम्न ने भी आगम की बात सुनी। उसके पश्चात् गणधर देव से छप्पन कोटि यादवों की ऋद्धि के बारे में पृच्छा।

(६७०) हे स्वामिन् मुझे बताइये कि नारायण की मृत्यु किस प्रकार से होगी ? द्वारिका नगरी कब तक निश्चल रहेगी ? हे देव ! यह मुझे आगम के अनुसार बतलाइये।

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

(६७१) इस प्रकार बात पूछ कर बलराम चुप हो गये। मन में विचार कर गणधर कहने लगे कि बारह वर्ष तक द्वारिका और रहेगी। इसके बाद छप्पन कोटि यादव समाप्त हो जावेंगे।

(६७२) द्वीपायन ऋषि से ज्वाला निकल कर द्वारिका नगरी में आग लग जावेगी। मदिरा से छप्पन कोटि यादव नष्ट हो जावेंगे। केवल श्रीकृष्ण और बलराम बचेंगे।

(६७३) मुनि के आगमन एवं श्रीकृष्ण की जरदकुमार के हाथ से मृत्यु को कौन रोक सकता है ? भानु, सुभानु, शंबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार एवं आठ पट्टरानियां संयम धारण करेंगी ।

(६७४) गणधर के पास बात सुनकर तथा द्वारिका का निश्चित विनाश जानकर द्वीपायन ऋषि तप करने के लिये चले गये तथा जरदकुमार भी वन में चला गया ।

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

(६७५) दशों दिशाओं में बहुत से यादव इकट्ठे हो गये और संयम व्रत लेने के लिये भगवान नेमिनाथ के पास गये । प्रद्युम्नकुमार ने जिन दीक्षा ली तो नारायण चिंतित हुये ।

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण श्रीकृष्ण का दुःखित होना

(६७६) श्रीकृष्ण शोकाकुल होकर कहने लगे हे मेरे पुत्र ! हे मेरे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम्हारे में आज कौनसी बुद्धि उत्पन्न हुई है ? तुम द्वारिका लेओ और राज्य का सुख भोगो ।

(६७७) तुम राज्य कार्य में धुरंधर हो, जेष्ठ पुत्र हो, तुम्हें बहुत विद्याबल प्राप्त है । तुम्हारे पौरुष को देव भी जानते हैं । हे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम अभी तप मत धारण करो ।

(६७८) कालसंवर तुम्हारा साहस जानता है । तुमने मुझे रण में बहुत व्यथित किया । तुमने मेरी रुक्मिणी को हरा था तथा बहुत से सुभटों को पछाड़ दिया था ।

(६७९) नारायण के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि राज्य कार्य एवं घर बार से क्या करना है, संसार तो स्वप्न के समान है ।

(६८०) धन, पौरुष एवं अपार बल का क्या करना है । माता पिता अथवा कुटुम्ब किसके हैं । एक ही घड़ी में नष्ट हो जावेंगे । आयु के नष्ट हो जाने पर कौन रख सकता है ?

रुक्मिणी का विलाप करना

(६८१) नारायण को दुःखित देख फिर रुक्मिणी वहां दौड़ी आई । वह करुण विलाप करके चिल्लाने लगी तथा कहने लगी कि हे पुत्र किस कारण संयम धारण कर रहे हो ?

(६८२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुझे भी होते ही भूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र ! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे बचपन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६८३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा ?

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६८४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के रूठ जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६८५) इसलिये हे माता अब विवाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है ?

(६८६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सज्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६८७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहां भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६८८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न ने मिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनसे द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचमुष्टि केश लौंच किया।

(६८९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। बाईस प्रकार के परीषद् को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाह्य एवं अभ्यपंतल शरीर क्षीण हो गया।

प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नाश करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोका-लोक की बात जानने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विद्याधर, बलभद्र, धरणेन्द्र, नारायण, सज्जन लोग, एवं देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र उत्कृष्ट वाणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले ! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न ! तुम्हारी जय हो, तुमने संसार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र ऋद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न ! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अभ्रवाल की जाति है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुणवती सुधनु माता के उर में अवतार लिया तथा सामहाराज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरछ नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उस नगर में श्रावक लोग रहते हैं जो दश लक्षण धर्म का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। वह देव वहां से चय करके मुक्ति रूपी स्त्री को वरेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाव पूर्वक सुनेंगे उनके भी अशुभ कर्म दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उस पर प्रद्युम्न देव प्रसन्न होंगे।

(६६६) जो मनुष्य इसकी प्रतिलिपि करेगा अथवा तैयार करवाकर अपने साथ रखेगा तथा महान् गुणों से परिपूर्ण, रचना को पढावेगा वह मनुष्य स्वर्ण भण्डार को प्राप्त करेगा ।

(७००) यह चरित्र पुण्य का भण्डार है जो इसे पढ़ेगा वह महापुरुष होगा तथा उसको संपत्ति, पुत्र एवं यश प्राप्त होगा और प्रद्युम्न उसे तुरन्त फल देंगे ।

(७०१) कवि कहता है कि मैं बुद्धि हीन हूँ और अक्षर तथा मात्रा के भेद को भी नहीं जानता हूँ । विद्वानों को मैं हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ कि वे मेरी (अक्षर मात्रा की) हीनाधिकता की त्रुटियों पर ध्यान न दें ।

शब्दानुक्रमणी

अ

अइसइ—१२, ४६, ४०५
 अइसउ—४६, १६८
 अइसो—४३६
 अकाल—१४३, २८१
 अकुलाणउ—५४
 अकुलाणी—२४७
 अकुलानी—२६४
 अकुलाणे—४८७
 अकुलाने—५४०
 अकुश—२१३
 अकेलउ—२८२
 अकेलो—४६०
 अक्षत—३७७
 अक्षर—७०१
 अखण्ड—३२८
 अखाडो—१८२
 अखारउ—४५१
 अखारि—३३१
 अखालि—४५१
 अगनिवाण—५२५
 अगर—२३, ५६३, ६६३
 अगरवाल—६६४
 अगरोए—६६४
 अंग ६८, ५७८, ६८६
 अगलाइ—५१७
 अगहुडे—३०२
 अग्निबाण—६४८

अग्नि—४०१
 अग्नि—२०८
 अग्निनी—१६२
 अग्निवाणी—६
 अंगु—६६, १३२, ३११, ५०७
 अंगुहडो—२००
 अगूठा—६४
 अगोडो—२०६
 अघाब—३४१, ३६१, ३६२
 अघाणउ—३८४
 अचगले—३०६
 अचंविउ—२५५
 अचंतउ—१५१
 अचंभउ—४२३
 अचंभिउ—३४६
 अचंभी—३६५
 अचंभो—१६४, ३३७, ५३१
 अचंभ्यो—४५२
 अचल—२४५
 अचुल—२३६
 अचरिउ—५०२
 अंचल—४३१
 अछइ—४१६
 अछरायण—६६१
 अछोह—५६४
 अजर—२३२
 अजह—३६१, ४१५, ६२७
 अजितु—८
 अजोडि—२६८, ४६६

अठहल—३
 अठार—२७६
 अठारह—२०
 अणकुट्टह—२६६
 अणगह—४२१
 अणगु—१२२, ३११, ३७०
 अणंत—३४६
 अणुसरह—२४
 अति—३६, ४२, १३४, १३६,
 २०१, २२७, ३३५, ४२८,
 ६१४
 अतिगले—३०६
 अतिवत—२६१
 अतिवल—२६०
 अतिसक्य—४२८
 अतीत—६५६
 अतुल—२०२, ४५६ ४६१, ५०२
 अतुर—५६१
 अंत—२७३
 अंतरिक्ष—३२५
 अंतरीक्ष—४८२
 अंतु—२, ४६
 अथि—३१४
 अविशि—२७३
 अधिक—११, ३८६, ७०१
 अधिकु—२५३
 अनानत—१४३
 अनंत—१०, ३४६, ५००, ५०४, ६०६
 अनंतु—६
 अनंतु—५६१
 अनागत—६५६
 अनिवार—२२, १२१, २३६, ६११
 अन्नपम—६००, ६०२
 अपमाण—४८३

अपय—३६८
 अपवालु—७३
 अपमाणु—१७५
 अपपहि—२०७
 अपाण—४८२
 अपार—१८, १६५, २३३, २३४,
 ३५७, ५५६, ६४४
 अपाक—२३०, ५६१
 अपूरव—१६२, २२४
 अफामु—६०४
 अफालिउ—७६
 अभया—२७४
 अभिनंदणु—८
 अभेडउ—२७६
 अंबमाह—५
 अमह—२७०
 अमृत—६५३, ६६२
 अमर—२३२, २८१, ४६२
 अमरदेउ—२१८
 अमरदेव—२१६, २१७
 अनिगिभ—५२६
 अयसउ—५३६
 अयाण—३६२
 अर—२११, २३६, ४२२, ५१०
 अरजुन—२२४
 अर्जुन—४५६, ४६८, ४७४, ४६३
 अरडाह—३५८
 अर्थ—३०१
 अर्थु—३७६
 अर्थ—५१८
 अरराह—३५६
 अरहंत—२३१
 अरि—५३८
 अरिबल—१७५

अरियणावल - २१

अरियणु—१७१

अरिराउ—४५

अरु—६, २०, ३४, ४१, ५१, ७१,
६०, ६६, ११३, १६२, १६२,
२५१, २६०, २६५, ३४५,
३६७, ४१६, ४२०, ५०७,
५०८, ५१६, ५५६, ६७३,
६६६,

अरुजे—५०२

अरे—३०३

अला—१०३

अलावणि—४, ५८०, ६३६, ६४४,
६४६

अलिउ—२६४

अलिउलि—४२०

अलियउ—२६७

अलोकणि—२५५

अव—७६, १०७, १४१, १७८,
१८६, २५२, २६४, २६५,
२६७, ३०६, ३१०, ३११,
३२३, ४२६, ४६८, ४६६,
४७१, ४७३, ४८१, ५१४,
५१८, ५४१, ५४३, ५५१,
६०३, ६०४, ६८३

अवगी—६८५

अवगुण—६२६

अवटाइ—६२७

अवठालि—५५३

अवतरइ—६८६

अवतरणु—१६२

अवतरिउ—२३१, ५०२, ५५२,
५६५, ६१२, ६६५

अवतार—६१५

अवतार—६००

अवधारि—६७

अवर—३३२, ४१५, ४१८, ४४५,
५६१, ५६५, ६३८, ६४७,
६६४

अवरइ—३८१

अवरु—८, २२, २४६, २६७, ३६३,
५६३, ५६६, ६६१, ७००

अवलोइ—५४२

अवसइ—११०

अवसर—४३३

अवहि—५१३, ५६१

अवास—१८, ६६, १११, ३१४,
३६६, ५६५, ६६३

अविचार—२३३

अविचारु—२१७, ५६६

अविलेखियउ—५६५

अवेसि—२८८

अवगुण—३५६

असंलि—४८५

असराल—२८१, ५८०

असरालु—६

असवारु—३३२

असवारिउ—३३७

असिवर—१७६, ४७६, ४६२

असीणी—२३३

असीस—१० ८६, ४१, ५७०

असुभ—६६८

असुर—२३१, ५३८, ६६६

असुह—२७७

असेस—६८, १६४, ५२६, ५७७,
६८३, ६८८

असेसु—३७, १५२, ५३४, ५५४,
५६७

असेसह—४६१
 असोग—८६, १०२
 अह—७३
 अहह—१४, ३७६, ४०४, ४७२,
 ४४६, ४४६, ६३३, ६४१
 अहउ—३७८
 अहव—३६
 अहनहह—१४६
 अहंकाव—२३०
 अहार—४४३, ६४३
 अहाव—३८४
 अहि—१६६, २३०, ३०८
 अहो—३६६
 अहोडी—३०७

आ

आह—२५, ६४, ६६, ७२, ७५,
 १०७, ११३, ११५, १२२,
 १३६, १६०, १६५, १६८,
 २००, २०१, २०६, २१०,
 २१६, २२०, २२४, २५१,
 २६२, २८१, २६७, ३०२,
 ३४०, ३४६, ३५६, ३८८,
 ३६२, ४१६, ४१७, ४३७,
 ४६५, ४६७, ४६६, ४७३,
 ५०५, ५४८, ५७१, ६१८,
 ६२८, ६४३, ६४५, ६४६,
 ६४६, ६६४, ६८१

आहत—५६४
 आइस—१६७, १७१, ४३३, ६५८
 आइली—३०४
 आइले—१४५
 आउ—२०६

आए—३६८, ४२६, ५६५, ५७७
 ६४१

आकउ—१८४, २५६, ४२६

आकास—२७, २१४

आकित—५७०

आखउ—३३०, ३७८, ४५५, ४५६

आखट—२६६

आखर—१

आखहि—४४६

आगह—१०७, १६६, १६६, ३८६,
 ४३६, ४५८

आगम—४, ६६६, ६७०

आगमख—२६, ४०८

आगमु—६७३

आगलउ—५१४, ६१२

आगली—३६

आगय—२६६

आगासख—१६८

आगि—४७८, ५२८, ६७२

आंगुल—३२४

आगुली—३६३, ४२२

आगे—३८६, ५६८

आगे—५७७

आघाड—४०४

आचल—२४१, ३६७

आचलह—१६२

आचूक—३७५

आछर—५४

आज—२८, ७४, २८६, ४२६,
 ४३२, ४६६

आजि—१०१, ४६१

आबु—६६, ८७, १८६, २५६, ४१४,
 ४१६, ४१७, ४७५, ४६३,
 ५१५, ५२३, ५५२, ६७६

आठ—८०, ६७३

आठमउ—८

आठयउ—५८७

आठमौ—६३२

आठहु—५३३

आठौ—५३६

आणह २५७, ३७६, ६११ .

आणदियउ—१८३

आणनु—५८

आणि—२६, ४६, ५७, ६३, १००,

११३, १३३, १८५, १६२,

१६७, २०३, २०७, २०८,

२१७, २४४, २४७, २७२,

२७३, ३८८, ३६३, ४०३,

४७१, ४७२, ५६२, ६८७

आणिउ—३२७, ३८६

आणिजउ—३४

आणिह—५८३

आणी—५७२

आण्यो—६०३

आणौ—६३

आधि—५६, २७१

आवम—६३८

आवह—३६६

आवि—३४४

आधासण—३८६

आधु—४०४

आनह—१२७

आनदियउ—५६०

आनहु—६८३

आप—२४४, २८३

आपह—२२४

आपण—२६८, ४४१, ४८७

आपणउ—१५५, २७८, ३२७,

३३४, ४०७, ४२१, ४३२,

४८८, ४६४, ६५१

आपणी—४७, १६२, ६३१, ६५३

आपणो—६०. ३७१, ३५५, ५२३

आपणं—३११

आपले—२०८

आपनउ—५०७

आपनौ—४५३

आप्यउ—२०३

आपसु—१७३

आपहु—६७०

आपि—८४

आपिउ—१३३, २०८, २१७

आपी—५२, २६४

आपु—३००

आपुण—३८८

आफइ—२००

आफउ—१६२, ४१२

आफरयउ—४४३

आफह—२६१

आफहु—५५, ६०१, ६०२

आफि—१६३, ३०२

आफी—६३, १६१, २१५, २४७

आफीह—३०४

आफुहु—६७०

आभरण—१०३, २२६, ६०८

आभिडई—२६१

आम—२१०, ३४७

आय—३५३

आयउ—२८, ३२, ५३, २१६

२१७, २६३, ३०३,

४२८, ५६०, ५६३, ५७५,

६६१

आयस—६२६
 आयसु—४७६
 आयिउ—२१६
 आयो—३८, ४५, ६०, १४६,
 १५६, १५८, ३३६, ४५५,
 ५६४, ६८३
 आयौ—२८६
 आरति—५६२, ५७०
 आरंभिउ—६६६
 आरुढो—५२५
 आलि—४३१
 आलिगनु—६१०
 आलु—६६
 आलोक—१६२
 आव—१३६, ६८०
 आवइ—३२१, ३६६, ४१४, ४१५
 आवत—४३, ७०, २०६, २६०
 आवतु—१७६
 आवते—३६७
 आवध—४७७, ४६७
 आवले—३४८
 आव—२०८
 आवधु—४५०
 आवंतु—३२१
 आवहु—२५३, ४४६
 आविउ—५६६
 आवं—१६६
 आस—३३३, ५१६
 आसीका—३७७
 आसुपातु—६३०
 आसु—१४१
 आहाव—३७८, ३७६, ३८०
 आहि—३६, ५६, १५२, १५४,

१६८, २२६, २४३, २५७,
 २८६, २६८, ३०३, ३०४,
 ३३६, ३७०, ३८०, ४०६,
 ४०६, ४४०, ४६७, ४७१,
 ५००, ५०१, ५१०, ५१६,
 ५३७, ५५०, ६०५, ६०६,
 ६१०, ६७७, ६८६

इ

इक—३४, ३७, ६०, १४१, २५१,
 ३०१, ३२५, ६१५, ६४५,
 इकु—३४, २४६ ४३०
 इकुइ—३६२
 इकुसोवन—१८
 इंगल—१५
 इणि—२६४, ३६२
 इणी—१२३
 इतडउ—४३२
 इतनउ—२३६, ३३०
 इतडो—१८५, २८६
 इत्वहो—६२६
 इतु—३८३
 इथंतरि—६६१
 इडु—५४१
 इंदजालु—२२२
 इन्द्रलोक—१५३
 इन—४८०
 इनउ—४८६
 इन्ह—३३४, ४३८, ४५८
 इनके—४५६
 इनकी—१८६
 इनडो—२०४
 इनी—६०६
 इम्ब—५८५, ६८७

इम—४१, १४३, १४५, १४६,

२८३

इराम्बत—६८

इय—६६३

इव—६७२

इह—२८, ३६, ७६, ६६, २७८,

३०५, ३२३, ३३६, ४३८

इहइ—४५३, ५४१

इहर—४५३

इहि—४०, ४४, १२५, १६४, २५२,

२५४, ३२२, ३२६, ३३३,

४३८, ५१७, ५२३, ५३७,

५४७, ५४८, ६३०, ६५१

इहिर—३७१

इहिसउ—१७६

उ

उइ—६०, ३५६

उकठे—१६१

उकलं—३६३

उगालु—६५, १००

उच—१३१

उचंग—१५

उचरइ—३६६, ५८१, ६३१

उच्चरइ—५६८

उची—१३१

उछल्यउ—१७३

उछलित—५८१

उछली—७१, ८६, १७५, ४८३,

५६३, ५६७

उछंगह—१३३, ५५१

उछंगि—५६०

उछव—५६५

उछहु—५५४

उछाहु—१३५

उछाऊ—२२३

उछाव—८६

उछाह—४१६, ५८६

उछाहु—४४, ८७, २२८, ३२२,

४१३, ५६६, ५६६, ५७५,

५८५, ६२१, ६५४, ६५७

उजल—१०३, ३१४

उजायु—१३८

उजैणि—२६६

उभाइ—१७०

उभावलि—१३६

उभिल—४१८

उठ—३८१, ६७२

उठइ—४४४, ४६०, ५१३, ५५६

उठहि—४३७, ४४२

उठाइ—१३२, १३३, १५६, ५५१

उठावइ—१२४, १४४

उठि—६८, १०१, २४४, २७२,

४३७, ४४३, ५५७, ५५६

उठित—२१२, ४१६

उठियोउ—४५१

उठी—४००, ४२५, ५६४

उठीयउ—१८०

उठे—३३६, ३५६, ४३८, ५५८,

५५६

उठी—२८७, २८८

उठी—७३

उठाहारि—४०

उतपाति—६६४

उतरइ—५४४

उतरि—१२३, ३२०, ५४०

उतरु—२३६, ४१२, ६४१

उत्तंग—१५
 उत्तंगु—३१६
 उत्तारउ—५६२, ५८३
 उत्तारण—४२०
 उत्तारि—३४१, ४२२, ५७०, ५८४
 उत्तारयो—२८७, ५५७
 उत्तारी—१०२
 उत्तिमु—३८०
 उत्तिरि—२६६
 उत्थल्यउ—५५७
 उदउ—४२, ५८२
 उविधिमाल—२६६, ३०५, ३१२
 ४५५, ४५६
 उद्यो—३१६
 उद्योत—२६३
 उद्योत—६८३
 उद्यान—५६, ३३८, २४०
 उपए—२६५
 उपजइ—११, १५१, १५३, २३२,
 ४०५, ५०८
 उपजावइ—४३१
 उपजी—३८६
 उपणउ—६, ५६४, ५६८, ६६०
 उपणि—२७
 उपणी—३६३
 उपवेस—६१०
 उपनउ—२७, ११७, ५१७, ५५७
 उपनी—१७७, ४०३, ६७६
 उपनो—३३, ३२८, ३७६
 उपनौ—२८६
 उपर—११, १८३, १८५, २१४,
 २५८, ३३७, ३४२, ३७७,
 ३८१

उपरा—३८१, ३८२
 उपराउपह—१६७, २०७
 उपरि—३८१, ५११
 उपाइ—३६३
 उपाउ—७६, १६४, १८६, २०२,
 २५२, २६२, ३२३, ४८१,
 ५६१
 उपाय—८२
 उबरइ—६७२
 उभउ—२१६, २६६, ३२०, ४५०
 उभो—६७, ३५७, ४२४
 उभे—८६, २१२, ४३५, ४४२,
 ५६३, ५६५, ६३७
 उभो—२०२, २३८, ३६१, ३७५
 उभो—६
 उमइ—२८६
 उमाले—६८८
 उर—२३०, २५०, ५५२, ६६५
 उरइ—५३२
 उरणि—५७४
 उरुषु—२६५
 उल—४२०
 उलगाणे—३३६
 उवरउ—३७०
 उवह—२०७, ४४३
 उवरि—२८८
 उवसंत—२२३
 उवार—४६५
 उवारि—४६५
 उवाह—४६७
 उविहाह—२१७
 उह—८१, ३१३
 उहटे—५२६

ऊ

ऊट्टु—३५८
ऊट्—३५६
ऊण—४२०
ऊतर—६७६
ऊपरऊपर—६१८
ऊभौ—२३५
ऊबट—२३५

ए

एक—३०३, ३८०, ४४४, ४४८,
५८१, ६०२, ६१६
एकइ—५३६, ६५७
एकठा—२५४
एकत—६५४
एकलउ—३८०
एकहि—६१५, ६४६
एकताकक—६४६
एकीलो—४७३
एकु—२५७, २७२, ३५६, ३७८,
३७६, ४३६, ४५७, ५३६,
६०५, ६२०, ६८२, ६६३
एकुइ—३८८
एकुउ—३७६
एकुह—४७३
एगुणसीशर—१०
एतइ—१२६, ४१६, ५८४, ५६३
एतउ—२२१, २६४, ४३३
एतह—११४, ११५, ६१३
एतहि—५५०
एतहु—५७१
एते—३६८, ४२४

एम—३६६, ५५४, ६११
एम्ब—३६, ६६७
एरखनगर—६६५
एसी—६३३, ६५४
एसे—१५१, ४३४, ४६०, ४७८
एसै—१५३
एसो—२६८, २८३
एसौ—१३६, १४८
एस्यो—१४४
ऐह—१८७, २५५, २६५
ऐहु—६५, ३२८, ४०६, ६६७
ऐसी—४८३, ५१२
अंसो—३६४
ऐहु—६२१, ६४३

ओ

ओरइ—६१६

क

कइ—६५
कइथ—३४८
कइवे—३३०
कइसइ—३५८
कइसी—५४९
कउ—२, २८४, ३२३, ३३६, ४०२,
४३०, ४८१, ५१६, ५६५,
५८५, ६०६, ६१२, ६५७,
६७६, ६८०, ६८४
कणकंकरा—६०८
कंकरा—२३६
कंकरा—२१७
कन्बनाक—३४५
कंवर—१६, १६१, ३१३, ६६६

कंचरणमाल—२६४, ५७१
 कंचरणमाला—१२६, १३३, १३४
 कङ्कु—५१४
 कङ्कुक—१११
 कङ्कुस—३४०
 कज्जल—३०
 कठिया—३६८, ३७५
 कडिहा—२३४
 कठोया—३६७
 कठाइ—४३८, ४४६, ४४७
 कण्णालउराउ—१६१
 कणाय—२६, ३११, ३६६
 कणायमाल—१३५, २४१, २४५,
 २४६, २४७, ४४८
 कणायमुकटू—१६५
 कणायघोरू—३४५
 कणिक—६३
 कणौ—३३४
 कत—१०८, २३०, ३६२
 कतहुती—१
 कथंतर—४१७, ४३३, ५६३
 कायंतर—४१३, ६६१
 कथा—११, १३६, १६३, ४५३,
 ६५८
 काह—५०, ५५२, ५७५, ६०६
 कांह—६०, ६३, ६६, ६७
 कनउ—६०३
 कनक—३७४, ५७६, ५६१
 कनकयालु—३८५
 कनकवंड—२३, ५८२
 कनकमाल—२३, २४६, २५१, २६३,
 २७७, ५७४, ६८२
 कनय—५८२
 कनयमाल—२३०

कन्या—२२३, ३०७, ६४६, ६५४
 कनवजो—५७६
 कंबु—६८४
 कंबर्ष—६६८
 कंब्रय—२१६, २४३, २६१, ४१८,
 ५६०, ५६२, ५६३, ६३५,
 ६३७, ६६२
 कंब्रपु—५३०, ६३७
 कंदलु—६८५
 कंघि—२१३
 कपट—६७
 कपड—५०२
 कंपत—३७८
 कंषित—६७, २६५, ६४३
 कमण—६२६
 कमण्ड—२७६, २८४
 कम्मु—२७८, ६८७, ६६०
 कमल—३
 कमंडल—२५, ३१, १४६
 कमंडलु—३६०, ३६१, ३६४, ३६५
 कम्मट्ट—६६७
 कम्बण—४२३
 कम्बणु—१४४, २२६, ३८४, ५२२,
 ५६८, ६७३
 कयउ—४३०
 कपड—२०८, २३३
 कयय—२१२
 कर—३, ५, ३३, ६३, ७०, ७२,
 ७६, ७६, १०३, १६१, २११,
 २३४, २३५, ३५३, ३६०,
 ३६५, ३८३, ४११, ४५५,
 ४६६, ४७४, ४७६, ४७६,
 ४८६, ५३३, ५३६, ५४०,
 ७०१

करइ—२, २१, ३०, ३६, ५२,
 ६६, ७६, ८२, ८४, ८५,
 ८७, ६४, ६५, ६६, ६७,
 १८६, ११०, १२५, १२७,
 १४०, १४४, १५७, १६४,
 १६८, १८१, १८४, १८८,
 १६०, १६१, २०२, २०८,
 २५०, २५१, २६४, २६६,
 २६६, २८३, २६१, २६२,
 २६४, २६८, ३०८, ३२३,
 ३३२, ३३७, ३४२, ३४५,
 ३४७, ३७७, ३८५, ३६३,
 ३६४, ३६६, ४०५, ४१०,
 ४१३, ४१८, ४२३, ४३६,
 ४४५, ४४१, ४७६, ४६२,
 ४६५, ४६७, ४६६, ५०५,
 ५०७, ५३४, ५६८, ५६६,
 ५८६, ५६७, ५६८, ६०१,
 ६११, ६१२, ६१७, ६३६,
 ६४१, ६३७, ६८१, ६८५

करई—५०७

करइस—५६४

करउ—७, १३, २७६, ४६१, ६४७

करकइ—४८४

करकंकरा—१०३

करठहा—३७६

कररा—४६, ६१, १६१, ३०८,
 ४०१, ५४५, ५६४, ६४६, ६८१,

करत—३२, १११

करतउ—६०३

करतं—४२, ६१, ३०१, ३१६,
 ५२६, ५८२, ६८२

करलि—५६३

करंतु—१२२, २६२, ५२६

करम—५८८

करमबंध—१२६

करयउ—५८४

करवहु—५६६

करवाल—७०, १७६, ४८६

करलेहि—७२

करहं—४

करहि—१११, १२१, १४३, १८२,
 १८८, ६२६

करह—४६, ७०, ११३, १४८,
 १६६, १७०, ३०५, ३६१,
 ३८५, ३८६, ४००, ४८१,
 ५५४, ६१७, ६४२

कराइ—१३६, १३६, ४३१, ६५८,

कराउ—४६, ५७, १००, ३६८

कराए—६६६

करावहु—११४

कराहि—५६२

करि—१६, २६, २७, ५३, ८२,
 ८८, १५८, १६७, १७७,
 १७६, १८६, २१३, २१६,
 २३७, २३८, २३६, २४०,
 २४५, २४६, २४२, २७०,
 २८०, २६४, ३०७, ३३३,
 ३३७, ३५१, ३७७, ३६६,
 ४०५, ४०८, ४१८, ४४८,
 ४६६, ४७०, ४७२, ४६६,
 ५१५, ५२५, ५३१, ५३३,
 ५४०, ५७५, ५७७, ६११,
 ६४८, ६५५, ६६८, ६७५,
 ६८७

करिवालु—४६७

करिहा—४७६

करिहि—११०

करी—६५, १४०, १६६, २१५,
 २७६, ३५१, ३४४, ४१८,
 ४१६, ४८८, ६३६
 करण—३४७
 करेह—८०, २२२, ३६६, ६८६
 करे—१३५, २६०, ३५८, ३७८,
 ५०१, ६६२
 कर्म—६६८
 कलकमाल—३१६
 कलयर—१२७
 कलयरू—५६१
 कलयल—५८६
 कलयलु—३२१, ६२१
 कलस—१६, ५६३, ५६८, ५७६,
 ५६१
 कलसह—१६१
 कला—२४
 कलाप—६८१
 कलापु—३०८
 कलि—३१
 कलिगह—५७८
 कलियरू—५६१, ५८१
 कलियलु—१७३, ३१८
 कबण—६६, १४२, १४७, २०५,
 २४१, ३१३, ४४७, ५०६,
 ५३७, ५७३, ५७६, ६८५
 कबणई—४२४
 कबणु—१२३, १२६, १३५, १३६,
 १५७, १८७, १६८, २१०,
 २३६, २७७, ३२०, ४०७,
 ४६४, ४६८, ४७०, ५०१,
 ५२२, ५२७, ५६२, ६२४,
 ६४३, ६६८
 कबसु—६३

कवतिगु—४३२
 कवि—३, ५५६
 कवित्त—६३८
 कविसु—१, ७, १३
 कसु—१४१, ५२४
 कंसु—५३८
 कसमीर—५७८
 कह—११५, १६६, २६०
 कहह—४०, ४४, ५०, ६६, ११६,
 १२३, १४४, १४६, २२७,
 २६३, २७७, ३०५, ३०६,
 ३१४, ३६६, ३७८, ३७६,
 ३६३, ४०५, ४२७, ४३७,
 ४४३, ४४५, ४४६, ४५६,
 ४५७, ५०८, ५२२, ५३७,
 ५४१, ५५०, ५६६, ६०७,
 ६२७, ६३३, ६४१, ६५१,
 ६७५
 कहउ—४८, ६३, २५२, ५४६, ६२६
 कहण—७३, १४७, ५०६, ५४६
 कहत—७५, १७८, ३८०, ६२६
 कहहि—७४
 कहलाउ—४७५, १२८
 कहसा—४०५
 कहहि—६२६
 कहहु—४८, ६३, २४०, २४२,
 २८३, २८६, ४०७, ५४६,
 ६०४
 कहा—२६, ७६, १०६, १५१, २२२,
 ३२६, ४१०, ४१२, ४४६,
 ४४८, ४५६, ५०७, ५०८,
 ६२६, ६३६
 कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३,
 २३०, ५६५, ६७०

कहिउ—३३, ३६८, ३८०, ४१३,

४१४, ५७०, ६२८, ६६६

कहिग—१६८, ४४८, ६४०

कहिठार—५६५

कहियउ—१६०

कहो १५०, १५६, २६०, २६७

कहीए—५६७

कहु—५७, ८५, १००, १०६, १६६,

१६७, १७०, २५२, २५४,

२६२, २६०, २६७, २६८,

३०१, ३०३, ३०५, ३०६,

३२६, ३२८, ३३०, ३८४,

३६०, ३६४, ४१०, ४३८,

५४३, ५४५, ५६४, ६०७,

६२४, ६२५, ६२६, ६४२,

६६६, ६७०, ६६८

कहु—३४, १०४

कहे—३६७, ४१५, ५१४, ६३२,

कहै—१६६, २८५, ३३५, ४२१,

४४४, ४५५, ४८५, ५१२,

६२८

कहो—३२२

कहो—२५५, ६०६

कहयउ—२०५, २५५, ३४०, ३६६,

५१५

कहयो—६२३

काके—५५

कागु—४८४

काज—४२७, ६८५

काजु—४१६, ५१५

काटह—३३६

काटे—४२६

काटिगो—४८४

काडह—१७६

काड—२६६

कान—३२४, ३६३, ४२२, ४२५,

४२६

कानकेजि—५७८

कान्ह—६०, ६६, १००, ४५२, ६६५

कान्ह—५६, ४५८, ५४२, ६०८

कांपह—४५०

कापह—४५३

कापरछाए—५७६

कांति—६१२

काणि—११३, २४१, २४७, २७२,

३६१, ५१७

काम—५७, ३४१, ३४३, ४३३,

४३४

कामबाण—१२, ५४, २३६

काममुंदरो—२३४

काममूंदरो—२१५, ६०७

कामरस—२४१

कामिणि—१२१

कामिणी—३५६, ४१६, ५६३, ५६७,

५६८, ५८१

कारण—२६५, ३६६, ४०६ ४१५,

४१६, ५०८

कारण—१२७, १४०, २४१,

कारण—२६५

काल—३१, ६८, १६८, २०५,

२७६, ४८६, ५०२, ५३६

कालसंवर—१३६, १५६, १७२,

२५१, २५२, २८५,

५४७, ५४८, ६७८

कालसंवर—२७७

कालासुर—१६८

कालि—४४६

कालु—१६६

कालुगत—६६४
 कालू—४५
 काली—४८४
 कायर—४६१, ५७६
 कासमीर—३
 काह—५६०
 काहउ—१४१, २७२
 काहा—४०८
 काहुस्यउ—३६
 काहे—२५५, ३३३, ३८१
 काहो—१०८, ३५८, ३६२, ३६३
 काहो—१२५, १४३, ३५५, ३८५,
 ३६३, ४७०
 किउ—६६०, ६६१
 किए—६८३
 किकर—२००
 किमु—४०४
 किजह—५६६
 किउजह—६५६
 किन—३१०, ३३४, ३४०, ३७१,
 ४७१, ४७३
 किन्हु—३६३
 किम—४८, ७३, १७७, ३०३,
 ४५८, ६४७
 किमह—४४०
 किम्ब—३०२, ४६०, ५५५
 किम्बहउ—५७५
 किमाड—१७
 किमि—२८४
 किमु—४०५, ४०६
 कियउ—१४१, २१०, ३२८, ३२६,
 ३३६, ३६७, ४३२, ५३३,
 ५६२, ६१०, ६१६, ६२६,
 ६५०, ६५६

कियो—८८, १८७
 किरणि—५६५
 किलकड़—५०४
 किसन—५४२
 कोए—२७४, ४४४, ६३०
 कोमह—१४२
 कोम्बहुं—४३८
 कीयउ—२८, ३२, ४३, ५८, ७६,
 ८६, १७६, १८५, १८६,
 २२१, २४८, २५२, २७२,
 २७३, २८४, ३४२, ३६४,
 ४३६, ४८८, ५८५, ६०६,
 ६१६, ६३०, ६५२, ६७८,
 ६६४
 कीयह—५३०
 कीयो—८८, २८८, ५६१
 कीर—५७८
 कीरति—५८८
 कीरतो—२४३
 कीहु—४७
 कीडा—१३०, १८७
 कुकडहि—६१७
 कुकडा—६१८
 कुकुवार—३८२
 कुकुवारठ—२५०
 कुटम—५५५, ५८५
 कुटमु—५६०
 कुटव—५६१, ६८०, ६६०
 कुंड—२०८
 कुंडल—२३५
 कुंडलपुर—५६, ५६, ८४, ४७२,
 ६२३, ६३२, ६५८
 कुंडलपुरि—३८, ६३५
 कुहु—३४६

कुतालु—३२, ६५, ११०
 कुंभु—१०
 कुमर—१७६, १८३, १८७, २५१,
 २६४, ६२४, ६७५
 कुमरहि—२६४, ५६६
 कुमरहि—१६७
 कुमरु—२६८
 कुमार—२५७, ३०५
 कुमारु—३३३, ४६१
 कुम्बर—२२२, २२७, २५८, २४८,
 २५७, २५८, ३५४, ५८५
 कुम्बरहि—१८५, २१८, २३०,
 कुम्बरु—१३३, २१३
 कुम्बार—२१४
 कुम्बारि—४०, ४१, ३०३, ३०७,
 कुम्बारु—३६, १३४, १३८
 कुरवइ—११४
 कुरवि—४६१
 कुरुखेत—२७६, ६६१
 कुल—६८३
 कुलदेवी—५३७
 कुलमंडणु—५६१
 कुलह—५०२
 कुली—२०
 कुवडउ—२७०
 कुवडा—३६५
 कुवर—६२, १३६, १५७, १६५,
 १६६, १६७, १७२, १७५,
 १७७, १८६, १६२, १६६,
 २०३, २२६, २३७, २४७,
 २५३, २५४, २६४, २६६,
 ३०६, ३३१, ३३५, ४३५,
 ४६४, ५४५, ५५३, ५५४,
 ५७५, ६१४, ६१५, ६१८,

६२२, ६२४, ६४५, ६५५,
 ६५७, ६५६
 कुवरहि—५८५
 कुवरि—३८, ५६, ६६, २१६,
 ३०८, ३५५, ६२१
 कुवरु—१५६, १५६, २३८, २५८,
 २६५, ३२२, ४७१, ५६०,
 ६३७
 कुसमवाण—२२४
 कसमरस—६६३
 कुसल—२६
 कुसुमवाण—२३५, ५१६
 कूक—१२१
 कूलि—६००
 कूजउ—३४५
 कूटइ—२५०, ३४२
 कूटहि—३८२
 कूटि—४१७
 कूड—२४६
 कूडोवूधी—१०६
 कूडोया—३२, २४६
 कूर—४०२
 कूवा—१६१, ३१४
 कूते—७
 केउ—४७६, ४७७, ४७८, ४६१,
 ४६२
 केतउ—२७३
 केते—६२६
 केमु—६८१
 केम्बु—७०१, ३७०
 केला—३४७
 केलि—३४६
 केव—४४५

केवदउ—३४५
 केवल—६६४
 केवलज्ञान—५६४
 केवलज्ञानु—१५२
 केवलराण—१२
 केवली—१६०, २६०
 केवलु—६६०
 केस—२५०, ४२०, ५८३, ५८४,
 ६८३, ६८८
 केसइ—५८३
 केसव—४८६, ५०१, ५१०, ५२४,
 ५३५, ५५१
 केसु—५०६
 केसे—६४
 कंलासहि—६५६
 कोइ—१, ३८, ४०, ४७, ५५, ६६,
 १०५, १२४, १३४, १६६,
 १६८, १६६, १७६, १८३,
 १६२, २१८, २४३, २६७,
 २७८, ३३६, ३५४, ३५६,
 ४४४, ४८६, ४६७, ५११,
 ५३६, ५५३, ५६६, ५६८,
 ६६३, ६६७
 कोउ—२, ४७६
 कोट—३१४
 कोठि—६६८
 कोण—१६६, ४४६
 कोडि—२२, ५१६, ६१७, ६१८
 कोडिधुज—१६
 कोडी—३०७, ३८६
 कोझ—१७६
 कोत—४७१, ४७४
 कोतिगु—३६४
 कोतु—४७६

कोम—४६६, ५०८, ५१७, ५२०
 कोपा—३३१
 कोपाखुड—७६, ४४१, ४६३, ५१८,
 ५२७, ६४८
 कोपाखुडु—३३१, ५२५
 कोपि—६८, २१०, ३४०, ४३५,
 ४७४, ५०६, ५११, ५३७,
 ५४२
 कोपिउ—६७, २५६, ३६३, ६४३
 कोपिय—३०४
 कोपु—३३, ५३३
 कोप्यो—१७२, ४६०, ४७४, ४८०,
 ५१६
 कयो—५१३, ५२४
 कोमलि—५२
 कोवंड—४७४
 कोवंडु—६४
 कोवानल—३६
 कोवि—५०२
 कोसु—६८८
 कोह—२८७
 कौत—४६७
 कौतीनन्दना—४५६
 कोपाखुड—४६६, ५२०
 कौरो—२७६, ६६१
 कोसाव—२३४
 क्षण—३७, ४४०
 क्षत्री—५५६
 क्षिपति—६८०
 क्षिम—५८४
ख
 खइ—४५, २७०
 खउ—४४४, ६१३

लग—३७, २६७, ५६०

लङी—५३

लगा—३५, १२२, १३१, २१८,
२२१, २२५, २३७, २८८,
२६१, २६२, ३६०, ४०२,
४२४, ४३०, ४३१, ५३४,
५४५, ६२८, ६६६, ६६०

लगी—२०, ४६०, ४६४, ४७३,
४६५, ५३०, ५१०, ५११,
५१२, ५२२, ५३०, ५५६,
६०६, ६४८

लंड—४६, ३०६, ५३४

लंडउ—३६

लंडव—४६८

लंवार—३६७

लपइ—६६७

लयंकर—६६६

लयंतु—४०२

लर—५०६, ५३२

लरउ—३१६, ६४३

लरग—५४०

लरी—६१, ६८, १३१, १४०

लरे—८१, १६१, १८३, ४५८, ५३६,
६१५, ६३२

लरी—४४५

लल—५४१

लली—३६४

लाइ—३४, २०६, ३५०, ३५३,
३६१, ४०४, ४४४, ५६६

लाची—३३८

लाजतु—३५५

लाट—६७

लात—४४४

लारि—४६६

लिउकरण—६६७

लिण—२६४, ५२१

लित्रपालु—६

लिरणी—३४८

लीप—३४७

लीर—१६२, ४०८

लुटी—३६३

लुषा—३८४

लुर—७१

लुररइ—४८३

लूडउ—३६४, ४११

लूडा—३६६

लूडे—४०३

लेउ—५७, २१६

लेत—५३७, ५३८

लेमु—६५४

लेयउ—५८७

लेव—५५२

लेल—६१७, ६०६

लेलण—१८७

लेमंघह—१५०, ५६३

लेह—७३, १७५, ४८३

लोडा—४८३

लोडि—३०७, ३५३, ७०१

लोडी—२७७, २६८, ३७१, ४११

लोल—३०५

लोहणी—२७६

ग

गइ—१०५, १११, २५५, ३५६,
४५३, ६०८

गई—४२४, ४२५

गउ—२०८, ३७२, ३८८

गऊ—६३

गए—६६, १२०, १६६, ३३५,
४३५, ४३६, ४४१, ५६७,
६१५

गगन—१६३

गज—३१६

गजा—५१, ४६६, ४७४, ४६५

गगात—२०

गगाहर—५६६, ६७१, ६७४

गगाइ—१६३

गगो—३१२, ५७६

गगो—२३६

गंजहि—१७५

गंभीर—१६

गम्बलि—२०

गय—४८२, ५०४, ५२७, ५३०,
५३२, ५५६, ६४५

गयउ—२६, ४१, ५३, ५६, ६७,
६६, १०३, ११६, १३३,
१३५, १३७, १४५, १४८,
१५०, १८२, १६१, १६७,
२१०, २१२, २१६, २२५,
२३०, २६२, २६४, २६८,
२७०, २८३, २६६, ३२०,
३३७, ३५६, ३६५, ३६८,
३७६, ३६८, ४०२, ४१४,
४४२, ५१६, ५५२, ५५५,
५८६, ६०२, ६३६, ६४६,
६४३, ६५८, ६६४, ६७४,
६७५

गयलि—१७३

गयलिहि—१७५

गयवर—७०

ग्यारह—६, ११

गये—११, ६४, ६१, १०२, १११,
११५, २१२, २१५, २२१,
२५४, २७४, ४७२

गयो—८२, ८३, १०१, १६३, २०४,
२४४, २५२, २६५, ४४६,
५२०, ६२०, ६२३

गजं—२१

गजइ—१७३

गरहू—३१६

गर्भ—१११

गरव—६६

गरवो—२१३

गरहट—६३

ग्रसइ—५०५

गरहु—५३८

गरवो—५४६

गलि—३३६

गले—३०६, ६४६

गले—१८२

गहघउ—२८२

गहवरइ—१४०, ५८६

गहवरि—१४७

गहि—२०२, २१५, ३२३, ४३८,
४४०, ४४६, ४४६, ४५१

गहिउ—२४१, २४५, ५४०

गहिर—१६

गहीरु—३४५

गहे—६४४

गाइ—४६८

गाउ—२८४

गाउ गाउ—३७

गाए—६३८

गाजइ—३८१

गाजिउ—४७४

गाबल—४७८
 गाबहि—७१
 गाजे—५६१
 गांठि—६५
 गाडी—६७, ६८
 गाम्ब—१५
 गामति—४२३
 गाम्ब—१२०, ४५७, ५६७
 गाबत—३५६
 गाबहि—१२१
 गालु—३८७
 गिरबरि—१८६
 गिरि—२८०, २६५, ३७३, ५४१
 गिरिबर—५०६
 गीत—५६३, ६३८
 गोघ—१४४, १८०
 गोधीणि—५०५
 गोम्ब—६४४
 गुम्भु—३१५
 गुटिकासिधि—१६४
 गुडहि—४७७
 गुडहु—६८
 गुडी—५६३, ५६७
 गुडे—१७३, २५६
 गुण—५२, १३६, १४२, ३११,
 ५२०, ६६६
 गुणउ—७०१
 गुणखिलउ—१२
 गुणबह—६६५
 गुणबंत—५६५, ५६७, ६१२, ६१४
 गुणहु—६२
 गुणे—६४७
 गुणी—६१७

गुपत—४४६
 गुफा—१८६, १६७, १६८, २००
 २०१, २१८, २२६
 गुबालु—७५, ११०
 गुर—४०६, ५२१
 गुरहु—७०, ४७५
 गुरु—१३, ४०७
 गुजर—५७६
 गुडी—८६
 गेह—११४
 गेयर—६७, १७३, २३५, ४६५
 गेयरु—२१२, २१३
 गेवर—२५६, ४७५, ४७७
 गोडइ—४४६
 गोडड—४३८, ४४०, ४४६, ४५१
 गोतु—४०७
 गोहल—४४१
 गोहिब—४३८
 गोहिल—५८, ६१, १०५, १२६
 ४२२
 गोहिली—४१६

घ

घटइ—४०
 घटाउ—६८७
 घटाटोप—४८१
 घडिक—६८०
 घण—१२, १७३, २८१
 घणउ—११, ३६, २६६, ३००,
 ३१६, ३१८, ४०६, ४४८
 ५४६, ५५०, ५६६, ६५१,
 ६८०
 घणघोर—२०१

घली—६४, १०८, १०६, १५४
२४१, २४३, २४७, २८८
३६४, ४३४, ४५४,

घणे—२४, ६०, ३४७, ३४८
३५५, ४२६, ५२६, ५७८,
६७८

घली—१५५, ४५३

घंठ—२६३

घर—८८, ११५, १२६, १३६
१७७, १८४, १६०, २३७
२८८, २८६, २६४, ३५८
३८३, ३८४, ३६६, ४०६
४१४, ४१६, ४२२, ४२५
४४३, ४५३, ५६०, ५६२,
५६३, ५६४ ५६५, ५६६,
५६७, ५७२, ५७४, ५८६,
५६६, ५६६, ६०४, ६१३
६५२, ६८२, ६८३, ६८७

घरह—४०५

घर घर—८४, १२० ५६३, ५८१,
५६१ ६५७

घरणि—१५४, २४३

घरबार—६७५

घरह—११७, ६६५

घरि—२३०, ४०२, ६१६

घरिघरि—१२१

घाह—३६५, ६६०

घाउ—६८, १७७, ५४५, ५६० ६४७

घाघरी—२६३

घानी—५३१

घारह—२६१

घालह—३८३, ३८८, ५२१

घालउ—१२५

घालहु—४७

घालि—१२४, २५६, २५८, ३६३,
४७७, ४८७, ५३८, ६१०

घालिउ—२६२, ५३६, ६०६, ६६२

घालियउ—६२७, ४५१

घाली—१४२, २८७, ३५०, ३५३

घाले—३५१, ५५३

घालें—१७७

घाल्यो—२५६, ३३१

घीउ—२५३, ६४३

घृत—४७४

घृतु—१४२

घेह—७१

घेडउ—७१, ३५८

घोडे—३३१, ३३४, ३३८, ३४१

घोडो—३४२

घोडो—३२७

घोमि—१२२

घोर—१६८

घोरो—३२६, ३३७

घात—७६

च

चइ—३१४

चउ—५२६, ६४७

चउक—५६२

चउत्थउ—८

चउतीसह—१२

चउपास—१८, ३१६

चउवारे—१६

चउरंग—१७३, २८६, २८७, ४६६,
५३२

चउरंगु—२६२, २७६

चउरासी—३८८

अउवल—२३
 अउबीस—७
 अउबीसउ—७
 अकचूर—५२
 अक्र—५१, ८१
 अकला—३८७
 अकवड—४६, १५३
 अककवति—१५०
 अककेसरि—२१
 अकेसरी—५
 अडाइ—६७
 अढाइयउ—५१७
 अडिउ—५२१
 अडिवि—२१२, ३२६
 अडइ—२१४, ३३७, ३५८, ३६६,
 ४३८, ४७७, ५०६, ५०६
 अठउ ३३४
 अठहु—६८
 अठाइ—६५
 अठाई—२८०, ४६६, ६४८
 अठावण—३३५, ३३६, ३५६
 अठावहि—३५७
 अठि—१११, १३०, १३५, १५८
 १८६, २३५, २६५, ३५७
 अठिउ—२५, ३३१
 अढी—३, १८७, ३४३, ३५४
 अढीइ—४६५
 अढे—१०२, २८१, ४६२, ४६६
 अढयो—२६३
 अतुरंग—७२
 अंचल—३२३, ३२४
 अंब—१३६, ६४१
 अंब्रकांति मणि—६०१

अंबन—३७३, ५६३, ६६६
 अंबप्पउ—८
 अंब्र—२०३, २३४, ५१८, ५४०
 अंब्रवयणि—४२
 अंब्रहंस—५३६
 अंबु—५४१
 अमकइ—५३६
 अमकयउ—६०२
 अमतकार—३३७
 अंपइ—६२
 अंपउ—३४५
 अंपि—३६
 अंपिउ—२३१
 अमर—७२
 अमरंत—७२
 अम्बर—२३३
 अयउ—६१३, ६१४
 अर—४२६
 अरण—३३६, ३४०
 अरणु—३७४
 अरहु—३४१
 अरित—२६६, २६७, ४२१, ६६२
 ६६५
 अरितु—११, १७४, १८३, १६८
 २६५, २७३, ३२० ४२६,
 ४३२, ४६२, ५३५, ६६७,
 ७००
 अरेइ—६८६
 अरंत—५०२
 अरइ—८५, १५२, २०६, २६७
 २६४, ४७६, ५८४
 अरई—३३

बसउ—१७३, १६६, ३०८, ४४८
 ५१०, ६५२
 बलत—२६०, ३१२
 बलहु—४६, १०१, ४८१, ५०५
 ५५४, ५८६
 बलिउ—१२४, १५८, १६४, १७३
 २४८, २४६, ३१२, ३२६
 ३५५, ३६०, ३६५, ४४१,
 ५०६, ५३२, ५५१, ५६४,
 ५८१, ५६०, ६५८
 बलिउ—१८३
 बलियउ—२०८
 बली—६१, ८५, २६६, ३०६, ३५६
 ४१६, ४८३, ५२८, ५६३,
 ५६८
 बलीउ—३४, १३०, ४४७
 बले—१२८, १७५, १८७, ३०७
 ४८२, ५२६, ५२६, ५४०
 ५६१, ६४८, ६५५, ६६५
 बल्यो—३५, ८३, २३७, ६२७
 बल्योउ—३३, २३६
 बबइ—४६, ११२, ३४३
 बबर—१६६
 बबरंग—३२०
 बबरंगु—८३
 बहि—५३
 बहु—१८६
 बाउ—८०, २८०, ४८१, ४६६
 ५१६, ५२०, ५२५, ६४८
 बाउरंगु—४८२
 बापि—१२६, ३४४
 बाप्यो—१३०, १५५
 बाम्बइ—५४०
 बाबर—२३

बारि—३२४, ४५७, ५८१
 ब्यारि—८०, ३७४, ३६७, ५६८
 बारिसो नानाणो—२५६
 बारू—३४७
 बारयो—३२४
 बालइ—११०, ५७०
 बालि—१४५, ५१५
 बाले—८८, ४७८, ५६४
 बालं—४८७
 बाल्यो—१४६, ६२८
 बाबर—५८२
 बाहि—१४४, १६७, २२६, ३०३,
 ६०५, ६०६, ६८६
 ब है—५४५
 बाहो—३३४
 बित—१७७, ५१६, ६५६, ६६३
 बितब—६६०
 बितह—३६३, ४०३
 बित—६१, ६०१
 बितइ—३५, ३८, ३४६, ६२२
 बितइत—३६
 बितयउ—३६७
 बितयऊ—६११
 बितबइ—४१
 बिताबल्यु—६७५
 बिदिउ—१२२
 बितु—३१५
 बिन्ह—७२
 बिललाह—४००, ४०१
 बीतइ—६३८
 बेडी—३६२
 बेताले—६६०
 बेरी—३६१
 बेली—१०६

चुटो—१४६
 चुंमइ—४२६
 चुंमियउ—५६०
 चुरइ—४०१
 चुटो—२५
 चुन—६३
 चूरह—७८, १७६
 चुल्हि—४०१
 चोपटु—३४२
 चोयास—३१४, ३१७, ३६६
 चोर—५७८
 चोरो—६६, ६६, ७६
 चोहटे—१८, ३६५, ६३७, ६४४
 चोवहसं—११
 चोरी—४७२
 चोहुजण—६५६

छ

छइ—८६, ६३२
 छठि—१२२, १०७
 छठी—५४७
 छण—६४५
 छणंतरि—६६३
 छत्र—१६६, २३३, ५०३, ५२२
 ५८२,
 छत्रजि—५००, ५२६
 छत्रो—२५, १४६, ४८१
 छंडु—१३७
 छपनकोटि—१२८, ३७३, ४४८
 ४५३, ४६०, ५५८,
 ६५५, ६६५, ६६६,
 ६७१, ६७८,
 छपनकोडि—२२, ४६, ४६६, ५६४,
 ५६५

छपनकोडो—८६
 छल—४७२
 छलि—६३४
 छलु—२४५
 छवाइ—५६०
 छहरस—६६२
 छाइ—८१
 छाए—१७, ५७६
 छाडइ—८४
 छाडि—१६६, १६१, २४१
 छाडी—२७२, ३६६
 छात—४८२
 छाडघो—५५७
 छाक—६८४
 छायाउ—६८६
 छिनि—८२
 छीनि—२६५, ३०८, ४०२, ५१६,
 ५२१
 छीनी—२६४
 छीने—५२३
 छडावहु—६४३
 छुरी—२१५, २३४
 छुरीकार—२६०
 छुहारी—३४८
 छटउ—२७६
 छुरी—४७६
 छेव—४५६
 छोटो—३६६
 छोडइ—२६७
 छोडउ—८५
 छोडहि—४२७

છોડિ—૪૬, ૪૭, ૪૪, ૧૮૪, ૨૬૮,
૨૭૩, ૩૦૭, ૩૭૨, ૫૧૬,
૬૨૬

છોડિહ—૨૩૦, ૬૫૨

છોડો—૬૧, ૨૨૧, ૨૫૦, ૫૧૬,
૫૨૦

છોડો—૨૮૭

છોરી—૬૮, ૨૮૭

જ

જહ—૭, ૪૦, ૧૦૬, ૨૪૫, ૩૦૦
૩૦૪, ૩૧૭, ૩૨૨, ૩૩૦,
૩૪૬, ૪૦૪, ૪૪૮, ૪૮૮,
૫૮૩, ૬૪૩, ૬૫૪, ૬૬૭
૬૭૬

જહુ—૪૨૬

જહતો—૩૫૨

જહતે—૩૦૦

જહ—૧૩, ૭૬, ૨૧૦, ૨૪૬, ૨૫૭
૨૮૮, ૪૪૦, ૫૧૬, ૫૬૦
૬૭૪

જહ—૧૬

જહુ—૧૦૩

જહત—૫૬૬

જહુ—૧૭૫

જહિહ—૩૧૬, ૫૬૬

જહિત—૧૬૨

જહી—૫૨

જહે—૧૭, ૫૮૨

જણ—૩૩૫, ૩૩૬, ૪૪૧, ૫૬૦,
૬૨૮, ૬૩૨, ૬૩૬, ૬૫૬,
૬૫૭, ૭૦૧

જણણ—૨૪૩

જણણો—૨૪૮, ૬૬૫

જણવ—૬૨૬

જણહ—૭૦૧

જણા—૪૫૬

જણાહ—૫૫, ૬૬, ૨૫૭, ૩૬૨,
૩૭૫, ૪૦૦, ૪૨૫, ૬૨૦

જણાવહિ—૫૦૫

જણિહ—૧૭૫

જણિત—૩૧૪

જણુ—૮૭, ૧૫૩, ૪૧૭, ૫૬૦

જણો—૮૬

જણાં—૧૬૬

જવ—૧૦૫

જન—૫૬૩

જનકુ—૬૩

જનનો—૬૩૧

જન્મ—૧૪૧, ૫૬૦

જન્મભૂમિ—૫૦૮

જનમ—૧૫૫, ૨૪૫, ૬૬૭, ૬૮૬

જનુ—૭૧, ૫૦૫, ૫૦૬, ૫૬૧

જનેહ—૨૭૪

જપહ—૧૦૩, ૨૨૬

જપિહ—૨૩૧

જમ્બુદીપ—૧૫૨

જમ્બુદેશ—૧૪

જપહ—૫૦. ૧૭૭, ૨૪૨, ૨૬૮,
૩૦૩, ૩૧૫, ૩૧૭, ૩૬૨
૩૭૧, ૪૧૨, ૪૧૩, ૪૨૫
૪૭૩, ૫૧૦, ૫૧૨, ૫૨૧
૫૩૦, ૬૧૧

જંપણ—૧૮૨

જંપાણ—૫૫૬

जंघिउ—२६५, ६४३

जम—५०६, ६८४

जमरंधि—७७

जमपाणि—५३५

जमराइ—५०५

जंभीर—३५७

जंबइ—६१२

जंबवती—६०६, ६०७

जमसंवर—१०६, १३२, २४४, २४७

२४८, २६२, २६२, २८३

४०६, ४४४

जमसंवह—२३१, २३७, २६४, ४१४

४७१, ४७३

जम्मह—२५२

जमि—३१४

जम्मु—६८७

जंघु—४३

जय—६६६, ६६७, ६६२

जयऊ—६

जयजयकार—५६५

जयन—१५२

जर—७

जरबकुमार—६७३

जरबकुमार—६७४

जरासंध—४६५, ५२४, ५३८

जरी—२३३

जल—२०५, ३६४, ५२६

जलमह—१०६

जल सोखणी—१६३.

जलहर—५६१

जब—६८, ६६, १४७, १६३, १६४,

१६७, २०८, २१६, २६५,

२६६, २६६, ३७२, ४२६,

४६३, ४४०, ४४३, ४६०,

४८१, ६४७, ६१२

जबइ—५६७

जबते—५६६

जबहि—१८३

जबसंवर—१६४

जस—३१६

जसु—७००

जसोधर—२७०

जह—२४३, ३१६,

जहो—३८, ६०, ६२, ६४, ६५

१०५, १२४, १३०, १५३,

१५५, १६६, २१८, २२०,

२२५, २२८, २४०. २५८,

३३८, ३४३, ३५२, ३५४,

३६१, ४१६, ४२६, ४३४,

४५२, ४६३, ५४४, ५६३,

५६६, ६४०, ६४६, ६६५

जहि—३०, ६६, १२६, १४०, १५०

१७४, २२१, २६३, ३१५

३१७, ३१८, ३४६, ३६०

४०६

जाइ—३५, ५८, ६०, ६२, ६७,

८५, ७६, ८१, ८३, १०१,

१०४, ११०, ११४, ११६,

१३०, १३६, १४१, १४३,

१५०, १५७, १५६, १६३,

१७५, १६८, २२०, २२४,

२३०, २३७, २३८, २४६,

२५१, २५७, २६१, २६३,

२७६, २८७, २६४, ३३८,

३४४, ३४५, ३३६, ३५२,

३५८, ३५६, ३६०, ३६१,

३६७, ३६८, ३७१, ३७३,

३७५, ३७७, ४०५, ४३४,

४३५, ५६३, ४८६, ५१७,
 ५२६, ५४३, ५४४, ५५०,
 ५५१, ५५७, ५६०, ५६३,
 ६०६, ६१६, ६२६, ६२८,
 ६४३; ६५३, ६५८, ६६०,
 ६६२, ६६८, ६८०, ६८२,
 ६८८

जाइति—४५२

जाके—११२

जागइ—१२६

जागरण—१२२

जागहु—१२७

जागि—६६, ११७, ६७२

जागिउ—१२८

जाख—१६०

जाख—१३८, ३००, ३०१, ३०२,
 ३०४, ३४७, ३६०, ४६०

जाखइ—३६, १२६, १५४, १५७,
 १७७, १६६, १६२, ३१७,
 ३४४, ४४८, ५३५, ५६६,
 ६०७, ६१०, ६२४, ६७७,
 ६७८

जाखउ—१४६, ४०५, ४६६

जाखहि—२०

जाखहु—६३६

जाखि—४, १३३, १३८, १६५,
 २०३, २०८, २४१, २४४,
 ३८७, ५६२

जाखिउ—६५, ७६, ४२६, ५६५

जाखिए—१६

जाखिक—४७४, ४८६

जाखिति—४३६

जाखी—२४१, ४५८, ६४५

जाखु—१३८

जाखै—१६५, १७५, २५३, ३२०,
 ४६८, ४७४

जाखोउ—६३३

जाखी—१७, ७२, ७७, २८०, २८१,
 ४२७, ४८३, ५३६, ५४१,
 ५५७, ५८२, ६४३, ७०१

जात—६६४

जाति—६४७

जावउ—२२, ४६

जावउराइ—६२

जावउराउ—२७, १०६, ६०१

जावउवीर—५४

जावऊराउ—१७

जावम—४६१, ५२६, ५५५, ५६०,
 ६३८, ६५५, ६६५, ६६६,
 ६७५

जावम्ब—५०२

जावमराउ—४७५, ५१७

जावमराय—२४२, ६३६

जावमुराउ—६४०

जावव—४६८, ५५८

जाववन्हि—४७४

जाववराउ—१२८

जावो—४६६

जावो—४३८, ४६०, ५०२, ६२५,
 ६४३

जावोनी—४५७

जावोराउ—५२५

जानि—६६५

जाप—१०३, २२६

जाम—३२, ५४, ६८, १२२, १४५,
 १६३, १८१, २८०, २८२,
 २६२, ४११, ५०१, ५१८,
 ५१६, ५४०, ५४२, ५६४,
 ६२२

जामबंती—६०८
 जाम्ब—५२८
 जायो—२७४
 जालइ—४४०
 जालामुखो—५
 जालु—५१
 जाह—१७७
 जाहि—१०१, ११२, ३०१, ४३७,
 ४४२, ४६४, ५१६, ६८७
 जाहु—३८६
 जिउ—५४३, ६८६
 जिउजाहुति—५७६
 जिण—७, ११३, १८७, २६६,
 २६७, ३३४, ४१७, ६७७
 जिणइ—४६३, ४७०
 जिणऊ—४६१
 जिणभवरण—२६५
 जिणभवण—१८७, १८६
 जिणभूवरण—२७
 जिणमु—१६६
 जिणवर—२, ३१४, ६५६, ६७५
 जिणवर—१२, ४६१
 जिणबाणी—६६८
 जिणसासन—६
 जिणहु—६६४
 जिण—५५२, ६२७, ६५१
 जिणउ—२११, ५१४
 जिणद—६५६
 जिणवि—१७४, ४६१
 जिणु—६५८
 जिणो—५०८
 जिणो—५०२, ६१८
 जिणोसव—६६६
 जिणइ—५०२

जित्यो—५४७
 जिन—६६, ७५, ११६, १५६,
 ३०५, ३५३, ३७१, ४११,
 ४२०, ४८१, ६६४
 जिनके—४६०
 जिनुसरणु—६६७
 जिन्हहि—५०२
 जिन्ह—५३६
 जिम्ब—४१२, ४१३, ६६०,
 जिम—१०४, १०६, ४६०, ५०५,
 ५८६, ६८३
 जिमहि—५५६
 जिमू—१८१
 जिमि—१०७, १३६
 जित्यउ—१८३
 जियत—१८५
 जिसकी—५७२
 जिहां—८६
 जिहि—४७, १२७, २६४, २६६,
 २७३, २८४, ३१८, ४८०,
 ५१३, ५५०, ५५२, ५५३,
 ५६५, ५६०, ६००
 जोउ—२२०, २३६, ६६८, ६८३
 जीतइ—५३६
 जीतहु—१६५
 जीतहुगे—७३
 जीतिउ—५३८, ६५१
 जीत्यो—५४८
 जीभ—२७२, ४८६, ५३६
 जीव—२३२, ४८५
 जीवण—४०१
 जीवत—३७०
 जीववानु—५११

ગુગત—૩૦૪
 ગુગતત—૨૪૦, ૨૪૮
 ગુગતિ—૪૮, ૪૩૪
 ગુગતો—૨૪૬
 ગુગલ—૩૬૮
 ગુગલુ—૨૧૧, ૨૩૬
 ગુમ્—૧૬૭, ૨૭૪, ૪૬૭
 ગુમ્મ—૫૪૨
 ગુમ્મલ—૨૦૬
 ગુમ્મલ—૪૬૬, ૬૪૮
 ગુમ્મુ—૨૧૦, ૫૩૬
 ગુમ્—૧૬૫
 ગુમ્લ—૨૩૫
 ગુમ્લુ—૨૧૭
 ગુમ્લી—૩૪૩
 ગુમ્—૧૩૮, ૧૬૮, ૧૮૨, ૨૨૪,
 ૪૪૮, ૫૧૪,
 ગુમ્મ—૪૫૧, ૪૬૨
 ગુમ્મલ—૪૭૮
 ગુમ્મિ—૧૮૧, ૪૬૮, ૫૦૧, ૫૫૫
 ગુમ્—૧૮૦
 ગુમ્—૬૧૬
 ગુમ્—૧૬૬
 ગુમ્—૧૧૪, ૧૧૬, ૬૭૭
 ગુમ્—૨૮૫
 ગુમ્—૪૬૬
 ગુમ્—૪૩૧
 ગુમ્—૩૭૫
 ગુમ્—૩૬૦, ૪ ૩
 ગુમ્—૩૬૧
 ગુમ્—૩૬૨
 ગુમ્—૫૬૦

ગુમ્—૫૫૨
 ગુમ્—૪૦૦
 ગુમ્—૧૨૪, ૧૮૬
 ગુમ્—૩૨૬
 ગુમ્—૪૦, ૩૦૪
 ગુમ્—૪૭૦
 ગુમ્—૪૭૦, ૫૭૫
 ગુમ્—૨૬, ૪૦, ૬૪, ૩૭૦, ૫૪૮
 ગુમ્—૧૬
 ગુમ્—૩૩
 ગુમ્—૨૧૧
 ગુમ્—૬૩, ૧૪૮, ૧૬૧, ૨૦૨,
 ૨૨૨, ૩૫૩, ૪૫૫, ૭૦૧
 ગુમ્—૪૫૮, ૬૧૨
 ગુમ્—૪૦૪
 ગુમ્—૬૬૦
 ગુમ્—૬૫૩, ૬૬૨
 ગુમ્—૧૮૬ ૩૬૬

મ

મકોલ—૧૬
 મકો—૩૬૨
 મકો—૪૮૭
 મકો—૫૨૫
 મકો—૬૬૦
 મકો—૬૬૦
 મકો—૧૭૦, ૩૮૬
 મકો—૬૬૬
 મકો—૧૨૦
 મકો—૧૫૫
 મકો—૬૭
 મકો—૧૧૬
 મકો—૬૮

ટ

ટંક—૩૬૬, ૩૭૦, ૩૭૧

ટંકારિડ—૨૮૦

ટંકારુ—૭૦, ૪૬૫

ટલટલ્યડ—૫૪૧

ટલિડ—૬૭

ટલૈ—૧૧૬

ટલ્યડ—૨૪૬

ટાંગ—૩૭૨

ટાટણ—૪૭૮

ટાલ—૨૫૮

ટોકૌ—૩૬૨

ટેકતુ—૩૬૦, ૩૭૬

ટોફ—૪૨૫

ટોપા—૪૭૮

ઠ

ઠપડ—૪૪, ૨૭૬, ૪૩૬, ૫૨૪,
૫૬૨, ૫૭૫, ૫૭૬, ૫૮૭,
૬૧૬

ઠપહુ—૨૨૩

ઠપે—૬૫૫

ઠપો—૬૦, ૫૨૮, ૫૬૨, ૬૧૬,
૬૨૨

ઠવહ—૩૦

ઠવહુક—૩૨૭

ઠાહ—૨૦, ૩૦, ૧૦૬, ૧૨૬, ૧૫૭,
૨૩૦, ૨૮૩, ૨૬૫, ૨૬૬,
૩૨૭, ૩૪૪, ૩૮૬, ૪૧૨,
૪૩૭, ૪૭૩, ૪૮૧, ૪૮૬,
૫૦૪, ૫૩૭, ૫૪૮, ૫૫૧,
૫૭૪, ૫૮૭, ૬૧૫, ૬૧૬,
૬૨૫,ઠાડ—૨૩, ૨૮, ૪૫, ૫૬, ૫૮,
૭૧, ૮૦, ૮૨, ૧૨૬, ૧૫૨,
૧૫૫, ૧૫૬, ૧૬૭, ૧૬૬,
૧૭૮, ૧૬૮, ૨૩૭, ૨૪૨,
૨૬૬, ૨૬૬, ૪૧૨, ૪૫૪,
૪૭૧, ૪૬૩, ૪૬૪, ૫૦૩,
૫૪૩, ૫૫૨, ૫૭૨, ૬૪૦,

ઠાડચુ—૫૨૨

ઠાઠા—૬૮, ૬૦, ૪૭૬, ૫૦૦, ૫૮૦

ઠાઠડ—૨૬, ૩૩, ૧૧૬, ૨૮૨

ઠાડે—૪૩૬

ઠાઠી—૧૦૪

ઠાઠો—૧૬૦, ૧૬૬

ઠાણ—૧૮૧

ડ

ડરહ—૧૬૬, ૩૦૮

ડરહુ—૩૩૪

ડસહ—૧૬૮

ડહણુ—૪૬૮

ડાઝહિ—૫૨૬

ડોમ—૧૨૬, ૬૩૬, ૬૪૪, ૬૪૭

ડોરે—૪૧૬

ડોલહ—૩૧૭

ડોલહિ—૫૭૬

ડોલે—૨૮૦

ઢ

ઢલહ—૨૩, ૫૮૨

ઢલીય—૬૪૩

ઢલ્યડ—૭૬, ૪૭૪

ए

एङ्कालु—२१४
 एङ्कल—१८३, ६१४
 एङ्कर—८५, ५६५
 एङ्गि—१
 एङ्गि—१२
 एङ्गेसु—६७
 एङ्गलएङ्गल—५६१
 एङ्गल—१२
 एङ्गल—२२६, ४१६
 एङ्गल—३१४
 एङ्गल—२
 एङ्गल—६८८
 एङ्गल—८५, २६३, ३१५, ३५६,
 ६१०
 एङ्गल—१२
 एङ्गल—२१४
 एङ्गल—२३२
 एङ्गल—२७१
 एङ्गल—१३

त

तङ्क—७६, २१४, ३०३, ३६२,
 ४६५, ५१०, ५१५, ५१६,
 ५२३, ५५०, ५७३, ५७४,
 ६२६, ६६६, ६७८
 तङ्क—२७, २८, ३३, ३६, ४८,
 ५०, ५८, ५९, ६३, ६५,
 ६८, ८५, ८४, ८५, ८६,
 ८७, ८८, ११६, १२, १५२,
 १६७, २१२, २१५, २२६,
 २२७, २४६, २५०, २७७,

२७८, २८३, २८७, २८८,
 ३०३, ३०७, ३२७, ३६८,
 ३७१, ३८४, ३८५, ३८८,
 ४०३, ४०५, ४०६, ४१३,
 ४२८, ४३७, ४३८, ४४२,
 ४५७, ४७१, ४७४, ४८६,
 ५०६, ५०८, ५१०, ५१५,
 ५५१, ५८३, ६०१, ६१८,
 ६३७, ६६८, ६७१

तङ्क—११, ६६, ११६, १६७,
 २६८, २६९, ३००, ३०५,
 ३१५, ३१८, ३१९, ३२२,
 ३७६, ३७८, ४२१, ४४८,
 ४६६, ४६८, ५४६, ५५०,
 ६०३, ६१८, ६३८, ६६६,
 ६८०, ६८४

तङ्क—४०

तङ्क—३५१

तङ्क—१३७, ६४३, ६५३

तङ्क—३२७

तङ्क—८६

तङ्क—३६, ६५, २२५, २६८,
 २७८, ३२७, ४०६

तङ्क—४४, ५६, ६४, १२३, १२८,
 १४८, १५६, १६२, २४१,
 २४२, ३६२, ३८२, ४३३,
 ४७२, ५०६, ५१६, ५६७,
 ६०६, ६२३, ६४०, ६७८

तङ्क—३१४

तङ्क—३४६, ४३०, ५२३, ५२६,
 ५७८

तङ्क—६३८

तङ्क—१६६, ५३४

तङ्क—११३, ३६७

तत्तपि--३६

तत्पूर--५६१

तंखण--५०८, ६४५, ६६१

तंखिणी--४१

तंखणी--२८८, ४०१, ४१८

तंखिणी--१२३, २४२, ५६५, ६३५

तन--४२२

तनी--५६५

तनो--३३२

तप--१६१, २७४

तपचरणह--६७५

तपु--६७७

तर--६७, ३४२

तरुणे--३३३

तल--६३, १२५, १२६, १६२,
२४४, ३८१, ५८४

तलही--१२६

तव--५०, ६६, ७८, ८३, ८४, ८७,
१००, ११२, १२६, १४८,
१६२, १६६, १७१, १७२,
१७६, १८३, १८४, १८५,
२०२, २०७, २१०, २२८,
२३०, २४६, २५४, २५६,
२६३, २८२, २८७, ३०२,
३२०, ३५६, ३५१, ३६६,
३७२, ३६६, ४०४, ४०७,
४२५, ४२८, ४४२, ४४४,
४४७, ४५३, ४५६, ४६६,
४६६, ५०२, ५०७, ५१६,
५२०, ५२४, ५२७, ५३०,
५३१, ५३५, ५३६, ५४६,
५५१, ५५४, ५५८, ५७५,
५८३, ५८७, ६०५, ६०६,
६१५, ६२२, ६४८, ६५१,

६५२, ६५४, ६५५, ६६४,

६८४

तवइ--६८, २६६, २५५, ३४१,

३५८, ४३७, ४४५, ४४६,

४८८, ५३३, ५३७, ६०२,

६१६

तव्व--५८४

तवहि--१८५, २२०, ३२६, ४०८,

४१२, ४७२, ६०६

तवही--६८२

तवु--२६४

तस--३८५

तसु--५४, ५६, १४८, १५६, १६२,
१६५, २३६, ५०७, ६१२

तह--३६, १२७, १४७, १५१,
२१७, २२०, २३६, २६३,
३४७, ४२१, ४८८, ५६८,
५६७, ६०४, ६१३, ६२१,
६३४

तहतह--२२६

तहा--२५, ३८, ५३, ५६, ६२,
८६, ६२, ६४, ६५, १०२,
१०३, १२२, १२४, १४६,
१५१, १५२, १५३, १५५,
१५८, १८०, १६६, २१४,
२१८, २२०, २२५, २२८,
२४०, २५८, २६१, ३२३,
३२६, ३३८, ३४३, ३५२,
३५४, ३५५, ३६१, ३६८,
३६८, ४१६, ४२६, ४३२,
४३४, ४४२, ४५४, ४६३,
४७४, ५४४, ५६६, ६०८,
६०६, ६१४, ६१६, ६५०,
६६३, ६६५

तहि—न, २१, १२६, १५०, १५२,
 १५५, १५६, १६४, १७३,
 १८०, १६०, २०८, २१५,
 २१६, २१६, २२४, २३०,
 २४१, ३२६, ३६३, ४१५,
 ४२८, ४५०, ४५४, ५१७,
 ५६१, ५८६, ५८८, ५६६,
 ६१६, ६४७, ६६८, ७००
 तहरि—५६२
 ताकी—१५४, २४३, २७१
 ताके—१६८, ३२४
 ताकौ—१५४
 ताज—४२७
 ताजे—४८३
 ताम—३२, ३६, ७७, १२२, १४५,
 १६३, १८१, २६१, २८०,
 २८२, ४११, ५०१, ५१८,
 ५१६, ५२८, ५४०, ५४२,
 ५५५, ५६४, ६१०
 तारणी—१६२, २०४
 ताल—२४, ६२, २६५, ३६३, ५८०
 तालु—५१, ६४
 तास—६१३
 ताह—१६२
 ताहि—५०, ५२, १७७, ३०४,
 ३७०, ४०६, ४४०, ४४२,
 ५२४, ५६१, ६८७
 तिउ—३६४
 तिजयगाहु—१२
 तिण—६०३
 तिणि—६४१
 तितउ—३६०
 तिन—१६७, १७०, ३५०, ४८५
 ५६५

तिनकी—३४४
 तिनके—२४
 तिनसु—३४३
 तिनस्यो—४०२
 तिन्हि—१, ६५, ३७२, ६६०
 तिन्हु—३४१
 तिन्हहि—१६७
 तिनहु—४२२
 तिनि—४६, ८८, २६६, ६१६
 तिनी—८६
 तिपत—५०५
 तिम्बइ—२६८
 तिम—१६७, १७०, ३५२
 तिमुतिमु—३८६
 तिय—२६४
 तियवर—२०
 तिरउ—६६७
 तिरिय—४२, २६७, २६६
 तिरियहि—२६७
 तिरी—२४३
 तिलकु—२६, ५६२, ५६६
 तिलोत्तम—५५
 तिबइ—२६८
 तिस—२, ३६, १२८, १५७, ४७३,
 ४८६, ६२५
 तिसके—१३४
 तिसको—६२५
 तिह—२०४, २८३, २६३
 तिहा—२०४
 तिहारउ—२४३, २८८
 तिहारे—५१४
 तिहारे—४८०
 तिहारो—३७८, ५४६
 तिहारी—२८६, ४२१, ४६३

तिहि—१४, २०, २२, ३०, ३७,
 ४१, ४२, ४६, ५७, ८६,
 ६४, १०६, ११२, ११३,
 १२६, १५६, १५७, १६४,
 १७०, १८३, १८८, १६८,
 २०१, २०५, २११, २१५,
 २१८, २२५, २३७, २४२,
 २४३, २७१, २७३, २७६,
 २८४, ३०६, ३२०, ३२७,
 ३३५, ३४५, ३५२, ३५५,
 ३७३, ३६१, ४१२, ४१६,
 ४३२, ४१३, ४३६, ४४८,
 ४५१, ४५२, ४७४, ४८७,
 ६००, ६०८, ६०६, ६१०,
 ६२४, ६४१, ६६१

तिहिठा—६०८

तिहिस्यो—४५०, ४५३

तिहु—२१०

तीजी—२००

तीजे—२७१

तीन—४०२

तीनखंड—२१

तीनि—२०३, २४५, २४६, २७१,
 ३०६, ४२१, ४४०, ४८३

तीनिउ—२४७

तीन्यो—२६३

तीस—१२८

तुजि—४२१

तुदि—३७१, ५२१

तुंङहि—२६१

तुणह—४२६

तुन्ही—३८५

तुम—२८, ४६, ६२, ११३, ११४,
 ११७, १२७, २८६, २६०,
 २६७, ३०२, ३३२, ३३३,
 ३३४, ३८०, ४२४, ४३३,
 ४६४, ४६६, ४७३, ५१५,
 ५२३, ५५०, ६२३, ६२४,
 ६२८, ६२६, ६६७, ६६४,

तुमि—१०८, ३०५, ४४८, ४६४

तुम्ह—१२७, ४२०

तुम्हारउ—२६

तुम्हारी—३७०

तुम्हि—२४८, ३४०, ३८०, ४०७,
 ४२०, ६४१

तुमहि—४७०

तुम्हो—४७२

तुरंग—३५६

तुरंगु—३२७, ३३१, ३५८

तुरत—६२३

तुरतु—१३५, १७१, २१३, २३७,
 २६२, ४८२

तुरय—४२६

तुरगइ—३३१

तुरिय—६८, २५६, ३२३

तुरिहय—१७३

तुरोय—६७, ३३५

तुरीयउ—३२४

तुरी—३३५, ३४०, ४६५

तुरीन—४७७

तुव—३१४, ६११

तुह—२४२, ५०६, ५४६, ५११,
 ६४०

तुहारे—६२६

तुहि—५०, १४८, १६७, १६०,
 २५७, २७८, ३१६, ३२२,

३७१, ४०७, ४७२, ५१५,
५७३, ६८५

तुही—७००
तुह—५११
तूटे—५००
तूटिगो—५१६
तूठउ—१७२, ५७७, ५६०
तूठी—३७७
तूर—३४
तूरी—५०३
तूव—२४५
तेउ—३६०, ५८६
तेज—५२५
तेण—१५६
तेरउ—६६, १७८, १६७, १७८
तेरह—६८६
तेरे—५१६
तेल—१४२, ३५६, ३५७
तेसो—५७६
तोडइ—२१३, २६१
तोडहि—२१०
तोडि—२६१, ३५१, ३७२, ५२०
तोडिबि—६६२
तोडी—२०६
तोपह—४६७, ४७१, ५३०
तोरण—८६, ५६३, ५६५, ५६१,
६५५
तोरणु—५७६
तोरी—३५४
तोहि—७४, २४६, २६३, ३०४,
३३०, ३७२, ३६६, ४०८,
४१४, ४४७, ४४५, ४५६,
४५७, ४६६, ४६३, ५११,
५१२, ५२२, ५७४, ५८३,

६०२, ६०४, ६०६, ६४३
६६७

तोहि—६०६

थ

थणहर—१६२, २५०
थंभ—१६४
थंभीणी—४०१
थरहरइ—६६२
थल—४७४, ५२६
थाके—१४१
थापिउ—२५२, २७२
थापे—१२१, ५६१
थाल—३८७, ५५२, ५७०
थालु—६१
थुतिबि—६६३
थुरे—४२२

द

वइ—२८, ४१, २७०, ३१५, ३३०,
४२७, ५८५, ६४६
वउ—२००, ५४२
वक्षण—४८४
वणु—२५७
वंत—२१६
वंड—५
वम्ब—१४२
वम्बण—३५६
वरड—४८३
वर्ण—३१
वर्णु—३०१

बल—२१, ७१, ७५, २६१, २७६,
२८३, २८५, ३२०, ४८६,
५२६

बलबल—२१

बलु—७२, ७५, ८३, १७१, २६२,
२८२, २८६, ५३२, ६४६

बल—६, १३६, ३३५, ३३६, ४२६,
४४१, ५२६, ५५६, ६६६

बलह—४६८

बलदिसार—६७५

बलह—४६६

बहि—५७०

बाउ—२४८, २५४

बाख—३४७, ३४८

बाण—३००

बाडिम्ब—३४७

बांत—३६५

बावानल—७२

बाहिण—१४

बाहिणह—५०७

बाहिणउ—५०७

बाहिनी—४८४

बाहु—१४८

बिललाउ—३३४

बिललावहि—४५६

बिललावहु—४६४

बिल्लाह—४६४

बिल्लाउ—७४

बिल्लालह—१८६, १६७

बिल्लालउ—४३२

बिल्लालि—६१०

बिल्लालिउ—५४

बिल्लया—४०६

बिल्लावह—४६६

बिल्लावहि—४६३

दिलि—२५२

दिलियावह—६६६

दिलु—५८७

दिजह—६५६

दिह—१२३

दिठ—४२६

दिठउ—३२, ३३७

दिठि—७६

दिठु—२८२, ४११

दिठु—६५६

दिन—११, १११, ११५, १६३

दिनउ—३८५

दिनि—६२१

दिपह—३१३, ६०१, ६६०

दिवस—११०, ४०३, ४०४, ४३०,
६१६

दिवसु—३५६

दिवावह—६०६

दिस—१६, ४८४

दिसह—१६१

दिसंतर—४१०

दिसा—४६६, ४८४, ४६४, ४६८,
५५८

दिसि—१४

दील—४०६

दीलया—८७५

दीजह—४४६

दीजं—४८५

दीठ—५६

दीठउ—६२, ८६, ६६, १४७, २०६,

३२०, ४४२, ५१४, ५१८,

५२३, ५४५, ५५०, ५६०,

६३६, ६३७, ६६०,

बीठि—४०, ६३१
 बीठी—२७, ४१, ६८, ६६, २०१,
 २६६
 बीठे—३७, ३४४, ३६७, ६५६
 बीण्ड—६४८
 बीनड—२६, २१६, ३३०, ३३६,
 ३७२, ३८७, ५११, ५२०
 बीनी—४४, २२३, २२८, २५८,
 २६७, ३४३, ४०८, ५७४,
 ६५४
 बीने—३५०
 बीप—५७८
 बीपड—१६१
 बीयो—४०२
 बीस—३२४, ६६३
 बीसड—१६, १८, २२, ७२, २१७,
 ३१३, ३१६, ५०३, ५२६,
 ५६२, ५६६
 बीसह—१७
 बीसहि—१६२, ४८२
 बुड—३३, ७१, ७६, २११, २२२,
 २३५, ३०६, ३४१, ३४६,
 ३५३, ४०१, ६१७
 बुडज—१३६
 बुडजे—४, २७०
 बुडजी—२७६
 बुल—१२५, ४२६, ४४५,
 बुलड—३७०
 बुमण—६८६
 बुजे—३०६
 बुठ—६६६
 बुड्ड—६६७
 बरिड—६
 बुवार—४४२

बुवारि—४३६
 बुवार—४४१
 बुवारे—६३६
 बुष्ट—७६, १२०, ६३२, ६८५
 बुह—७, १६१
 बुहागिणि—१०७
 बुहु—१११, ११५, १२०, ५८४,
 ६२४, ६५७
 बुलित—६२६
 बुल्यो—६३०
 बुजड—११८, ५२३
 बुजउ—५२४
 बुजी—१६७
 बुणे—८१
 बुल—६०, ११४, ११७, ११८, ४३७,
 ६१६, ६२०, ६२८, ६४१
 बूलरु—६६७
 बूलह—११४
 बुतु—४३५
 बूलरु—२१२
 बूलरु—३८३
 बूलरु—३३३
 बूलरि—६६८
 बूल—५७०
 बूवाह—४६२
 बूल—६८६, ६६६
 बेड—३, ५, ६४, ७६, ११७, ११८,
 १६७, १७२, १८४, २११,
 २१३, २१७, २२२, २६८,
 २६६, ३००, ३०१, ३०२,
 ३४१, ३७६, ३७७, ४७८,
 ४६२, ५७०, ६००, ६१७,

द१८, द२५, द२६, द८४,
 ७००
 देउ—२११, ३२८, ६०३, ६१३,
 ६६६
 देलइ—३८, १०५, १३१, १३२,
 १८३, १८६, २८१, ४२५,
 ५०३
 देलत—३१, ३७२, ५१२
 देलयउ—१३२
 देलह—१३४
 देलाहि—३३०
 देखि—३२, ४३, १२५, १४१,
 १५६, १५६, १७६, १७७,
 १८४, १६०, १६६, २०२,
 २०५, २३०, २३६, २६०,
 २६६, ३०८, ३१३, ३१५,
 ३२६, ३६५, ४२४, ४३६,
 ४५२, ४६४, ४८७, ४६३,
 ५०५, ५३४, ६४८
 देखिउ—६८२
 देखित—५८६
 देखियउ—३१, ४३, ५१८
 देखी—६८, १३१, ३५६
 देखीयउ—४८८
 देसु—३०५
 देव—१५, २८, ५७, ६२, ३१७,
 ३७०, ५४७, ५८८, ५६४,
 ६६६, ६६७, ६६८
 देवता—६६७
 देवतु—५३५
 देवल—१८
 देवलहि—६७
 देबि—६६६
 देवी—५, १०३, १०६, १०७

देस—१४, ३७, ३८, ३४४, ५६६
 देसु—१५२, ६८८
 देह—१२१, ३६५
 देहरउ—५७
 देहि—१०, २४६, २४८, ३८२,
 ३८३
 देहु—४, १०६, १७१, ३०५, ३४०,
 ३६६, ४२०, ५८८, ६२४,
 ६२७
 देहुरइ—४६
 देहुरे—५७, ६१
 देयतु—१६८
 देव—५६०
 दोइ—१८१, १८२, ४५१, ५३६,
 ६१५
 दोउ—८१, १८१, १८२, २८१,
 ४६२, ४८६, ६३६, ६४२,
 ६५५
 दोवइ—२७६
 दोस—६६, २७८
 दोसु—६३,
 दोबाइ—३३०
 दुइ—२३६
 दुबत—३७४
 द्वार—४४२
 द्वारिका—५८६, ६०, ६२१, ६२८,
 ६४०, ६४६, ६५८, ६६०,
 ६६२, ६७०, ६७१, ६७२,
 ६७४, ६७६
 द्वारिकापुरी—१६, २७, १३६, १४५,
 १५२, १५७, २८६,
 २६६, ३१४, ५३४,
 ५६४, ५७१, ५७७
 द्वीपासन—६७२

डीवायु—६७४

डूह—७६, २७६

डूसे—३५३

ध

धडउ—४४६

धण—२६६, ३६३

धणुक—६४७

धणय—१६

धणुह—७०

धन—५६५, ६८०

धनकु—५२०

धनष—४६२, ५१७, ५१६, ५२३

धनसु—५३३

धनहर—७८, ५१६, ५२१, ५२८,
५३६

धनि—५५२

धनिसु—५५३

धनियउ—५१८

धनु—५५२, ६५६

धनुक—२६०

धनुके—३१३

धनुष—७६, ८२, १३७, २८०,
४८६, ५५३

धम्मु—६

धर—८१, १६८, २३०, २४४,
२६७, ४१४

धरह—२४, ३१, ६७, १४३, १६६,
२१७, २५०, २५६, २८५,
१६१, २६२, २६८, ३०१,
३५५, ३८५, ४१८, ४३६,
४६६, ५४५, ६३१, ६६८

धरउ—१२५

धरणि—१६१

धरणि—५१५, ५६८

धरणिबु—६६१

धरती—६३८

धरम—२६, १५४, २५२, ३६६

धर्म—२०, १५२, ५६४

धर्म—५६२, ६५६, ६६६, ६६७

धर्मपुत—१३४

धर्मह—६५८

धर्माधर्म—६६६

धरमु—६७१, ६८६

धरघउ—६१२

धरघो—५३५, ५६०, ६५३

धरहि—२५

धरहु—२८६, ६४२, ६८५

धरि—७, ४३, ८०, १७४, २७१,
४०७, ५७५, ६५२, ६६७

धरिउ—४२६, ५६५, ६६५

धरी—१६, ४४, १३१, २०३, ३६६,
४२२

धरीउ—२१६, ५५५

धरे—३६०, ४०३

धरे—१४६

धवलहर—१५, १८

धवलहर—३१६

धवलहर—३१४

धसेबयो—२४६

धाइ—२१६, २१७, २३६, ४३१

धाइयो—५३१

धाए—२०५

धाजह—१४१

धाणुक—७०

धायउ—५५४, ५२६, ५३२

धाराम्बेली—१६५

बीज—१४०

बीज—५८८, ६२५

बीज—२५६, ३४६, ४२७, ४५८,
४६७, ४६८, ५१०, ५५८,
५६६

बीज—१६२, २०१

धुजा—२६३, ३१६, ३१७, ३१८,
४८५

धुणि—६४३

धुंघाड़—४०१

धुरंधर—६७७

धूजा—३१६

धुतु—२७२, २७३

धूम्योड—४१७

धूमकेतु—१२२, १२५, १५४

धोड़—६०८

धोरो—३२५, ३२६

धोवती—३६०, ३७४

धोल—६६३

न

नइ—५६३

नउ—७, १३

नकुल—४७४

नक्षत्र—११

नगर—४२३

नदी—३६५

नन्वण—११८, १२०

नंदणबण—४६

नंदणबणु—६०

नंदणु—१२

नंदन—१०४, ११५, ४५३

नंदनु—५५३

नमस्कार—२६, ४३, १५८, २४०,
५६५

नमस्कार—३६६

नमणु—४०८

नमि—१०

नमू—७०१

नयण—३०, १०५, १४१, १४१,
२२७, ५६०, ६५०

नयणा—६६

नयन—५६६

नयर—१५, ३७, ६०, १२४, १२८,
२६२, ३२०, ३६२, ४२३,
५६१, ५६३, ५६५, ५८६

नयरि—१२०, १३५, २६६, ३१६,
५६७, ५६६, ५८१, ६२८,
६४६

नयरी—४४, ३२०, ५५४, ५६४,
५७१, ५६०, ६२१, ६४०,
६५७, ६७०, ६७२

नयक—५६, ८४, २७१, ३१३, ६३६
नर—६५, १६८, ५६५, ६१३, ६६८,
६६७

नरनाह—४७८

नरवह—५४, २५३, २६५, २८०,
६००

नरवै—१६७

नरायण—२८५

नरिब—१३२, ६५६

नरेस—६६, ५७६

नरेसह—४६१

नरेसु—१६४, ५३४

नरे—२२६, ४८०

नरह—५

नवज—६
 नवसंज्ञ—४६०
 नवरात्री—१३
 नवि—६३६
 नहि—१६७, ३०७
 नहो—१४७, ४८०, ४६५, ५७३
 ६२०
 नहु—६०, २७८, ५०२, ६२६
 नहुयु—६६८
 नाइ—६२
 नाइ'उ—११६
 नाउ—३२७, ४१६, ४२१, ४२५,
 ५६७, ६१२
 नाक—३६३, ४२२, ४२५
 नाग—२०१
 नागपासी—२०४, २५६, २८२, ३८७
 नागसेज—२०३, २३३
 नागु—१८६, २०१, ४८४
 नाचण—३४
 नाचणि—२४
 नाचहि—५६६
 नाजु—४०१
 नाटक—१३७
 नाण—२०४
 नातरु—६६०
 नानारिषि—२५, २८, ३०, ३३, ३५
 ३८, ५६, १४५, १४६,
 १५१, २८३, २८८,
 ४४५, ५४५, ५५४,
 ५५६
 नाम—४०६, ६१४
 नामु—१६८
 नारब—२६, ३१, ३७, ४१, ४६,
 ४८, ५१, १४७, १४६,

१५०, १५२, २८५, २६१,
 २६२, २६७, १०६, ३१३,
 ३१४, ३६६, ४१४, ४५६,
 ५४३, ५४६
 नारबु—३४, ४३, ५३, २६५, ५४४
 नारबुरिषि—५०
 नारायण—२८, ४३, ४७, ५१,
 १०१, १०२, ११४, ११८,
 १२७, २६३, ४००, ३०५,
 ३०६, ४०४, ४०५, ४५२,
 ४६१, ४६५, ४७२, ५३०,
 ५३५, ५४४, ५५१, ५५५,
 ५५५, ५६५, ५६६, ६१०,
 ६२६, ६६५, ६७०, ६७२,
 ६७६, ६८१, ६६१
 नारायणु—२६, २६, ५३, ६४, ६५,
 ७६, ८५, ८६, ६४, ६५,
 ११७, १५३, ३३२, ३६०,
 ४६२, ६४०, ६५०, ६७६
 नारायणु—५२
 नारायण—८२
 नारि—५५, ८८, ६७, ११५, १२०,
 १४२, २२६, २२७, २७१,
 २७६, ३६५, ४२२, ४२३,
 ४२६, ५४१, ५६३, ५६५,
 ५७०, ५८४, ६०८, ६३४
 नारिग—३४७
 नारी—१२३
 नागु—६६२
 नाहि—४५, ८३
 नाही—२०७, २६८, २७७, ३३२,
 ३७१, ४५६, ५१५, ५२२,
 ६०५
 न्हाइ—२०५, ६०८

म्हातो—२३६
 निफांठकु—१८६
 निकलइ—४६१
 निकलिउ—३६४
 निकली—२१४, ४२३
 निकालि—३८३, ५४८
 निकासु—३, ८, १३८
 निकुताइ—१३२, ५७७
 निकुल—४५६, ४७१, ४६३
 निगहहु—६४३
 नीघण—६४७
 निपाति—३५०
 निचू—६३३
 निज—६५
 निजिणि—२१६
 निजु—७०, ४१८
 निति नित—६१, १४०
 नित्रा—६६
 निपजावइ—३३८, ३४६
 निपाए—६५६
 निमजंत—७२
 निमजि—७५
 निमति—५७७
 निमते—५७६
 निमस—२४२
 निमसइ—१५२, २७१, ५८७, ५६३,
 ६१६
 निमसे—११६, १६४, ६५४
 निम्यल—१६१
 निघमण—७६
 निपनिय—६६३
 निघरो—१६६
 —१०५, १६२

निरमासु—६७०, ६६०
 निरबासु—६६४
 निरास—२३३
 निरुत—११२, २६३, ३६६, ४१४
 निलउ—६१३, ६६६
 निवली—३४६
 निवारि—५४३
 निवसइ—१५६, २२०
 निवसहि—१६, २०
 निरचल—६७०
 निश्चे—१६०, ४२७
 निसाण—४८३
 निसाणह—५६०
 निसाणा—६८, ५६८, ५७६
 निसि—१२२
 निसिपूत—१२७
 निसिहि—५४७
 निसुणइ—३०५
 निसुणउ—२६६
 निसुणहु—११, १७४, ४०१, ४६२,
 ५४६
 निसुणि—२६, ४२, ४८, ५१, ६४,
 १२७, १५८, १७२, १७८,
 १८३, १८७, १८६, २४६,
 २५३, २५६, २६४, २८६,
 ३०१, ३१४, ३१५, ३२०,
 ३२२, ३२८, ३३१, ३८६,
 ४२१, ४२६, ४२७, ४३८,
 ४४१, ४४५, ४४६, ४७४,
 ५०७, ५४३, ५६८, ६००,
 ६०६, ६२८, ६३०, ६३४,
 ६४३, ६५४
 निसुणिउ—३२७
 निसुणो—३०६, ५१०

निसुणोह—४३०, ६८४

निसुणो—४६६

निसुणो—४५४, ५६५

निसुनहु—३८२

निहवे—६७४

निहाउ—५८०

निहालिउ—२०१

निहुडिउ—३६५

नीकलइ—४७६

नीच—२६८

नीची—२६८

नीबू—६५४

नीर—५२८, ५२६

नीरू—१६, ७८, ३७७

नीसरइ—६६८

नेम—२२, ३६, ५८४

नेम्म—५६७

नेमि—१०, ४६१, ६६४

नेमोस्वर—६६१

नेमिसव—१२

नेहु—६२४

न्योते—३६०

न्योत्यो—३६२

प

पइ—६०, ३०४, ३७०, ४८७

पइठउ—३६३

पइठे—३५१, ३५३

पइपइ—४४२

पइसरइ—२००

पइसार—१३८

पउ—२४

पउलि—३१४

पएनु—५५४

पकडि—१६०

पकरि—४५७, ४६३, ५४५

पसारे—३२४

पंलि—४८५

पगार—१८६

पचारि—३२, १६२, २११, ४५०,

४६५, ४६०, ४६४, ४६६,

५३०, ५३८, ५४३, ५४७,

६३४

पचारे—६७८

पचारं—५४२

पचास—७६

पछिताइ—४१७

पछिताउ—३६

पछितावउ—५१७

पछितावउ—४२६

पछितावो—२८६

पजलइ—३६

पजुलंतु—५२५

पजुन—६६४

पजुन—५३३

पजुनहा—५२६

पजुसह—११

पटरानी—३७४

पटु—१८२

पठइ—८७, १०४, १२०, ७०१

पठउ—७७

पठए—६०, २५५, ६३६ ६४१,

पठयउ—४३३

पठयो—५८८

पठायो—२१८, २२६, ६१६

पठावइ—६६६

पठितु—१३७

पठे—६०
 पठयो—६२, ६२२, ६२३
 पठइ—४२०
 पठइ—४२०, ४४१
 पठउ—४३६
 पठएयउ—४०५
 पठयु—१३८
 पठह—६३८
 पठहु—१७३
 पठाइ—४३२
 पडि—४२६, ४७६, ४१५
 पडित—७५ १६६, ३३२, ३५६,
 ३७३, ४१२, ४४०, ४५१
 पडिगयउ—३७२
 पडियउ—१७३
 पडियो—४५२
 पडिहाइ—४८४
 पडो—६३, १५३, ४१४
 पडे—४६८, ४६६, ४००, ४०२,
 ४५५, ४५६
 पठइ—३१८
 पठण—१३७
 पठम—६१३
 पठमद्य—१३
 पठापतु—३७६
 पठावइ—१७६
 पठे—६१५
 पणमइ—१
 पणवइ—४
 पणवहु—२
 पणि—२६६
 पत्तय—२६५
 पताल—६८६
 पतिगइ—२६६

पतियाइ—४०५
 पयंतरि—५६२
 पदमवतीण—४
 पद्युत—१४७
 पदमावती—५
 पदमुप्रभु—८
 पदारथ—५२, ३१३
 पच—१३, २४, १६६, ३११, ३१६,
 ४०४, ४३०
 पंचकउ—४३६
 पंचइ—११
 पंचज—१२
 पंचति—४५६
 पंचमु—५६६
 पंचमुवीर—६८८
 पंचसय—१८३
 पंचावयु—१८०
 पंडव—४५६
 पंडित—७०१
 पंडो—५०२
 पणंत—३७४
 पणउ—३७६
 पंथ—४६६
 पंथि—७७
 पंडह—५४८
 पभणइ—२२६
 पभणइ—३
 पम्बरण—१३५
 पम्बाराण—४१५
 पम्बाणु—६४२
 पय—१३, १६, १०६, २७१
 पयठइ—२१२
 पयडो—२६८
 पयंपइ—३७०, ४२४, ४६३

पयसाह—४४०
 पयाइ—१६४
 पयार—१०७
 पयाल—५६२
 पयालि—१४४, १४६
 पयासइ—१०७
 पयासउ—४१२
 पयासहु—१०८
 पयासु—१२
 पयासो—४०८
 पयाहिए—६६६
 पर—२१६, ४४५, ४६१, ४८८,
 ५२७
 परह—५४२, ६६७
 परंलिउ—५१५
 परगट—४२७
 परचंड—५५८
 परजसइ—६५७, २७५
 परजल्यउ—४४१
 परजलीउ—२५३
 परजलं—१७०
 परठयो—६२२
 परणइ—४७
 परणउ—५७, ६३४
 परणाउ—३६
 परणी—८८, ३०३
 परवमणु—४१३, ५६६, ६४६, ७००
 परवमनु—६३५
 परवम्बण—१४४
 परवम्बुण—१३०
 परवम्बनु—३२०
 परववण—२२५, ३१४, ३२०, ५८४
 परववणु—१५५, १५७, १६०, १७३
 १७६, १७८, १८२, १८७

१८६, ४२८, ४२६, ४६४
 ५४२, ५७३, ६५६, ६६६
 ६६८
 ११६ १२३, १२७ १३५,
 १३६, १४६, १५४, १८७
 १६२, ४६२, १६८, २६०
 २२७, २३६, २७७, २६०
 ४६२, ५५१, ६२४, ६७५
 ६७७

परववन—३८२
 परववनु—६३४
 परवेस—४०८
 परवेसी—३७०
 परधानु—१८५
 परपंचु—२६५
 परभाव—४०६
 परम—३१०
 परमेसह—६६५
 पर्वत—३५
 पर्वतउ—५४१
 परवतवाण—५३३
 परघउ—७६, १४२
 परयो—५३०
 परसपर—३८१
 परहरी—६६
 परहि—५३२
 प्रछन—१२४
 प्रजलंनु—७५
 प्रजलेइ—२०६
 प्रतिउतह—६८४
 प्रतिपालिउ—२८४
 प्रववण—५४६
 प्रववणु—५२२

प्रबन्धन—४५५
 प्रबन्धन—६७६
 प्रबुधनु—१३६, १३८
 प्रमाण—३६७
 प्रभण्ड—४६१
 प्रवाह—५२६
 प्रहार—४६५, ५३४
 प्रहास—४६७
 पराह—२६०
 पराण—१४४, ३०८, ४७०, ५२२
 पराणु—५१८
 परान—२७४
 परापति—१८३, १८८, २३०
 परि—२८६, ३०२, ३६१, ६४७,
 ६६२
 परिउ—२५३
 परिगह—२४८, ५१६, ५७७
 परिगह—५५५, ६२७
 परिणइ—२३५
 परिपूनु—५२
 परिभानही—५८८
 परिमल—६६३
 परिमलइ—२३
 परिमलु—६८
 परिमह—४५
 परिहहे—६४४
 परियण—२७५, ५६०, ५६१, ५६२
 परियाणि—२
 परिहरे—६८८
 परिवार—२२, ६३७
 परिहरइ—६८५
 परिहरणउ—३८६
 परिहरहु—३८५
 परिहस—६१, ६६, १४५

परिहसु—५८६, ६१७
 परिहाजउ—३२०
 परो—३०६, ५०१, ५१२
 परोधर—१८१
 परोवल—१७५
 परोसह—६८६
 पाकृति—३८२
 परे—२५६, ५०३
 परोसइ—३८८
 परोसितउ—३८६, ३६०
 परोसे—३८७, ४०३
 परोसो—३६३
 पलणाइ—६४५, ६४६
 पलणाह—२५७
 पलाइ—८३, ३५२, ५१६, ५२५,
 ६४८
 पलाणहु—६८, ६६
 पलाणउ—१७५
 पलाणु—१७३
 पलाणो—२५८
 पलि—१४४
 पवउ—५०६
 पवण—५६, ७२, २५२, २६६,
 ३५४, ३८६, ४३५, ४४१,
 ६०२, ६३५
 पवणि—२०
 पवणु—५३३
 पवन—५७२
 पवय—२८०
 पवर—६६२
 पवरिष—३३४, ४५६, ४६८, ४६६,
 ५५०
 पवरिषु—४७१, ४६३, ५३३, ६४१,
 ६७७

पबोरिमु—७४, १६६, ४६४
 पबोरिमु—५३४, ६२४
 पबलि—४४०
 पबहि—१५६
 पबाडउ—६२६
 पवाण—६४२
 पबित्तु—२८
 पसाइ—१४८
 पसइ—५६४
 पसाउ—७, १३, २८, ८५, १०६,
 १६६, १७२, १८३, १८४,
 २८८, ३२८, ३७७, ६५२
 पसारि—४०
 पसारो—४८६
 पसारं—५३६
 पह—३६, ११४, ११८, १६३, २५६
 २४७, २५१, ३०२, ३०७,
 ४३५, ४४०, ४४१, ४५३,
 ४६५, ५२२, ६०२, ६२३,
 ६४७, ६५२, ६७५
 पहइह—३०३
 पहवाणइ—३२४
 पहाण—५१
 पहर—३५२
 पहरइ—४७८, ४६६, ६०७
 पहरे—६०८
 पहरेइ—७८, ८०, १७६, २३५
 पहाण—१५०, ५६४
 पहार—५३६
 पहिवाणइ—५०
 पहिलइ—११२
 पहु—५३
 पहुत—६, २५, ७२, ११४, १२२,
 १३५, २६३

पहुतउ—१३०, २०६, २२०, २२४,
 २६१, ३३८, ३३६, ३४३,
 ३४४, ३६७, ४३४, ६४५
 पहुतो—४१६
 पहुते—५६, १७५, २५१, २६६
 ५६०, ६४६, ६६५
 पहुतो—५४५, ६४६, ६५०
 पहुपचाप—२३४
 पहुपयात्त—३१४
 पहुममालु—२११
 पहत—५७१, ६२८
 पहतउ—३६०
 पाइ—१०६, १०८, १०६, १२८,
 २००, २२३, २३०, २३७,
 २३८, २६४, ४२०, ४५४,
 ५७७, ५५१
 पाइक—२६०, २६१, ४६०
 पाइकस्यो—२६१
 पडात—११६
 पाउ—१८२, २६८, ३३६, ४८५,
 ५४५, ६४६
 पाख—१६३
 पाखर—२५६, ६५०
 पांच—१३६, ४६६
 पाचसइ—२५३
 पांचसं—२५१
 पाचसो—१६५
 पाछइ—३१, ६६, ११२, ४१४, ६१६
 पाछिलउ—४१३
 पाटघरणि—४३
 पाटण—२७१, ५८७
 पाटमहादे—६४०
 पाठइ—४५४
 पाठए—३३५

पाठयउ—५८७
 पाठयो—४३५, ६५२
 पाडल—३४५
 पाडिउ—१६७
 पांडव—६६१
 पांडवह—४६१
 पांडो—२७६, ५५८
 पाण—६३४
 पाणन—६४३
 पाणिउ—३६१
 पाणिगहन—६५६
 पाणिगहणु—५८५
 पाणिग्रहन—८८
 पाणी—१६१, ५२८
 पाणीबंधणी—१६४
 पातलि—३८८
 पातालगामिनी—१६३
 पाधि—५३५
 पाप—३२४, ५८४
 पापह—१६६
 पापउ—६७५
 पायो—४०२
 पार—१३३, ५६२
 पालक—२५२
 पालकु—१८५
 पालि—६४२
 पालिउ—२४४, ५७३
 पाव—३३६
 पावइ—३६२, ३६२
 पावडी—२०३, २११, २३३
 पावय—५८२
 पावहु—४५८
 पास—१०१, २६५, ४१७, ५५०,
 ६२२, ६८८

पासि—१६७
 पासु—१०, १२६, ४२०, ६७०,
 ६७४
 पाहह—१२७
 पिउ—२६७
 पिडलजूरी—३४८
 पिता—४०८, ५५०, ६५१
 पियउ—३६१
 पियरे—१६२
 पोतियउ—४४८
 पोयरे—३६७
 पुकार—६२७, १२८, २५१, ३५४,
 ५०५, ६४४, ६४५
 पुकारिउ—६६
 पुकारियउ—६७, २५८
 पुकारी—६५
 पुकारघो—३५२
 पुडु—५४
 पुण—११६, २३०
 पुणु—४, ५४
 पुणि—८५, १०३, १०६, २१४,
 २६३, ५६४
 पुत्री—६२०, ६४२
 पुत्रु—४१३, ४२६, ६६६
 पुन—१८८
 पुन—५६३, ७००
 पुनवंत—२३०
 पुनवंत—५४७, ५६२, ५६८, ६११
 पुनवंतु—५११
 पुन्नइ—२३२
 पुन्नहि—२३२
 पुनु—३३१
 पुर—३, ६६४, ६६६

पुरयन—५५३
 पुराइयउ—५६२
 पुराए—३१८, ३८०, ६६५
 पुरायउ—५६२
 पुरि—२०, ३४२, ५५५
 पुरिषु—३६२
 पुरी—१६, १५२, ३१३
 पुव—७६
 पुव्व—२४५
 पुव्वह—२६६
 पुप—२३६
 पुष्पचाप—२१६
 पुहुपमाल—५२७
 पुहसि—१४६, १७०, ३०६, ५५६,
 ५७७, ५७६, ५६२, ६८६,
 पुहमिराय—६७
 पुहिमि—८१
 पुए—६३२
 पुछ—१६०, २१५
 पुछइ—२६, ६३, २२६, २४०,
 ३२०, ३२६, ४००, ४०७,
 ४०८, ४०६, ४४७, ४७०,
 ६६६
 पुछउ—४४७
 पुछहु—१६१
 पुछि—२६, ६३१, ६७१
 पुछिउ—१५१, २२६, ४५३
 पुछो—४०८
 पुज—१८८
 पुजइ—४२, २४३, ४२८, ४६७,
 ५२८
 पुज्जइ—६५६
 पुज्जण—३५७
 पुजा—४६, ५१

पूजी—५६५
 पूंङरीकणी—५६३
 पूत—११२, ११५, ११७, ११६,
 १२७, १४२, १७१, २५२,
 २८५, ३७४, ३६६, ४१४,
 ४१७, ४०८, ४५६, ४६०,
 ४६१, ४६२, ५४६, ५७४,
 ६०४, ६१२, ६३२, ६७६,
 ६७७, ६८१, ६८३
 पूतउ—४०५
 पूतहि—२८४, ३०६
 पूतु—२४८, ४१५, ५४६, ५६१,
 ६८५
 पूव—१४०
 पून्न—५६८
 पून्यो—६८३
 पूरउ—२५४, ४४२
 पूर्व—४७, १२६, १४२
 पूरव—१५०, १५५, १६८, २८,
 २७७
 पूरि—२२, ३६२
 पूरिष—१४२, ४२३
 पूरिहि—५६६
 पूरे—७७, ३६७, ४१५
 पूव—५६५, ६०३
 पूव्व—५६३, ६८६
 पूव्वह—६८७
 पेत्ति—१२५, २४१
 पेड—१४८, ३८६, ४३६, ४४३
 पेस—२६५
 पेसरस—२४५
 पेलिउ—५०७
 पेसणु—२४६, २४८

पेठा—६०

पेन—२४७

पेल्लो—२४

पोरिष—४२२

पोरिष—४५३, ५४६

पोरिषु—२३०

पोरिषु—६८०

फ

फटिक—१७, ३१४

फटिकसिला—२२६

फण—५४१

फरकिउ—५०७

फरहरइ—२५

फरहरं—१४६

फरहि—३८२

फरो—४७५

फल—३५१, ७००

फलु—२३०

फले—१६२, ३४८, ३६७

फलयउ—२०६

फहरंत—३१६

फाडियउ—२६५

फाटहि—५३६

फारह—२५०

फिरइ—३१, ३३७, ६८६

फिरत—३८

फिरहि—४१०

फिराबइ—२१५

फिरि—३७, ३४२, ५०३, ६६०

फिरे—३७, ६३७

फुंकार—१८६

फुटि ६३

फुडउ—६०४, ३१४

फुणवइ—२१५

फुणि—३८, ८८, ११०, ११८,

१२८, १३७, १५७, १५६,

१७७, १८४, १६६, १६६,

२००, २०२, २०४, २१२,

२१५, २१६, २२१, २२२,

२२३, २२५, २२८, २३०,

२३५, २३८, २३६, २४०,

२४८, २७०, २७१, २७६,

२६३, २६६, ३०८, ३१२,

३२०, ३२६, ३३८, ३५१,

३५७, ३६०, ३६२, ३६३,

३६४, ३६७, ३७३, ३६५,

४०८, ४१४, ४१६, ४२०,

४२७, ४२६, ४३०, ४३२,

४३६, ४३८, ४५०, ४५५,

४७२, ४६४, ५१५, ५२०,

५२४, ५८४, ५६६, ६००,

६०६, ६१०, ६५२, ६६८,

६६६, ६७१, ६७८, ६८१,

६८३, ६८८, ६६३, ६६८

फुणिर—६६४

फुनि—२६

फुलइ—२६७

फुलवावि—१०१, ३४४, ३५०

फुलि—३६५

फूटि—५३४

फूलो—३४४

फेकरइ—४८४

फेरहु—८२

फेव—१४

फोकल—३४८

व

वलीस—८०
 वलिभद्र—५१
 बहुत—२३७, २८०, २८८
 बाढी—८१
 बाण—७६
 बाधि—२५६
 बांधित—२२०, २२१
 बांधो—११८४
 बाल—२४२, २४७, २४५, २८५,
 २६०
 बुलाइ—२५१
 बोलइ—७५, २६७, २६०, ३०६
 बोलु—१७८

भ

भइ—६३, ६६, १४६, २४६, ३४१,
 ३५७, ३५६, ३८६, ४२५,
 ४१७, ६४५, ६६३,
 भई—४२४
 भउ—२६६, ५६०, ६५७, ६५६
 भए—११, ६५, ६८, १०२, १२०,
 २१२, ४३३, ४३५, ४३६,
 ४७२, ४८६, ५४८, ५६७,
 ५७६ ६३७, ६५३
 भगति—१०८, २२३, २३७, २३८,
 २६४, ५७३
 भजज—५६७
 भजहु—४६५
 भणइ—४४, ५१, १२३, १७५,
 २८३, २८४, ३०१, ३०४,
 ३०७, ३१४, ३२०, ३३३,

३३४, ४५२, ४५८, ४८०,
 ४८५, ५१६, ६२०, ६६३

भणत—५६०
 भणहि—१८७
 भणो—१७६
 भंग—३५
 भंगु—३२६, ३६४
 भंजइ—१७५
 भंडार—३७६, ३६३
 भंति—१७
 भंती—५७६
 भय—१२
 भयउ—८, ६, २८, ३३, ११३,
 ११६, ११८, ११६, १२७,
 १२८, १३६, १४७, १४८,
 १५१, १७३, १८०, १८५,
 २१६, २२३, २४५, २४४,
 २४५ २६४, २७०, २७५,
 २७६, २८०, २८६, २६६,
 ३२०, ३२६, ३३७, ३५६,
 ३६०, ३६१, ३७३, ३७६,
 ३६४, ३६८, ४०२, ४१३,
 ४३०, ४३२, ४३३, ४५०,
 ४६३, ४७५, ४७६, ४८१,
 ४६६, ५२०, ५२४, ५४७,
 ५४८, ५५२, ५५५, ५६०,
 ५६१, ५६५, ५६६, ५८०,
 ५८५, ५८६, ५६१, ५६३,
 ६०२, ६०३, ६१३, ६१४,
 ६२१, ६३५, ६३६, ६४८,
 ६५४, ६५६, ६५७, ६५८,
 ६६१, ६६४, ६७५, ६८२
 भयो—२८, ६५, ७२, ८७, १०६,
 १५४, २०४, २३८, २६२,

૨૭૩, ૩૫૬, ૪૦૬, ૪૨૮,
 ૪૭૨, ૫૧૬, ૫૨૭, ૫૩૧,
 ૫૪૩, ૫૬૧, ૬૨૧, ૬૭૬
 મયે—૧૧૫, ૧૮૩, ૨૫૪
 મણ—૬૭૫
 મર—૫૪૧
 મરહ—૮૫, ૨૫૬, ૩૬૪
 મરથ—૧૩૭
 મરત—૫૨૮
 મરહ—૬૫૬
 મરહલેત—૧૪, ૧૫૨, ૫૬૬
 મરહુ—૩૬૧
 મરિહ—૪૪૩, ૫૫૨, ૫૬૨
 મરિમાહ—૨૬૬, ૨૮૪
 મરિવાહ—૨૧, ૭૪, ૭૬, ૮૩,
 ૧૬૪, ૧૬૬, ૧૭૧,
 ૧૭૮, ૧૮૨, ૧૮૬, ૨૦૨
 ૨૫૬, ૩૨૩, ૩૩૬,
 ૪૬૫, ૬૪૬
 મરિ—૨૮૬, ૩૧૩, ૨૬૮
 મરિહિ—૨૪
 મરો ૬૧, ૬૬, ૩૪૮
 મરે—૧૬૧
 મરેહ—૬૧, ૫૭૦
 મરોસહ—૨૫૭
 મલહ—૨૮, ૩૨૫, ૩૮૦, ૫૧૪,
 ૬૬૬
 મલ્યહ—૫૪૨
 મલી—૨૬૦, ૩૦૨
 મલે—૨૩૩, ૫૨૬, ૫૭૬, ૬૫૪
 મલો—૪૭૩
 મલ—૬૬૭
 મલંતર—૫૬૫
 મલપાલુ—૬૬૨

મલિયહુ—૬
 મલચુ—૨૬૫, ૫૮૩
 મહરાહ—૫૩૧
 માહ—૨૪, ૨૬, ૬૫૬,
 માહ—૭, ૧૩, ૨૭, ૧૭૪, ૨૭૦,
 ૨૭૧, ૨૮૬, ૨૬૬, ૩૨૮,
 ૩૪૧, ૩૭૬, ૩૭૭, ૪૦૭,
 ૬૦૧, ૬૫૨, ૬૬૮
 માલ—૬૪૨
 માગ—૩૮૮
 માગિહ—૨૫૮
 માગી—૬૪૬
 માજિ—૩૫૬, ૪૬૧
 માજહ—૧૭૧
 માણહ—૧૬૪
 માણિહ—૬૫૪
 માણુ—૨૬૩, ૩૩૬
 માણુજુ—૬૫૧
 માંતિ—૧૮, ૨૪, ૩૪૪, ૩૫૦,
 ૬૫૫
 માતુ—૩૮૮
 માલો—૧૭૫
 માલિય—૪૮૩
 માલ—૩૨૬, ૩૩૬, ૬૧૮, ૬૭૩
 માનહ—૧૮, ૨૮૪, ૩૫૬, ૬૨૦
 માનહ—૧૭૧, ૧૭૮, ૧૮૬, ૩૨૬,
 ૩૫૬
 માનકુમ્બર—૩૨૭, ૩૫૨
 માનકુમાર—૩૨૦, ૩૨૮, ૩૨૬,
 ૩૩૩, ૪૧૬, ૫૮૬,
 ૫૬૧
 માનકુમાર—૩૨૨
 માન્યહ—૨૦૨

मान्यो—४६५
 मानहि—२६७
 मानिउ—७६
 मानु—३०६, ३३१, ३३२, ३५५,
 ३५६, ३५८
 मानुइ—३८८
 भानो—२५६
 भामिनी—५१०, ५१३
 भायउ—५६०, ५६२, ६३३, ६५४
 भारउ—३३५
 भारथ—२७६
 भारहु—६६१
 भार—६७३
 भावरि—८८, ५८५, ६५६
 भावहु—५५७
 भासमु—१७०
 भिटाउ—१००, १०४
 भिडइ—७८, १७६, १८०, २१४,
 ४६६, ४६२
 भिडिउ—२०१, २१६
 भिरे—४६२, ४६०
 भिडे—२८१, ४६८
 भिमिउ—६५०, ६११
 भिरइ—१६५, २६१, ४५१, ४६०,
 ४६८
 भिरउ—२१३
 भिरहु—४७३
 भिरे—६१८
 भिलु—३०४, ३०८
 भोरइ—५४३
 भोरहि—४६१
 भोस—२६८, ३०७, ३०६
 भोलु—३०२
 भोष्म—८३

भीषमराइ—६५
 भीषमु—४४
 भीषमुराउ—५६, ६८, ७१, ८३, ८५
 भुइ—४५०
 भुंजइ—६५७
 भूंजही—५७८
 भूंजे—६०५
 भूंजिउ—५२३
 भुवरण—३१४, ६५६
 भुवन—५४१
 भूखउ—३६१, ३७८, ३७९, ३६१,
 ३६३, ४००, ४०१, ४०२
 भूले—३४०, ३८४
 भूंजइ—१२६
 भूंजहि—१११
 भूमि—३७२, ३७३
 भूमिय—३१४
 भूमिह—६८३
 भूली—४११
 भेउ—१६५, १६७, ४६६, ६६६,
 ७०१
 भेट—४४
 भेटइ—१८७
 भेटि—२३८
 भेटिउ—२७, ६२, २३७, ५७३
 भेटी—१५६, ६५३
 भेरि—१२१, १७३, ५६१, ५८०,
 ६५६
 भेस—२६८
 भोग—६१, ५६२, ६६२, ६६३
 भोगल—६८३
 भोगवइ—२६७
 भोगु—२३२, ५८६, ६६१

भोजन—३८५, ४१८, ४६६, ६५३,
६६२

म

मह—५६, ३३०, ४२६, ४४३, ४४५,
४६६, ५३३, ६३२, ६३३,
६६४

महगल—७८, १७६

महपासहु—५१७

मछइ—३५५

मभार—८६, ६०, १००, १४२,
२१२, २२६, ३६५, ४२३,
५६५, ५७२, ६३७

मडउ—४३६

मढ—१८

मण—२६६, २६७, २६८, ५१८

मणइ—३६२

मणि—१२, १७, १६८, २६२,
३१४, ३१६, ३१६, ५६६

मणोजो—२२०

मत—२४६

मति—१

मथुराराउ—४६५

मव—६७२

महण—१२

मवसुवतु—६५१

मधुर—६७

मंगल—१२१, ५६६

मंगलचार—१२०, ५६३, ५६७

मंगलचार—८७

मंगलु—५६८, ५८१

मंगलुचार—३५७

मंजीरा—६३६

मंजप—६५५

मंजपु—८६, ८८, ५७६, ५६०

मंडलीक—५७७

मंत—२७, ६१६

मंतु—६०, १६८, १८७

मंत्र—१८७, ६१७, ६२२, ६३२

• मंत्रु—५८७

मंद—५८०

मंवार—३४६

मंवरि—१५, १८, ६०, ६५, २६३,
३१७

मंवरि—३५६

मन—२५, २६, ३२, ३६, ३८, ५४,
५८, ६५, ६८, ८४, ८७,

१३०, १४३, १४५, १५६,

१६६, १७२, १८६, १६४,

१६७, २०२, २२७, २२८,

२४८, २५६, २८०, २८६,

२८७, २८८, २८९, २६१,

३२२, ३२६, ३२८, ३२६,

३३१, ३४०, ३४६, ३७१,

३७३, ३६२, ३६८, ४०४,

४०५, ४११, ४१२, ४१३,

४१७, ४८८, ४६६, ५३०,

५३३, ५३५, ५४१, ५४२,

५४४, ५५४, ५५५, ५६०,

५६५, ५७५, ६०१, ६०२,

६०७, ६०६, ६१०, ६११,

६१७, ६२०, ६२१, ६२२,

६४२, ६५२, ६५५, ६६५,

६७१, ६८१, ६८२, ६८३,

मनमा—३५, ४१, ४८, ६५७,

मनवि—६४७
 मनह—२२२, ५३१, ६६८
 मनाह—६२५
 मनावह—४११
 मनावहि—१०७
 मनि—१२२, १५८, २२३, २६८,
 ३०४, ५३८, ५८५, ६६८
 मनु—४२, ३०८, ३२६, ४१३,
 ५६५, ६५८
 मनुह—५१५
 मनुहारि—३१४
 मनोजउ—२२१, २२२
 मय—३११
 मयउवउ—२६२
 मयगल—४६०, ५०४
 मयण—५७, १७८, १७४, १८२,
 १८३, २०२, २०३, २११,
 २१२, २१४, २१८, २२०,
 २२२, २२८, २२६, २३७,
 २३६, २५४, २५५, २५६,
 २६०, २८३, २८७, २८८,
 २६५, २६७, ३०६, ३२०,
 ३३८, ३४४, ३५८, ३६७,
 ४०१, ४३०, ४३६, ४६३,
 ४८८, ५१८, ५२१, ५३५,
 ५४५, ५५०, ५५४, ५५६,
 ५५७, ५६५, ५६७, ५७५,
 ५८५, ६०१, ६३६, ६५८,
 ६६०, ६६२
 मयणकुवर—६२६
 मयणधह—५५७
 मयणह—२३०
 मयणहि—५३४

मयण—१७२, १७३, १६०, १६७,
 २००, २१०, २२०, २२५,
 २३८, २४०, २८४, २६२,
 ३१५, ३२०, ३२२, ३६४,
 ४१२, ४४७, ४६२, ५१२,
 ५१६, ५६०, ५६२, ५६६,
 ६०७
 मयमंत—२६१, ५००
 मयमंतु—२०१, २१३, ५०४
 मयरध—२०७
 मयरधउ—३५५
 मयरद्ध—२२५, ३६०, ४६६, ५१५,
 ५२१, ५४४
 मयरद्धउ—२८३, ३६६, ४५७,
 ५२१, ५२४, ५६२
 मयरद्धहु—१६८
 मयरद्धु—४६१
 मयरद्धु—४६६, ५८१
 मयरद्धु—५२६, ६५२
 मया—१७७
 मयाह—४१८, ४१६
 मयायउ—३२३, ५२४
 मरह—१२८, २६६, ४४०
 मरउ—१२५, ४३८
 मरण—७, २६६, ४८१, ६७०
 मरणा—३११, ४७१
 मरणु—५४२, ६७३
 मरवाह—६२७
 मरवा—३४६
 मल्ल—५६१
 मलति—६६
 मलयद्धउ—२६१
 मलयानिगि—२१६
 मलावभ—४५१

मलाबहु—४००
 मल्लिनाथ—१०
 मलु—६३
 मसाहण—५६०
 मह—४६, ५८, १६७, २५०, २५८,
 २६२, ४८६, ५८६. ७००
 महइ—३४६
 महकइ—६८, ३४५
 महछुरिब—५८
 महणी—२८६
 महतइ—६७८
 महंत—२३०, ४२६
 महंतु—५०२
 महमंडल—२४३
 महमहइ—३४६
 महमहण—६०, ७३, ४७४, ५०६,
 ५३०, ५६७, ६००, ६११
 महमहणु—५०१, ५१६, ५४६
 महमहनु—५०६
 महल—३०५
 महलई—३०४
 महलउ—६१, ३०१, ३०३, ३०६,
 ४३३, ४३४
 महले—६७, ८३
 महागुणराय—६६६
 महादे—१३३, २७०, ६७३
 महाहउ—२१०, २७४, २७६, ५३६,
 ६६१
 महि—२३२, ५०२
 महिमंडल—५३२
 महियल—५२८
 महियलु—५०६
 मही—६०५

महु—१०, ८५, १८३, ३०१, ५१०,
 ६०६, ६६७
 महुवरि—१२१, ४८५, ५८०, ६५६
 माइ—४१२, ४४७, ४५४, ४५६,
 ४५७, ४५८, ६३४, ६८५,
 ६८७, ६८८
 माइन—६८५
 माग—३०१
 मागइ—३०३, ३२८, ३२६, ३७६,
 ४३१, ५१३, ६६७
 मागि—३७६
 मागित—४१०
 मागी—५६
 मागो—४५७
 माजि—४७६
 मांभ—३१, १२४, १३०, १३१,
 १५२, २६६, ३१४, ३१६
 माढी—३४२
 माड—३६४
 माडे—३८८
 माणस—१५१, १५३, २६६
 माणउ—५६०
 माणिक—६१, २६३, ५६२, ५७०,
 ५७१
 माणु—३३६, ६८५
 माणुलु—६६८
 मातह—७०१
 माता—२४१, ३१६, ४०५, ४०८,
 ४१७, ४१८, ४३०, ४३२,
 ६६३, ४८७, ६०२, ६०४,
 ६८४
 माते—४७७
 माथे—४७८
 माथी—४१७

माघव—६५२—६६६
 मान—१२, ३५, ३६, ४५, १८५,
 २०७, ३२६, ३६४, ४६१,
 ४८०
 मानइ—१०६, ६३३, ६६६
 मानन—२२६
 मानभंग—६३०
 मानहि—४८७
 मासू—६४६
 माया—३६७, ४६६, ६८३
 मायामइ—३५५
 मार—४६१
 मारउ—५१७
 मार्गज—१७
 मारण—२५५
 मारि—८३, १४४, २५३, २६२,
 ३८७, ५३८, ५४१
 मारिउ—२११, ५२४
 मारिवंतु—२१३
 मास्त—५३१
 मारघो—२७०
 माल—२३६, ३१६, ४५५, ५०३
 मालब—५७८
 माला—१२६
 मालाहि—१३३
 मालि—३५२, ३५३
 माली—३५४
 मास—१६३, ४०३
 मासइ—४२४
 माह—४३०, ४६५, ६२६, ६४५
 माहि—१४, १६, १०१, १२८, ६६६
 मित्र—३६७
 मिल—१२८, १८६
 मिलइ—३४, २०७, ५६२

मित्यउ—१८६, २६६
 मित्यो—४१७
 मिलहि—२२६
 मिलतु—४६६, ४८१, ५८६
 मिलाइ—४६८
 मिलावळ—५६१
 मिलि—८६, २३०, २५४, २६६,
 ५८४, ५६१
 मिलिउ—४८२, ५६१, ५६०
 मिलिसइ—१६०
 मिली—४८, ६१, १०५, २६०,
 ३५६, ४१६, ५४८
 मिले—१६०, १८७, ३०७, ६४७,
 ६५४
 मिति १८७
 मोच—५४३
 मुकट—१६६, २३३, ५८२
 मुकटू—२१७
 मुकति—६६७
 मुकराइ—६४८
 मुकलाइ—२८२, ३५०, ३८२
 मुक्के—७
 मुखमंडल—४४८
 मुखह—२
 मुगण्णा—२३२
 मुभ—३१५
 मुंढ—१४६, २६१
 मुंढइ—४१६
 मुंढुकेवली—६६३
 मुणि—१५१, ५६५
 मुणिउ—१४४, १८०
 मुणिघर—२४२
 मुणिबर—४८

मुनि—४०, ५३, १५८, १६३, २६८,
 ३६७, ४१५, ५५०, ५६३,
 ६७३
 मुनिराइ—३६
 मुनितर—५६४
 मुंबडी—५२, ६३
 मुबरी—३४३
 मुंबरी—६३
 मुनिस्वर—२४०
 मुनिवर—१५२
 मुरारि—५०, ६७, ८६, ८८, ६०,
 ६७, १००, १०३, ५४७,
 ५७२, ५७५, ६०८
 मुह—२०७, २४१, ३००, ५११,
 ६०५, ६३०, ६६८, ६७८
 मुंह—१२, १६७
 मुहवतु—६६
 मुहवि—४६१
 मुहामुह—२२६
 मुहि—१०६, १२३, १४८, २१०,
 २४१, २६८, ३००, ३०२,
 ३०३, ३०७, ४१४, ५५५,
 ५२३, १३३, ६७६, ६६४
 मुही—२६०
 मुहु—६२
 मुठिक—३८४
 मुड—२५
 मुडउ—४३६
 मुंडु—११३
 मुंडि—११२
 मुंडिउ—४२१
 मुंडी—३६५, ४२२
 मुणिसुवतु—१०
 मुण्ण—३०१

मुंडे—२५, १४६, ३६३
 मुबरी—३४१
 मेइ—३१८
 मेघ—१७६, २८१
 मेघकूट—१२६, १५६, २३७, ४५४,
 ५७१
 मेघनाडु—५२८
 मेघवाण—५२७
 मेघमाली—५३१
 मेटइ—४७, १६८, २७८, ४८६,
 ६७३
 मेटरण—१२६, २७७
 मेटरणहार—६११
 मेढे—३१७
 मेढी—३६७
 मेवनी—२१
 मेरउ—३२६, ६३०
 मेरी—३७१, ५३७, ६६४
 मेरु—१४, ६७
 मेरो—५४२
 मेलइ—८०
 मेलउ—५५२
 मेलहइ—७६
 मेलीउ—५३३
 मेह—७१, १७३, ४८३
 मेहउ—३७२
 मेहकूटि—१५४
 मेहु—५३०
 मंगल—१८०, ४६०, ५००
 मंडी—३६४, ३६६, ३७२
 मंजन—१८१
 मेलइ—५२१
 मोकली—४२४
 मोडि—२६२, ३५१

मोडी—६१८
 मोती—१७, ६१, ३१३, ५०३,
 ५६२, ५६३, ५७०
 मोपह—२६४, ४६७, ४७१
 मोलु—३४०
 मोल्पो—२६५
 मोसहु—२०६
 मोसिहु—१६०, ५२२
 मोह—२८७, ६८५, ६६२
 मोहण—६११
 मोहणी—५५, १६३, २८७
 मोहतिमिरहरसूक्त—६६२
 मोहि—१७१, २४६, २४८, २६३,
 २६५, ३०४, ३११, ३३०,
 ३८६, ४०८, ४१२, ४३२,
 ४४७, ४५५, ४५६, ४६६,
 ४६३, ५११, ५४६, ५७४,
 ५८३, ६०२, ६०३, ६०४,
 ६७०, ६८३
 मोहिणी—५५७
 मोहि—१५
 मोहु—४३१
 मोहे—४६६

य

यउ—६११
 य—१५, ५५, १०८, १०६, १६२,
 २०७, २१०, २२६, २२७,
 २२६, २८५, २६७, ३०४,
 ३१४, ३२०, ३२२, ३३६,
 ३३२, ३३३, ३६२, ३६१,
 ४०६, ४२८, ४२६, ४४७,
 ४४८, ४५२, ४५५, ४५६,

५०१, ५०२, ५०६, ५३८,
 ५४६, ५४७, ५४६, ६८६
 यहर—४२३
 यह—१२३, ३३२, ३६२, ५०२,
 ५४१, ७००
 याको—५३५
 याण—१११

र

राए—६५५
 रलबाल—२०५
 रलबाले—२०७, ३३६, ३४०, ३४१,
 ३४२
 रलहि—३१५
 रचतु—१२२
 रचहि—६६३
 रचि—१६, २६१, २५३, २६२
 रचिउ—३६५
 रचित—४७, २७७
 रचितु—१२६
 रचो—४७, २६०
 रच्यो—२६३
 रण—७२, ७३, ८१, ८३, १६५,
 १६६, १७४, १७६, १८१,
 २६१, २८१, ४६१, ४६२,
 ४६७, ४७५, ४७६, ४७७,
 ४६०, ४६१, ४६२, ४६६,
 ४६८, ४६६, ५०१, ५०२,
 ५०६, ५०७, ५१२, ५३७,
 ५३८, ५४२, ५४४, ५४६,
 ५५५, ५५६, ६३४, ६७६
 रणवीर—५०८
 रणब—७०

रत्नवासह—२६, ४१, २३८
 रत्नहांक—५२७
 रत्नि—४६१
 रत्तिनामा—२२७, ५७२
 रत्न—५३, ५६, ६५, ३५४, ३५७,
 ३५८, ५२४, ५४०, ५४५
 रत्न—५०७
 रत्नयो—२७०
 रत्नरा—३१३, ५०३, ५८७, ५६६,
 ६६०
 रत्नरात्रुलु—५८७
 रत्नराजहित—६०३
 रत्नरासरसली—१६३
 रत्नराह—१६२
 रत्नरा—१२७, २३६
 रत्नरा—५४०
 रत्नरात्रि—५००
 रत्नरु—६५७
 रत्नरु—३२६
 रत्नरु—१३०, १५८, २४८, ३३१
 रत्नी—४८, ६५८
 रत्ने—३३३, ६५५, ६६५
 रत्न—२४७, ६६३
 रत्न—११
 रत्नोई—३६१
 रत्न—७८, १७३, १७६, ४०५, ४८२,
 ५३२, ६४५
 रत्नरु—२६८, ४०४, ४५०, ६७१
 रत्नरु—३४०, ४४६, ५७६
 रत्नरुमात्र—६८५
 रत्नरुमात्र—४४३
 रत्नरुमात्र—५३३, ५३८
 रत्नरुमात्र—५५६
 रत्नरुमात्र—२६२

रत्नरुमात्र—२६
 रत्नरुमात्र—१२७
 रत्नरुमात्र—६७१
 रत्नरुमात्र—१४४, १५७, २१६, २८५,
 ५४५, ४६५, ६८०, ६८१
 रत्नरुमात्र—६०
 रत्नरुमात्र—२८४
 रत्नरुमात्र—७४, ८१
 रत्नरुमात्र—२०५, ६२६
 रत्नरुमात्र—७०, १७५, २५६, ५००,
 ५०४, ५२६, ५२६
 रत्नरुमात्र—६४४
 रत्नरुमात्र—५३७
 रत्नरुमात्र—६८३
 रत्नरुमात्र—६६, १८५, ५७७, ५७६, ६४१
 रत्नरुमात्र—१६
 रत्नरुमात्र—२१, ६४, १२६, १३३, १३७
 १५३, १६६, १७२, १७४,
 १७७, १८३, १८४, १६१,
 २३८, २५४, २५६, २६६,
 २६६, २७०, २८२, २८४,
 २८६, २८८, ३६६, ३७२,
 ३७३, ४५४, ५०३, ५६०
 रत्नरुमात्र—१७१
 रत्नरुमात्र—८४, २०५, ५२३
 रत्नरुमात्र—२५७
 रत्नरुमात्र—१८५
 रत्नरुमात्र—३२४
 रत्नरुमात्र—२२, २३२, ५६२, ५६८,
 ६०५, ६११, ६५८, ६७७
 रत्नरुमात्र—२३५
 रत्नरुमात्र—६६, १३४, १६२, २५१,
 २५७, २५८, २६६, ६५५,
 रत्नरुमात्र—१११, १८६, १६१, ५२३,

५७६, ५८६, ५९१
 राजभोग—६७६
 रात्रि—२७५
 रात्री—८१
 राणी—६१, १११, १३३, २७४,
 ३७६, ३७७, ३७६, ३८३,
 ३८८, ३९१, ३९३, ३९४,
 ३९५, ४०५
 राणे—५२६
 राति—११०
 राम—२७५
 रामहिउ—२६४
 राय—२५५, २५७, ५६०, ५८६,
 ६४०
 रालि—३५८, ३८३, ५३६, ५५३
 रात्रयउ—३६५ ४३८
 रालियाउ—४४६
 राबण—२७५
 रावत—७०, ७५, १७८, ६१, ४६०
 रावतस्यौ—२६१
 रावल—४२४, ४२६
 रावलह—६५०
 रावलुहो—३३८
 रवि—६६६
 रीति—६६३
 रिद्ध—३६३
 रिस—६६६
 रिवभु—८
 रिवि—२६, ३२, ३३, ४६, ४६,
 १५६, २६८, ५४५
 रिसाह—३४, ३५, ३०२, ३३६,
 ४३८, ४४५, ४४६, ५८३,
 ६३४

रिसाणउ—४११
 रिसाणा—२५६
 रिसानो—२८२
 रीति—३६४
 रोष्य—५४४
 रवमणी—५०६
 रविमणी—४४७, ५८८, ५८३, ५१६
 ६४०, ६५३
 रकमिणी—४७, १०४, १०७, १०८,
 १०९, १४८, २४३, ४७२, ५४६
 रकमिणि—१०२
 रकमोणी—१५४
 रकमोणी—१५६
 रकुमिणी—६२१
 रक्त—३५१
 रधि—५३३
 रवतु—६६
 रूप—३१, ३२, ३६, ३६, ५५, ६८,
 ६७, १०३, १३४, १६०,
 ३१८, २१६, ३११, ३३८,
 ४०३, ४५०, ५०२, ५६८,
 ६१२, ६३४, ६३६, ६५०,
 ६८४
 रूपचंद—८५ ६२३, ६३६, ६४५,
 ६४६, ६५८
 रूपचंदु—८४, ६२५, ६३५, ६५०
 रूपणि—४०३
 रुपि—४५१
 रुपिणि—५०, ६१, ६२, ६५, ६७,
 ६६ ८४, ६०, ६५, ६६,
 १०२, १०४, ११६, ११७,
 १२७, १४०, १४३, १४६,
 १४७, १६०, १६३, २३१,

३६६, ४०५, ४०७, ४११,
 ४१३, ४१७, ४१८, ४१६,
 ४२५, ४२६, ४२८, ४२९,
 ४४१, ४५६, ४६३, ४६५,
 ४६६, ४६७, ४६८, ४७१,
 ४८०, ५१०, ५११, ५१२,
 ५१५, ५४२, ५४४, ५६१,
 ५६५, ५७४, ६०२, ६०५,
 ६२५, ६५२, ६७८, ६८१,
 ६८७, ६८८
 रूपिणी—५६, ७३, ११०, १२६,
 ३६८, ४०६, ४१८, ४२७,
 ४४३, ४५५, ५५२, ५६७,
 ६०६, ६२३, ६३१
 रूपिन—४२८
 रूपी—३६७
 रूपीणि—५३, ७६, ४०५, ६२२,
 रूपीणी—७४, ४३४
 रूपु—६१०
 रूपुकुवर—६२२
 रूपो—४३२
 रूपे—६८४
 रूपह—४१०
 रहह—१२
 रहह—२६५
 रहिह—५०४
 रेख—३०
 रोह—४२५
 रोपहु—६४३
 रोपे—५६१
 रोवह—१४१, २५१
 रोवति—३५६
 रोस—२८०
 रोहिणि—५

ल

लह—६६, ७१, ७६, १०२, २१२,
 २३३, २४८, २४९, २७४,
 ३०८, ३२६, ४७४, ४४७,
 ४४०, ४६७, ५६०, ५६३,
 ६४६, ६५०
 लहय—६७, ३०७
 लउ—२२१, ४७४, ५३५
 लए—१६५, ३५४, ४८६, ४६५,
 ६३६, ६४४
 लकलणवंत—४२
 लक्षण—३६, १३४, १३६, १३७,
 ४२८, ६८६, ६६६
 लक्षणवंतु—४२८, ६१४
 लकुटि—६
 लखण—१३२, ३११
 लगन—४४, ८७, ४७५
 लगार्ह—६८
 लगि—२७४, ३२२
 लडह—३८२
 लडणु—१३८
 लडहि—३७१
 लडहु—३८१
 लडो—३६५
 लंका—३७५, ३५२
 लंघे—२६५
 लयउ—१३३, १३४, १८४, २७०,
 २८०, २८६, ३६०, ३६५,
 ४०८, ४१३, ५२०, ५२५,
 ५३३, ५४०, ५४७, ५५१,
 ५५३, ६४८, ६६१, ६७४,
 ६८२
 लयो—४५०, ५३१

लरह—४५१, ४६१, ५२५,
 लबंग—३४८
 लबुहु—१४
 लह—५८०
 लहह—२, ५५३
 लहउ—२७३
 लहणौ—२७८
 लहरि—१६
 लाह—६०, १०६, २७५, ६२०,
 लाउ—५७८
 लाए—६४६
 लागह—१०८, ११२, २२२, २२३,
 २६४, ३००, ४३१, ४७२,
 लागउ—६००
 लागणह—११३
 लागने—४३३
 लागह—१२७
 लागि—२७५
 लागी—७३, १०८, १४७, २३६,
 २६०, ३१२, ३८३, ५७४,
 ६८४
 लागे—२३०, ४८७
 लागो—२३७, २३८, ५०६, ५४६
 लाघण—४०२
 लाज—१७६, २४६, ५१३
 लाजइ—१७१
 लाठी—३६०, ३७१
 लाहु—४०३
 लाह—२७०, ३६०, ४०३, ४०४
 लाभ—१८३, २०४, २३१, ५४८
 लाभइ—१७८, २७८, ३०२
 लाभु—६५०
 लायउ—४२६
 लालची—४४४

लाघण—६८४
 लाबहु—५७, ३५३, ४००, ४११,
 ७०१
 लिउ—३११
 लिहाइ—५३
 लिजि—६८६
 लिखितु—१३७
 लिखियावइ—६६६
 लिखी—५५
 लिहयो—४८६
 लियउ—५३, १३७, १८७, ४१४,
 ५८५, ६१५
 लियो—५८, ८२, २४४
 लिहाइ—३०
 लीए—४६३
 लीजहि—२४५
 लीय—३६५
 लीयउ—४२६, ४६६, ५२७
 लीयो—४०२, ५३६
 लुबधि—२४७, २७२
 लुबधं—२६५
 लेइ—५, ६४, ६६, ७८, ८६,
 ११६, १६६, १७२, १७६,
 १६२, २०६, २११, २२७,
 २३५, २३६, ३७७, ४६८,
 ४७७, ४७८, ४७६, ४६७,
 ५६८, ६२०, ६२५, ६७५,
 ६८६
 लेउ—१०४, १६५, ६००, ६२६
 लेकर—३८७
 लेखणि—३
 लेगयो—१५४
 लेचल्यउ—५१०
 लेचल्यो—४६४

लेख—१४२, १४६
 लेखक—४५७
 लेखक—२०६
 लेखि—२३६
 लेखि—७२, १४४, २६८, ३०१,
 ४१०, ६०७, ६७६
 लेख—६६, ७५, १४६, ३४०, ४२०,
 ४६४, ४६६, ४७४, ६२०
 लेख—२७७
 लेखय—१५६
 लेखउ—६७
 लेख—२७, ६०, ३४६,
 लेखु—३००, ३३२, ३८६, ३६०,
 ३६२, ४२३, ४५२, ५८६,
 ६६१
 लेखक—४३१
 लेखु—३८७
 लेखि—२६३
 लेखियउ—५६५
 लेखी—७३
 लेखण—६६०
 लेखयमाणु—६६०
 लेखणु—५०७

 व
 वड—३६, ५७८, ५६०, ५६६,
 ६००, ६४१, ६६३, ६६७
 वडक—१४३
 वडक—२३, ३५, ६४, २४८,
 २५८, ४६३, ६६८
 वडके—६२, २५१, ३१८, ४३४, ६०८
 वडको—३५, ११७, ५६६, ६५०
 वडसा—३४१

वडसारि—१०३
 वडसारिउ—५६२, ५६६
 वडसि—३८५
 वडसाण—६६८
 वडसाणु—६६४
 वडन—५४६, ६२८, ६३२
 वडणलि—६०६
 वडज—१७३
 वडज—५२, ६३, २०६, २५८,
 २६४, ५२४
 वडहि—५६६
 वडवाल—३००
 वडउ—३३२, ३६२, ४२३, ४३६,
 ४५३
 वडी—३३, ३०१
 वडे—३८७, ३८८, ३६५,
 वण—५६, १०१, १३०, १३१,
 १६६, १८७, २१२, २००,
 २२१, २२४, २२६, २४०,
 २५४, ३३६, ३४२, ४८५,
 ६६६
 वण—६६३
 वणवेड—५५
 वणवेवी—१०५
 वणवर—३१४
 वणवाल—६६
 वणवासी—६६४
 वणह—८६, १००, १४२, २१२,
 २२४, २२६, ३३८
 वणज—२७२
 वणसण—३३
 वलीस—
 वलीस—८०
 वलीसी—१३२

वगनि—६३१
 ववतु—२१५
 ववे—२७
 वधाए—५६७
 वधावउ—११६, ११७, ११८, ५६३
 वधावा—१२०
 वधु—४५०
 वधौ—४६५
 वन—१३०, २२५, ३३८, ४७४,
 वनखंड—१२४
 वन्ययउ—८
 वनवासा—६७४
 वंग—५७८
 वंदनमाल—१७, ८६
 वंदर—३५०, ३५१, ३५३, ३५४
 वंदरवेउ—२०६
 वंदल—३५०
 वंदे—२६५, ६६०
 वंभउ—१६३
 वंधि—१८३
 वंधिवि—३४३
 वंस—११०, ५७६, ६२५, ६५५
 वपु—१२
 वभंगु—१६८
 वंभए—१२०, ३१८, ३६३, ३७८,
 ३८२, ४४३
 वंभणु—३६०, ३६३
 वयठउ—५३, ११६, २२०, ५६०
 वयरो—१०८, २२६
 वयण—२६, ४६, ६१, ६२, ७७,
 ६६, ६७, १४१, १५८,
 १७२, १७६, १८६, १६२,
 २४०, २४६, २५३, २५६,
 २८६, २८६, ३६८, ३१६,

३७१, ३६७, ४२१, ४२७,
 ४३८, ४४१, ४५४, ४५५,
 ४७०, ५१०, ५५६, ५६६,
 ६००, ६०२, ६२७, ६२८,
 ६३०, ६३१, ६३४, ६५४,
 ६७६, ६८४
 वयणु—६०, ६४, १४६, १६०,
 २६५, ३०१, ३१५, ३३१,
 ३७८, ३८४, ४१२, ४२६,
 ४३०, ४३२, ५१६
 व्यंजन—३८८
 वयर—१२३
 वयराउ—४६८
 वयरु—८४
 वयसंवक—१७०
 वयसरि—५८
 वयसारि—११६
 वयसारियउ—५६२
 वर—४४, २०१, २०६, २२६, २३६,
 २५६, ३१५, ३४३, ३५६,
 ४११, ४२८, ४६७, ५०२,
 ५४६, ५५६, ५५८, ५६१,
 ५६८, ५७०
 वरजइ—५८३
 वाजे—३७५
 वरुण—३१६
 वरुणइ—५४६
 वरत—२६६, ६५६
 वरतु—४०८
 वरंगिरि—६६७
 वरम्हंड—५३६
 वरम्हंडु—४७४
 वररंगिरि—५६५

वरस—१३६, ५५३
 वरसइ—७८
 वरसहि—२८१
 वरहासेल—२१८
 वह्यचारि—३६८
 वह्याउ—६३७
 वृद्धि—१३६, ५४७
 वराह—२१८
 वरि—६०५
 वरिस—१५७, १६०, १६३, ५४८,
 ६७१
 वरिसउ—५३०
 वरिसहि—१७६
 वरिसुद्ध—१४५
 वरो—२६, ३०६,
 वरु—७००
 वल—१३२, २०२, २८७, २६३,
 ४०६, ४५३, ४५६, ४६१,
 ५०२, ५७६, ६४३, ६८०
 वलि—११६, ४६६
 वलिवंड—४६०, ५५८
 वलिभद्र—२२, ७८, ६२, ११३,
 ३१५, ४३३, ४३४,
 ४४४, ४४५, ४४६,
 ४४८, ४६७, ४६४
 वलियउ—२३०
 वलियो—४६४, ४६७, ५०१
 वलिवंत—१२७, ५३६
 वलिवंतउ—२०३
 वलो—४५८
 वलीभद्र—४४२
 वलु—६६, २७६, ३०७, ४६४,
 ४८८, ६६६, ६५१

ववलु—३४५
 ववलसिरि—३४५
 वशुदिउ—३६८
 वशुवेउ—३७३
 वसइ—१४, १५, २०, १०१, ३१३,
 ३१४, ४६०
 वसई—२१६
 वसते—६६५
 वसंत—२२७
 वसंतु—२२१
 वस्त—१६२, २१७, २३६, ३०१,
 ३०२
 वस्त्र—४, १०३, २२६
 वस्तु—३००
 वसहि—२०, ६६६
 वसा—८८
 वसारि—४५७
 वसी—४७०
 वसुण—२००
 वसुवेउ—३७१, ३७२
 वसुवेव—३१७, ३६७, ४६६, ४६४,
 ४६८
 वह—७६, ८०, १०५, १०७, २४५,
 ३१६, ३१७, ३१८, ३१६,
 ३७६, २२३, २४५, ३१६,
 ३१७, ३१८, ३१६, ३७६,
 ४००, ६०४
 वहइ—५२०, ५२६
 वहउ—३६५
 वहत—१४१
 वहयउ—२८२, ५३८

बहहि—५०४, ६४३
 बहि—१३०, ५२८, ५२६
 बहिण—११०, २७६, ६०६
 बहिण—६४३, ६५४
 बहिणी—१०६
 बहु—३६, ४२, ६१, ६६, १०१,
 १०५, १३७, १७३, २२३,
 २६२, ३१४, ३१६, ३४८,
 ३५०, ३५६, ३८०, ४१८,
 ४१६, ४३८, ४५०, ४५१,
 ४६६, ५२४, ५५७, ५६१,
 ५६३, ५७५, ५७६, ५८१,
 ५८६, ५९०, ५९७, ६०३,
 ६१२, ६३७, ६५६, ६५८,
 ६६३, ६७५, ६६१
 बहुडि—८४, ८५, २६१, ५१३,
 ६८७
 बहुडी—२७६
 बहुल—१८, २४, ४४, ६१, १०५,
 ११५, २३७, २३८, २६४,
 ३२२, ३४४, ३४७, ३८८,
 ४१६, ४३१, ४४३, ५७३,
 ५७६, ५८६, ६०५, ६१६,
 ६३२, ६३६, ६५५, ६७७,
 ६८३
 बहुलई—४६८
 बहुलु—५४६, ५६१
 बरूपणि—१६४
 बहुमती—४
 बहुरि—४११, ६१६
 बहुव—३२८
 बहुवणिणी—६३४
 बहुल—४६०, ६४१, ६६६
 बहुलु—१२७

बहे—५२६
 बहै—१६२
 बहोडि—४३७
 बहोडी—२२१, २७७, ३७१, ४३७,
 ६१७
 बहोरी—२८७
 बाइ—१०८, ४८०, ४८४
 बाइल—८६, ६८६
 बाखर—३२५
 बाखरघउ—३२५
 बाण—३२४
 बाचइ—६६७
 बाजइ—२४, ५८०
 बाजण—४८३
 बाजंत—६५६
 बाजहि—४, १२१, १७५, ५६१
 बाजे—१७५
 बाट—३०४, ३०७, ४८४
 बाडह—४३६
 बाडि—१०२, ३४४
 बाडिउ—३१४
 बाडी—१०५, ३४३, ३४६, ३५०,
 ३५१, ३५३, ३५४
 बाढइ—६२४
 बाडिउ—५०६
 बाढी—२७५
 बाण—७८, ७६, ८२, १३८, १७६,
 २८१, ५१८, ५२१, ५२३,
 ५३१, ५३३, ६४७
 बाणनि—५१, ६२, ८१
 बाणि—२
 बाणिये—१६
 बाणी—६६२

बाहु—५३५, ५५३
 बात—२६, ४२, ४८, ५३, ७५,
 ६३, ६४, ६६, ११६, १५०,
 १५४, २६७, ३२६, ३६६,
 ३८२, ३८३, ४४४, ४४७,
 ४५३, ४७०, ४७२, ४८०,
 ५१२, ५८२, ५५०, ५६५,
 ६२३, ६२६, ६३०, ६३१,
 ६३३, ६७१, ६७४
 बाहर—३४६
 बाधि—७, ६५
 बाधिउ—८५, ५१७, ६४६, ६५२
 बाधि—४४६
 बाप—४६२
 बापहि—२८५
 बापी—२५८, ३६२, ३६८
 बापु—६८०
 बाभण—३२५, ३३५, ३६५, ३७०,
 ३७५, ३७६, ३७८, ३८०,
 ३६०, ३६३, ३६४, ४३७,
 ४३६, ४४२, ४४३
 बाभणु—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,
 ३६१, ४३८
 बाम्बन—१३१
 बामन—१२५
 बामा—७४
 ब्याह—४०६, ६२१
 ब्याह—६२१
 बार—११, ४३, ६०, ७६, ८६,
 २६०, ३१२, ३८३, ४००,
 ५६५, ५६७, ५६१, ६२०
 बारबह—१६
 बारवार—१०८
 बारमह—१५६, २४२, ५७२, ५६६

बारम्बह—३१२
 बारह—१६, १५७, ६७०
 बारहसह—१२६
 बारहे—१६०
 ब्राह्मण—२०
 बारि—७८, १६१, ६८१
 बारु—११
 बाल—१७७, २६४, ३००
 बालउ—१६८, १७०, १८८, ४३०,
 ५७३
 बालखयंत—३५२
 बाला—४२६
 बालु—१६६
 बालुका—३२७
 बाले—१६७, ३८२, ६४२
 बालेहि—१७७
 बालं—१७१
 बालो—१७६
 बाबण—१५५
 बाबडी—१०५, ३६०, ३६३, ३६४
 बाबरी—१०२, १०४
 बाबो—२१४
 बाबोस—११
 बास—२३, ६६३
 बासु—३
 बासुपुत्रु—६
 बाह—४०१, ४५७, ४६३, ५४५
 बाहिर—३८३, ४४६, ६४३, ६८६
 बाहिरी—४०६
 बाहु—३६६
 बाहुड—५११
 बाहुडि—८३, १७७, २४६, ३०८,
 ४३६, ५५३, ६०६, ६६०,
 ६६६

बाहुडिउ—३७२
 बाहुडी—१३३, १५८, ३६५, ६०६
 बाहुरि—१४०, १६३, २४८, ४५३,
 ६२५, ६५८, ६६६
 बाहुरी—१७७, ३४३
 बाहुरे—४२२
 बिउ—६८६
 बिउलखण—२२५
 बिकाहइ—११२
 बिगतिहि—४३४
 बिग्रह—३७६
 बिगहु—१६४
 बिगाह—२८५
 बिगुचीन—३३६
 बिगोइ—२५२, ४२४, ५१३
 बिघन—६
 बिचारि—३६, ६३, २१२, २२७
 बिचार—३०५, ३२८, ३८४, ६०६,
 ६०७, ६०६
 बिचाहण—४८६
 बिचित्त—६६३
 बिछोही—१४२
 बिजउ—४२३
 बिजउरे—३४७
 बिजयसंख—२३४
 बिजयसंखु—२१६
 बिजयागिरि—१८७
 बिजाहर—३८, १८४, २२६, २६५,
 ३१८, ५७२, ६१६, ६२१,
 ६६१
 बिजाहरनी—६२०
 बिजाहरि—५५, २२१
 बिजाहउ—२२३, २६२, ५७१
 बिजु—५८६

बिजोषु—३३२, ३६२, ४५२, ५४८
 बिकु—७६
 बिणवइ—२११
 बिणहु—३४
 बिणालु—६७४, ६६०
 बिबु—१
 बिबारि—५७६
 बिबेह—१५०, ५६३
 बिद्या—१२६, १३२, १६१, २०३,
 २०५, २२२, २३३, २४५,
 २४६, २४७, २४८, २४९,
 २५५, २६३, २६५, २६३,
 ३६४, ३८२, ४०६, ४१८,
 ४५४, ४८८, ६५१
 बिद्यातारणी—१६४
 बिद्याधर—५८६
 बिद्यावल—६७७
 बिधाता—१४०
 विनइ—६२, ६४, ४३४
 विनउ—३६६
 विनवइ—२७, ११८, ४२०, ५८८
 विनाण—२७३
 विनोइ—२४
 विप्र—३२३, ३२६, ३२८, ३३३,
 ३३४, ३३७, ३६२, ३७७,
 ३८०, ३८१, ३८५, ३६०,
 ३६५, ४३५, ४३६, ४३७,
 ४४२, ४५६, ५६८, ५७१
 विप्रइ—४४५
 विप्रह—३४५
 विपरित—३२, ४२४
 विप्रु—३२६, ३३०, ३८७, ३६२
 विभउ—३६६, ५०१
 विभिउ—१६०

विमल—६

विमल—२५, ५३, २६१, २६२,
२६५, ३१२, ३२०, ४८५,
४८७, ४५६

विमलह—४६२, ५४४

विमला—१३३, ६५५

विमल—१२४

विमल—१३३, १३५, १८६

विमल—४६६

विम—२६६

विमल—१३०, ३१८

विमलह—१३१

विमल—१२२, २६१

विमल—३१

विमल—२६६

विमल—३८४

विमल—४२३, ४२६

विमल—८४, १०२, १६२, ३४४,
३४७, ३५१

विमल—२०६

विमल—१५७, ३६६, ४०६, ४३०,
६१७, ६८२

विमल—१३६

विमल—२२५

विमल—२५४

विमल—३१

विमल—३६५

विमल—८३, २१५, २६६, २६२,
५०१, ५२४, ६३१, ६७६

विमल—२६२, ३२६, ४१५

विमलह—१४३

विमलह—१६०, ३६१, ६८१

विमलह—६३०

विमलह—६०, १४०, ३५६, ३६१,
४८५

विमलह—६७८

विमलह—२२५

विमलह—४००, ६८१

विमलह—५८६

विमलह—५६२, ६६२

विमलह—११३, ६६२, ६६३

विमलह—१४६

विमलह—१५८

विमलह—२८१

विमलह—३०६, ५८१, ५८४

विमलह—४६६, ४७

विमलह—२२७

विमलह—६२२

विमलह ४४, ४८, ८७, २२३,
२८६, ४१३, ५८५, ५८६,
५८६, ६५४, ६५५

विमलह—१०७

विमलह—७६

विमलह—२०१, २०७, २२६, ३३१

विमलह वासिणी—६३३

विमलह—१६६ २७०

विमलह—४७६

विमलह—१६

विमलह—६६

विमलह—५३५

विमलह—१४३, १८५, २५०, ४०५,
५५५, ६११, ६३१

विमलह—३२

विमलह—१४५

विमलह—१६०, २०२, २०६, २१४,
२१५

विमलह—२१४

विसाह—२२२
 विसाले—२६६
 विसाह—२१६
 विसुर—५६६
 विसुर—४१२
 वितेषह—१५
 विस्तु—५२१, ५४५
 विसास—२६६
 विहडाह—५३१, ६८०
 विहडाउ—४६१
 विहलघण—५४
 विहलघन—२५०
 विहति—५६ ६४, २६०, ३७०,
 ४२६, ४५८
 विहसत—६०
 विहसतु—२५, ११७
 विहसिउ—६०६
 विहसाह—२६, १५६, २००
 विहसेह—६१
 विहि—४०, ४८६
 विहिणा—६६१
 विहिसाह—६६८
 विहु—६८६
 वीजाहराउ—१५३
 वीजु—५३६
 वीडा—१७२
 वीण—४. ५८०
 वीणा—३०३, २३३
 वीद्या—२७७
 वीनयो—६३
 वीय—१३
 वीर—७८, ८१, १३६ १५५, १६३,
 १८१, १८२, १८६, २०१,
 २०६, २१२, २२१, २३६,

३४३, ४०३, ४२७, ४४७,
 ४४६, ४५८, ४६७, ४६२,
 ४६८, ५०२, ५१०, ५४६,
 ५५६, ५५८, ५६१, ६३७
 वीरा—३५२
 वीरु—१०, १३०, १६०, १६६,
 २०७, २०८, २०६, २१०,
 २१४, २२०, २२४, २२५,
 २२६, २५६, ३१५, ३४५,
 ३४६, ३६२, ५०१
 वीवो—१६७
 वीस—३३५, ३३६
 वीसक—४४१
 वुआण—१८५
 वुआह—५२८
 वुकिवि—१३७
 वुधि—१, २६८, ३६४, ४३५, ४८८
 ७०१
 वुडि—४१८, ६३५, ६७६
 वुरो—६३०
 वुलाह—१८७, ६२२
 वुलाय—१०४
 वुल्लिउ—१८३
 वृचह—२२७, २६६, ६४०
 वृभह—१, १३६
 वृभिउ—१३८
 वृढउ—३२५, ३३४
 वृढे—३३२
 वृषी—४८१
 वृब—३११
 वृर—४८५
 वृलाह—४००
 वेग—५६, ७२, १३५, २६८, ३५४,
 ५७२, ५८७, ५८६

वेगज—३६८

वेगि—६१, १६५, १७०, २५३
२८६, २६०, ४३५, ४४१,
६०२, ६०५, ६३६

वेगु—६३४

वेगे—२८६

वेगा—५४३

वेटा—३६

वेटी—३६, ६२४, ६२७

वेदियज—१४

वेण—६५६

वेताल—५०४

वेतालु—३२

वेघि—६४

वेव—८७, ३२८, ३७४, ३८०, ५६८
५८१

वेवहज—४३०

वेल—३४८

वेलज—१२५

वेली—५७६

वेलु—३४५

वेसु—३०६

वेकार—६३६

वेडज—१०१, ३८७

वेठि—३८१

वेठी—१०५, ३८८, ४२६

वेठो—३५२

वेव—१५५

वेवप—६११

वेसुं बल—४७४

वेस—२०

वेसह—४८५

वेसण—३६६

वेसंबर—७६

वेसुं बर—६४३

वेसरहि—३८१

वेछी—४८१

वोल—४५, ३७८, ४२१, ४५७
४७३, ५६०, ६३१

वोलह—४३, ४५, ५६, ८४, ६६
६७, ६६, १००, १०६
११७, १४६, १५२, १६७
२०६, २६६, २८८, ३०६
३१३, ३६८, ३८४, ४०६
४४५, ४४७, ४६४, ४६३
५४४, ५५४, ५५६, ५७३
५७४, ५८३, ६०७, ६२५
६३४,

वोलत—६४३

वोलति—६४२

वोलते—६४३

वोली—११६

वोलिज—५१६

वोलियज—६६

वोल्पज—५१७

वोले—६०५

वोलें—१४८, ६०६

वोलो—४७३

वोल्पो—१७८, ४०१

श ष स

शोगी—३५

शेषं—६

शण—३०, ५६

सङ्ग—२३
 सङ्ग—३७, ७६, १६८, १७६, २२४
 २५२, ४८८, ६२६, ६७६
 सकङ्ग—१६८, ३६२, ४६६, ५३२
 ६३०
 सकङ्ग—३३१, ४३७, ४४३
 सकङ्ग—२६८
 सकङ्ग—३३
 सकङ्ग—१३०
 सकङ्ग—३३०
 सकङ्ग—५२३
 सकङ्ग—५५६
 सकङ्ग—२०२
 सकङ्ग—४००
 सकङ्ग—४५२
 सकङ्ग—६१३
 सकङ्ग—४८५
 सकङ्ग—७८
 सकङ्ग—५८७
 सकङ्ग—३६
 सकङ्ग—४७५
 सकङ्ग—६८६, ६६१
 सकङ्ग—७०
 सकङ्ग—२६३
 सकङ्ग—१८३
 सकङ्ग—१७३
 सकङ्ग—१७५
 सकङ्ग—३३५
 सकङ्ग—७७
 सकङ्ग—६३८
 सकङ्ग—६६३
 सकङ्ग—२६, ३३०
 सकङ्ग—४५, ८४, ३६८

सतभामा—३०, ३१, ६१, ६८
 १०८, ६१३
 सतरङ्ग—१०
 सति—६४
 सतिभाङ्ग—४८, ५६, ६२, १००
 १५२, १६१, २२३, २७४
 ३२६, ५१७, ५४३, ५७३,
 ५८५
 सतिभामा—४०२
 सतिभामा—६३, ६४, ६५, ६६, ६६
 १०३, १०४, १०६
 ११२, ११३, ११६
 ११८, १२७, ३१८
 ३४३, ३६१, ३६२
 ३७३, ३७५, ३८५
 ४१६, ४२०, ४२४
 ४३३, ४४३, ८६,
 ५८७, ५८८, ५६७,
 ६०१, ६०६, ६११,
 ६१४, ६१७, ६५७
 सतीभामा—६२
 सतुवाची—६४२
 सदा—६६३
 सदाफल—३४७
 सदाणि—६४७
 सदा—१, ३, ५५६
 सदा—५, ३०७
 सवे—६४
 सवेहि—१८३
 सन—५३२
 सनधु—१७३
 सनधु—४७५
 सनधु—२४५

सममधु—६८६

समवधु—४०६

सनाह—४७८

सनीषर—११

सनेह—६०३

सनेहु—५८८, ६४२

संक—३६६, ३७१

संल—५१, १२१, ३४८, ५६६
५८०, ६५६

संगह—२६८

संग्राम—८१०, ४६७, ४६६, ४६३
४६८, ५००, ५०६, ५४६
५५५, ५५६

संग्रामु—२६६, ५०८

संग्रह—२५५, २८३, ३८८, ६७२

संग्रहु—१६५, ६७१

संग्रह—५१०

संग्रह—२८६

संगरी—३५१

संगरे—४०३

संगार—४६१

संगारु—४६२

संगारुणु—७६

संगारुण—२३४

संगरह—३०

संगरिड—५१६

संगमु—५६४, ६६६, ६७३, ६७५

संगुत—७२

संगुत—३२०, ४८२, ५७१

संगोमु—४०

संगति—६

संगतापु—१४०, १४२

संगतोषी—१६३

संगेसउ—३६८

संगेह—४०६

संगेहु—१६, ३०५, ५३०

संगण—८०

संगमधु—६८७

संग्यास—३३१

संगसार—६५६

संगसारि—६६७

संगसारु—२३१

संगहरे—३६०

संगहार—१६१

संगतउ—१५६, २२८, २४०, ३५५
४६३, ५४४

संगतउ—१५०

संगती—६८१

संगते—८४

संगराण—८१, १८१

संगराणु—२६

संगरान—४५८

संगलु—२३१, ४२६, ५६२

संग—२२, १११, १६२, १७५, १८७

२५४, २५५, ३५०, ३५६

३५३, ३६४, ४२५, ४७३

४८१, ५०२, ५१२, ५८६

५६३, ६३८

संगदु—२४

संगह—२३०

संग—२३, ५३, ३३२, ३३७

३७२, ३७३, ४५७, ४६३

४६४,

संगह—११०, २५५, ३१२, ३६०

४५८

संगतउ—२५७, ५६६

संगतह—५२१

सभालि—४७७, ५३६
 सभालिज—७६
 सस—७२, २४३, ४२८, ५२२, ५६२
 समजसरण—६६५
 समभाइ—६६, १४५, ३६२, ६२८
 समभाइ—६८७
 समथ—२०६
 सभवि—२६४
 सभाविज—१८४
 समबिनारायण—६५८
 सम्बरि—३०३, ४०६
 समयमुहं—१२
 समरंगिणि—७६
 समराण—१७५
 समरी—४८८
 समवसरण—१५१, ६६४
 समहाइ—२७६
 समाण—१५
 समाषान—४००
 समान—१५
 समु—३३२, ५७३
 समुभार—१५०, २८५, ३८३, ४००
 ४८०, ५५०, ६८८
 समुभावं—४८६
 समुब—३२७
 समुदु—५५७, ६५६
 समुद्र—१२५, ५५७
 समूब—५७८
 समेलि—३८६
 संपतज—६५, २२५
 संपति—७००
 सबु—४५, ६६, १६७, २८३, ५०८
 ५५३, ५६४, ५६६, ६२४
 ६४६

सभषज—५६३, ६१०
 सभये—१११
 सभरि—५७६
 संकुम्बाव—६१२, ६२४
 संकुवर—६१६, ६१८
 संवतु—११
 सम्बल—२३५
 सम्भारइ—४७६
 संसयह—५६६
 सन्हालि—१२३, १६२, ४५०, ४५१
 सयपंच—२२८
 सयन—२६०, ३२०, ४७४, ४८३,
 ४८८, ५१०, ५१४, ५२६,
 ५२८, ५५६, ५७७, ६४६
 सयता—५१२, ५६४
 सयतु—४८७, ५०८, ५७२,
 सयल—२५८, ३५०, ३८५, ३६०,
 ३६१, ४६६, ५२६, ५५८,
 ५६१, ५६३, ५६४, ५८६,
 ५८७, ५८६, ५६१, ६१४,
 ६६८
 सयलह—४६१
 सयतु—३७, ३८६, ४१३, ५१०,
 ५५५, ५७७
 सर—६४, १७६, २२४
 सरण—१३
 सरणा—३११
 सरलि—१४४
 सरथंगु—६४३
 सरवरु—२०८
 सरस—११, ६६३
 सरसती—४
 सरसुती—१
 भरस्वती—६२८

सरिस—१०२, २६५, २६४, ४२५,
४६३, ४७०, ५३६, ५६१

सरिसो—४६५

सरीर—५४, ५०८, ६८५

सरीरह—६८४

सरीर—२३६, ३४६

सर—१, ५२०

सरूप—३८, ३६, ४२, १३६, २२७,
२३८, ४२८, ६१४

सरुपु—१३४

सरे—२८१, ३२०

सरोवर—२०४

सरोवर—३, २०५

सल—६४, २१३, ५५६

सलकिउ—५०६

सलहण—६३६, ६६१

सलहिउ—२३०

सलि—२१६

सव—५७६, ६३८, ६४३, ६४६

सवई—३६७, ४१५

संवह—६११

सवतिसाल—६१

सवतिसालु—५८६

सवव—५६६

सवनि—३७५

सवपु—४८७

सवल—१७५, ४५१, ५०२, ६४३

सवसिद्धि—१६४

सवारि—५६८

सव्व—४२२

सव्वह—४६१

सवु—२, १३५, १३७, १३८, १८३,
१६२, २७६, ३००, ३८७,

३८८, ३८६, ३६०, ३६२,
४४४, ४६२, ४६८

सवुद—५८०

सवु—५८४

सरिसु—१३६

ससि—१७, ४२, ७३, १०६, २६३

ससिगालह—८२

ससिभाइ—३०, ६१५

ससिहर—६१२

सहइ—५३७, ६८६

सहण—५२६

सहवेउ—४५६

सहघो—४७०, ४६७

सहन—८३

सहनाण—१३३

सहनाणु—५०

सहस—६०५

सहाइ—५३७

सहाउ—११०, २६८

सहारइ—५२७

सहारउ—१४१

सहारि—३३, ३३१, ३४०, ४६६,
५३२

सहि—३१६

सहिउ—१२

सहिनाण—३१८, ३६७

सहिनाणु—४१५

सहिघो—४६३

सहिलबी—६१, १०५

सहीए—४२६

सह—११०, २१०, ३४०, ५१६,
५६०

सहेट—४६, ५७, ६४१

सहोवर—५१

सहोवरि—४४
 सहोवर—२१
 सहोवर—१६६, २२८
 सहोवरि—६४०
 सहोवर—५६५, ६०३
 सही—१३१
 सहषड—५१५
 सागालाए—६४६
 साखड—३७८, ४२१,
 साज—४८६
 साजइ—४७६
 साजहुइ—४७५
 साजि—४७६, ४७७, ४७६, ४८६
 साजिउ—५८, १७३
 साजियउ—५६
 साजहि—१७५
 साजहु—६६, ४७५
 साजे—२५६
 साजुहु—४७५
 साजे—४७६
 साण—२०७
 सात—५१, ६२
 सातउ—६४
 साति—३२
 साय—८४, २६६, ५०२, ५३८,
 ६४६
 साधि—५१३
 साधु—६६६
 साधु—५५७
 साधिउ—५१८, ५२७
 साधु—३८४
 सान—३२४
 साभडि—६२६

सामकुमार—६३६
 सामकुम्हार—६४६
 सामहण—२७६, ५७७
 सामहराज—६६५
 सामि—१२, १५०
 सामिउ—२१, ४६१
 सामिकुमार—६७३
 सामिणि—१०६, ४२०
 सामी—१६६, २६४, ३५३, ४०७,
 ६६४
 सामुहे—५६१
 सायर—१६, १५२, ४७५
 सायरह—३७४
 सार—६०, ६४, १२८, १५६, ३१२,
 ३६७, ३७५, ४००, ४३५,
 ५०५, ६२०, ६३६, ६४५
 सारंगपाणि—२६, ५१७
 सारगपाणि—६३
 सारंगमणि—७७
 सारधि—५८, ५६, ४८५, ५०७,
 ५०६
 सारथी—४८६
 सारद—१, २, ३
 सारिउ—१५५
 सारी—६५
 सार—५, ११, ३६, १३४, १३६,
 ३४५, ३७८, ३८०, ४४८,
 ४७१, ६०३, ६८४, ७००
 साखलोच—६६६
 सासउ—६७१
 सासण—५
 साधु—१३

साहण—२१

साहस—१६२, १६८, २०८, २५६,
२६७, २७३, ३४६, ४२७,
४५८, ५६८, ५४६, ५५६,

सिउ—४६०, ५४६, ५४८, ६३७

सिखर—२१७

सिगली—३७३

सिमिरि—४८२, ५५६

सितू—४१०

सिधि—६६६

सिद्धि—२३१

सिगा—६४४

सिगार—३०

सिगाह—३५७

विध—१३८, १६५, १८१, १८२,
३१७, ४४८, ४५१

सिघरह—१६४, १६८, १७४, १८३

सिघासण—२६, ५६६

सिघासणु—२०३, ३६६, ५६२

सिदुरु—३४६

सिधु—१६६

सिह—१७४, ४५०, ४६०

सियालु—४८४

सिर—२३, ३३३, २५०, २५६,
२७२, २८६, ३६३, ३७८,
३८२, ४१६, ४२१, ४२६,
४२६, ५६०, ५६२, ५७०,
५८२, ५८३, ६५६

सिरि—३४५

सिल—२५८

सिला—३५, १२४, १२५, १२६,
१३१, १३२, १५५, २३०,
२४४, २५६

सिब—१८३

सिहवार—५७६

सिहु—११२, ११६, १६४, १६५,
२१०, २४५, ३२०, ४१४,
५८८, ५८६

सीउ—१६०

सीखज—४५३, ५२२

सीकह—६५३, ६६२

सीतल—६

सीढार—३७५

सीषज—४१६

सीया—२७५

सीलम्बंत—६१४

सीस—१, ६२

सीसु—८२, ६४३

सीहडार—४४२, ५६१

सीहडार—४३५,

सीहवारि—६३७

सीहिलि—१६६

सीहु—१६६

सूचइ—२०

सुघठे—३५८

सुइ—५८८

सुइन—७१

सुइरी—३६४, ४०१

सुल—६१, १११

सुलह—६८२

सुलासण—१०२

सुलु—६२६

सुगणह—४८६

सुगमु—४८६

सुगुणु—१८३

सुबंगु—३१६

सुजन—५७३
 सुजात्यु—५०
 सुजह—७१
 सुहु—१२
 सुष्कार—८७
 सुष्यज—४१७
 सुणह—३८४, ६६३,
 सुणह—२७१
 सुणि—२६५, ४५८, ६६४
 सुणिज—१३७, २६५, ६६४
 सुणिब—६६४
 सुणो—४२६
 सुणोइ—६७६
 सुणो—६२३
 सुण्यो—३७६
 सुतारि—५५
 सुबंसणु—१४, २७४
 सुबिन—४२६
 सुधणु—६६५
 सुधाकारणी—१६३
 सुधि—६८, १४४, १४८, १५७,
 १६६
 सुन्वरि—३२, ४१, २१२, ४२१
 सुनोर—३६८
 सुपनखां—२७५
 सुपवित्तु—१२
 सुपासु—८
 सुनिंतह—६७६
 सुपियार—६१५
 सुपियाह—१३६, ७७३
 सुभ—१६३
 सुभइया—४५६
 सुभ बरिसली—१६३
 सुभान—६२२

सुभानकुवर—६२१
 सुभातु—६१४, ६७३
 सुभातुकुवर—६१६
 सुसु—५०७
 सुमति—८
 सुमिरी—४१८, ४८८, ६३५
 सुयण—५६१
 सुर—१८३, २०५, २३०, ५३८,
 ५६५, ५६६, ६००, ६०३,
 ६१३, ६६६, ६६८, ६६३,
 ६६६
 सुर्ग—१४६
 सुरंगिनि—५४१
 सुरजनुहु—२७८
 सुरवेज—२१६
 सुरनारि—५०
 सुरयणि—५५२
 सुरभबण—६७७
 सुरयणु—६६१
 सुररिहु—६६४
 सुरलोइ—२३२
 सुरसुंवरि—४१, ४३, ४५, ४८
 सुरिहु—६६१
 सुरेस्वर—६६२
 सुबंब—५१६
 सुबरीयज—२७८
 सुवास—६६३
 सुविचार—१८
 सुविबु—६
 सुमपालु—४५
 सुहइ—२६४
 सुहइ—७०, १७५, १७६, ४७५,
 ५४३, ५५६, ५५८, ६७८
 सुहबनि—४८०

सुहृन्नु—४८६
 सुहृद—४७७, ४६८
 सुहृण—४८७, ४६६
 सुहृवंसण—२७४
 सुहृनाली—२२७
 सुहृल—५३६
 सुहाह—३२६
 सुहिनाल—२७१
 सुके—१६१
 सुकड—२३, ६८, १७३, ५०३, ६०२
 सुणिउ—५१४, ५६६
 सुब—२०
 सुबःरि—१४३
 सुरि—६५७
 सुरू—१६८
 सुली—६४३
 सुवर—२१६
 सुवा—८७
 सुहो—१२०
 सुहउ—३५७
 सुखण—२३४
 सुठि—२७१, २७२
 सेरी—२७२
 सेत—४, १०३
 सेतो—६४५
 सेना—५०१
 सेनाकरि—२६०
 सेनाकरी—२०४
 संभउ—८
 सेम्बहि—२३१
 सेल—४७६
 सेव—२८, ६२, २११, ४४५, ५८८,
 ६१३, ६६६

सेवा—२१५
 सेस—५०६
 सेसपाल—४४, ६६, ७१, ७४, ७५,
 ७६, ७७, ७८, ८३, ६२७
 सेसे—११६
 सेइ—८०
 सेन—२८८, ५५७
 सेना—५०३
 सोइ—३५, ३८, ४२, ४३, ४७,
 १०५, १०७, ११२, ११४,
 ११८, १२४, १३१, १७०,
 १८८, १६०, १६६, १६६,
 २१३, २१५, २१८, २२४,
 २३५, २४०, २५०, २५२,
 ३३५, ३३८, ३४६, ३६४,
 ४०६, ४१५, ४२४, ४३१,
 ४६७, ५३४, ५६६, ५६८,
 ६०४, ६०६, ६२५
 सोउ—१०७, ५२१
 सोखइ—२७०
 सोखणी—१६३, ३६५
 सोतउ—२७२
 सोनो—३०१
 सोप्यो—२६६
 सोभ—५५५
 सोभे—५६३
 सोरठ—१४, १४६, २४२, ५६६
 सोलह—८०, १६१, २२६, २३१,
 २३३
 सोलहउ—६
 सोला—१८३, १८६, १६२, ५४८
 सोले—६३२
 सोबत—१२८

सोहह—४२, ५२, १०३, २३४,
३१६, ६०८

सोहउ—६८७

सोहि—३०३

सोहिहि—१७, ४६७, ४६७

स्तुति—६६८

स्मरि—४६१, ४६३

स्यंघराउ—१८४

स्यंघरथ—५४७

स्यंघराउ—१८४

स्वर्ग—६८६, ६६७

स्वर्ग—५६४

स्वार्ति—१२

स्वामि—६३५

स्वामी—४, ६५, ११८, १४७, १४८
५६५, ५६७, ६२३

स्याह—५०५

स्याली—३४

ह

हह—८७, ६३, २२५, ३२७, ४०६,
४४६, ४७१, ४८०, ५६३

हहवर—२६१

हउ—१५४, १२८, १६६, २६३,
२७३, ३००, ३२८, ३७०,
३८०, ४१७, ४६४, ४७३,
५३६, ६००, ६२३, ६६७,
६७८, ६८०, ७०१

हकाराउ—३७६

हकारउ—३७६

हकारि—५८, ११६, १२०, २५३,
३४०, ५७५, १०७, ६१६

हउह—५०६

हउई—५३२

हउह—२७५

हउि—१५४, २६७, ४१३, ४१४

हउिलह—६७

हउी—५०८, ५१२

हउे—५७६

हउणह—५१

हउणउ—६२

हउणवंत—३५३

हउणे—६४७

हउत्य—२०६

हउति—१२४

हउलेखी—८८

हउलेखउ—५८५, ६५६

हउियार—३५४

हउियारु—४६७, ४७१, ४७६

हंस—३

हंसगमिणि—४२

हम—४१०, ४११, ४२५, ४३७

हमह—६५०

हमारउ—१८५, ३०६

हमारी—११३, ३०८

हमारे—२८६

हमि—२७, १४३, १४४, ३८४,
४४२, ६४१, ६४२

हम्बु—२४८

हय—४८२, ५०५, ५२६, ५२६,
५३२, ५५६, ६४५

हयउ—५४, २३६

हयवर—५००

हया—२७१, २७२

हर—१२७, ४५८, ६६३

हरह—६

हरउ—१४२

हरण—७

हरण्यो—१८६

हरसिउ—३२०

हरि—३६, ६६, ११६, १४३, १६२,
३४४, ४५८, ४८०, ५०६,
५१६, ५४७, ६५०, ६७३

हरिउ—१२७

हरिवेउ—१०७, ५१३

हरिनंवरण—३०३

हरिनंवनु—३२२

हरिराउ—२३, ६२, ७६, ४६३,
४६४, ५६०, ५७३

हरिलइ—७६,

हरिलयउ—१४७

हरिवंसइ—१८

हरिण्यो—२८८

हरिसय—१६६

हरी—१२१, ४७२, ६७८, ६८२

हरीलइ—६६

हव—३१४

हवे—६५५

हरेइ—६

हल—४६७

हलउ—६४

हलहर—५५, ११६, ३३४, ४४४,
४३६, ४४१, ४४७, ४५२,
४६१, ४७२, ४६७, ६६१,

हलहर—५६, ८६, १४३, ४४६

हलहव—५६, १४३, ४४६

हलहल—६६५, ६७१, ६७२

हलहलु—६४, ५५८

हलावभु—७८

हलिउ—४७४

हल्लिउ—४७४

हली—३५१

हलु—४५०

हलुवइ—६६७

हवइ—४२१

हसइ—१०७

हसाइ—३७३

हसि—६५, ६७, १००, १४६, ४४४,
५१२, ५१५, ५४६, ६२२,
६५१, ६५२.

हसिउ—५५१

हस्ती—१६१

हहउउ—३६

हहि—२२८

हहु—३८०

हाइ—१०६

हाक—४६२, ५०६, ५२७, ५३७

हाकइ—४६१

हाकि—७८, १६०, १६६, २६१

हाकी—४६५

हाट—६४४

हाडी—३८८

हाथ—६, २५, ३१, ५२, ६२, ११७,
१२५, १३१, १४६, १४८,
१५५, १७२, १६६, २०२,
२०६, २२२, २३४, २८०,
२६६, ३०६, ३४३, ३७७,
४१७, ४२२, ४६६, ४६७,
५०६, ५२०, ५३१, ५३३,
५३५, ५४०, ६४४, ६४६,
६४८, ६७३

हाथह—२११, २३५
 हाथि—७७, ८२, २१३, २४६
 हाथु—३८७
 हार—६०३
 हारइ—११२, ११३
 हारसु—६०४
 हारि—२६२, ६१६
 हारिउ—१८२, ५१४
 हारी—४१६
 हाक—२३४, ५६६, ६००, ६०१,
 ६०४ ६०६, ६०६, ६१०
 हारं—६१७
 हालइ—५०६
 हासउ—३७३
 हासी—२६१, ३३०, ४२२
 हाहाकार—५०१
 हिस—३२४
 हिय—१४०
 हिय अलोक—१६३
 हियइ—१६६
 हियह—६०१
 हियउ—१४१, २६५, ३४० ४०६,
 ६२६, ६७८
 हिबस—५१६
 हीणह—४०६
 हीण—१७८, ७०१
 हीणु—६३४
 हीणउ—२४६, ५५१, ६३०
 हीयरा—१६०
 हुइ—११, १२४, १७१, १७३, २००
 ४२२, ५३३, ६४४

हुतासण—२५३
 हुती—३५०
 हुते—६३६
 हुती—२६६
 हुरि—८५
 हुबो—१३५
 हेम—२६०, ३०१, ६२६, ६५६
 हैवर—१८०, ४७५, ४६२
 होइ—१, ६, ७, ३५, ४०, ४३,
 ४८, १०४, १०७, १०६,
 ११२, ११४, ११७, १३१,
 १६८, १७६, १८३, १८६,
 १६०, १६२, १६६, २०२,
 २१५, २२४, २३२, २३५,
 २४०, २४३, २४८, २५०,
 २६७, २७८, ३१०, ३३५,
 ३३८, ३३६, ३६४, ३६५,
 ३८३, ३६१, ४०६, ४१५,
 ४२७, ४४४, ४६४, ४७८,
 ४८१, ५०५, ५११, ५१३,
 ५१४, ५३५, ५३६, ५५३,
 ५५५, ५८६, ६०४, ६०७,
 ६३३, ६७०, ६७४, ६८४,
 ६६७, ६६६
 होइहि—१६२
 होउ—१३, ५७३
 होण—५६८
 होहि—७४

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	३	रुक्मिणी	रुक्मिणी
१४	१	रुक्मिणी	"
१४	३	रादउराइ	जादउराइ
२२	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
२२	१०	रुक्मिणी	"
२४	६	नारयण	नारायण
३१	७	रुक्मिणी	रुक्मिणी
३४	७	निम्पल	निम्बल
४५	१	प्रद्युम्न	प्रद्युम्न
६०	२	दग्धति	दग्धन्ति
६६	३	गुण	गुर
६७	५	आवास	अवास
७३	३	वृक्ष	वृक्षों
७५	६	मंगल	मंगल
८०	१	प्राप्त सकने	प्राप्त कर सकने
८१	६	रुक्मिणि	रुक्मिणी
८२	६	"	"
८३	५	"	"
८३	६	"	"
८४	६	"	"
८६	५	दाउ	दोउ
१२०	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२०	१०	जामवती	जामवती
१२३	६	भानहि	सुभानहि
१२४	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२६	१	डाम	डोम
१३५	५	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१४२	७	अठरहवें	अठारहवें
१५०	२२	भयकर	भयंकर

१५१	१७	दुःख	दुःख
१५१	१८	दुःख	दुःख
१५२	६	नेत्रों	नेत्रों
१५३	८	सहेल्यो	सहेलियों
१५४	१	पहिल	पहिले
१५४	६	के	का
१५४	२३	प्रद्युम्न	प्रद्युम्न
१७०	२३	विद्याओं	विद्याओं
१८५	१६	रूप धारण बनाकर	रूप धारण कर
१६२	२०	के	से
१६२	२०	समा	सभा
२१४	५	रूपचन्द	रूपचन्द
२१४	८	बहुरुपिणी	बहुरुपिणी
२१४	२४	रूपचन्द	रूपचन्द
२१५	७	"	"
२१५	१६	"	"
२१५	१६	"	"
२२०	२६	अभ्यपंतये	अभ्यंतर

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० २८१ सुधाकर
लेखक अध्यातम व्यास
शीर्षक प्रद्युम्न चरित्र
खण्ड ४२५२ क्रम संख्या

लेखक के हस्ताक्षर	वापसी का दिनांक
-------------------	--------------------